ग़ीबत के ज़रूरी अह़काम सीखना फ़र्ज़ है।

फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द:2 का एक बाब

# ग़ीबत की तबाहकारियां

Ghibat Ki Tabah Kariyan (Hindi)

इस किताब में ग़ीबत वग़ैरा की 1800 से ज़ाइद मिसालें भी शामिल हैं


ग़ीबत एक नज़र में 30

ना बालिग़ की ग़ीबत 55

ग़ीबत करने वाले से पीछा छुड़ाने का त़रीक़ा 209

ग़ीबत की 12 जाइज़ सूरतें 233

ज़ाहिरी अच्छी सोह़बतों में भी ग़ीबत का मरज़ 255

ग़ीबत से बचने का अनोखा त़रीक़ा 258

40 ह़िकायात 294

ग़ीबत के बारे में सुवाल जवाब 427



शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले (اَلْمُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عَساكِر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

## किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

# मजलिसे तराजिम ( दा'वते इस्लामी )

येह किताब (ग़ीबत की तबाह कारियां )

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट ( . ) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"ह़ुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा ( ् ) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा ( ' ) इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دعوت، استعمال (दा'वत, इस्ति'माल वग़ैरा)।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

## ह़ुरूफ़ की पहचान

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फ = پھ | प = پ | भ = بھ | ब = ب | अ = ا |
| स = ث | ठ = ٹھ | ट = ٹ | थ = تھ | त = ت |
| ह़ = ح | छ = چھ | च = چ | झ = جھ | ज = ج |
| ढ = ڈھ | ड = ڈ | ध = دھ | द = د | ख़ = خ |
| ज़ = ز | ढ़ = ڑھ | ड़ = ڑ | र = ر | ज़ = ذ |
| ज़ = ض | स़ = ص | श = ش | स = س | ज़ = ژ |
| फ़ = ف | ग़ = غ | अ़ = ع | ज़ = ظ | त़ = ط |
| घ = گھ | ग = گ | ख = کھ | क = ک | क़ = ق |
| ह = ھ | व = و | न = ن | म = م | ल = ل |
| ई = اِی / ی | इ = اِ | ऐ = اَے | ए = ے | य = ی |

**राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 •´ E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

# याद दाश्त

दौराने मुता–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा़ नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

| उ़न्वान | सफ़्हा़ | उ़न्वान | सफ़्हा़ |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| उ़न्वान | सफ़हा | उ़न्वान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

गी़बत के ज़रूरी अह़काम सीखना फ़र्ज़ है

# गी़बत की तबाह कारियां

**मुअल्लिफ़ :**
शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना
**अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ

नाशिर
**मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ


नाम किताब : **ग़ीबत की तबाह कारियां**

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ

सिने त़बाअ़त : **नवम्बर 2016 सि.ई.**

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना, अह़मद आबाद**


## मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :


**बरेली शरीफ़** : दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी । Mo. 9313895994

**गुलबर्गा शरीफ़** : फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तीमा पूर चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक। Mo. 09241277503

**बनारस** : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यूपी । Mo. 09369023101

**कानपूर** : मस्जिद मख़्दूम सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पड़ाव चौराहा, कानपूर, यूपी । Mo. 09619214045

**कलकत्ता** : 35A/H/2, मोमिन पूर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल । Mo. 033-32615212

**अनन्त नाग** : म-दनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनन्त नाग, कश्मीर। Mo. 09797977438

**सूरत** : वलिया भाई मस्जिद, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सूरत, गुजरात। Mo. 09601267861

**इन्दौर** : 13, बोम्बे बाज़ार, उदापूरा, इन्दौर, एमपी। Mo. 09303230692

**बंगलोर** : 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कोम्पलेक्स, 9th मेन पल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, अ़रबिक कॉलेज, बेंगलोर-45 कर्नाटक। Mo. 09343268414


**म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

# कुछ इस किताब के बारे में......

**सरकारे** दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ''** या'नी इ़ल्म का ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।'' (سُنَنِ ابن ماجہ ج۱ ص۱٤٦ حدیث ۲۲٤) यहां स्कूल कॉलेज की दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि **ज़रूरी दीनी इ़ल्म** मुराद है। लिहाज़ा सब से पहले **बुन्यादी अ़क़ाइद** का सीखना फ़र्ज़ है, इस के **बा'द नमाज़** के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात, फिर र-मज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी पर फ़र्ज़ होने की सूरत में **रोज़ों** के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये **ज़कात** के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ **ह़ज** फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, **निकाह़** करना चाहे तो इस के, **ताजिर** को ख़रीदो फ़रोख़्त के, **नोकरी** करने वाले को नोकरी के, नोकर रखने वाले को इजारे के, وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है। नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बात़िनी फ़राइज़) म-सलन आ़जिज़ी व इख़्लास और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बात़िनी गुनाह म-सलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद** वग़ैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है। (तफ़्सील के लिये देखिये फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 623, 624) **मोहलिकात** या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि झूट, **ग़ीबत**, चुग़ली, बोहतान वग़ैरा के बारे में ज़रूरी मा'लूमात ह़ासिल करना भी **फ़र्ज़** है ताकि इन गुनाहों से बचा जा सके इस ज़िम्न में **ग़ीबत की तबाह कारियां** आप के हाथ में है, इस में **ग़ीबत के मु-तअ़ल्लिक़** सदहा मिसालों समेत तफ़्सीली जब कि बा'ज़ दीगर **मोहलिकात** के बारे में इज्माली (या'नी मुख़्तसरन) बयान है। मैं ने तो दर अस्ल अपने एक मत़्बूआ़ मक्तूब ''ग़ीबत की तबाह कारियां'' के तख़्रीज शुदा नुस्ख़े की नोक पलक संवारने का इरादा किया था ताकि कुछ तरमीम व इज़ाफ़ा कर के मज़ीद बेहतर त़रीक़े पर इस को त़ब्अ़ करवाया जा सके, मगर

फिर ज़ेह्न बना कि क्यूं न ख़ूब तफ़्सीलात से मुज़य्यन कर के इस को **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 का एक बाब बना दिया जाए। इस सिल्सिले में **दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा पर मब्नी मजलिस, **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** से इस्तिआ़नत की, इस के इस्लामी भाइयों ने दस्त गीरी फ़रमाई और उन्हों ने मुझे आयात व रिवायात व हि़कायात पर मब्नी बहुत सारा मवाद फ़राहम कर दिया। **ग़ीबत** की बे शुमार मिसालें भी मुझे मेइल कीं। **दा'वते इस्लामी** की मजलिसे दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती साहि़ब ने निहायत गहरी दिल चस्पी ली, इस किताब को बिल इस्तीआ़ब या'नी अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा पढ़ा, और अपनी उ़म्दा रहनुमाई के ज़रीए़ मुफ़ीद तब्दीलियां फ़रमाईं इस किताब को **इ़ल्मी जामा** पहना दिया। ह़क़ीक़त तो येह है कि मेरी येह किताब बल्कि हर किताब व तमाम रसाइल का तरत्तुब उ़-लमाए अहले सुन्नत (كَثَّرَهُمُ اللّٰه تعالیٰ) के क़दमों की धूल का सदक़ा है वरना मन आनम कि मन दानम (या'नी मैं जैसा हूं ख़ुद ही जानता हूं)

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** के मुआ़विनीन उ़-लमाए दीन और साथ देने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमा, मेरी इख़्लास से क़त़्अ़न आ़री इस काविश को मुख़्लिसीन के त़ुफ़ैल क़बूल फ़रमा और इसे नाफ़ेए़ मुस्लिमीन बना। मुझ गुनाहगारों के सरदार, अ़त़्त़ारे ख़त़ाकार को और **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 के इस बाब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** मुकम्मल त़ौर पर पढ़ने या सुनने वाले और वालियों को **ग़ीबत की तबाह कारियों** से बचा और बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी मह़बूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में बसा। ऐ ख़ुदाए रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत की सारी उम्मत की **ग़ीबत** से ह़िफ़ाज़त और सभी की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللّٰه تعالیٰ علیه واٰله وسلّم

ग़मे मदीना, बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

14 र-मज़ानुल मुबारक 1430 सि.हि.

**05-9-2009**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# ''या अल्लाह ! फ़ैज़ाने सुन्नत आ़म हो जाए'' के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 23 निय्यतें

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الكبير لِلطَّبَرانی حديث ٥٩٤٢ ج٦ ص١٨٥)

**दो म-दनी फूल :** ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। ﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढूंगा ﴾12﴿ शर-ई मसाइल सीखूंगा ﴾13﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾14﴿ ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस क़ौल ''عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ'' या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।'' (حِلْيَةُ الاولياء ج ٧ ص٣٣٥ رقم ١٠٧٥٠) पर अ़मल करते हुए ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा ﴾15﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा ﴾16﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) ''याद दाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾17﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾18﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾19﴿ इस ह़दीसे पाक تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (موطا امام مالك ج٢ ص٤٠٧ رقم ١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾20﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने दिन (म-सलन 25) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾21﴿ जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा ﴾22﴿ इस किताब के मुत़ा-लअ़ए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴾23﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 29 | ज़बान जलने से मह़फ़ूज़ रहेगी | 40 |
| अक्सरिय्यत ग़ीबत की लपेट में है | 29 | नमाज़ व रोज़े की नूरानिय्यत गई | 41 |
| ग़ीबत की तबाह कारियां एक नज़र में | 30 | दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم | 41 |
| म–दनी ह़िकायत | 31 | क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ? | 42 |
| ग़ीबत ह़राम होने की ह़िक्मत | 32 | खौलते पानी और आग के दरमियान | |
| ग़ीबत के मु–तअ़ल्लिक़ एक | | दौड़ने वाला | 42 |
| ए'तिराज़ का जवाब | 33 | ख़ौफ़े गुनाह हो तो ऐसा ! | 42 |
| ग़ीबत व बोहतान का फ़र्क़ | 33 | तूने अपने भाई का गोश्त खाया है | 43 |
| ग़ीबत की ता'रीफ़ बहारे शरीअ़त में | 34 | बैठक से उठ कर जाने वाले की | |
| ग़ीबत की ता'रीफ़ अज़ इब्ने जौज़ी | 34 | ग़ीबत की 16 मिसालें | 43 |
| ग़ीबत क्या है ? | 34 | मुंह से गोश्त निकला | 44 |
| मैं अ़लाक़े का नामी गिरामी बद मआ़श था ! | 35 | औ़रतों में की जाने वाली | |
| इन्फ़िरादी कोशिश की ब–र–कत से | | ग़ीबतों की 23 मिसालें | 45 |
| राहे जन्नत मिल गई | 37 | ज़िन्दगी की सांसें दा'वते इस्लामी के नाम हैं | 46 |
| हर कलिमे के बदले एक साल की | | तुम ने अभी अभी गोश्त खाया है | 46 |
| इ़बादत का सवाब | 38 | मुर्दार ख़ोर जहन्नमी | 48 |
| अक्सर घर मैदाने जंग बने हुए हैं | 38 | मुर्दार का गोश्त खाना आसान नहीं | 48 |
| सीनों से लटके हुए लोग | 38 | जहन्नमी बन्दर व ख़िन्ज़ीर | 49 |
| तांबे के नाखुन | 39 | चार नसीह़तें | 49 |
| औ़रतें ज़ियादा ग़ीबतें करती हैं | 39 | ग़ीबत ईमान के लिये नुक़्सान देह है | 49 |
| पहलूओं से गोश्त काट कर खिलाने का अ़ज़ाब | 39 | कुफ़्र पर मरने वाले के अ़ज़ाबे क़ब्र की कैफ़िय्यत | 49 |
| क़ियामत में मुर्दा भाई का गोश्त खिलाया जाएगा | 40 | जहन्नम में हमेशा रहने की लरज़ा ख़ैज़ कैफ़िय्यत | 50 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| नफ़्ली इ़बादत न करने वाले से | | मुसल्मानो ! डर जाओ ! | 68 |
| नफ़रत करना कैसा ? | 51 | पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार ! | 68 |
| मुस्तह़ब्बात व नवाफ़िल में ग़ीबत की 9 मिसालें | 53 | हर गुनाह के बदले एक उ़ज़्व काटा जाएगा ! | 69 |
| ग़ीबत के अन्दाज़ | 53 | नज़्अ़, क़ब्र और मुन्कर नकीर की | |
| ना बालिग़ की ग़ीबत | 55 | ख़ौफ़नाक मन्ज़र कशी | 69 |
| किस बच्चे की ग़ीबत जाइज़ है और | | ज़ेह्नी कश्मकश से नजात मिली | 71 |
| किस की ना जाइज़ ? | 55 | इज्तिमाअ़ में सवाब की निय्यत से | |
| छोटे बच्चे की ग़ीबत की 17 मिसालें | 56 | शिर्कत करनी चाहिये | 72 |
| बच्चों को ग़ीबत मत करने दीजिये | 57 | दो क़ब्रों में होने वाले अ़ज़ाब के अस्बाब | 73 |
| बच्चों की फ़रियाद रसी कीजिये | 58 | आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब है | 73 |
| बच्चों से सादिर होने वाली ग़ीबत की 22 मिसालें | 58 | क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है | 74 |
| बच्चों को झूटे बहलावे मत दीजिये | 59 | क़ब्रों पर फूल डालना मुस्तह़ब है | 74 |
| गूंगा क़ादियानी कैसे मुसल्मान हुवा | 59 | ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त तर है | 75 |
| मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती कबीरा गुनाह है | 60 | मैं समझा शायद तूने ग़ीबत की है | 75 |
| ख़ुदा व मुस्त़फ़ा को ईज़ा देने वाला | 60 | ग़ीबत ज़िना से कब सख़्त है | 76 |
| मोमिन की ह़ुरमत का'बे से बढ़ कर है | 61 | ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ | |
| कामिल मुसल्मान की ता'रीफ़ | 62 | एक मा'लूमाती फ़तवा | 76 |
| दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़त़रा | 62 | ज़िना छोटा गुनाह नहीं | 77 |
| बद अ़क़ी-दगी से तौबा | 63 | दो सांप नोच नोच कर खाएंगे | 77 |
| बद मज़्हबों से दूर रहने की ह़दीसों में ताकीद | 65 | जहन्नमी ताबूत | 77 |
| बद मज़्हब को उस्ताद बनाना | 66 | जन्नत में दाख़िले से मह़रूम | 78 |
| अ़ज़ाबे क़ब्र के होलनाक मनाज़िर | 67 | नज़र दिल में शह्वत का बीज बोती है | 78 |

| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| आंखों में पिघला हुवा सीसा | 79 | ''बड़ों'' को भी चाहिये | |
| आंखों में आग भर दी जाएगी | 79 | ''छोटों'' की ग़ीबत न सुनें | 92 |
| आग की सलाई | 79 | चुग़ुल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता | 94 |
| जहन्नम से आज़ाद होने वाली आंखें | 79 | सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ | |
| तुम जन्नत में मेरे साथ होगे | 79 | का त़र्ज़े अ़मल | 94 |
| इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत | 80 | तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए | 95 |
| इन्फ़िरादी कोशिश सवाब का आसान ज़रीआ़ है | 81 | मह़ब्बतों के चोरों से बचो | 95 |
| जहन्नम का खाना और लिबास मिलेगा | 82 | जुदा होने तक ह़ालते जिहाद में | 95 |
| दोज़ख़ की आग के अंगारे खाएगा | 82 | म-दनी चेनल की बदौलत मौत से | |
| जहन्नम की ग़िज़ा और मश्रूब | 83 | 17 दिन क़ब्ल ईमान मिल गया | 96 |
| बे जा ए'तिराज़ात करने वाले | 84 | मरने से क़ब्ल कोई सुधरता है | |
| ख़ुद चाहे ह़राम खाते हों मगर...... | 84 | तो कोई बिगड़ता है | 97 |
| दूसरे की आंख का तिन्का तो | | ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में | 98 |
| नज़र आता है मगर... | 84 | ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती | 99 |
| ऐसे काम न करो कि लोग ग़ीबत करें | 85 | जन्नत की ज़मानत | 99 |
| म-दनी चेनल पर म-दनी मुज़ा-करा | | जन्नत में आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोसी | 99 |
| सुनने की म-दनी बहार | 88 | जन्नत की 22 झल्कियां | 99 |
| बहार में चार ग़ीबतें | 89 | हूरें पाने का अ़मल | 102 |
| आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सह़ाबा से मह़ब्बत | 90 | मुसल्मानों की आबरू वग़ैरा | |
| तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत | 91 | दूसरे मुसल्मान पर ह़राम है | 102 |
| पीर की नज़र से मुरीद को गिराने की | | तकब्बुर किसे कहते हैं | 103 |
| कोशिश करने वालों को तम्बीह | 91 | किसी को ह़क़ारत से मत देखो | 103 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| मुसल्मान कौन ? मुहाजिर कौन ? | 104 | दिल का सियाह नुक़्ता | 116 |
| इशारे से तक्लीफ़ देना भी जाइज़ नहीं | 105 | नसीह़त का असर न होने की वज्ह | 116 |
| दिल हिला देने वाली ख़ारिश | 105 | ज़बान का ग़लत़ इस्ति'माल | |
| जश्ने विलादत की ब-र-कत से | | क़ब्र में फंसा सकता है | 117 |
| क़िस्मत खुल गई | 106 | क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते ! | 118 |
| चराग़ां देख कर काफ़िर ने | | पुल सिरात़ पर रोक दिया जाएगा | 118 |
| इस्लाम क़बूल कर लिया | 107 | पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के | |
| जश्ने विलादत का चराग़ां | 107 | मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ | 118 |
| एक हज़ार शम्एं | 108 | किसी की तक्लीफ़ देख कर ख़ुश न हों | 119 |
| ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस | 108 | किसी की मुसीबत पर ख़ुश होने की मिसालें | 119 |
| आह ! क़ियामत के रोज़ क्या होगा !! | 109 | तीन काम नहीं कर सकते तो यूं कर लो | 121 |
| मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त लोगों पर स-दक़ा की | 110 | मुसल्मान की इ़ज़्ज़त बुज़ुर्गों की नज़र में | 121 |
| पेशगी मुआ़फ़ करने वाले की मग़्फ़िरत हो गई | 111 | दुन्या जहान की दौलत एक त़रफ़ | |
| इमामे मज़्लूम की अपनी इ़ज़्ज़त के | | और ग़ीबत एक त़रफ़ | 121 |
| मु-तअ़ल्लिक़ सख़ावत | 111 | हरनिया के दर्द का ख़ातिमा | 122 |
| मुआ़फ़ करने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत | 112 | बीमारी की फ़ज़ीलत | 123 |
| जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े | 112 | एक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया | 124 |
| म-दनी वसिय्यतें | 113 | गेहूं का दाना तोड़ने का उख़्रवी नुक़्सान | 124 |
| मैं ने इल्यास क़ादिरी को मुआ़फ़ किया | 114 | जो अपने लिये पसन्द करे | |
| क़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा | 114 | वोही दूसरे के लिये कहे | 125 |
| दिल का दर्द दूर हो गया | 115 | फ़ुलां ने मेरी ग़ीबत की | |
| दिल का बात़िनी मरज़ बाइ़से हलाकत है | 116 | येह जान कर ग़ुस्से न हों | 125 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ग़ीबत करने वाले को | | दीवाने हो जाओ | 132 |
| समझाने का एक नया अन्दाज़ | 125 | जन्नत के मह़ल्लात ह़ासिल करने का नुस्ख़ा | 132 |
| अल्लाहु जब्बार عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार | 126 | ग़ीबत की बदबू | 133 |
| सामने कुछ पीछे कुछ | 127 | हर बाल के बदले एक एक नूर | 134 |
| निफ़ाक़ से नफ़रत | 127 | दर्स देने वालों के लिये दुआ़ए अ़त्त़ार | 135 |
| आज कल निफ़ाक़ का अन्दाज़ | 127 | तन्हा दर्स देने की ब–र–कत | 135 |
| गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम | 128 | मक़्बूलिय्यत का मदार | |
| ताइब को शरमिन्दा किया तो | | क़िल्लत व कसरत पर नहीं | 136 |
| ख़ुद गुनाह में फंस गया | 128 | सिर्फ़ एक फ़र्द ने तस्दीक़ की | 136 |
| दरख़्त लगा रहा हूं | 129 | 950 साल में सिर्फ़ 80 आदमी ईमान लाए | 136 |
| जन्नत में चार दरख़्त लगेंगे | 129 | ग़ीबत गुनाहे कबीरा है | 137 |
| 80 बरस के गुनाह मुआ़फ़ | 130 | आ़लिम के बारे में एह़तियात़ की ह़िकायत | 137 |
| बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्नूअ़ है | 130 | अच्छा गुमान इ़बादत है | 137 |
| बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है | 130 | आ़लिम की ग़ीबत करने वाला रह़मत से मायूस | 138 |
| कब ज़िक्रुल्लाह करना गुनाह है ! | 130 | दोज़ख़ के कुत्ते काटेंगे | 138 |
| इस्तिक़्बाल के लिये अल्लाह अल्लाह की | | रात के सन्नाटे में कुत्ता ह़म्ला आवर हो तो..... | 138 |
| सदाएं बुलन्द करना | 131 | उ़–लमा की ग़ीबत की 15 मिसालें | 139 |
| अपनी नेकियां तुम्हें क्यूं दूं ? | 131 | आ़लिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं | 139 |
| ग़ीबत गोया नेकियां फेंकने की मशीन है | 131 | उ़–लमा की तौहीन के बारे में चन्द सुवाल जवाब | 140 |
| कभी ग़ीबत नहीं की | 132 | आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन | 140 |
| जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा | | जाहिल को आ़लिम से बेहतर जानना कैसा ? | 141 |
| ग़–लत़ियां करता है | 132 | त़ालिबे इ़ल्मे दीन को कूंएं का मेंडक कहना | 141 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| "मौलवी लोग क्या जानते हैं" कहना कैसा ? | 142 | मीठी ज़बान | 153 |
| "दीन पर अ़मल को मौलवियों ने | | ज़िक्रो दुआ़ के अन्दाज़ पर ग़ीबत | 153 |
| मुश्किल बना दिया है" कहना कैसा ? | 142 | क़ियामत का होशरुबा मन्ज़र | 155 |
| मौलवियों वाला अन्दाज़ | 142 | लोग मुत़ा-लबे कर रहे होंगे | 156 |
| "आ़लिम सारे ज़ालिम" कहने का हुक्मे शर-ई | 142 | इस्लाह़ का ह़सीन अन्दाज़ | 157 |
| आ़लिमे दीन को ह़क़ारत से मुल्ला कहना | 142 | ह़ाजी मुश्ताक़ सुनहरी जालियों के रू बरू | 158 |
| "मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" कहना | 143 | मुक़द्दर वालों के सौदे | 159 |
| तौहीने उ़-लमा के मु-तअ़ल्लिक़ 10 पैरे | 143 | दीदारे मुस्त़फ़ा का वज़ीफ़ा | 159 |
| काश ! मैं दरख़्त होता ! | 144 | ग़ीबत नेकियों को जला देती है | 161 |
| काश ! मुझे ज़ब्ह़ कर दिया जाता | 145 | मेरी नेकियां कहां गईं ? | 161 |
| आह ! मेरे गुनाह !! | 145 | क़ियामत में एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब होगा | 161 |
| ता'लीमे क़ुरआन के दो फ़ज़ाइल | 146 | जिस की ग़ीबत की जाए वोह फ़ाएदे में...... | 162 |
| गुस्ताख़े रसूल का अन्जाम | 147 | मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा ह़क़दार है | 162 |
| गर्मियों में रोज़ा आसान मगर चुप रहना मुश्किल | 148 | मां के पूरे हुक़ूक़ अदा नहीं किये जा सकते | 162 |
| जिगर का केन्सर ठीक हो गया | 149 | आधे गुनाह मुआ़फ़ | 163 |
| कोई मरज़ ला इलाज नहीं | 150 | सारी रात की इ़बादत और ग़ीबत | 163 |
| केन्सर के दो इ़लाज | 150 | 100 बरस की नफ़्ली इ़बादत और एक ग़ीबत | 163 |
| ग़ीबत के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े | 151 | ह़ाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत | 164 |
| मोमिनों पर तीन एह़सान करो ! | 151 | जन्नत के दो जोड़े | 165 |
| मुसल्मान की भलाई बयान | | ग़ीबत सुनना भी ह़राम है | 165 |
| करने वालों के लिये फ़िरिश्तों की दुआ़ | 151 | ग़ीबत में शिर्कत के तमाम अन्दाज़ गुनाह हैं | 166 |
| मीठे बोल की मीठी ह़िकायत | 152 | बादशाह की सड़ी हुई लाश | 166 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| सियासी तब्सिरों की बैठकें | 167 | ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने में शरीक है | 176 |
| फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं | 167 | खाने और बोलने से मु-तअ़ल्लिक़ | |
| अख़्बारी ख़बरों का ह़ाल बे ह़ाल | 167 | ग़ीबत की 12 मिसालें | 176 |
| कुत्तों की त़रह़ काटते और नोचते होंगे ! | 168 | पीछे से इशारतन "ठिगना" कहना ग़ीबत है | 176 |
| दुआ़ए कुनूत पढ़ने वाले अपना वा'दा निभाएं | 169 | किसी के फ़ित़री ऐ़ब बयान करना | |
| नेकी की दा'वत देने के लिये | | बड़े ख़ौफ़ की बात है | 177 |
| फ़ासिक़ों के पास जाना जाइज़ है | 170 | किसी को "कमज़ोर है" कहना ! | 177 |
| ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़ | 170 | किसी की कमज़ोरी के इज़्हार की | |
| तीन उ़यूब की नुहूसत की इ़ब्रतनाक ह़िकायत | 170 | ग़ीबत की 9 मिसालें | 178 |
| नज़्अ़ में कुफ़्र बकने का शर-ई मस्अला | 171 | किसी के मा'यूब मरज़ का तज़्किरा करना | 178 |
| अक्सर ख़त़ाएं ज़बान से होती हैं | 172 | लूले लंगड़े की ग़ीबत | 178 |
| रोज़ाना सुब्ह़ आ'ज़ा ज़बान की | | लिबास की ख़ामी बताना भी ग़ीबत है | 179 |
| ख़ुशामद करते हैं | 172 | लिबास के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 24 मिसालें | 179 |
| जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है | 172 | जूए के कारोबार से तौबा | 180 |
| ज़बान की बे एह़तियात़ी की आफ़तें | 173 | जूआ ह़राम है | 181 |
| हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी | 173 | जूआ खेलना गुनाह है | 181 |
| पहले तोलो फिर मुंह से बोलो | 173 | जूआ शैत़ानी काम है | 182 |
| क़ुफ़्ले मदीना लगाने ही में आ़फ़िय्यत है | 174 | जूए में जीता हुवा माल ह़राम है | 182 |
| दिल की सख़्ती का अन्जाम | 174 | गोया ख़िन्ज़ीर के ख़ून और गोश्त में हाथ डुबोया | 183 |
| बक बक की आ़दत कुफ़्र में डाल सकती है | 174 | जूए की दा'वत देने वाला | |
| ग़ीबत करने वाला क़ाबिले रह़्म है | 175 | कफ़्फ़ारे में स-दक़ा करे | 183 |
| "बहुत सोता है" कहना ग़ीबत है | 175 | जूआ की ता'रीफ़ | 184 |

| उ़न्वान | सफ़हा | उ़न्वान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| जूए की 6 सूरतें | 184 | ﴾6﴿ हौज़ पर उलटा लटका हुवा आदमी | 196 |
| जूए से तौबा का त़रीक़ा | 186 | क़ाबील के सियाह कारनामे | 197 |
| फ़ौत शुदा की बुराई करना भी ग़ीबत है | 187 | दर्स में शिर्कत इस्लाह़ का सबब बन गई | 198 |
| ''फ़ुलां ने ख़ुदकुशी कर ली'' | | क़ब्र की रोशनी | 199 |
| येह कहना ग़ीबत है | 187 | क़ब्रें जगमगा रही होंगी | 199 |
| ग़स्साल मुर्दे की बुराई बयान न करे | 188 | दा'वत में ग़ीबत की ह़िकायत | 200 |
| मरने के बा'द बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा ! | 189 | किसी को सुस्त वग़ैरा कहने के | |
| मरे हुए काफ़िर की ग़ीबत | 189 | मु-तअ़ल्लिक़ 19 मिसालें | 200 |
| 6 मुर्दों की सन्सनी ख़ैज़ ह़िकायात | 190 | दोनों जहां की ज़िल्लत | 201 |
| ﴾1﴿ आग का कुरता | 190 | अल्लाह की दी हुई इ़ज़्ज़त | |
| सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ छुपा हुवा नहीं | 190 | कौन छीन सकता है ! | 202 |
| ﴾2﴿ बे दीन की गरदन में सांप | 191 | आक़ा ने ख़्वाब में फ़रमाया | 203 |
| ﴾3﴿ गरदन में सांप लिपटा हुवा था | 191 | मस्जिद भरो इज्तिमाअ़ मरह़बा ! | 204 |
| सह़ाबा के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! | 191 | दाढ़ी के मु-तअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रतनाक ख़्वाब | 205 |
| सह़ाबए किराम का निहायत अदब कीजिये | 192 | आक़ा की मह़ब्बत की निशानी सजा लीजिये | 205 |
| ﴾4﴿ क़ब्र में भयानक काला सांप | 192 | सूद से बड़ा गुनाह कौन सा है ? | 206 |
| धोकाबाज़ी जहन्नम से है | 193 | मुसल्मान की इ़ज़्ज़त पर हाथ डालना | |
| मिलावट वाला माल बेचने का जाइज़ त़रीक़ा | 194 | सूद से बड़ा गुनाह है | 206 |
| ﴾5﴿ परिन्दे ने क़ै की तो उस में से | | मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त का सवाब | 207 |
| इन्सान निकल पड़ा ! | 194 | ग़ीबत से रोकने के चार फ़ज़ाइल | 208 |
| इब्ने मुल्जिम ने मौला अ़ली को | | ग़ीबत करने वाले के सामने ता'रीफ़ | 209 |
| क्यूं शहीद किया ? | 195 | ग़ीबत करने वाले से पीछा छुड़ाने का त़रीक़ा | 209 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ग़ीबत करने वाले को इशारे से नहीं | | अगर घर से सूइयों वाला पुतला | |
| ज़बान से रोकिये | 210 | बरआमद हो जाए तो ! | 221 |
| उ़-लमा को अ़वाम न टोकें | 10 | जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह | |
| आ़लिम को टोकने के मु-तअ़ल्लिक़ | | कैसे ग़लत़ हो सकते हैं ? | 221 |
| फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत | 211 | अगर तकिये के नीचे से ता'वीज़ | |
| जिस को सलामती की दुआ़ दी | | निकल आए तो ? | 222 |
| उसी की ग़ीबत !!! | 212 | मुंह की बदबू के बा वुजूद शराबी न कहा जाए | 222 |
| ख़ौफ़नाक ह़ादिसा होते होते रह गया | 213 | शर-ई सुबूत किसे कहते हैं | 223 |
| क्या ख़ुदकुशी से जान छूट जाती है ? | 214 | तूने चोरी की | 223 |
| आग में अ़ज़ाब | 214 | ...... कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लत़ी की | 223 |
| उसी हथियार से अ़ज़ाब | 214 | तौबा और मुआ़फ़ी का त़रीक़ा | 224 |
| गला घोंटने का अ़ज़ाब | 214 | ड्राइवर की जान बच गई | 225 |
| घर जा कर नेकी की दा'वत देते | 215 | सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रह़मतों का | |
| "गुनाह उठा लिये" की वज़ाह़त | 215 | नुज़ूल होता है | 226 |
| रह़मत पलट जाती है | 216 | ज़िक्र किसे कहते हैं ? | 226 |
| अ़ज़ाबे क़ब्र के तीन हि़स्से | 216 | पूरी क़ौम की ग़ीबत का मस्अला | 227 |
| कुत्तों की शक्ल में उठेंगे | 216 | लंगड़े की नक़्क़ाली | 227 |
| गोश्त की छोटी सी बोटी | 217 | नाम लिये बिग़ैर ग़ीबत करना | 227 |
| हर बात पर साल भर की इ़बादत का सवाब | 217 | मुंह पर भी कह सकता हूं ! | 227 |
| आ़शिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात | 218 | बन्द अल्फ़ाज़ में ग़ीबत | 228 |
| क़ब्र का भयानक तसव्वुर | 219 | कुछ कहूंगा तो ग़ीबत हो जाएगी | 228 |
| भाभी ने जादू करवा दिया है | 220 | ऐ़ब पोशी के लिये झूट जाइज़ | |
| | | होने की एक सूरत | 228 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ख़ुद को ज़िल्लत पर पेश करना जाइज़ नहीं | 229 | ग़ीबत पर उभारने वाली 16 चीज़ों का बयान | 243 |
| दुआ़ के लिये दर-ख़्वास्त देने का त़रीक़ा | 230 | ग़ीबत से बचने का आसान तरीन विर्द | 244 |
| त़बीब को उ़यूब बयान करने का त़रीक़ा | 231 | ग़ीबत का इज्माली (या'नी मुख़्तसर) इ़लाज | 244 |
| रूह़ानी इ़लाज के बस्ते पर राज़दारी का त़रीक़ा | 231 | मियां बीवी के क़बूले इस्लाम की | |
| कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा | 232 | ईमान अफ़्रोज़ बहार | 246 |
| डॉक्टरों और आ़मिलों वग़ैरा के लिये | 233 | मुश्रिका का शोहर मुसल्मान हो गया | |
| ग़ीबत की 12 जाइज़ सूरतें | 233 | निकाह़ का क्या बना ? | 249 |
| पहचान के लिये ज़रूरतन गूंगा | | बे अ़मल मुसल्मानों का किरदार | |
| बहरा वग़ैरा कहना | 234 | क़बूले इस्लाम में रुकावट | 250 |
| जो खुल्लम खुल्ला बुराई करता हो | | ग़ीबत के तफ़्सीली 10 इ़लाज | 251 |
| उस की ग़ीबत | 234 | तन्हा रहे या अच्छी सोह़बत इख़्तियार करे | 251 |
| बत़ौरे अफ़्सोस किसी की बुराई बयान करना | 235 | नेक बन्दे की दुआ़ पर | |
| बत़ौरे अफ़्सोस ग़ीबत करने से | | आमीन कहने की ब-र-कत | 252 |
| बचने ही में आ़फ़िय्यत है | 236 | ज़ाती दोस्तियों में ग़ीबतों से बचना दुश्वार है | 252 |
| काफ़िर और मुरतद की ग़ीबत के अह़काम | 237 | फ़ालतू बैठकों से दूर रहिये | 253 |
| बद मज़्हबों से ह़दीस व आयत न सुनी | 238 | "टाइम पास" करने की बैठक का | |
| बद अ़क़ीदा शख़्स की ग़ीबत | 238 | नक़्शा पेश करनी वाली ह़िकायत | 254 |
| मन्हूस बद मज़्हबों की बात सुननी ही नहीं है | 239 | मेलजोल का अह्ल कौन ? | 254 |
| बद मज़्हबी की बू | 239 | ज़ाहिरी अच्छी सोह़बतों में भी ग़ीबतों का मरज़ ! | 255 |
| बद मज़्हबों के पास बैठना कैसा ? | 240 | हर आने वाला वक़्त पिछले वक़्त से बुरा है | 255 |
| ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लाम | 241 | हर हर फ़र्द ग़ीबत गो नहीं | 256 |
| 25 ग़ैर मुस्लिम क़ैदियों का क़बूले इस्लाम | 242 | 50 सिद्दीक़ीन का सवाब | 256 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ग़ीबत ख़ोर से तो कुत्ता ही भला | 257 | जानवर को बुरा कहना | 268 |
| तो कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों से अच्छा | 257 | मरे हुए कुत्ते की बुराई से भी बचो | 268 |
| ह़सन बसरी और एक गोशा नशीन | 257 | ख़िन्ज़ीर के लिये उ़म्दा फ़िक़्रा इस्ति'माल फ़रमाया | 269 |
| तन्हाई में भलाई ही भलाई है | 258 | खिचड़े को ह़लीम कहना | 269 |
| ग़ीबत से बचने का अनोखा त़रीक़ा | 258 | ज़बान का तीर ख़त़ा नहीं होता | 270 |
| ग़ैर मुस्लिम मुसल्मान हो गया | 259 | ज़बान का ज़ख़्म तलवार के ज़ख़्म से सख़्त होता है | 270 |
| चूहे भगाने के लिये बिल्ली न रखने का ईमान अफ़रोज़ सबब | 260 | ग़ीबत की आ़दत निकालने का बेहतरीन नुस्ख़ा | 270 |
| "भड़ास" निकालना ग़ीबत में डाल सकता है | 261 | ग़ीबत नेकियों की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का सबब बन गई तो ! | 271 |
| मुआ़फ़ करने वालों का बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िला | 262 | माल देने में बख़ील मगर नेकियां लुटाने में सख़ी ! | 272 |
| बुरा कहने से बचने वाले का ख़ुश अन्जाम | 262 | अम्मीजान की बीमारी दूर हो गई | 272 |
| ग़ीबत के अ़ज़ाबात याद कीजिये | 263 | मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी | 273 |
| ग़ीबत का ताइब आख़िर में जन्नत में जाएगा | 263 | सिर्फ़ अपने ऐ़बों को देखिये | 274 |
| ग़ुल मचाएगा, दोज़ख़ में जाएगा | 263 | अपने ऐ़बों को याद करो | 274 |
| सोने का पहाड़ स-दक़ा करने से भी पसन्दीदा | 264 | अपने ऐ़बों को जानने के बा वुजूद...... | 274 |
| ग़ीबत हो जाती तो ख़ैरात करते | 264 | जो अपने ऐ़बों को जान लेता है | 275 |
| दो दिरहम की ह़िकायत | 264 | छुपी हुई बातों की टटोल मत करो ! | 275 |
| मज़्कूरा ह़िकायत की वज़ाह़त | 265 | अल्लाह ऐ़ब पोशी फ़रमाएगा | 275 |
| एक चुप सो100 सुख | 266 | ऐ़ब छुपाओ जन्नत पाओ | 276 |
| परिन्दे की नेकी की दा'वत | 267 | जहन्नम में चीख़ रहे होंगे ! | 276 |
| सुवारी के जानवर पर ला'नत मत करो | 267 | | |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है | 277 | झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत | 291 |
| एक नौ मुस्लिम की दर्दनाक आपबीती | 277 | اَسْتَغْفِرُاللہ कहने की फ़ज़ीलत | 291 |
| ग़ीबत से तौबा का त़रीक़ा | 284 | तौबा के तीन अरकान हैं | 292 |
| बन्दे से भी मुआ़फ़ी मांगे | 284 | सभी ग़ीबत से बचने की तरकीब करें | 292 |
| तौबा के बा'द जिस की ग़ीबत की थी | | **40 ह़िकायात** | 294 |
| उस को पता चल गया तो ? | 285 | दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 294 |
| जिस की ग़ीबत की उस को | | ﴾1﴿ दो ग़ीबत करने वालियों की ह़िकायत | 294 |
| पता चल गया.... फिर मर गया | 285 | इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم | 296 |
| हाए शामते नफ़्स ! | 286 | ﴾2﴿ ग़ीबत से बाज़ रखने का ह़सीन अन्दाज़ | 296 |
| दुन्या ही में मुआ़फ़ करवा लेने में आ़फ़िय्यत है | 287 | ﴾3﴿ रूई वाले ने ख़ियानत की ! | 297 |
| बोहतान की ता'रीफ़ | 287 | ताजिरों की ग़ीबत की 17 मिसालें | 298 |
| बोहतान से तौबा का त़रीक़ा | 287 | मुलाज़िमीन की ग़ीबतों की 18 मिसालें | 299 |
| बोहतान का अ़ज़ाब | 288 | दुकानदारों की आपसी ग़ीबत की 10 मिसालें | 299 |
| गुनाह के इल्ज़ाम का अ़ज़ाब | 288 | ﴾4﴿ गन पोइन्ट पर मोबाइल | |
| शक्की मिज़ाजों को तम्बीह | 288 | छीनने वाला नौ जवान | 300 |
| औ़रत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत | 289 | नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा | 301 |
| एक दूसरे को ग़ीबत से बचाने का त़रीक़ा | 289 | चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم | 301 |
| किसी को काला कहना भी ग़ीबत है | 290 | ﴾5﴿ इमामे आ'ज़म का अपने | |
| बिग़ैर शरमाए फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये | 290 | गुस्ताख़ के साथ हुस्ने सुलूक | 302 |
| गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करना वाजिब है | 291 | ग़ुस्से पर क़ाबू के भी क्या ख़ूब फ़ज़ाइल हैं ! | 302 |
| किसी की बात ग़ीबत न थी मगर | | क्या इमामे आ'ज़म ने ह़सन बसरी की | |
| आप ने ग़ीबत कह दी तो ? | 291 | ग़ीबत की ? | 303 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ﴾6﴿ इमामे आ'ज़म ने कभी | | ﴾18﴿ अम्रद के साथ मज़ाक़ | |
| दुश्मन की भी ग़ीबत नहीं की | 303 | करने वाले की ग़ीबत | 318 |
| आधे अहले ज़मीन से भी | | किसी को "अम्रद परस्त" कहना | 318 |
| इमामे आ'ज़म की अ़क्ल ज़ियादा | 304 | हुस्ने ज़न का जाम पीजिये | 319 |
| ﴾7﴿ क़ब्र वाले ग़ीबत नहीं किया करते | 304 | ﴾19﴿ दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी | 319 |
| ﴾8﴿ मैं नमाज़ से भागता था | 305 | रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा | 320 |
| नमाज़ बुराइयों से बचाती है | 306 | अम्रद को शह्वत से देखना ह़राम है | 320 |
| इत्तिबाए़ न-बवी में ख़ुश्क टहनी हिलाई | 307 | अम्रद के साथ 70 शैत़ान | 321 |
| ﴾9﴿ ग़ीबत के सबब बरज़ख़ में क़ैद | 308 | ﴾20﴿ शैख़ सा'दी के उस्ताज़ ने | |
| ﴾10﴿ हिजड़े की महब्बत में फंसने की वज्ह | 309 | क्या ख़ूब टोका | 322 |
| कहीं ग़ीबत तो नहीं ले डूबी ! | 309 | ग़ीबत से रोकना कब वाजिब है | 322 |
| ﴾11﴿ नमाज़ दोहराओ | 310 | ह़सद के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की सात मिसालें | 323 |
| क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ? | 310 | ﴾21﴿ मिनी सिनेमा घर बन्द कर दिया | 323 |
| ﴾12﴿ एक हीजड़े की मग़्फ़िरत की ह़िकायत | 311 | ﴾22﴿ दोनों में से कौन बेहतर ? | 325 |
| ﴾13﴿ राना बद मआ़श | 312 | ह़क़ीक़ी मुत्तक़ी कौन ? | 325 |
| चाहे गुनाह आस्मान तक पहुंच गए हों | 314 | ﴾23﴿ एक बार की हुई ग़ीबत के सबब | |
| ﴾14﴿ ग़ीबत में लज़्ज़त की वज्ह | 315 | बेहोश हो गए | 326 |
| नाम निहाद भयानक सुकून | 315 | बरोज़े ह़श्र ईंट और धागे का मुत़ा-लबा | 326 |
| ﴾15﴿ मरा हुवा ख़च्चर | 315 | चालीस बरस से रो रहा हूं | 326 |
| ﴾16﴿ इन्सान नुमा कुत्तों का सालन | 316 | ﴾24﴿ ग़ीबत करने वाले का | |
| ﴾17﴿ अनोखी छींक | 316 | वक़ार जाता रहता है | 327 |
| छींक की ब-र-कतें | 317 | ﴾25﴿ माज़ी की याद...... दो नाबीना | 327 |
| | | नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत | 328 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| नाबीना को चलाने का त़रीक़ा | 328 | «36» म-दनी मुन्ने की जान बच गई | 340 |
| ग़ुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत | 328 | «37» 15 सालह मरीज़ा की | |
| «26» म-दनी चेनल की ब-र-कत से | | ईमान अफ़्रोज़ सिह़्ह़त याबी | 341 |
| ग़ीबत से परहेज़ | 329 | «38» लम्बा सियाह आदमी | 343 |
| «27» "वोह मुर्दे की त़रह़ सोया है" कहना | 330 | «39» अम्रद बीनी वग़ैरा की | |
| नफ़्ली कामों के मु-तअ़ल्लिक़ | | हाथों हाथ ग़ैबी सज़ाएं | 343 |
| ग़ीबत की 14 मिसालें | 330 | «40» लिफ़्ट का पंखा | 344 |
| «28» बुराई करने वाले के साथ भलाई की | | ऐ़ब बयान करना ग़ीबत है भी और नहीं भी | 345 |
| अनोखी ह़िकायत | 331 | दुआ़ए अ़त्तार | 346 |
| ईंट का जवाब नायाब गोहर से | 332 | **ग़ीबत की मिसालें** | 347 |
| हुस्ने सुलूक का नतीजा | 332 | दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 347 |
| «29» ह़म्ला आवर के साथ | | एह़याउल उ़लूम से ग़ीबत की | |
| ह़ैरत अंगेज़ ह़ुस्ने सुलूक | 333 | ता'रीफ़ और मिसालें : | 347 |
| «30» दो गुदड़ियों वाला | 333 | आह ! हमारी ज़बान की बे एह़तियातियां !!! | 348 |
| बद गुमानी भी ग़ीबत है | 334 | पड़ोसियों के बारे में ग़ीबतों की 20 मिसालें | 349 |
| «31» पुर असरार ह़बशी | 335 | मंगनी/शादी में ग़ीबतों की 17 मिसालें | 350 |
| «32» ह़बशी ने जूं ही दुआ़ मांगी...... | 336 | रिश्वत से तौबा का त़रीक़ा | 351 |
| «33» औलादे नरीना हो गई | 337 | सुसराली रिश्तों की ग़ीबतों की 22 मिसालें | 351 |
| जितनी निय्यतें ज़ियादा सवाब भी ज़ियादा | 338 | मयके जा कर सुसराल के मु-तअ़ल्लिक़ | |
| «34» ग़ीबत करने वाले को तोह़फ़ा | 338 | की जाने वाली ग़ीबतों की 17 मिसालें | 352 |
| ग़ीबत करने वाले को दुआ़ए ख़ैर से नवाज़िये | 338 | मंगनी टूटने या त़लाक़ होने पर की जाने वाली | |
| «35» इ़त्र की शीशी का तोह़फ़ा | 339 | ग़ीबतों की 37 मिसालें | 352 |

| उ़न्वान | सफ़हा | उ़न्वान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है | 353 | रिश्वत किसे कहते हैं ? | 365 |
| जोड़ों की बीमारी भी गई और | | रिश्वत की एक सूरत | 365 |
| बे रोज़गारी भी गई | 354 | रिश्वत लेने देने वाले पर ला'नत | 365 |
| मुर्दे को अच्छा पड़ोस दो | 355 | अगर कम्पनी वाले डॉक्टर को | |
| गुलाब के फूल या अज़्दहों के मुंह ! | 355 | तोह़फ़ा कह कर दें तो ? | 366 |
| दा'वतों में की जाने वाली | | बिला ह़ाजत टेस्ट या दवा | |
| ग़ीबतों की 14 मिसालें | 356 | लिख देना ख़ियानत है | 366 |
| बेटे के बारे में ग़ीबत की 16 मिसालें | 356 | रिश्वत से तौबा का त़रीक़ा | 366 |
| बाप के बारे में ग़ीबत की 17 मिसालें | 357 | क़ब्र का भयानक सियाह कुत्ता | 367 |
| मां की त़रफ़ से बेटी की ग़ीबत की 13 मिसालें | 358 | ड्राइवर की ग़ीबत की 8 मिसालें | 368 |
| घरों में उ़मूमन बोले जाने वाले ग़ीबतों के | | लम्बे रूट की बसें और मख़्सूस होटलें | 368 |
| अल्फ़ाज़ की 67 मिसालें | 359 | लुक़्मए ह़राम की नुह़ूसत | 369 |
| ज़ाती मुआ-मलात के फ़ुज़ूल | | लुक़्मए ह़लाल की फ़ज़ीलत | 369 |
| सुवालात की 15 मिसालें | 360 | सुवारी और सुवार की ग़ीबत की 15 मिसालें | 369 |
| ख़ानदान के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 15 मिसालें | 360 | रेल्वे का सफ़र और मु-तवक़्क़अ़ 10 ग़ीबतें | 370 |
| परेशान ह़ालों के मु-तअ़ल्लिक़ | | एक हेरोइन्ची की आपबीती | 370 |
| ग़ीबत की 21 मिसालें | 361 | मि'मार व मज़दूर की मु-तवक़्क़अ़ | |
| मरीज़ों की ग़ीबतों की 11 मिसालें | 362 | ग़ीबतों की 12 मिसालें | 373 |
| मरने वाले मुसल्मान की ग़ीबत की 25 मिसालें | 362 | होटल वाले की मु-तवक़्क़अ़ | |
| डॉक्टर के बारे में ग़ीबत की 17 मिसालें | 363 | ग़ीबत की 17 मिसालें | 373 |
| डॉक्टरों की रहनुमाई के लिये | 364 | ताजिरों के मु-तअ़ल्लिक़ 26 ग़ीबतें | 374 |
| दवा की कम्पनियों की त़रफ़ से | | सेठ और मुलाज़िम की एक दूसरे के | |
| डॉक्टरों को रिश्वत | 364 | मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 8 मिसालें | 374 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| मुख़्तलिफ़ कारीगरों के मु-तअ़ल्लिक़ | | किसी का फ़ोन न आने की सूरत में | |
| ग़ीबतों की 14 मिसालें | 374 | ग़ीबत की 9 मिसालें | 384 |
| दफ़्तर के ख़ादिम के मु-तअ़ल्लिक़ | | किसी को फ़ोन करते देख कर | |
| ग़ीबतों की 20 मिसालें | 375 | की जाने वाली ग़ीबतों की 11 मिसालें | 384 |
| मकान व साहिबे मकान की | | SMS के हवाले से | |
| ग़ीबत की 16 मिसालें | 375 | की जाने वाली ग़ीबतों की 10 मिसालें | 384 |
| किरायादार के बारे में की जाने वाली | | CHATTING के हवाले से | |
| ग़ीबतों की 16 मिसालें | 376 | की जाने वाली ग़ीबतों की 3 मिसालें | 385 |
| सियासी तब्सिरों में की जाने वाली | | INTERNET के हवाले से की जाने | |
| ग़ीबत की 35 मिसालें | 376 | वाली ग़ीबतों की 5 मिसालें | 385 |
| फ़ुज़ूल जुम्लों की 14 मिसालें | 377 | चोक दर्स की बहार, आक़ा का दीदार | 385 |
| थोक बन्द ग़ीबतों की चार मिसालें | 378 | दा'वते इस्लामी दुरूदो सलाम के | |
| बक़र ईद पर किये जाने वाले | | जाम पिलाती है | 387 |
| फ़ुज़ूल सुवालात की 19 मिसालें | 379 | नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जल्वा सामानियां | 387 |
| झूट पर मजबूर करने वाले | | दोस्तों में की जाने वाली ग़ीबतों की 92 मिसालें | 388 |
| सुवालात की 14 मिसालें | 380 | मुसन्निफ़ के बारे में की जाने वाली | |
| सब से ख़त़रनाक अबुल फ़ुज़ूल | 380 | ग़ीबतों की 19 मिसालें | 389 |
| फ़ोन पर की जाने वाली | | वेबसाइट के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तवक़्क़अ़ 5 ग़ीबतें | 389 |
| फ़ुज़ूल बातों की 5 मिसालें | 381 | इस्तिन्जा ख़ाने की लाइन में ग़ीबत की 8 मिसालें | 390 |
| फ़ोन करने के हवाले से ग़ीबत की 13 मिसालें | 381 | जिस्मानिय्यत में ग़ीबत की 58 मिसालें | 390 |
| फ़ोन वुसूल कर के सवाब कमाइये | 382 | इ़बादात के बारे में ग़ीबत की 20 मिसालें | 391 |
| किसी का फ़ोन आने की सूरत में | | ह़ाफ़िज़े क़ुरआन की ग़ीबतों की 11 मिसालें | 392 |
| ग़ीबत की 17 मिसालें | 383 | सफ़रे ह़ज के बारे में की जाने वाली 34 ग़ीबतें | 393 |

| उ़न्वान | सफ़्हा | उ़न्वान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| ह़ज से लौटने वाले से | | त़-लबा में की जाने वाली ग़ीबतों की 26 मिसालें | 408 |
| फ़ुज़ूल सुवालात की 13 मिसालें | 395 | असातिज़ा की ग़ीबतों की 22 मिसालें | 409 |
| ना'त ख़्वान के बारे में ग़ीबत के | | म-दनी माह़ोल में की जाने वाली | |
| अल्फ़ाज़ की 25 मिसालें | 395 | ग़ीबत की 67 मिसालें | 410 |
| ना'त ख़्वानी/जल्से या इज्तिमाअ़ में | | म-दनी क़ाफ़िले के मु-तअ़ल्लिक़ | |
| होने वाली ग़ीबतों की 19 मिसालें | 396 | की जाने वाली ग़ीबत की 26 मिसालें | 412 |
| ला उबाली नौ जवान | 396 | म-दनी माह़ोल से रूठे हुए को मनाने के | |
| गुनाह की दस नुहू़सतें | 398 | ग़ीबतों भरे अन्दाज़ का फ़र्ज़ी ख़ाका | 414 |
| ना'त ख़्वानों के माबैन होने वाली | | अफ़्सोस ! हमें बात करनी ही नहीं आती | 414 |
| ग़ीबतों की 40 मिसालें | 399 | ना जाइज़ गुफ़्त-गू जहन्नम में गिराएगी | 415 |
| ईको साउन्ड वालों और केमेरा मेन के | | पहले इज्तिमाअ़ में आता था अब नहीं आता | |
| मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 13 मिसालें | 401 | उसे समझाने के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तवक़्क़अ़ | |
| मुबल्लिग़ीन व मुक़र्रिरीन के मु-तअ़ल्लिक़ | | 14 गुनाहों भरे जुम्ले और ग़ीबतें | 415 |
| ग़ीबतों की 10 मिसालें | 401 | बात अमानत होने का क़रीना | 417 |
| इमाम व ख़त़ीब के बारे में की जाने वाली | | सुधरने की जिद्दो जह्द जारी रखिये | 417 |
| मु-तवक़्क़अ़ ग़ीबतों की 37 मिसालें | 402 | तो क्या तू तौबा को मा'मूली शै ख़याल करता है ? | 418 |
| मस्जिद इन्तिज़ामिया के मु-तअ़ल्लिक़ की | | "मजालिस" के बारे में की जाने वाली | |
| जाने वाली ग़ीबतों की 15 मिसालें | 403 | ग़ीबतों की 16 मिसालें | 419 |
| मज़्हबी त़ब्क़े में की जाने वाली | | मजलिस बराए इज्तिमाअ़ और | |
| ग़ीबतों की 68 मिसालें | 404 | मु-तवक़्क़अ़ 11 ग़ीबतें | 420 |
| ग़ीबत की मु-तफ़र्रक़ 60 मिसालें | 405 | सिनेमा घर के मालिक की तौबा | 421 |
| वक़्फ़ के अजीरों के मु-तअ़ल्लिक़ | | इज्तिमाए ज़िक्र में गुनहगार भी बख़्शे जाते हैं | 423 |
| ग़ीबतों की 15 मिसालें | 406 | ह़ारिसीन व ख़ादिमीन के बारे में | |
| बग़ल में केन्सर के ग़ुदूद | 407 | की जाने वाली ग़ीबतों की 41 मिसालें | 424 |

| उ़न्वान | सफ़हा | उ़न्वान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| म-दनी चेनल के मु-तअ़ल्लिक़ | | सिर्फ़ लोगों के डर से गुनाह छोड़ने का नुक़्सान | 437 |
| ग़ीबत की 15 मिसालें | 425 | ग़ीबत से बचने की तरबियत | |
| **ग़ीबत के बारे में सुवाल जवाब** | | किस त़रह़ ह़ासिल हो ? | 439 |
| **और दीगर अहम मा'लूमात** | 427 | हमारी अक्सरिय्यत को बात करना ही नहीं आती | 440 |
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 427 | ग़ीबत के ज़रूरी अह़काम सीखना फ़र्ज़ है। | 440 |
| ग़ीबत के जाइज़ ना जाइज़ होने का कैसे पता चले ? | 428 | ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा | 441 |
| क्या ग़ीबत सुनते ही सामने वाले को | | क्या शिकायत सुन ही नहीं सकते ? | 441 |
| गुनहगार समझ लिया जाए | 429 | तन्ज़ीमी मसाइल का ह़ल और ग़ीबत | 443 |
| जाइज़ समझ कर सुन ले फिर पता चले कि | | फ़ितने फैलाने की वई़दें | 443 |
| येह ना जाइज़ ग़ीबत थी तो.....? | 429 | फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत | 444 |
| अ़वाम जाइज़ व ना जाइज़ ग़ीबत में | | इन्फ़िरादी कोशिश के ग़लत़ अन्दाज़ का | |
| कैसे तमीज़ करें ? | 430 | फ़र्ज़ी मुका-लमा | 444 |
| घर में ग़ीबत से किस त़रह़ बचे ? | 431 | इन्फ़िरादी कोशिश म-दनी कामों की जान है | 446 |
| दा'वते इस्लामी को जाहिलों का | | आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? | 447 |
| टोला कहना कैसा ? | 431 | सुवालात के बजाए तरग़ीबात से काम लीजिये | 448 |
| बहुत सारे मुसल्मानों की इकट्ठी ईज़ा | 432 | वा'दा करने के अल्फ़ाज़...... | 449 |
| इज्तिमाई दिल आज़ारियों के | | ''वा'दा नहीं इरादा कर लीजिये'' | |
| 12 जुम्लों की मिसालें | 433 | कहलवाना कैसा ? | 450 |
| सुवाल करने वाले के भूलने पर हंसना | 434 | ''कोशिश करूंगा'' कहलवाना | 450 |
| इस किताब के बारे में वस्वसा | 435 | اِنْ شَآءَاللّٰه कह कर भी बात को निभाइये | 450 |
| बद गुमानी मत कीजिये | 436 | बद गुमानी मत कीजिये | 451 |
| फ़तावा र-ज़विय्या में एक वस्वासी की गोशमाली | 436 | हां में सर हिला देना | 451 |
| दा'वत में जाने के लिये अच्छी अच्छी | | वा'दा ख़िलाफ़ी मुनाफ़िक़ की निशानियों में से है | 451 |
| निय्यतें कर लेनी चाहिएं | 437 | वा'दा ख़िलाफ़ी की वई़दात पर मब्नी चार रिवायात | 451 |

| उ़न्वान | सफ़हा |
|---|---|
| झूटा वा'दा करना ह़राम है | 452 |
| वा'दा ख़िलाफ़ी किसे कहते हैं ? | 452 |
| वा'दा पूरा करने की निय्यत न हो मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा हो जाए तो...... | 452 |
| शर-ई क़बाह़त हो तो वा'दा पूरा न करे | 452 |
| मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली | 453 |
| निगरान की तब्दीली पर तश्वीश न किया करें | 456 |
| हमें निगरान का क़ुसूर बताया जाए | 458 |
| तमाम ओ़हदे दारान के लिये लाइक़े तक़्लीद मिसाल | 459 |
| ज़िम्मेदारी सोंपने के लिये मा'लूमात | 460 |
| नेक कामों में ग़ैर ह़ाज़िर रहने वालों का पूछना | 461 |
| ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग | 462 |
| **अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत मअ़ एक अहम म-दनी वसिय्यत** | 467 |
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 467 |
| म-दनी आक़ा का अ़फ़्वो दर गुज़र | 467 |
| ह़िसाब में आसानी के तीन अस्बाब | 468 |
| जन्नत का मह़ल | 468 |
| मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है | 468 |
| मुअ़ज़्ज़ज़ कौन ? | 469 |
| जो मुआ़फ़ नहीं करता उसे मुआ़फ़ नहीं किया जाएगा | 469 |
| दुन्या व आख़िरत के अफ़्ज़ल अख़्लाक़ | 469 |
| मुआ़फ़ करो मुआ़फ़ी पाओ | 469 |
| मुआ़फ़ करने वालों की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत | 470 |
| क़ातिलाना ह़म्ले की कोशिश करने वाले को मुआ़फ़ फ़रमा दिया | 470 |
| ज़ुल्म करने वाले के लिये दुआ़ए हिदायत | 471 |
| जादू करने वाले से दर गुज़र | 471 |
| शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم | 471 |
| रोज़ाना 70 बार मुआ़फ़ करो | 472 |
| गालियों भरे ख़ुत़ूत़ पर आ'ला ह़ज़रत का अ़फ़्वो दर गुज़र | 472 |
| एक अहम म-दनी वसिय्यत | 473 |
| फ़तावा र-ज़विय्या के अहम इक़्तिबासात | 475 |
| जिस ने तशख़्ख़ुस तब्दील कर लिया ! | 476 |
| बुरा चरचा करना ह़राम है | 476 |
| दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इत्मामे ह़ुज्जत | 477 |
| अगर आप दा'वते इस्लामी के साथ काम करना नहीं चाहते तो...... | 478 |
| या अल्लाह ! तू गवाह रहना | 479 |
| ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग | 480 |
| मैं ने इल्यास क़ादिरी को मुआ़फ़ किया | 481 |
| क़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा | 482 |
| गूंगी बोल उठी ! | 482 |
| **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल** | 484 |
| मआख़िज़ो मराजेअ़ | 491 |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

# ग़ीबत की तबाह कारियां

**शैत़ान बहुत रोकेगा मगर येह किताब पूरी पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को मा'लूम हो जाएगा कि शैत़ान क्यूं नहीं पढ़ने दे रहा था !**

**दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते** अ़ल्लामा **मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा । और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۲۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**अक्सरिय्यत ग़ीबत की लपेट में है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मां बाप, भाई बहन, मियां बीवी, सास बहू, सुसर दामाद, नन्द भावज बल्कि अहले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताद व शागिर्द, सेठ व नोकर, ताजिर व गाहक, अफ़्सर व मज़दूर, मालदार व नादार, ह़ाकिम व मह़कूम, दुन्यादार व दीनदार, बूढ़ा हो या जवान अल ग़रज़ तमाम दीनी और दुन्यवी शो'बों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले **मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत इस वक़्त ग़ीबत की ख़ौफ़नाक आफ़त की**

**लपेट में है,** अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! बे जा बक बक की आ़दत के सबब आज कल हमारी कोई मजलिस (बैठक) उ़मूमन **ग़ीबत** से ख़ाली नहीं होती।

**ग़ीबत की तबाह कारियां एक नज़र में :** बहुत सारे परहेज़ गार नज़र आने वाले लोग भी बिला तकल्लुफ़ **ग़ीबत** सुनते, सुनाते, मुस्कुराते और ताईद में सर हिलाते नज़र आते हैं, चूंकि **ग़ीबत** बहुत ज़ियादा आ़म है इस लिये उ़मूमन किसी की इस त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं होती कि **ग़ीबत** करने वाला नेक परहेज़ गार नहीं बल्कि फ़ासिक़ व गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होता है। कुरआनो ह़दीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मुन्तख़ब कर्दा **ग़ीबत की 20 तबाह कारियों** पर एक सर-सरी नज़र डालिये, शायद ख़ाइफ़ीन के बदन में झुरझुरी की लहर दौड़ जाए ! जिगर थाम कर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ۞ **ग़ीबत** ईमान को काट कर रख देती है ۞ **ग़ीबत** बुरे ख़ातिमे का सबब है ۞ ब कसरत **ग़ीबत** करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ۞ **ग़ीबत** से नमाज़ रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है ۞ **ग़ीबत** से नेकियां बरबाद होती हैं ۞ **ग़ीबत** नेकियां जला देती है ۞ **ग़ीबत** करने वाला तौबा कर भी ले तब भी सब से आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा, **अल ग़रज़ ग़ीबत गुनाहे कबीरा, क़त़ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है** ۞ **ग़ीबत** ज़िना से सख़्त तर है ۞ मुसल्मान की **ग़ीबत** करने वाला सूद से भी बड़े गुनाह में गिरिफ़्तार है ۞ **ग़ीबत** को अगर समुन्दर में डाल दिया जाए तो सारा समुन्दर बदबूदार हो जाए ۞ **ग़ीबत** करने वाले को जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा ۞ **ग़ीबत** मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मु-तरादिफ़ है ۞ **ग़ीबत** करने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार होगा ! ۞ **ग़ीबत** करने वाला तांबे के नाख़ुनों से अपने चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था ۞ **ग़ीबत** करने वाले को उस के पहलूओं से गोश्त काट काट कर खिलाया जा रहा था ۞ **ग़ीबत** करने वाला क़ियामत में **कुत्ते की शक्ल** में उठेगा ۞ **ग़ीबत** करने वाला जहन्नम का बन्दर होगा ۞ **ग़ीबत** करने वाले को दोज़ख़ में ख़ुद अपना ही गोश्त खाना पड़ेगा ۞ **ग़ीबत** करने वाला जहन्नम के

खौलते हुए पानी और आग के दरमियान मौत मांगता दौड़ रहा होगा और उस से जहन्नमी भी बेज़ार होंगे ۞ **ग़ीबत** करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाएगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله!　　اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**म-दनी ह़िकायत : सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में लिखते हैं : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब जिहाद के लिये रवाना होते या सफ़र फ़रमाते तो हर दो मालदार के साथ एक नादार मुसल्मान को कर देते कि येह ग़रीब उन की ख़िदमत करे और वोह उस को खिलाएं पिलाएं इस त़रह़ हर एक का काम चलता रहे। इसी त़रह़ एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना **सलमान** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه दो आदमियों के साथ किये गए थे। एक रोज़ आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه सो गए और खाना तय्यार न कर सके तो उन दोनों ने उन्हें खाना त़लब करने के लिये बारगाहे रिसालत में भेजा। **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के "ख़ादिमे मत़्बख़" (या'नी बावर्ची ख़ाने के ख़ादिम) ह़ज़रते सय्यिदुना **उसामा** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه थे। उन के पास खाना ख़त्म हो चुका था लिहाज़ा उन्हों ने कहा : मेरे पास कुछ नहीं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना **सलमान** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दोनों रु-फ़क़ा को आ कर बताया तो उन्हों ने कहा : "**उसामा** (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ने बुख़्ल किया।" जब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : "मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देखता हूं।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हम ने गोश्त खाया ही नहीं। फ़रमाया : तुम ने ग़ीबत की और जो मुसल्मान की **ग़ीबत** करे उस ने मुसल्मान का गोश्त खाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 951, मुलख़्ख़सन, تفسیرِ بَغَوی ج٤ ص ١٩٤)

**अल्लाह** रब्बुल इबाद तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًاؕ اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُؕ (پ۲۶الحجرات ۱۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए ? तो येह तुम्हें गवारा न होगा।

**ग़ीबत ह़राम होने की ह़िक्मत : ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی नक़्ल करते हैं : किसी की बुराई बयान करने में ख़्वाह कोई सच्चा ही क्यूं न हो फिर भी उस की **ग़ीबत** को ह़राम क़रार देने में ह़िक्मत मोमिन की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त में मुबा-लग़ा करना है और इस में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि इन्सान की इ़ज़्ज़त व हुरमत और इस के हुक़ूक़ की बहुत ज़ियादा ताकीद है, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की इ़ज़्ज़त को गोश्त और ख़ून के साथ तश्बीह दे कर मज़ीद पुख़्ता व मुअक्कद कर दिया और इस के साथ ही मुबा-लग़ा करते हुए इसे मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मु-तरादिफ़ क़रार दिया चुनान्चे पारह 26 **सू-रतुल हु़जुरात** आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाया : اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُؕ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम में कोई पसन्द करेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा) इ़ज़्ज़त को गोश्त से तश्बीह देने की वज्ह येह है कि इन्सान की बे इ़ज़्ज़ती करने से वोह ऐसी ही तक्लीफ़ मह़सूस करता है जैसा कि उस का गोश्त काट कर खाने से उस का बदन दर्द मह़सूस करता है बल्कि इस से भी ज़ियादा। क्यूं कि अ़क़्ल मन्द के नज़्दीक मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की क़ीमत ख़ून और गोश्त से बढ़ कर है। समझदार आदमी जिस त़रह़ लोगों का गोश्त खाना अच्छा नहीं समझता इसी त़रह़ उन की इ़ज़्ज़त पामाल करना ब द-र-जए औला अच्छा तसव्वुर नहीं करता क्यूं कि येह एक तक्लीफ़ देह अम्र (या'नी मुआ़-मला) है और फिर अपने भाई का गोश्त खाने की ताकीद लगाने की वज्ह येह है कि किसी के लिये अपने भाई का गोश्त खाना तो बहुत दूर की बात है (मा'मूली सा) चबाना भी मुम्किन नहीं होता लेकिन दुश्मन का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है। (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج۲ ص۱۰)

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

**ग़ीबत के मु-तअ़ल्लिक़ एक ए'तिराज़ का जवाब :** इमाम अह़मद बिन ह़जर عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر ने ग़ीबत के बारे में समझाने के लिये ख़ुद ही ए'तिराज़ वारिद किया और ख़ुद ही इस का जवाब इर्शाद फ़रमाया है लिहाज़ा मुला-ह़ज़ा हो :

**ए'तिराज़ :** किसी के मुंह पर उस का ऐ़ब बयान करना ह़राम है क्यूं कि इस से उसे हाथों हाथ तक्लीफ़ पहुंचती है जब कि ग़ैर मौजू-दगी में **ग़ीबत** करने से उसे तक्लीफ़ नहीं पहुंचती क्यूं कि उसे इस की इत्त़िलाअ़ ही नहीं होती।

**जवाब :** इस का एक जवाब येह है कि (पारह **26 सू-रतुल ह़ुजुरात** आयत नम्बर 12 में इस लफ़्ज़) **مَيْتًا** (या'नी मुर्दा) की क़ैद से येह ए'तिराज़ ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाता है वोह इस त़रह़ कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से ख़ुद खाए जाने वाले को (ज़ाहिरन) कोई तक्लीफ़ नहीं होती, ह़ालां कि येह इन्तिहाई घटिया और बुरा फ़े'ल है। ताहम वोह मुर्दा जान ले कि मेरा गोश्त खाया जा रहा है तो उसे ज़रूर तक्लीफ़ पहुंचे। इसी त़रह़ किसी की ग़ैर मौजू-दगी में उस के ऐ़ब बयान करना भी ह़राम है क्यूं कि जिस की **ग़ीबत** की गई अगर उसे इत्त़िलाअ़ हो जाए तो उसे भी तक्लीफ़ होगी। (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکبائِر ج۲ ص۱۰)

**ग़ीबत व बोहतान का फ़र्क़ : सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **ग़ीबत** क्या है? अ़र्ज़ की गई **: अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का **रसूल** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं। फ़रमाया : (ग़ीबत येह है कि) तुम अपने भाई का इस त़रह़ ज़िक्र करो जिसे वोह ना पसन्द करता है। अ़र्ज़ की गई : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो? फ़रमाया : जो बात तुम कह रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की **ग़ीबत** की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर **बोहतान** बांधा। (صَحیح مُسلِم ص۱۳۹۷ حدیث ۲۵۸۹)

**मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْحَنّان फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** सच्चे ऐ़ब बयान करने को कहते हैं और **बोहतान** झूटे ऐ़ब बयान करने को, **ग़ीबत** होती है सच मगर है ह़राम। अक्सर गालियां सच्ची होती हैं मगर हैं बे ह़याई व ह़राम, (मा'लूम

हुवा कि) हर सच ह़लाल नहीं होता। खुलासा येह है कि **ग़ीबत** एक गुनाह है **बोहतान** दो गुनाह। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 456)

**ग़ीबत की ता'रीफ़ बहारे शरीअ़त में : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने **ग़ीबत की ता'रीफ़** इस त़रह़ बयान की है : किसी शख़्स के पोशीदा ऐब को उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 175)

**ग़ीबत की ता'रीफ़ अज़ इब्ने जौज़ी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अफ़्सोस कि आज हमारी अक्सरिय्यत को **ग़ीबत की ता'रीफ़** तक मा'लूम नहीं ह़ालां कि इस के बारे में ज़रूरी अह़काम जानना फ़र्ज़ उ़लूम में से है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 300 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''आंसूओं का दरिया''** सफ़ह़ा 256 पर **ह़ज़रते** अ़ल्लामा **अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान** बिन जौज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में **ग़ीबत** की जो ता'रीफ़ बयान फ़रमाई है, वोह येह है : तू **अपने भाई** को ऐसी चीज़ के ज़रीए याद करे कि अगर वोह सुन ले या येह बात उसे पहुंचे तो उसे **ना गवार गुज़रे** अगर्चे तू इस में सच्चा हो ख़्वाह उस की **ज़ात** में कोई नक़्स (ख़ामी) बयान करे या उस की अ़क़्ल में या उस के **कपड़ों** में या उस के **फ़े'ल** या **क़ौल** में कोई कमी बयान करे या उस के **दीन** या उस के **घर** में कोई **नक़्स** (ऐब) बयान करे या उस की सुवारी या उस की औलाद, उस के गुलाम या उस की कनीज़ में कोई ऐब बयान करे या उस से मु-तअ़ल्लिक़ (या'नी तअ़ल्लुक़ रखने वाली) किसी भी शै का (बुराई के साथ) तज़्किरा करे यहां तक कि तेरा येह कहना कि उस की आस्तीन या दामन लम्बा है सब **ग़ीबत** में दाख़िल हैं। (بَحرُ الدُّموع ص١٨٧)

**ग़ीबत क्या है ? : ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی नक़्ल करते हैं : उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इन्सान के किसी ऐसे ऐब का ज़िक्र करना जो उस में मौजूद हो **ग़ीबत** कहलाता है, अब वोह ऐब चाहे उस के दीन, दुन्या, ज़ात,

अख़्लाक़, माल, औलाद, बीवी, ख़ादिम, ग़ुलाम, इमामा, लिबास, ह़-रकातो स-कनात, मुस्कुराहट, दीवानगी, तुर्श रूई और ख़ुश रूई वग़ैरा किसी भी ऐसी चीज़ में हो जो उस के मु-तअ़ल्लिक़ हो। **जिस्मानिय्यत में ग़ीबत की मिसालें :** अन्धा, लंगड़ा, गन्जा, ठिगना लम्बा, काला और ज़र्द वग़ैरा कहना। **दीन में ग़ीबत की मिसालें :** फ़ासिक़, चोर, ख़ाइन, ज़ालिम, नमाज़ में सुस्ती करने वाला, और वालिदैन का ना फ़रमान वग़ैरा कहना। मज़ीद आगे चल कर नक़्ल फ़रमाते हैं : कहा जाता है कि "**ग़ीबत** में खजूर की सी मिठास और शराब जैसी तेज़ी और सुरूर है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस आफ़त से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमारी त़रफ़ से **ग़ीबत** वालों के हुक़ूक़ (महज़ अपने फ़ज़्लो करम से) ख़ुद ही अदा फ़रमाए क्यूं कि उस عَزَّوَجَلَّ के इलावा इन्हें कोई शुमार नहीं कर सकता। (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكبائِرج ٢ ص١٩)

***गु-नहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाखों से हैं सिवा***
***मगर ऐ अ़फ़ू तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है***

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 355)

(अपने कलाम के इस मक़्त़अ़ के मिस्रए ऊला में आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने ख़ूब इन्किसारी फ़रमाई है। लिहाज़ा "रज़ा" की जगह सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने अपने गुनाहों के तसव्वुर से "गदा" लिखा है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मैं अ़लाक़े का नामी गिरामी बद मआ़श था ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** की आ़दत से सच्ची तौबा कीजिये, ज़बान की हि़फ़ाज़त का ज़ेह्न बनाइये, तौबा पर इस्तिक़ामत पाने के लिये "दा'वते इस्लामी" के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये और सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनिये आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक

**म-दनी बहार** पेश की जाती है । **एक** मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का **म-दनी क़ाफ़िला** जुमादल उख़्रा 1429 सि.हि. जून 2008 सि.ई. में ओकाड़ा (पंजाब, पाकिस्तान) पहुंचा । वहां पर एक बा रीश (या'नी दाढ़ी वाले) उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई से इन की मुलाक़ात हुई । उन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ जल्वे लुटा रहा था । दौराने गुफ़्त-गू उन्हों ने इन्किशाफ़ किया कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में आने से पहले मैं अपने अ़लाक़े का नामी गिरामी **बद मआ़श** था । मैं शराब का तो ऐसा रसिया था कि जब कहीं जाता तो **शराब** के कनस्तर मेरी गाड़ी में धरे होते । मैं अपने साथ गन मेन रखता और ख़ुद भी मुसल्लह़ रहता था । मेरे काले करतूतों की वज्ह से लोग मुझ से इस क़दर **नफ़रत** करते कि मेरे क़रीब से गुज़रना पसन्द न करते थे ।

उन्हों ने "म-दनी लाइन" कैसे इख़्तियार की, इस की तफ़्सील कुछ यूं है कि उन के अ़लाक़े में **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने वाले **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ीन उन्हें भी नेकी की दा'वत देने के लिये आया करते, मगर वोह ग़फ़्लत की गहरी वादियों में गुम थे इस लिये उन की दा'वत तवज्जोह से सुनने के बजाए उन का हाथ पकड़ कर बोलते : "मेरे साथ बैठ कर शराब पियो ।" उन को कभी डांटते तो कभी झाड़ते मगर वोह मौक़अ़ पा कर फिर **इन्फ़िरादी कोशिश** के लिये आ जाया करते । यूं एक त़वील अ़र्से वोह उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहे और वोह सुनी अनसुनी करते रहे । एक रोज़ उन के दिल में ख़याल आया कि येह बेचारे इतने अ़र्से से मुझ पर कोशिशें कर रहे हैं क्यूं न आज इन की बात तवज्जोह से सुन ली जाए देखूं तो सही **आख़िर येह कहते क्या हैं !** अब की बार इस्लामी भाई "नेकी की दा'वत" देने आए तो उन्हों ने बड़ी तवज्जोह से उन की दा'वत सुनी **अल्लाह** की शान कि उन की दा'वत उन के दिल में उतर गई और उन के साथ मस्जिद की त़रफ़ चल दिये, ग़ालिबन होश संभालने के बा'द ज़िन्दगी में पहली बार वोह मस्जिद के अन्दर दाख़िल हुए थे । **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत और मस्जिद में होने वाले सुन्नतों भरे बयान ने उन के दिल की कैफ़िय्यत बदल कर रख दी । उन्हों ने इस्लामी भाइयों के पास आना जाना शुरूअ़ कर दिया और फिर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के सिल्सिले

में मुरीद बन गए। मुरीद तो क्या हुए उन के अन्दाज़ बदलते चले गए। उन्हों ने सब गुनाहों से तौबा कर ली, शराब पीना छोड़ दी, **नमाज़ी** बन गए और चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ **दाढ़ी** मुबारक सजा ली और सर **इमामा शरीफ़** से "सर सब्ज़" हो गया। लोग उन की इस तब्दीली पर हैरान थे। बा'ज़ों को तो यक़ीन ही नहीं आ रहा था कि इस क़दर बिगड़ा हुवा इन्सान भला कैसे सुधर सकता है ! एक रोज़ अ़जीब चुटकुला हुवा कि दो **अख़्बारी नुमायन्दे** उन के क़रीब से गुज़रे तो एक ने उन की त़रफ़ इशारा कर के दूसरे को बताया येह वोही शख़्स है ! उन का तब्दील शुदा हुल्या देख कर दूसरे को यक़ीन न आया और उस ने उन से बा क़ाइदा तस्दीक़ की, कि क्या आप वाक़ेई "वोही" हैं ? उन के हां कहने पर वोह दम बख़ुद रह गया और कहने लगा कि अपनी तब्दीली का राज़ बताइये हम **अख़्बार** में आप की ख़बर छापेंगे। मगर उन्हों ने मन्अ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की **ब-र-कतें** हैं कि इन जैसा इन्सान भी सलातो सुन्नत की राह पर चलने लगा और मुआ़-शरे का एक बा इ़ज़्ज़त फ़र्द बन गया।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से राहे जन्नत मिल गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ की गई **इन्फ़िरादी कोशिश** की कैसी **ब-र-कतें** नसीब हुईं और बरबादिये आख़िरत के रास्ते पर चलने वाले इस्लामी भाई को **जन्नत** में ले जाने वाले रास्ते पर गामज़न होने की तौफ़ीक़ मिल गई। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि घबराए और शरमाए बिग़ैर हर त़रह़ के इस्लामी भाइयों को **नेकी की दा'वत** पेश किया करें, क्या अ़जब कि आप के चन्द कलिमात किसी की **दुन्या व आख़िरत संवरने** का सबब और आप के लिये **सवाबे जारिया** का ज़रीआ़ बन जाएं। नेकी की दा'वत के सवाब की तो क्या ही बात है !

**हर कलिमे के बदले एक साल की इबादत का सवाब : एक** बार ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।

(مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص٤٨)

*दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा — मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा*

*नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत — बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 300)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**अक्सर घर मैदाने जंग बने हुए हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **ग़ीबत** इन्तिहाई तबाह कार है, इसी **ग़ीबत** के बाइ़स आज अक्सर घर मैदाने कारज़ार बने हुए हैं, ख़ानदानों और बिरादरियों में, मह़ल्लों और बाज़ारों में, अ़वाम व ख़वास के अक्सर त़ब्क़ों में बल्कि सुन्नत की ख़िदमत का जज़्बा रखने वाले मु-तअ़द्दिद अफ़राद के दरमियान भी इसी **ग़ीबत** के बाइ़स नफ़रत की मन्हूस दीवारें क़ाइम हैं। आह ! मरने के बा'द नाज़ुक बदन **ग़ीबत** का होलनाक अ़ज़ाब कैसे बरदाश्त कर सकेगा ! सुनो ! सुनो !

**सीनों से लटके हुए लोग : सरवरे काएनात,** शाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल अ़र्दि वस्समावात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मे'राज की रात मैं ऐसी औ़रतों और मर्दों के पास से गुज़रा जो अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे, तो मैं ने पूछा : **ऐ जिब्राईल !** येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह मुंह पर ऐ़ब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले हैं और इन के मु-तअ़ल्लिक़

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۙ ﴿١﴾

(پ ۳۰ الھُمَزہ: ۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे, पीठ पीछे बदी करे।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۵ص۳۰۹حدیث۶۷۵۰)

**तांबे के नाख़ुन : सरकारे** दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मैं शबे मे'राज ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों को **तांबे के नाख़ुनों** से नोच रहे थे। मैं ने पूछा **: ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? कहा : येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे और उन की **इ़ज़्ज़त** ख़राब करते थे।

(سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص۳۵۳حدیث ٤٨٧٨)

**औ़रतें ज़ियादा ग़ीबतें करती हैं : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : उन पर ख़ारिश का अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया था और नाख़ुन तांबे के धारदार और नोकीले थे उन से सीना चेहरा खुजलाते थे और ज़ख़्मी होते थे। **ख़ुदा** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह येह अ़ज़ाब सख़्त अ़ज़ाब है, येह वाक़िआ़ बा'दे क़ियामत होगा जो हु़ज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने आंखों से देखा मज़ीद फ़रमाते हैं : या'नी येह लोग मुसल्मानों की **ग़ीबत** करते थे और उन की आबरू रेज़ी (इ़ज़्ज़त ख़राब) करते थे येह काम **औ़रतें** ज़ियादा करती हैं उन्हें इस से इ़ब्रत लेनी चाहिये। (मिरआत, जि. 6, स. 619)

**पहलूओं से गोश्त काट कर खिलाने का अ़ज़ाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कभी तन्हाई में ग़ौर कीजिये कि हमारी कमज़ोरी की ह़ालत तो येह है कि मा'मूली ख़ारिश भी बरदाश्त नहीं होती, नाख़ुन का मा'मूली चरका (या'नी हलका सा चीरा) भी सहा नहीं जाता तो अगर **ग़ीबत** कर के बिग़ैर तौबा किये मर गए और **तांबे के नाख़ुनों** से चेहरा और सीना छीलने और नोचने की सज़ा दी गई तो इस सख़्त तरीन अज़िय्यत की सहार क्यूंकर होगी ! **ग़ीबत** के एक और दिल

हिला देने वाले अ़ज़ाब की रिवायत सुनिये और थर थर कांपिये । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस रात मुझे आस्मानों की सैर कराई गई तो मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा **जिन के पहलूओं से गोश्त काट कर ख़ुद उन ही को खिलाया जा रहा था ।** उन्हें कहा जाता, खाओ ! तुम अपने भाइयों का गोश्त खाया करते थे । मैं ने पूछा **: ऐ जिब्रईल !** येह कौन हैं ? अ़र्ज़ की : आक़ा ! येह लोगों की **ग़ीबत** किया करते थे । (دَلائِلُ النُّبُوَّة لِلْبَیْہقی ج۲ص۳۹۳،تَنبِیهُ الغافِلین ص۸۶)

**क़ियामत में मुर्दा भाई का गोश्त खिलाया जाएगा :** हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जो दुन्या में अपने (जिस) भाई का गोश्त खाएगा (या'नी **ग़ीबत** करेगा) वोह (या'नी जिस की ग़ीबत की थी) क़ियामत के दिन उस के क़रीब लाया जाएगा और उस से कहा जाएगा : "इसे मुर्दा ह़ालत में (भी) खा जिस त़रह़ इसे ज़िन्दा खाता था ।" पस वोह उसे खाएगा और तेवरी चढ़ा लेगा (या'नी मुंह बिगाड़ेगा) और (सख़्त तक्लीफ़ की वज्ह से) शोरो ग़ुल मचाएगा ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطّبَرانی ج۱ص۴۵۰حدیث۱۶۵۶)

**ज़बान जलने से मह़फ़ूज़ रहेगी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबतों** और गुनाहों भरी बातों से रिश्ता तोड़िये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की यादों, मीठे मीठे **मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तों से रिश्ता जोड़िये ख़ूब दुरूदो सलाम के लिये ज़बान का इस्ति'माल कीजिये और ख़ूब ख़ूब तिलावते क़ुरआने पाक कीजिये और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल कीजिये । चुनान्चे "रूहुल बयान" में येह ह़दीसे क़ुदसी है : जिस ने एक बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم को अल ह़म्द शरीफ़ के साथ मिला कर (या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن ख़त्मे सूरह तक) पढ़ा तो तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया, उस की तमाम नेकियां क़बूल फ़रमाईं और उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये और उस की ज़बान को हरगिज़ न जलाऊंगा और उस को अ़ज़ाबे क़ब्र, अ़ज़ाबे नार, अ़ज़ाबे क़ियामत और बड़े ख़ौफ़ से नजात दूंगा । ( تفسیرروحُ البیان ج۱ ص۹ ) मिलाने का मज़ीद वाज़ेह़

त़रीक़ा मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْ۔مِلْ۔حَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ सूरह पूरी कीजिये।

*रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैत़ां से — तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब*
*गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद — मुआ़फ़ कर दे न सह पाऊंगा सज़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**नमाज़ व रोज़े की नूरानिय्यत गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ीबत की तबाह कारियों में से येह भी है कि इस की नुहू़सत से इ़बादत की **नूरानिय्यत** रुख़्सत हो जाती है चुनान्चे **एक** बार का ज़िक्र है कि दो **रोज़ादार** जब नमाज़े ज़ोह्र या अ़स्र से फ़ारिग़ हुए तो (ग़ैब जानने वाले) प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम दोनों वुज़ू करो और नमाज़ दोहराओ और रोज़ा पूरा करो और दूसरे दिन इस रोज़े की क़ज़ा करना। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह हुक्म किस लिये हुवा ? फ़रमाया : तुम ने फ़ुलां शख़्स की **ग़ीबत** की है। (شُعَبُ الْاِیمان ج٥ ص ٣٠٣ حدیث ٦٧٢٩)

**दो[2] फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ीबत इ़बादत के ह़क़ में बड़ी तबाह-कार है, इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ रोज़ा **सिपर** है, जब तक उसे फाड़ा न हो। अ़र्ज़ की गई : किस चीज़ से फाड़ेगा ? इर्शाद फ़रमाया : झूट या **ग़ीबत** से। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ٣ ص ٢٦٤ حدیث ٤٥٣٦) ﴾2﴿ रोज़ा इस का नाम नहीं कि खाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो येह है कि लग़्व व बेहूदा बातों से बचा जाए।

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٢ ص٦٧ حدیث ١٦١١)

**क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ? :** **ग़ीबत** से रोज़ा वग़ैरा इबादत की नूरानिय्यत चली जाती है। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 984 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एह़्तिलाम हुवा या **ग़ीबत** की तो रोज़ा न गया (دُرِّمُختار ج۳ ص ۴۲۱، ۴۲۸) अगर्चे **ग़ीबत बहुत सख़्त कबीरा** (गुनाह) है। क़ुरआने मजीद में **ग़ीबत** करने की निस्बत फ़रमाया : "जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।" और ह़दीस में फ़रमाया : "**ग़ीबत** ज़िना से भी सख़्त तर है।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۵ ص۶۳ حدیث ۶۵۹۰) अगर्चे **ग़ीबत** की वज्ह से रोज़े की नूरानिय्यत जाती रहती है। सफ़ह़ा 996 पर फ़रमाते हैं : झूट, चुग़ली, **ग़ीबत**, गाली देना, बेहूदा (या'नी बे ह़याई की) बात, किसी को तक्लीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व ह़राम हैं रोज़े में और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से रोज़े में **कराहत** आती है।

**खौलते पानी और आग के दरमियान दौड़ने वाला :** नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : चार त़रह़ के जहन्नमी जो कि **ह़मीम** और **जह़ीम** (या'नी खौलते पानी और आग) के दरमियान भागते फिरते वैल व सुबूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे। इन में से एक शख़्स वोह होगा कि जो अपना गोश्त खाता होगा। जहन्नमी कहेंगे : इस बद बख़्त को क्या हुवा हमारी तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा किये देता है ? कहा जाएगा : येह "बद बख़्त" लोगों का गोश्त खाता (या'नी **ग़ीबत** करता) और **चुग़ली** करता था। (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص۸۹ رقم ۴۹)

**ख़ौफ़े गुनाह हो तो ऐसा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आह ! जहन्नम का ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब !! **ग़ीबत** व मा'सियत से कनारा कशी निहायत ही ज़रूरी है वरना सख़्त सख़्त सख़्त मुसीबत का सामना हो सकता है। हमें अपने गुनाहों पर नदामत होनी और इस की वज्ह से दहशत खानी चाहिये। काश ! नसीब हो जाए ! इस ज़िम्न में एक **ह़िकायत** पढ़िये और तड़पिये : एक मर्तबा आ़बिदीन या'नी नेक बन्दों का एक क़ाफ़िला जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी मौजूद थे सफ़र पर चला, कस्रते इबादत के सबब उन आ़बिदीन की आंखें अन्दर की त़रफ़

हो गई थीं, पाउं सूज गए थे और इतने कमज़ोर हो गए थे जैसे कि ख़रबूज़े के छिलके ! ऐसा महसूस होता था गोया अभी अभी क़ब्रों से निकल कर आए हैं ! राह में एक आ़बिद बेहोश हो गए और बा वुजूद येह कि वोह दिन सख़्त सर्दी के थे उन के सर से ब सबबे दहशत पसीना टपकने लगा ! होश आने के बा'द लोगों के इस्तिफ़्सार पर बताया : जब मैं इस जगह से गुज़रा तो मुझे याद आया कि फ़ुलां रोज़ इस मक़ाम पर मैं ने **गुनाह** किया था, इस ख़याल से मेरे दिल में ह़िसाबे आख़िरत की दहशत त़ारी हो गई और मैं बेहोश हो गया। (اِحیاءُ العُلوم ج٤ص٢٢٩ مُلَخَّصاً)

*किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब*

*तुलें न ह़श्र में अ़त्तार के अ़मल मौला बिला ह़िसाब ही तू इस को बख़्शना या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 83)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**तूने अपने भाई का गोश्त खाया है :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर थे कि **एक आदमी उठ कर चला गया।** उस के जाने के बा'द एक शख़्स ने उस की **ग़ीबत** की तो नबिय्ये ह़ाशिर, रसूले साबिरो शाकिर, मह़बूबे रब्बे क़ादिर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म सादिर फ़रमाया : "ख़िलाल करो !" उस ने अ़र्ज़ की : किस वज्ह से ख़िलाल करूं मैं ने गोश्त तो नहीं खाया ! तो इर्शाद फ़रमाया : बेशक तूने अपने भाई का गोश्त खाया (या'नी **ग़ीबत** की) है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطّبَرانی ج١٠ ص١٠٢ حدیث ١٠٠٩٢)

## "ग़ीबत बहुत बड़ा गुनाह है" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से बैठक से उठ कर जाने वाले की ग़ीबत की 16 मिसालें

**इस** ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो कि अपनी मजलिस या'नी बैठक से

उठ कर जाने वाले के बारे में इस त़रह़ की बातें कर के **ग़ीबतों** का इरतिकाब करते हैं म–सलन ❁ यार ! वोह गया, जान छूटी ❁ इस ने बोर कर दिया था ❁ ख़्वाह म ख़्वाह बह़्स कर रहा था ❁ अपनी चलाए जा रहा था ❁ किसी की नहीं सुनता था ❁ डेढ़ हुश्यार है ❁ चिकनी करता है ❁ बात बात पर हा हा कर के हंसता था ❁ सीधे मुंह बात कहां कर रहा था ❁ ज़रा वायड़ा (या'नी लुच्चा, टेढ़ा) है ❁ हां भई ऐसों से **अल्लाह** बचाए ❁ पेट का भी थोड़ा हलका है ❁ B.B.C है ❁ ढोल है ❁ तुम ने वोह बात जो उस के सामने की ना इस का अब ख़ूब डंका बजाएगा ❁ हां यार ! आयिन्दा येह आए तो बात बदल दिया करो क्यूं कि उस के पेट में कोई बात नहीं रहती वग़ैरा वग़ैरा ।

***तू ग़ीबत की आ़दत छुड़ा या इलाही　　बुरी बैठकों से बचा या इलाही***

***हो बेज़ार दिल तोह़मतों चुग़लियों से　　मुझे नेक बन्दा बना या इलाही***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللہ !　　اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मुंह से गोश्त निकला : उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि–दतुना **उम्मे स–लमह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से किसी ने **ग़ीबत** के बारे में (मा'लूमात के लिये) सुवाल किया तो उम्मुल मुअमिनीन ने फ़रमाया : एक दफ़्आ़ जुमुआ़ के रोज़ मैं सुब्ह़ के वक़्त उठी, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र के लिये तशरीफ़ ले गए । इतने में अन्सार की औ़रतों में से एक **पड़ोसन** मेरे पास आई और कुछ मर्दों और औ़रतों की **ग़ीबत** करने लगी, मैं भी **ग़ीबत** में शरीक हुई और हम दोनों हंसने लगीं । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुब्ह़ की नमाज़ अदा कर के तशरीफ़ लाए तो उन की आवाज़ सुन कर हम दोनों **ख़ामोश** हो गईं । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने घर के दरवाज़े में खड़े हो कर अपनी चादरे मुबारक का कोना पकड़ कर अपनी नाक पर रख लिया और इर्शाद फ़रमाया :

उफ़ ! जाओ तुम दोनों **क़ै** कर के पानी से (मुंह) साफ़ करो। मैं ने क़ै की तो मुंह से बहुत सा **गोश्त** निकला ! इसी त़रह़ दूसरी औ़रत ने भी **गोश्त** की क़ै की। मैं (या'नी सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गोश्त निकलने की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : **येह गोश्त उस शख़्स का है जिस की तुम ने ग़ीबत की है।** (تفسیردُرِّ مَنثور ج۷ ص۵۷۲)

## "औ़रतें दोज़ख़ में ज़ियादा होंगी" के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से औ़रतों में की जाने वाली ग़ीबतों की 23 मिसालें

**इस** ह़दीसे पाक को इस्लामी बहनें बार बार सुनें और इ़ब्रत से सर धुनें ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! जब येह मिल कर बैठती हैं तो उ़मूमन ग़ैर मौजूद इस्लामी बहन की ख़ैर नहीं रहती, इन की आपस में **ग़ीबत की 23 मिसालें** कुछ इस त़रह़ हैं : ❁ वोह त़लाक़न (या'नी त़लाड़ी) है ❁ उस की सवा गज़ की ज़बान है ❁ अपने मियां को कभी सुख का सांस नहीं लेने दिया ❁ अपने मियां के सामने बहुत ज़बान चलाती है ❁ हां भई ! फिर मियां के हाथों पिटती भी है ❁ जी ! जी ! फिर भी इस की नाक कहां है ! ❁ लगता है त़लाक़ लेगी तब सीधी बैठेगी ❁ उस ने अपनी बहू के नाक में दम कर रखा है ❁ बहू से नोकरानी की त़रह़ काम करवाती है ❁ अरे भई ! बहू को अपने हाथ से मारती है ❁ बहू को रोटी कहां देती है ! ❁ बहू बेचारी बीमार है तब भी आराम नहीं करने देती ❁ पड़ोसनों से लड़ती रहती है ❁ चिड़चिड़ी बहुत है ❁ मियां के हाथ में दो पैसे आ गए हैं तो मिज़ाज आस्मान पर पहुंच गया है ❁ बच्चों पर चीख़ती बहुत है ❁ ऐसी कन्जूस है कि चमड़ी जाए मगर दमड़ी न जाए ❁ ख़ाली ग़रीब बनती है काफ़ी सोना दबा रखा है ❁ बच्ची बहुत शरीफ़ है मगर इस की मां की वज्ह से बेचारी की मंगनी टूटी है ❁ उ़म्र काफ़ी हो गई है मगर इस को कहां कोई लेता है ❁ बेटी जवान हो गई है मगर घर में नहीं बिठाती ❁ दो दो बेटियों की शादी की मगर पड़ोस में किसी को झूटे मुंह भी दा'वत न दी ❁ वोह तो सुसराल में झगड़ कर मयके आ बैठी है।

**ज़िन्दगी की सांसें दा 'वते इस्लामी के नाम हैं : इस्लामी बहनो !** ग़ीबत से सच्ची तौबा कीजिये और ज़बान की हिफ़ाज़त की तरकीब बनाइये इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। दा'वते इस्लामी का म-दनी काम भी करती रहिये और **दा 'वते इस्लामी** के सुन्नतों के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में भी शिर्कत करती रहिये, तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा कीजिये, ज़रूरतन जुम्लों की नोक पलक संवारी गई है। चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) के एक शह्र की इस्लामी बहन का दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले ज़िन्दगी का ज़ियादा वक़्त गुनाहों में गुज़रता था, फ़िल्में डिरामे देखना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, नमाज़ से जी चुराना, पर्दा न करना अल ग़रज़ उन में कई त़रह़ की बुराइयां मौजूद थीं, फिर उन के वालिदैन ने उन्हें समझा बुझा कर दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी के लिये दाख़िल करा दिया, लेकिन पढ़ाई में उन का दिल नहीं लगता था, जामिअ़तुल मदीना से छुट्टियां करतीं और दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ में भी नहीं जाती थीं। एक दिन एक इस्लामी बहन ने उन्हें (मक-त-बतुल मदीना की) VCD दी जिस का नाम था ''दिल को कैसा होना चाहिये ?'' उन्हों ने वोह सुनी और उन के दिल की दुन्या बदल गई और उन्हों ने म-दनी बुरक़अ़ पहन लिया और दर्से निज़ामी के साथ साथ मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) में भी पढ़ना शुरूअ़ कर दिया है, म-दनी कामों में भी ह़िस्सा लेने लगी हैं ह़त्ता कि डिवीज़न सत़ह़ पर म-दनी काम की भी सआ़दत मिली, इस्तिक़ामत के साथ दर्से निज़ामी जारी है, उन की ज़िन्दगी में येह म-दनी इन्क़िलाब दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आया है, उन की निय्यत है कि ज़िन्दगी की जितनी सांसें हैं वोह सब दा'वते इस्लामी के नाम हैं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

**तुम ने अभी अभी गोश्त खाया है : एक** बार सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मकाने आलीशान में तशरीफ़ फ़रमा थे जब कि **अस्हाबे सुफ़्फ़ा** मस्जिद में थे और ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ैद बिन साबित** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **अह़ादीसे मुबा-रका** सुना रहे थे, इतने में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में **गोश्त** ह़ाज़िर किया गया। **अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा** ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहने लगे कि जाओ ! ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जा कर अ़र्ज़ करो कि हम ने कई दिनों से गोश्त नहीं खाया ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें कुछ गोश्त इनायत फ़रमा दें। जब ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ैद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से चले गए तो येह ह़ज़रात आपस में कहने लगे : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उसी त़रह़ सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से **मुलाक़ात** करते हैं जिस त़रह़ हम करते हैं फिर येह कैसे हमें अह़ादीसे मुबा-रका सुनाते हैं ! जब ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ैद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िर हुए और **अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा** की दर-ख़्वास्त पेश की तो **ग़ैबदान** आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जाओ उन से कहो कि **तुम ने अभी अभी गोश्त खाया है !**'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वापस आ कर उन्हें बताया तो वोह ह़ज़रात **क़सम** खा कर कहने लगे कि हम ने तो कई दिनों से गोश्त नहीं खाया ! फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए और दोबारा अ़र्ज़ की तो फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''उन्हों ने अभी अभी गोश्त खाया है !''** वोह वापस हुए और **अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा** को येही जवाब बता दिया। अब की बार वोह सब सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में ह़ाज़िर हो गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने अभी अभी **अपने भाई का गोश्त** खाया है और इस का असर तुम्हारे दांतों में मौजूद है, थूक कर देख लो गोश्त की सुर्ख़ी को।'' उन्हों ने ऐसा ही किया तो वहां **ख़ून ही ख़ून** था, सब ने **तौबा** की, अपनी बात से रुजूअ़ किया और ह़ज़रते **सय्यिदुना ज़ैद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुआ़फ़ी मांगी। (تَنبِیہُ الغافِلین ص۸٦)

**मुर्दार ख़ोर जहन्नमी : हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात जहन्नम में ऐसे लोग देखे जो मुर्दार खा रहे थे ! इस्तिफ़्सार फ़रमाया (या'नी पूछा) **: ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह वोह हैं जो लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे। और एक शख़्स देखा जिस का रंग सुर्ख़ और आंखें इन्तिहाई नीली थीं तो पूछा **: ऐ जिब्रईल !** येह कौन है ? अ़र्ज़ की : येह (हज़रते सालेह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की) ऊंटनी की कूंचें (या'नी टांगें) काटने वाला है।

(مُسند اِمام احمد بن حنبل ج ١ ص ٥٥٣ حديث ٢٣٢٤)

**मुर्दार का गोश्त खाना आसान नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बज़ाहिर **ग़ीबत** करना बहुत ही आसान लगता है, मगर याद रखिये ! जहन्नम में मुर्दार का गोश्त खाना कोई आसान बात नहीं, आज ज़िन्दगी में बकरे का ताज़ा कच्चा गोश्त कोई नहीं खा सकता, बल्कि अगर पकाने में कसर रह जाती है, नमक मसा-लह़ा कम होता है या ठन्डा हो जाता है तो बसा अवक़ात खाने को जी नहीं करता तो ज़रा तसव्वुर कीजिये कि कच्चा गोश्त और वोह भी ज़ब्ह़ शुदा नहीं मुर्दार, फिर ह़लाल ह़ैवान का नहीं मरे हुए इन्सान का ! ऐसा गोश्त भला कौन खा सकता है ! मज़ीद इस रिवायत में जिस गहरे सुर्ख़ और नीले रंग के आदमी का ज़िक्र है : वोह क़ौमे समूद का सब से परले द-रजे का शरीर और ख़बीसुन्नफ़्स शख़्स **"क़ुदार बिन सालिफ़"** था जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस ऊंटनी की मुबारक टांगें काटी थीं।

*मुझे ग़ीबतों से बचा या इलाही गुनाहों की आ़दत छुड़ा या इलाही*
*पए मुर्शिदी दे मुआ़फ़ी ख़ुदाया न दोज़ख़ में मुझ को जला या इलाही*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**जहन्नमी बन्दर व ख़िन्ज़ीर : ग़ीबत** की तबाहकारी तो देखिये कि मश्हूर **वलिय्युल्लाह ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं हमें येह बात पहुंची है कि **: ग़ीबत** करने वाला जहन्नम में बन्दर की शक्ल में बदल जाएगा, **झूटा** दोज़ख़ में कुत्ते की शक्ल में बदल जाएगा और **ह़ासिद** जहन्नम में सुवर की शक्ल में बदल जाएगा। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص ١٩٤)

**चार[4] नसीह़तें : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** सफ़ह़ा 163 ता 164 पर है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम बिन अदहम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم इर्शाद फ़रमाते हैं **:** मैं **कोहे लुबनान** में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सोह़बत में रहा उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की, कि जब लोगों में जाओ तो उन्हें इन चार बातों की नसीह़त करना **:** (1) जो **पेट भर** कर खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी (2) जो **ज़ियादा सोएगा** उस की उ़म्र में ब-र-कत न होगी (3) जो सिर्फ़ **लोगों की ख़ुशनूदी** चाहेगा वोह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो जाएगा (4) जो **ग़ीबत** और **फ़ुज़ूल गोई** ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।

(مِنْهاجُ الْعابِدِين (عربی) ص٩٨)

**ग़ीबत ईमान के लिये नुक़्सान देह है :** मह़बूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **: ग़ीबत** और **चुग़ली** ईमान को इस त़रह़ काट देती हैं जिस त़रह़ चरवाहा दरख़्त को काट देता है। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ ص ٣٣٢ حديث ٢٨)

**कुफ़्र पर मरने वाले के अ़ज़ाबे क़ब्र की कैफ़िय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा **ग़ीबत** से مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ है। आह ! जिस का ईमान बरबाद हो गया ख़ुदा की क़सम ! वोह कहीं का न रहेगा, जब कुफ़्र पर मरने वाला बद नसीब आदमी क़ब्र में पहुंचेगा तो **मुन्कर नकीर** के सुवालात के दुरुस्त जवाबात न दे सकेगा और फिर ख़ौफ़नाक अ़ज़ाबात का सिलसिला शुरूअ़ हो जाएगा। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"**

जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 110 ता 111 पर **सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : उस वक़्त एक पुकारने वाला आस्मान से पुकारेगा कि येह **झूटा** है, इस के लिये **आग का बिछोना** बिछाओ और **आग का लिबास** पहनाओ और **जहन्नम** की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दो। उस की गरमी और लपट उस को पहुंचेगी और उस पर अ़ज़ाब देने के लिये **दो फ़िरिश्ते** मुक़र्रर होंगे, जो अन्धे और बहरे होंगे, उन के साथ लोहे का **गुर्ज़** होगा कि पहाड़ पर अगर मारा जाए तो ख़ाक हो जाए, उस **हथोड़े** से उस को मारते रहेंगे। नीज़ **सांप** और **बिच्छू** उसे अ़ज़ाब पहुंचाते रहेंगे, नीज़ आ'माल अपने मुनासिब शक्ल पर मु–तशक्किल हो कर **कुत्ता** या **भेड़िया** या और शक्ल के बन कर उस को ईज़ा पहुंचाएंगे।

**जहन्नम में हमेशा रहने की लरज़ा ख़ैज़ कैफ़िय्यत :** **क़ियामत** के मैदान में भी काफ़िर पर त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबात का सिल्सिला होगा और बिल आख़िर मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा जहां उसे हमेशा हमेशा रहना होगा। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मुख़्तलिफ़ दिल हिला देने वाले अ़ज़ाबों का तज़्किरा करने के बा'द फ़रमाते हैं : फिर आख़िर में कुफ़्फ़ार के लिये येह होगा कि उस के क़द बराबर आग के सन्दूक़ में उसे बन्द करेंगे, फिर उस में आग भड़काएंगे और आग का क़ुफ़्ल (या'नी आग का ताला) लगाया जाएगा, फिर येह सन्दूक़ आग के दूसरे सन्दूक़ में रखा जाएगा और उन दोनों के दरमियान आग जलाई जाएगी और उस में भी आग का क़ुफ़्ल लगाया जाएगा, फिर इसी त़रह़ उस को एक और सन्दूक़ में रख कर और आग का क़ुफ़्ल लगा कर आग में डाल दिया जाएगा, तो अब हर काफ़िर येह समझेगा कि इस के सिवा अब कोई आग में न रहा, और येह अ़ज़ाब बालाए अ़ज़ाब है और अब हमेशा उस के लिये अ़ज़ाब है। जब सब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो लेंगे और जहन्नम में सिर्फ़ वोही रह जाएंगे जिन को हमेशा के लिये उस में रहना है, उस वक़्त जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान मौत को मेंढे की त़रह़ ला कर खड़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

करेंगे, फिर मुनादी (पुकारने वाला) जन्नत वालों को पुकारेगा : वोह डरते हुए झांकेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहां से निकलने का हुक्म हो, फिर जहन्नमियों को पुकारेगा वोह ख़ुश होते हुए झांकेंगे कि शायद इस मुसीबत से रिहाई हो जाए, फिर उन सब से पूछेगा कि इसे पहचानते हो ? सब कहेंगे : हां ! येह मौत है। वोह ज़ब्ह कर दी जाएगी और कहेगा : ऐ अहले जन्नत ! हमेशगी है, अब मरना नहीं और ऐ अहले नार ! हमेशगी है, अब मौत नहीं, उस वक़्त उन (या'नी अहले जन्नत) के लिये ख़ुशी पर ख़ुशी है और इन (या'नी दोज़ख़ियों) के लिये ग़म बालाए ग़म । نَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. (या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआफ़ी का सुवाल करते हैं और दीन व दुन्या और आख़िरत में आफ़िय्यत मांगते हैं)

(बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 170, 171)

*अ़त्तार है ईमां की हिफ़ाज़त का सुवाली*

*ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी से*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 406)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**नफ़्ली इबादत न करने वाले से नफ़रत करना कैसा ? : हज़रते** सय्यिदुना आ़मिर बिन वासिला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि महबूबे रब्बे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की (ज़ाहिरी) मुबारक ह़यात में एक साहिब किसी क़ौम के पास से गुज़रे तो उन्हों ने उन्हें सलाम किया, उन लोगों ने सलाम का जवाब दिया। जब वोह साहिब वहां से तशरीफ़ ले गए तो उन में से एक शख़्स ने उन साहिब के बारे में कहा : ''मैं **अल्लाह** तआ़ला के लिये इस शख़्स से **नफ़रत** करता हूं।'' जब उन साहिब को इस बात की ख़बर पहुंची तो उन्हों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारा माजरा अ़र्ज़ किया और फ़रियाद की, कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन को बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाइये कि मुझ से क्यूं नफ़रत करते हैं ? नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुलवा कर पूछा तो उन्हों ने इक़रार किया कि मैं ने येह बात कही है । इर्शाद फ़रमाया : तुम इस से क्यूं नफ़रत करते हो ? अ़र्ज़ की : मैं इन साहिब का पड़ोसी हूं और मैं इन की **भलाई** का ख़्वाहां हूं, **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने कभी भी **फ़र्ज़ नमाज़** के इलावा इन्हें (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ते हुए नहीं देखा, जब कि फ़र्ज़ नमाज़ तो हर नेक व बद पढ़ता है । फ़रियादी साहिब ने अ़र्ज़ की : या **रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन से पूछिये, क्या इन्हों ने मुझे फ़र्ज़ नमाज़ में **ताख़ीर** करते हुए देखा है ? या मैं ने **वुज़ू** में कोई कोताही की है ? या रुकूअ़ व **सुजूद** में कोई कमी की है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा तो उन्हों ने इन्कार करते हुए अ़र्ज़ की : मैं ने इस में ऐसी कोई बात नहीं देखी । फिर उस ने मज़ीद अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने इन साहिब को र-मज़ानुल मुबारक के इलावा कभी (नफ़्ली) **रोज़े** रखते हुए नहीं देखा, इस महीने (या'नी माहे र-मज़ानुल मुबारक) का **रोज़ा** तो हर नेक व बद रखता है । येह सुन कर फ़रियादी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन से पूछिये, क्या मैं ने कभी र-मज़ानुल मुबारक में **रोज़ा** छोड़ा है ? या रोज़े के ह़क़ में कोई कमी की है ? पूछने पर उन्हों ने अ़र्ज़ की : नहीं । फिर उस ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला की क़सम ! मैं ने नहीं देखा कि इन साहिब ने **ज़कात** के इलावा किसी मिस्कीन या साइल को कुछ दिया हो या **अल्लाह** तआ़ला के रास्ते में ख़र्च किया हो, **ज़कात** तो हर नेक व बद अदा करता है । फ़रियादी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन से पूछिये, क्या इन्हों ने मुझे **ज़कात** की अदाएगी में **कोताही** करते हुए देखा है ? या मैं ने कभी इस में टालम टोल से काम लिया है ? दरयाफ़्त करने पर उन्हों ने अ़र्ज़ की : नहीं । **हुज़ूरे** पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस नफ़रत करने वाले से फ़रमाया : **उठ जाओ, शायद येह तुम से बेहतर हो ।** (مُسند اِمام احمد بن حنبل ج ۹ ص ۲۱۰ حدیث ۲۳۸۶۴)

## "ग़ीबत मत करो" के नव हुरूफ़ की निस्बत से मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में ग़ीबत की 9 मिसालें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जिस त़रह़ फ़राइज़ व वाजिबात की कोताही करने वालों की कोताहियों का बिला इजाज़ते शर–ई पीछे से तज़्किरा **ग़ीबत** है, **मुस्तह़ब्बात** व नवाफ़िल में भी बुराई बयान करने के त़ौर पर तज़्किरा करने का येही हुक्म है। क्यूं कि येह भी **ईज़ाए मुस्लिम** का बाइस है। **मुस्तह़ब्बात** व नवाफ़िल में सुस्ती करने वालों की **ग़ीबतों की 9 मिसालें** मुला–ह़ज़ा हों : ❁ वोह तहज्जुद नहीं पढ़ता ❁ उस ने ज़िन्दगी में कभी आ़शूरा का रोज़ा नहीं रखा ❁ इश्राक़ चाश्त नहीं पढ़ता ❁ वोह अव्वाबीन क्या पढ़ेगा ! उस को येह तो पूछो कि येह नवाफ़िल किस वक़्त पढ़े जाते हैं ❁ वोह तबर्रुक कह कर नियाज़ तो खा लेता है मगर इस के लिये चन्दा कभी नहीं देता ❁ मेरा सेठ ज़रा वायड़ा (या'नी टेढ़ा) है तीन दिन के म–दनी क़ाफ़िले के लिये छुट्टी ही नहीं देता ❁ मैं ने उस से कहा भी कि सब पढ़ रहे हैं तुम भी सलातुत्तौबा पढ़ लो मगर उस ने नहीं पढ़ी ❁ क़ुरआन ख़्वानी में सब से आख़िर में पहुंचता है शायद इस को क़ुरआन पढ़ना नहीं आता ❁ वोह ना'त ख़्वानी में ताख़ीर से बल्कि नियाज़ के वक़्त पहुंचता है।

**ग़ीबत के अन्दाज़ : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**उ़यूनुल ह़िकायात**" ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 313 पर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस मुह़ासिबी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** से बच ! बेशक वोह ऐसा अ़जीब शर (या'नी बुराई) है जिसे इन्सान ख़ुद आगे बढ़ कर ह़ासिल करता है। तेरा उस चीज़ के बारे में क्या ख़याल है जो तुझे एह़सान फ़रामोशी पर उभारे, तेरी इतनी नेकियां छीन कर उन को दे दे जिन की तूने **ग़ीबत** की है यहां तक कि वोह राज़ी हो जाएं क्यूं कि बरोज़े क़ियामत दिरहम व दीनार काम नहीं आएंगे। बेशक! जितना तू मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त को नुक़्सान पहुंचाएगा उतनी ही मिक़्दार में तेरा **दीन** तुझ से ले लिया जाएगा, लिहाज़ा **ग़ीबत** से बच, **ग़ीबत** के मम्बअ़ (या'नी निकलने

की जगह) और इस के अस्बाब को पहचान कि तुझ पर **ग़ीबत** किन किन जगहों से आती है। **मज़ीद फ़रमाते हैं :** तवज्जोह से सुन ! बेशक बा'ज़ जाहिल व नादान इस अन्दाज़ पर भी **ग़ीबत** में मुब्तला होते हैं कि गुनहगारों पर ख़्वाह म ख़्वाह **गुस्से** होते और उन से **ह़सद** और **बद गुमानी** करते हैं फिर शैत़ान के बहकावे में आ कर مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस **ग़ुस्से** को ''दीनी ग़ैरत'' का नाम देते और येह कहते सुनाई देते हैं कि मैं अपनी ज़ात के लिये गुस्सा नहीं कर रहा मैं तो दीन के नुक़्सान की वज्ह से फ़ुलां को बुरा भला कहता या डांट डपट करता हूं ! येह ऐसी बुराइयां हैं जो कि अ़क़्ल मन्दों से पोशीदा नहीं। बा'ज़ लोग अहले इल्म होने के बा वुजूद शैत़ान के धोके में आ कर जब किसी की बुराई बयान करते हैं तो कहते हैं : ''हम तो उस की नसीह़त और इस्लाह़ के लिये ऐसा कर रहे हैं, हम तो उस के ख़ैर ख़्वाह और भलाई चाहने वाले हैं।'' ह़ालां कि ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता क्यूं कि अगर वाक़ेई वोह ख़ैर (या'नी भलाई) के त़ालिब होते तो कभी **ग़ीबत** जैसी आफ़त में न पड़ते और उन की नसीह़त उन के लिये **ग़ीबत** पर मुआ़विन (मददगार) न होती। (बल्कि जिस ने ग़-लत़ी की है बराहे रास्त उस को समझाते या इस्लाह़ का शर-ई त़रीक़ा इख़्तियार करते, पीठ पीछे **ग़ीबत** करते फिरना येह कौन सा इस्लाह़ का त़रीक़ा है !)

**तवज्जोह** से सुन ! बसा अवक़ात नेक परहेज़गार लोग भी **ह़ैरत** का इज़्हार करने के अन्दाज़ में अपने मुसल्मान भाई की **ग़ीबत** कर बैठते हैं। रहे उस्ताद, सरदार और अफ़्सर वग़ैरा तो बा'ज़ दफ़्आ़ वोह शफ़्क़त व रह़्म दिली के त़रीक़े से **ग़ीबत** की गहरी खाई में जा गिरते हैं। म-सलन अपने शागिर्द या मा तह़्त के बारे में कहते हैं : ''अफ़्सोस ! वोह फ़ुलां फ़ुलां ग़लत़ काम (म-सलन बुरी सोह़बत या नशे की नुह़ूसत) में पड़ गया, काश ! बेचारा फ़ुलां बुराई (म-सलन हेरोईन पीने) का मुर-तकिब न होता !'' दर ह़क़ीक़त वोह अफ़्सोस नहीं कर रहे होते इस त़रह़ की बातें कर के इस बहाने वोह उस की पोलें खोल डालते हैं मगर समझते येह हैं कि हम उस से **मह़ब्बत** और हमदर्दी की वज्ह से ऐसा कह रहे हैं ह़ालां कि वोह **ग़ीबत** के गुनाह में पड़ चुके होते हैं, वरना अपने मा तह़्त या शागिर्द का क्या ख़ौफ़ ? पीछे से इस त़रह़ **ग़ीबत** करने के बजाए बराहे रास्त

उस को समझा कर सच्ची महब्बत का सुबूत दे सकते थे। बा'ज़ अवक़ात एक शख़्स किसी की बुराई को दूसरों के सामने ज़ाहिर करते हुए कहता है : "मैं ने उस की बुराई पर तुम को इस लिये मुत्तलअ़ किया है ताकि तुम अपने भाई के लिये **ख़ुसूसी दुआ** करो।" अपने गुमान में येह इसे हमदर्दी व शफ़्क़त समझता है लेकिन ह़क़ीक़त में येह **ग़ीबत** कर रहा होता है। **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ान के ख़ुफ़्या वारों से बचाए। हम **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाहे रह़मत में दुआ़ करते हैं कि वोह मुसल्मानों की **ग़ीबत** से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

(عُيونُ الْحِكايات(عربى) ص ٣٨١ مُلَخَّصاً)

*अफ़्सोस मरज़ बढ़ता जाता है गुनाहों का*
*हो नज़रे शिफ़ा अ़र्ज़ ऐ सरकारे मदीना है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ना बालिग़ की ग़ीबत : जिस** त़रह़ बच्चे के साथ झूट बोलने की इजाज़त नहीं इसी त़रह़ उस की **ग़ीबत** की भी मुमा-न-अ़त है। ख़्वाह एक ही दिन का बच्चा हो, बिला मस्ल-ह़ते शर-ई उस की भी बुराई बयान न की जाए। मां बाप और घर के दीगर अफ़राद के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है उन को चाहिये कि बिला ज़रूरत अपने बच्चों को पीछे से (और मुंह पर भी) ज़िद्दी, शरारती, मां बाप का **ना फ़रमान** वग़ैरा न कहा करें।

**किस बच्चे की ग़ीबत जाइज़ है और किस की ना जाइज़ ? : ह़ज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़य्य लखनवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिदुना इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى ने इमाम इब्ने ह़जर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر से नक़्ल किया है : "जिस त़रह़ बालिग़ की **ग़ीबत** ह़राम है उसी त़रह़ ना बालिग़ और मजनून (या'नी पागल) की **ग़ीबत** भी ह़राम है।"

(رَدُّالْمُحتار ج٦ص٦٧٦) लेकिन **राक़िमुल हुरूफ़** (या'नी मौलाना अब्दुल हय्य साहिब) के नज़्दीक तफ़्सील बेहतर है : ﴾1﴿ ऐसा ना बालिग़ बच्चा जो फ़िल जुम्ला (या'नी थोड़ी बहुत) समझ रखता हो कि अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश और अपनी बुराई से नाख़ुश होता हो जैसा कि मा'तूह (या'नी आधा पागल भी अपनी ता'रीफ़ और मज़म्मत की समझ रखता है) तो ऐसे ना बालिग़ (बच्चे) की **ग़ीबत** जाइज़ नहीं इसी त़रह़ नीम पागल की भी ना जाइज़ है ﴾2﴿ ऐसे ना समझ बच्चे (म–सलन दूध पीते बच्चे) और पागल की भी **ग़ीबत** जाइज़ नहीं जिन का कोई वाली वारिस है, बेशक वोह बच्चा या पागल अपनी ता'रीफ़ या बुराई समझने की तमीज़ नहीं रखता ताहम उन के ऐब बयान करने से उन के मां बाप वग़ैरा को बुरा लगेगा ﴾3﴿ ऐसा ला वारिस बच्चा या ला वारिस पागल जो अपनी ता'रीफ़ व **ग़ीबत** से ख़ुश और नाख़ुश होने की सलाहि़य्यत नहीं रखता उस की **ग़ीबत** जाइज़ है मगर ज़बान को ऐसों की **ग़ीबत** से भी रोकना ही बेहतर है (क्यूं कि बा'ज़ फ़ु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने मुत़्लक़न या'नी एक दिन के बच्चे और मुकम्मल पागल की **ग़ीबत** को भी ह़राम क़रार दिया है) (माख़ूज़ अज़ : ग़ीबत क्या है, स. 20, 21)

**छोटे बच्चे की ग़ीबत की 17 मिसालें : बहर ह़ाल** पागल हो या समझदार, बालिग़ हो या ना बालिग़, बूढ़ा हो या दूध पीता बच्चा हर एक की **ग़ीबत** से बचना चाहिये, बच्चों की **ग़ीबतों** की बे शुमार मिसालें हो सकती हैं, क्यूं कि इन की **ग़ीबत** के गुनाह होने की त़रफ़ बहुत कम लोगों की तवज्जोह है, जो मुंह में आया बोल दिया जाता है। यहां नुमूनतन सिर्फ़ **17 मिसालें** पेश की जाती हैं जो कई सूरतों में **ग़ीबत** में दाख़िल हो सकती हैं : ❁ बिस्तर गन्दा कर देता है ❁ इतना बड़ा हो गया मगर तमीज़ नहीं आई ❁ इस को झूट की आ़दत पड़ गई है ❁ छोटी बहन को नोचता है ❁ छोटे मुन्ने को गोद में लो तो बड़ा मुन्ना **ह़सद** करता है ❁ दोनों मुन्ने एक दूसरे की चुग़्लियां खाते रहते हैं ❁ छोटा पढ़ाई में बहुत ज़हीन है मगर बड़ा 8 साल का हुवा अभी तक कुन्द ज़ेहन है ❁ मां को बहुत तंग करता है ❁ मुन्नी रात को बहुत चीख़ती है न सोती है न किसी को सोने देती है ❁ मुन्ने ने गुस्से में लात मार कर पानी का कूलर उलट दिया ❁ बहुत चिड़चिड़ा

हो गया है ❁ बात बात पर रूठ जाता है ❁ रोज़ाना खाने के वक़्त झगड़ता है ❁ पढ़ने में कमज़ोर है ❁ बड़ी बच्ची ने छोटी वाली को बाल खींच कर गिरा दिया ❁ बस लड़ता ही रहता है ❁ सुब्ह़ उठा उठा कर थक जाते हैं मगर जवाब नहीं देता वग़ैरा।

**बच्चों को ग़ीबत मत करने दीजिये : उ़मूमन** बच्चे अपने छोटे बहन भाइयों और दीगर घर वालों की अपनी तुतली ज़बान में या इशारों से **ग़ीबतें** करते रहते हैं और घर वाले हंस हंस कर दाद देते हैं, कभी किसी को लंगड़ाता देख लेते हैं तो ख़ुद भी उस की नक़्ल उतारते हुए लंगड़ा कर चलते हैं और घर वालों से दाद वुसूल करते हैं ह़ालां कि किसी मुअ़य्यन व मा'लूम मा'ज़ूर की इस त़रह़ की नक़्क़ाली भी **ग़ीबत** है। बाप जब कामकाज से शाम को लौटता है तो आ़म त़ौर पर बच्चा या बच्ची दिन भर की "कारकर्दगी" सुनाते हैं, इस से लुत़्फ़ तो बहुत आता है मगर उस कारकर्दगी में **ग़ीबतों** की भी अच्छी ख़ासी भरमार होती है! बच्चों को तो गुनाह नहीं होता मगर औलाद की सह़ीह़ तरबियत करना चूंकि वालिदैन की ज़िम्मेदारी है और यूं बच्चों की ज़बानी **ग़ीबतें** सुनने से औलाद की ग़लत़ तरबियत होती है लिहाज़ा औलाद की ग़लत़ तरबियत का वबाल मां बाप के सर आ जाता है, यक़ीनन बच्चों के **ग़ीबत** करने पर हंस पड़ने से उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई होती है और वोह गोया इस त़रह़ **ग़ीबत** की तरबियत ह़ासिल करते रहते हैं और बेचारे बालिग़ होने के बा'द अक्सर **ग़ीबत** के गुनाह में पक्के हो चुके होते हैं। लिहाज़ा जब भी बच्चा **ग़ीबत** करे, चुग़ली खाए या **झूट** बोले तो उस की तुतली ज़बान से मह़ज़ूज़ या'नी लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हुए शैत़ान के बहकावे में आ कर हंसा मत कीजिये, ऐसे मौक़अ़ पर एक दम सन्जीदा हो जाइये उस बात पर उस की ह़ौसला शिकनी कीजिये और मुनासिब अन्दाज़ में उस को समझाइये, जब बार बार उस को समझाते रहेंगे और उस को घर का कोई भी फ़र्द **ग़ीबत** वग़ैरा पर उसे दाद नहीं देगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुद भी **ग़ीबत** वग़ैरा सुनने की आफ़त व गुनाहों से बचे रहेंगे और मुन्ना भी बड़ा हो कर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेक बन्दा बनेगा और **ग़ीबत** वग़ैरा से नफ़रत रखेगा।

**बच्चों की फ़रियाद रसी कीजिये :** हां अगर मुन्ना मह्ज़ बोलने की ख़ातिर नहीं बोल रहा बल्कि आप से फ़रियाद कर के इन्साफ़ त़लब कर रहा है तो बेशक उस की फ़रियाद सुनिये और इमदाद कीजिये। म-सलन मुन्ना कहने लगा कि मुन्नी ने मेरा खिलोना छीन कर कहीं छुपा दिया है तो येह **ग़ीबत** नहीं, क्यूं कि मुन्ना मां बाप से फ़रियाद नहीं करेगा तो किस से करेगा! लिहाज़ा आप मुन्नी से उस का खिलोना दिला दीजिये। अब अगर खिलोना मिल जाने के बा'द मुन्ना इसी बात को मुन्नी की ग़ैर मौजू-दगी में म-सलन अपनी अम्मी से ज़िक्र करता है कि "मुन्नी ने मेरा खिलोना छीन कर छुपा दिया था तो अब्बू ने मुन्नी को डांट पिलाई और मुझे मेरा खिलोना वापस दिलाया" तो येह बहर ह़ाल **ग़ीबत** है अगर्चे बच्चों को इस का गुनाह न हो। उ़मूमन बच्चे जिन लोगों से मानूस होते हैं उन को फ़रियाद करते रहते हैं तो अगर किसी से मज़्कूरा मिसाल की मानिन्द फ़रियाद की और वोह फ़रियाद रसी या'नी इमदाद नहीं कर सकता। तो अब **ग़ीबत** पर मब्नी फ़रियाद न सुने बल्कि ह़त्तल इम्कान अच्छे अन्दाज़ में बच्चे को टाल दे।

## बच्चों से सादिर होने वाली ग़ीबत की 22 मिसालें

❁ मेरा खिलौना तोड़ दिया है ❁ मेरी टॉफ़ी छीन कर खा ली ❁ मेरी आइसक्रीम गिरा दी ❁ मुझे पीछे से "हाउ" कर के डरा देता है, शरीर कहीं का ❁ मुझ पर बिल्ली का बच्चा डाल दिया ❁ मुझे "गन्दा बच्चा" कह कर चिड़ाता है ❁ मेरी नोटबुक फाड़ दी ❁ मुझे धक्का दे कर गिरा दिया ❁ मेरे कपड़े गन्दे कर दिये ❁ अपनी बाबा साइकिल मेरे पाउं पर चढ़ा दी ❁अपने कपड़े गन्दे कर देता है ❁ वोह गन्दा बच्चा है ❁ अम्मी के पास मेरी चुग़्लियां लगाता है ❁ झूट बोल कर उस्ताद से मुझे मार खिलाई थी ❁ अम्मी मद्रसे का बोलती है तो रोता है ❁ मुन्नी अम्मी को मारती है ❁ उस्ताद ने उस को कल "मुर्ग़ा" बनाया था ❁ इतना बड़ा हो गया मगर निप्पल चूसता है ❁ हर वक़्त उस की नाक बहती रहती है ❁ रोज़ रोज़ पेन्सिल गुमा देता है ❁ उस दिन अब्बू की जेब से पैसे चुरा लिये थे ❁ उस दिन अम्मी ने उस की ख़ूब पिटाई लगाई थी।

**बच्चों को झूटे बहलावे मत दीजिये :** **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 312 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** हिस्सा 16 सफ़्ह़ा 159 ता 160 पर है : अबू दावूद व बैहक़ी ने **अ़ब्दुल्लाह** बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कहते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरी मां ने मुझे बुलाया कि आओ तुम्हें दूंगी। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : क्या चीज़ देने का इरादा है ? उन्हों ने कहा, खजूर दूंगी। इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू कुछ नहीं देती तो येह तेरे ज़िम्मे **झूट** लिखा जाता।"

(سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٨٧ حديث ٤٩٩١)

**देखा** आप ने ! बच्चों के साथ भी **झूट** बोलने की इजाज़त नहीं, अफ़्सोस ! आज कल बच्चों को बहलाने के लिये अक्सर लोग **झूटमूट** इस त़रह़ कह दिया करते हैं कि तुम्हारे लिये खिलोने लाएंगे, हवाई जहाज़ ला कर देंगे वग़ैरा। इसी त़रह़ डराने के लिये अक्सर माएं भी **झूट** बोल दिया करती हैं कि वोह बिल्ली आई, कुत्ता आया वग़ैरा। जिन लोगों ने ऐसा किया उन को चाहिये कि सच्ची तौबा करें।

**गूंगा क़ादियानी कैसे मुसल्मान हुवा :** **म-दनी मुन्नों** की ग़ीबतों से ख़ुद को बचाने और उन का भी ग़ीबतों से बचने का ज़ेहन बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **म-दनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनिये, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये। आप की तरग़ीब के लिये एक अनोखी **म-दनी बहार** पेश की जाती है, ग़ौर से सुनिये और झूमिये : चुनान्चे सूबए पंजाब के शहर **ख़ुशाब** में एक गूंगे बहरे इस्लामी भाई जो **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से गुनाहों से ताइब हो कर नेकियों की राह पर गामज़न हो चुके थे। उन के घर के क़रीब एक गूंगे बहरे शख़्स की रिहाइश थी जो **क़ादियानी** था। येह **"गूंगे इस्लामी भाई"** उस गूंगे क़ादियानी से मुलाक़ात कर के इशारों की ज़बान में **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए राहे ह़क़ की दा'वत पेश किया करते और उसे समझाते कि दीने इस्लाम ही वोह वाह़िद मज़्हब है जिस में दुन्या

व आख़िरत की भलाइयां पोशीदा हैं और ह़क़ीक़ी क़ल्बी सुकून भी इसी मज़्हबे ह़क़ की क़बूलिय्यत में है। वोह गूंगा क़ादियानी दा'वते इस्लामी के गूंगे मुबल्लिग़ की पुर तासीर म-दनी बातों में दिलचस्पी तो लेता मगर कोई वाज़ेह़ जवाब न देता। वोह (गूंगा क़ादियानी) कुछ दुन्यवी मसाइल की वज्ह से बहुत परेशान था और सुकून की तलाश में था। इसी दौरान दा'वते इस्लामी के **गूंगे मुबल्लिग़** ने उसे **दा'वते इस्लामी** के बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी, जिसे उस ने क़बूल कर लिया। जब वोह **"गूंगा क़ादियानी"** मदीनतुल औलिया (मुलतान शरीफ़) **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत के लिये **सह़राए मदीना** पहुंचा तो हर त़रफ़ **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ की बहारें** और **दुरूदो सलाम की सदाएं** थीं, अल ग़रज़ एक अ़जीब रूह़ परवर समां था। येह मनाज़िर देख कर वोह गूंगा क़ादियानी इस **म-दनी माह़ोल** से इस क़दर मु-तअस्सिर हुवा कि उस ने वहीं इज्तिमाअ़ में अपने बात़िल मज़्हब क़ादियानिय्यत से तौबा की और **कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया** और **ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल कर **"क़ादिरी र-ज़वी"** भी बन गया।

*दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये* — *मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार*
*अ़र्सए मह़शर में आक़ा लाज रखना आप ही* — *दामने अ़त्तार है सरकार ! बेह़द दाग़दार*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 218)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मुसल्मान की बे इज़्ज़ती कबीरा गुनाह है : रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है। (سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٧)

**ख़ुदा व मुस्त़फ़ा को ईज़ा देने वाला : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़क़ीक़त येह है कि एक मुसल्मान अपने दूसरे मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त का मुह़ाफ़िज़ है मगर अफ़्सोस ! ऐसा नाज़ुक दौर आ गया है कि अब अक्सर मुसल्मान ही दूसरे मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त के पीछे पड़ा

हुवा है जी भर कर **ग़ीबतें** कर रहा है और चुग़लियां खा रहा है, बिला तकल्लुफ़ तोहमतें लगा रहा है, बिला वज्ह दिल दुखा रहा है, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत्बूआ़ रिसाला, "**ज़ुल्म का अन्जाम**" सफ़ह़ा 19 ता 20 पर है : **हुक़ूक़ुल इबाद** का मुआ़-मला बड़ा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौर दौरा है, अ़वाम तो कुजा ख़्वास कहलाने वाले भी उ़मूमन इस की त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। गुस्से का मरज़ आ़म है इस की वज्ह से अक्सर "ख़्वास" भी लोगों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस की त़रफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती कि किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ह़ा 342 में **त़-बरानी** शरीफ़ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ** (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۳۸۷ حدیث ۳۶۰۷) **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** आयत नम्बर 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

**اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾** (پ۲۲ الاحزاب ۵۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

**मोमिन की हुरमत का'बे से बढ़ कर है : सु-नने इब्ने माजह** में है : ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा को मुख़ात़ब

कर के इर्शाद फ़रमाया : **मोमिन की हुरमत तुझ से ज़ियादा है।** (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٣١٩ حديث ٣٩٣٢)

**कामिल मुसल्मान की ता'रीफ़ : सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ या'नी मुसल्मान वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें।

(صَحيح بُخارى ج١ ص١٥ حديث١٠)

**दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़त़रा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कामिल मुसल्मान वोही है जो ज़बान से किसी को गाली न दे, बिला इजाज़ते शर-ई किसी को बुरा न कहे, किसी की **ग़ीबत** न करे, किसी को बे वुक़ूफ़ न कहे, किसी के ऐ़ब को न खोले, किसी का भेद न खोले और हाथ से किसी को तक्लीफ़ न दे, किसी की दिल आज़ारी न करे, बिला इजाज़ते शर-ई किसी को न मारे, किसी को तन्क़ीदे बे जा का निशाना न बनाए, जो शख़्स ऐसा न हुवा बल्कि लोगों को उस ने हर त़रह़ की तक्लीफ़ दी, हाथ से मारा, आंख से किसी की त़रफ़ ईज़ा देने वाले अन्दाज़ से इशारा किया, हर शख़्स उस से तंग व बेज़ार रहा तो वोह शख़्स **कामिल मुसल्मान** नहीं है, ईमान उस के दिल में मज़्बूत़ नहीं है, इन्तिक़ाल के वक़्त एह़तिमाल है कि مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान ग़ालिब आ जाए और हर त़रह़ से उसे वस्वसे डाले और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ثُمَّ مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह शख़्स दाइरए ईमान से निकल जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे उस का क़दम सिराते़ मुस्तक़ीम से फिसल जाए और वोह जहन्नम की राह इख़्तियार करे, **जन्नत** से मह़रूम रहे। ब ख़िलाफ़ इस के जिस का ईमान कामिल हो, इस्लाम की सच्ची **मह़ब्बत** उस के दिल को ह़ासिल हो, कामिल मुसल्मानों वाले आ'माल व अफ़्आ़ल उस के अन्दर पाए जाते हों, बन्दों के हुक़ूक़ गरदन पर न उठाए हों, इस सूरत में بِفَضْلِہٖ تَعَالٰی शैत़ान का वस्वसा मौत के वक़्त असर अन्दाज़ न होगा, दरियाए ईमान जोश मारेगा, फ़िरिश्ता इब्लीस को भगा देगा, वसाविस को दूर करेगा, इस लिये ख़ातिमा बिलख़ैर होगा, शैत़ान अपना सर पीटेगा, अपने सर पर ख़ाक उड़ाएगा और बहुत चीखे़गा चिल्लाएगा।

*ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश*

*जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 90)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**बद अ़क़ीदगी से तौबा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कामिल मुसल्मान बनने के लिये, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म–दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म–दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ म–दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म–दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये ईमान अफ़रोज़ **म–दनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे **लतीफ़आबाद** हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का बा'ज़ लोगों की सोहबत में बैठने की बिना पर ज़ेहन ख़राब हो गया और वोह तीन साल तक **नियाज़ शरीफ़** और **मीलाद शरीफ़** वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करते रहे उन्हें पहले **दुरूद शरीफ़** से बहुत शग़फ़ था (या'नी बेहद दिलचस्पी व रग़्बत थी) मगर ग़लत़ सोहबत के सबब **दुरूदे पाक** पढ़ने का जज़्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार उन्हों ने **दुरूद शरीफ़** की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह जज़्बा दोबारा जागा और उन्हों ने कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सो गए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें ख़्वाब

में **सब्ज़ गुम्बद** का दीदार हो गया और बे साख़्ता उन की ज़बान से اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ जारी हो गया। सुब्ह़ जब उठे तो उन के दिल के अन्दर हलचल मची हुई थी, वोह इस सोच में पड़ गए कि आख़िर ह़क़ का रास्ता कौन सा है ? ह़ुस्ने इत्तिफ़ाक़ से **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबियत का **म-दनी क़ाफ़िला** उन के घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने उन्हें **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी, वोह चूंकि **मु-तज़ब-ज़िब** (Confused) थे इस लिये तलाशे ह़क़ के जज़्बे के तह़्त **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। उन्हों ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज़ इमामे वाले **म-दनी क़ाफ़िले** वालों ने सफ़र के दौरान उन पर न किसी क़िस्म की तन्क़ीद की न ही त़न्ज़ किया बल्कि अज्नबिय्यत ही मह़सूस न होने दी। **अमीरे क़ाफ़िला** ने **म-दनी इन्आ़मात** का तआ़रुफ़ करवाया और इस के मुत़ाबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। उन्हों ने **म-दनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ा-लआ़ किया तो चोंक उठे क्यूं कि उन्हों ने इतने ज़बर दस्त तरबियती **म-दनी फूल** ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और **म-दनी इन्आ़मात** की ब-र-कत से उन पर रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल हो गया। उन्हों ने म-दनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ़ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अ़क़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से **तौबा** करता हूं और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रह़त व मसर्रत का इज़्हार किया। दूसरे दिन **30** रुपै की नुक्ती (एक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की त़रह़ बनी होती है) मंगवा कर उन्हों ने सरकारे बग़दाद हु़ज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़्सीम की। वोह 35 साल से **सांस के मरज़** में मुब्तला थे, कोई रात बिग़ैर तक्लीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ उन की सीधी **दाढ़ में तक्लीफ़** थी जिस के बाइस सह़ीह़ त़रह़ खा भी नहीं सकते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से दौराने सफ़र उन्हें सांस की कोई तक्लीफ़ न हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह सीधी दाढ़

से बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के खाने लगे। उन का बयान है कि मेरा दिल गवाही देता है कि **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** ह़क़ हैं और मेरा ह़ुस्ने ज़न है कि **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल **अल्लाह** और उस के **प्यारे रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

*छाए गर शैत़नत तो करें देर मत — क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो*
*सोह़बते बद में पड़ कर, अ़क़ीदा बिगड़ — गर गया हो, चलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!    صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**बद मज़्हबों से दूर रहने की ह़दीसों में ताकीद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की कैसी ब-र-कतें हैं बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि उस ख़ुश नसीब इस्लामी भाई को **दुरूदे पाक की कसरत** की ब-र-कत से दा'वते इस्लामी का **म-दनी क़ाफ़िला** भी मिला और उस पर हिदायत का रास्ता भी खुला। येह इस्लामी भाई बद मज़्हबों की सोह़बत की वज्ह से सीधे रास्ते से भटक गए थे, हम सभी को चाहिये कि बुरी सोह़बत से हमेशा दूर रहें और फ़क़त़ **आ़शिक़ाने रसूल** ही की सोह़बत अपनाएं। बद मज़्हबों की सोह़बत ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है, इन से दोस्ती और तअ़ल्लुक़ात रखने की अह़ादीसे मुबा-रका में मुमा-न-अ़त है। चुनान्चे सुल्त़ाने अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो किसी **बद मज़्हब** को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस में उस का दिल ख़ुश हो, उस ने उस चीज़ की तह़क़ीर की जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतारी।" (تاریخ بغداد ج ۱۰ ص ۲۶۲) रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल पज़ीर है : "जिस ने किसी **बद मज़्हब** की (ता'ज़ीम व) तौक़ीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ۵ ص ۱۱۸ حدیث ۶۷۷۲) मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 21 सफ़ह़ा 184 पर फ़रमाते हैं : सुन्नियों को ग़ैर मज़्हब वालों

से इख़्तिलात् (मेलजोल) ना जाइज़ है ख़ुसूसन यूं कि वोह (बद मज़्हब) अफ़्सर हों (और) येह (सुन्नी) मा तहूत। قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی : (या'नी **अल्लाह** तआला फ़रमाता है)

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

(پ۷الانعام۶۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

**रहमते आ़लम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ितने में न डाल दें।

(مُقدّمہ صَحیح مُسلِم ص۹ حدیث ۷)

**बद मज़्हब को उस्ताद बनाना : बद मज़्हब** से दीनी या दुन्यावी ता'लीम लेने की मुमा-न-अ़त करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैर मज़्हब वालियों (या वालों) की सोह़बत आग है, ज़ी इल्म आ़क़िल बालिग़ मर्दों के मज़्हब (भी) इस में बिगड़ गए हैं। **इमरान बिन ह़ित़्त़ान रक़्क़ाशी का क़िस्सा मश्हूर है, येह ताबिईन के ज़माने में एक बड़ा मुह़द्दिस था, ख़ारिजी मज़्हब की औ़रत** (से शादी कर के उस) **की सोह़बत में** (रह कर) مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ **ख़ुद ख़ारिजी हो गया और येह दा'वा किया था कि** (उस से शादी कर के) **उसे सुन्नी करना चाहता है।** (यहां वोह नादान लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो ब ज़ो'मे फ़ासिद ख़ुद को बहुत "पक्का सुन्नी" तसव्वुर करते और कहते सुनाई देते हैं कि हमें अपने मस्लक से कोई हिला नहीं सकता, हम बहुत ही मज़्बूत़ हैं!) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : जब सोह़बत की येह ह़ालत (कि इतना बड़ा मुह़द्दिस गुमराह हो गया) तो (बद मज़्हब को) उस्ताद बनाना किस द-रजा बदतर है कि उस्ताद का असर बहुत अ़ज़ीम और निहायत जल्द होता है, तो ग़ैर मज़्हब औ़रत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बच्चों को वोही देगा जो आप (ख़ुद ही) दीन से वासित़ा नहीं रखता और अपने बच्चों के बद दीन हो जाने की परवाह नहीं रखता। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 692)

*मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा! बे अ-दबों से*
*और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**अ़ज़ाबे क़ब्र के होलनाक मनाज़िर : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मह़बूबे रब्बे समद, नबिय्ये अह़मद, मीठे मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **बक़ीए ग़रक़द** तशरीफ़ ला कर दो **क़ब्रों** के पास खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने फ़ुलां और फ़ुलाना को, या फ़रमाया : फ़ुलां फ़ुलां को दफ़्न कर दिया ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : जी हां, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! (बि इज़्ने परवर्द गार ग़ैब की ख़बरें देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : अभी अभी फ़ुलां को (क़ब्र में) बिठा कर मारा गया है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! उसे इतना मारा गया है कि उस का हर हर उ़ज़्व जुदा हो चुका है और उस की क़ब्र में **आग** भड़का दी गई है और उस ने ऐसी **चीख़** मारी है जिसे सिवाए जिन्नो इन्सान के तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा बातें न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। फिर फ़रमाया : अब दूसरे को भी मारा जा रहा है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है! उसे भी इस क़दर ज़ोर से मारा गया है कि उस की भी हर हर हड्डी जुदा हो गई है और उस की क़ब्र में भी **आग** भड़का दी गई है, उस ने भी ऐसी **चीख़** मारी है जिसे जिन्नो इन्सान के इ़लावा तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन दोनों का गुनाह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : **पहला पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा लोगों का गोश्त खाता** (या'नी ग़ीबत करता) **था।**

(صَرِیحُ السُّنَّة لِلطَّبَری ص۲۹ حدیث ۴۰)

**मुसल्मानो ! डर जाओ ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस रिवायत में **ग़ीबत** करने और पेशाब से न बचने वालों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार **म-दनी फूल** हैं, पेशाब कर के जो लोग पाकी ह़ासिल न कर के बदन और कपड़े वग़ैरा नापाक कर लेते हैं उन को भी डर जाना चाहिये, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : पेशाब से बचो आ़म त़ौर पर अ़ज़ाबे क़ब्र इसी की वज्ह से होता है। (سُنَنِ دارقطنی ج۱ ص۱۸٤ حدیث٤٥٣)

इस ज़िम्न में एक **लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे

**पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार ! : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"उ़यूनुल ह़िकायात"** ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 187 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक मर्तबा दौराने सफ़र मेरा गुज़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान से हुवा। यकायक एक **मुर्दा क़ब्र से बाहर निकला**, उस की गरदन में आग की ज़न्जीर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का एक बरतन था। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो !" मैं ने दिल में कहा : इस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ़-रबों के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ "**अ़ब्दुल्लाह**" कह कर पुकार रहा है। फिर अचानक उसी क़ब्र से एक और शख़्स निकला, उस ने मुझ से कहा : "ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! इस ना फ़रमान को हरगिज़ पानी न पिलाना, येह **काफ़िर** है।" दूसरा शख़्स पहले को घसीट कर वापस क़ब्र में ले गया। मैं ने वोह रात एक बुढ़िया के घर गुज़ारी, उस के घर के क़रीब एक क़ब्र थी, मैं ने क़ब्र से येह आवाज़ सुनी : بَوْلٌ وَّمَا بَوْل؟ شَنٌّ وَّ مَاشَنٌّ؟ या'नी "पेशाब ! पेशाब क्या है ? मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" इस आवाज़ के मु-तअ़ल्लिक़ बुढ़िया से पूछा तो उस ने कहा : येह मेरे शोहर की क़ब्र है, इसे दो ख़त़ाओं की सज़ा मिल रही है। पेशाब करते वक़्त येह **पेशाब के छीटों से नहीं बचता था,** मैं इस से कहती कि तुझ पर अफ़्सोस ! जब ऊंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाउं कुशादा कर के छींटों से

बचता है, लेकिन तू इस मुआ-मले में बिल्कुल भी एहतियात् नहीं करता, मेरा शोहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, फिर येह मर गया तो मरने के बा'द से आज तक इस की क़ब्र से रोज़ाना इसी तरह की आवाज़ें आती हैं । मैं ने पूछा : شَنٌّ وَّمَاشَنٌّ؟ या'नी "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" की आवाज़ आने का क्या मक़्सद है ? बुढ़िया ने कहा : एक मर्तबा इस के पास एक प्यासा शख़्स आया, उस ने पानी मांगा तो (इस ने उस को परेशान करने के लिये ख़ाली मश्कीज़े की त़रफ़ इशारा करते हुए) कहा : जाओ ! उस मश्कीज़े से पानी पी लो, वोह प्यासा बे ताबाना मश्कीज़े की त़रफ़ लपका, जब उठाया तो उसे ख़ाली पाया, प्यास की शिद्दत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई । फिर जब से मेरा शोहर मरा है आज तक रोज़ाना उस की क़ब्र से आवाज़ आती है : شَنٌّ وَّمَاشَنٌّ؟ या'नी "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ़ फ़रमा दिया ।

(عُیونُ الحِکایات(عربی) حصّہ ۲ ص۳۰۷)

**हर गुनाह के बदले एक उ़ज़्व काटा जाएगा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** गुनाह चाहे कितना ही छोटा हो अगर उस पर पकड़ हुई तो ख़ुदा की क़सम ! उस का अ़ज़ाब न सहा जा सकेगा । गुनाहों की सज़ा से डराते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : पांच दिरहम (अह़नाफ़ के नज़्दीक दस दिरहम) की चोरी पर हाथ काटा जाता है और इस में शक नहीं कि तुम्हारा सब से छोटा गुनाह भी पांच दिरहम की चोरी से तो ज़ियादा ही क़बीह़ (या'नी बुरा) है लिहाज़ा तुम्हारे **हर गुनाह के बदले आख़िरत में तुम्हारा एक उ़ज़्व काटा जाएगा ।** (تَنبِیهُ المُغتَرِّین ص۱۷۲)

**नज़्अ़, क़ब्र और मुन्कर नकीर की ख़ौफ़नाक मन्ज़र कशी : मीठे मीठे इस्लामी**

**भाइयो !** वाक़ेई क़ब्र का मुआ़-मला बेह़द तश्वीश नाक है, क्या मा'लूम आज ही मौत आ जाए और देखते ही देखते हम क़ब्र की तन्हाइयों में जा पहुंचें, अव्वल तो मौत के सदमे का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और ऊपर से **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में अ़ज़ाब हुवा तो कैसे बरदाश्त हो सकेगा ! **मुर्दे के सदमे** का नक़्शा खींचते हुए **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा सदमा उठाए हुए रूह़ (कि निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि म-लकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) का देखना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ़ कर। वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर त़रफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबतनाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ़ में देखे तो ह़वास बजा न रहें, काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी, अबरक़ (चमकीली धात) की त़रह़ शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की त़रह़ लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो क़ामत जिस्म व जसामत बला व क़ियामत, कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्ज़िलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज़) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) कि अगर एक बस्ती के लोग बल्कि जिन्नो इन्स जम्अ़ हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की होलनाक आवाज़ें, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी त़रह़ बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़क्ती झिड़क्ती आवाज़ों में इम्तिह़ान लेना।

وَ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ اِرْحَمْ ضُعْفَنَا يَا كَرِيْمُ يَا جَمِيْلُ صَلِّ وَ سَلِّمْ عَلٰى
نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَاٰلِهِ الْكِرَامِ وَ سَائِرًا لِاُمَّةِ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

**तरजमा :** (और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हमारे लिये काफ़ी है और वोह सब से बड़ा कारसाज़ है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमज़ोरी पर रह़मो करम फ़रमा, ऐ रब्बे जमील ! दुरूदो सलाम भेज नबिय्ये रह़मत (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर और उन की इ़ज़्ज़त वाली आल और बक़िय्या तमाम उम्मत पर। क़बूल फ़रमा, क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रह़मो करम फ़रमाने वाले !)

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 934 ता 937)

***खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई ह़ामी न कोई यावर***
***बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है***

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ज़ेह्नी कशमकश से नजात मिली : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में ह़ाज़िरी दीजिये और वहां बग़ौर बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : **बाबुल मदीना** (कराची) के एक इस्लामी भाई दावूद इन्जीनियरिंग कॉलेज बाबुल मदीना कराची के त़ालिबे इ़ल्म थे, बुरे और बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बतों ने उन्हें न-ज़रिय्यात के मुआ़-मलात में **''ज़ेह्नी कशमकश''** में मुब्तला कर दिया था, वोह फ़ैसला नहीं कर पा रहे थे कि कौन सीधे रास्ते पर है। 2 साल का त़वील अ़र्सा यूंही गुज़र गया। एक रोज़ उन की मुलाक़ात एक ऐसे नौ जवान से हुई जिस का अन्दाज़ व किरदार उन के दिल में उतर गया। उस आ़शिक़े

रसूल ने सफ़ेद लिबास पहना हुवा था, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ और चेहरे पर **इबादत का नूर** था, उस इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **सहराए मदीना,** मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की। वोह पहले ही उन से मु-तअस्सिर हो चुके थे, इन्कार क्यूंकर हो सकता था। उन्हों ने बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। ह़ज के बा'द सब से ज़ियादा ता'दाद में मुसल्मानों के जम्अ़ होने का मन्ज़र देख कर उन की आंखें डबडबा गईं (या'नी आंसू आ गए), उन के दिल ने गवाही दी कि येही ''**अहले ह़क़**'' हैं। आख़िरी दिन (11 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1425 हि./26-9-2004) होने वाले बयान ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर**'' सुन कर उन के रोंगटे खड़े हो गए। फिर रिक्क़त अंगेज़ दुआ़ ने ऐसा असर किया कि उन की ज़िन्दगी बदल गई, और उन के अन्दर कसरत से **नेकियां** करने का जज़्बा पैदा हो गया। चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ **दाढ़ी** शरीफ़ भी सजा ली, क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ करने की भी निय्यत की। एक और **अहम बात** येह कि जब वोह इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये **सहराए मदीना** मदीनतुल औलिया **मुलतान** शरीफ़ जा रहे थे तो उन के वालिद और वालिदा दोनों के हाथ पर **फ़ालिज** (Stroke) का ह़म्ला हो गया था, वोह ज़रा सा भी हाथ नहीं हिला सकते थे। इज्तिमाअ़ में दुआ़ की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन के **फ़ालिज ज़दा हाथ भी ठीक हो गए।**

*तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा म-दनी माह़ोल*
*ख़ुदा के करम से ख़ुदा की अ़ता से न दुश्मन सकेगा छुड़ा म-दनी माह़ोल*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 647)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**इज्तिमाअ़ में सवाब की निय्यत से शिर्कत करनी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! एक इस्लामी भाई के सुन्नतों भरा **म-दनी ह़ुल्या** अपनाने और **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाने की ब-र-कत से ''राहे ह़क़'' के मु-तलाशी को अपनी मन्ज़िल मिल गई ! इस म-दनी बहार से येह भी मा'लूम हुवा कि **दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में

शिर्कत की ब-र-कत से बसा अवक़ात दुन्यावी मसाइल भी ह़ल हो जाते हैं, म-सलन मरीज़ों को शिफ़ा मिल जाती है, बे रोज़गार बर सरे रोज़गार हो जाते हैं। लेकिन सिर्फ़ दुन्यावी मसाइल के ह़ल की **निय्यत** करने के बजाए त़-लबे इल्म और सवाबे आख़िरत कमाने की भी **निय्यतें** ज़रूर करनी चाहिएं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**दो[2] क़ब्रों में होने वाले अ़ज़ाब के अस्बाब : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबी बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के साथ चल रहा था और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था। एक आदमी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाईं त़रफ़ था। दरीं अस्ना हम ने अपने सामने **दो क़ब्रें** पाईं तो मह़बूबे ख़ुदाए तव्वाब, नुबुव्वत के आफ़्ताब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वज्ह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे। हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं सब्क़त ले गया और **एक टहनी** (या'नी शाख़) ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर दिये और दोनों क़ब्रों पर एक एक रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : येह जब तक तर रहेंगे इन पर **अ़ज़ाब** में कमी रहेगी और इन दोनों को **ग़ीबत** और पेशाब की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा है।

(مُسند اِمام احمد بن حنبل ج۷ص۳۰۴ حدیث۲۰۳۹۵)

**आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **ग़ीबतों** और पेशाब के छींटों से न बचना क़ब्र के अ़ज़ाब के अस्बाब में से है। आह ! हमारा वोह नाज़ुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दोपहर की धूप की तपश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाश्त नहीं कर सकता वोह क़ब्र का होलनाक अ़ज़ाब कैसे सह सकेगा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पेशाब की आलू-दगियों के जुर्मों, ग़ीबतों, चुग़लियों और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, **प्यारे प्यारे मालिक** عَزَّوَجَلَّ ! हम से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा और हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत फ़रमा اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم । बयान कर्दा

रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** है जभी तो ब अ़ताए ख़ुदाए वहहाब عَزَّوَجَلَّ क़ब्र का अ़ज़ाब मुला-ह़ज़ा फ़रमा लिया जैसा कि बयान कर्दा ह़दीसे पाक से ज़ाहिर है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

*सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र*
*म-लकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 109)

**क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के पास तशरीफ़ लाए जिस में मय्यित को अ़ज़ाब हो रहा था तो इर्शाद फ़रमाया : "येह लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था।" फिर एक तर **टहनी** मंगवाई और उसे **क़ब्र** पर रख कर इर्शाद फ़रमाया : जब तक येह तर रहेगी इस के अ़ज़ाब में कमी रहेगी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۳۵ حدیث۲۴۱۳)

**क़ब्रों पर फूल डालना मुस्तह़ब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** गुज़श्ता दोनों अह़ादीसे मुबा-रका में पेशाब से न बचने वाले और **ग़ीबत** करने वाले के अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला होने का तज़्किरा है। हर मुसल्मान को एह़तियात़ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये। इन रिवायात में क़ब्र पर **तर शाख़** रखने का ज़िक्र है। इस ज़िम्न में **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी मश्हूर किताब "जाअल ह़क़" ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 240 ता 241 पर फ़रमाते हैं : कहा गया है कि इस लिये अ़ज़ाब कम होगा कि जब तक (येह शाख़ें) तर रहेंगी तस्बीह़ पढ़ेंगी। इस ह़दीस की शर्ह़ में **अ़ल्लामा न-ववी** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی) फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से उ़-लमा ने क़ब्र के पास क़ुरआन पढ़ने को मुस्तह़ब फ़रमाया। क्यूं कि तिलावते क़ुरआन शाख़ की तस्बीह़ से ज़ियादा इस की ह़क़दार है कि इस से अ़ज़ाब कम

हो। **तह़त़ावी** अ़ला मराक़िल फ़लाह़ सफ़ह़ा 364 में है : हमारे बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन अस्ह़ाब ने इस ह़दीस की वज्ह से फ़तवा दिया कि "ख़ुश्बू और फूल चढ़ाने की (मुसल्मानों में) जो आ़दत है वोह **सुन्नत** है।" मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मजीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस और मुह़द्दिसीन व फ़ु-क़हा की इबारत से दो बातें मा'लूम हुईं। एक तो येह कि हर सब्ज़ चीज़ (या'नी सब्ज़े) का रखना हर मुसल्मान की क़ब्र पर जाइज़ है। हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने उन क़ब्रों पर (तर) शाख़ें रखीं जिन को अ़ज़ाब हो रहा था और दूसरे येह कि अ़ज़ाबे क़ब्र की कमी सब्ज़े की तस्बीह़ की ब-र-कत से है...... लिहाज़ा अगर हम भी आज (क़ब्रों पर) फूल वग़ैरा रखें तो भी اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मय्यित को फ़ाएदा होगा बल्कि आ़म मुसल्मानों की क़ब्रों को कच्चा रखने में येह ही मस्लहत है कि बारिश में इस पर सब्ज़ घास जमे और उस की तस्बीह़ से मय्यित के अ़ज़ाब में कमी हो।

*है कौन कि जो गिर्या करे फ़ातिह़ा को आए*

*बेकस के उठाए तेरी के रह़मत के भरन फूल*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79)

**ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त तर है : मुस्त़फ़ा** जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا** या'नी **ग़ीबत** ज़िना से सख़्त तर है। लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! **ग़ीबत** ज़िना से ज़ियादा सख़्त क्यूंकर है ? फ़रमाया : "मर्द ज़िना करता है फिर तौबा करता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है और **ग़ीबत** करने वाले की मग़्फ़िरत न होगी, जब तक वोह न मुआ़फ़ कर दे जिस की **ग़ीबत** की है।" (شُعَبُ الْاِيمان ج ٥ ص٣٠٦ حديث ٦٧٤١) और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत में है कि "ज़िना करने वाला तौबा करता है और **ग़ीबत** करने वाले की तौबा नहीं है।" (ايضًا، حديث ٦٧٤٢)

**मैं समझा शायद तूने ग़ीबत की है : एक** नौ जवान ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन

मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में आ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : मुझ से बहुत बड़ा गुनाह हो गया है, शर्म की वज्ह से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सामने बयान करने की भी हिम्मत नहीं। फिर कुछ देर के बा'द कहने लगा : अफ़्सोस ! मैं ने **ज़िना** किया है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं तो समझा था कि शायद तूने **ग़ीबत** का गुनाह किया है।" (تذکرۃ الاولیاء ص۱۷۳)

**ग़ीबत ज़िना से कब सख़्त है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **ग़ीबत** किस क़दर ज़ियादा तबाहकार है ! अलबत्ता येह ज़ेहन में रहे कि जिस ज़िना में हुक़ूक़ुल इ़बाद शामिल नहीं सिर्फ़ उस ज़िना से **ग़ीबत** सख़्त तर है। **ग़ीबत** में ह़क़्क़ुल अ़ब्द या'नी बन्दे का ह़क़ उस सूरत में शामिल होगा जब कि जिस की **ग़ीबत** की है उस को पता चल जाए कि फ़ुलां ने मेरी **ग़ीबत** की है और अब **ग़ीबत** करने वाले के लिये तौबा के साथ साथ उस से **मुआ़फ़ी मांगनी** भी ज़रूरी है जिस की **ग़ीबत** की है वरना ख़ाली तौबा काफ़ी थी।

**ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती फ़तवा : अब** ग़ीबत वग़ैरा गुनाहों के मु-तअ़ल्लिक़ फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 162 ता 163 का एक मा'लूमाती इस्तिफ़्ता और फ़तवा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

**सुवाल : ग़ीबत** करना, झूट बोलना, ख़ास कर वोह झूट जिन से ख़ल्क़े ख़ुदा में फ़ितना हो। दो दोस्त में या शोहर बीवी में या बाप बेटे में या भाई भाई में उस झूट से रन्जिश हो जाए, बाहम जुदाई हो के घर की ख़राबी की नौबत आ जाए, और मुसल्मान के ऐ़ब की तलाश व तजस्सुस में रहना, कोई मुसल्मान अगर पोशी-दगी से कोई गुनाह करता हो तो उस की तजस्सुस में लगे रहना और पता पाने पर या मह़्ज़ अपनी शुबा व क़ियास से उस को फ़ाश (ज़ाहिर) करना शोहरत देना किस द-रजे का गुनाह है और गुनाहाने मज़्कूरए बाला का मुर-तकिब फ़ासिक़ व मुस्तह़िक़े ला'नते ख़ुदा व रसूल है या नहीं ? और येह सब गुनाह शरअ़न द-र-जए फ़िस्क़ में ज़िना से कम हैं या ज़ियादा या बराबर ? जवाब मुफ़स्सल और मुदल्लल (या'नी दलाइल के साथ) दरकार है। بَيِّنُوا تُوجَرُوا (या'नी बयान फ़रमाइये और अज्रो सवाब कमाइये)

**अल जवाब :** येह सब गुनाहाने कबीरा हैं और इन का मुर-तकिब फ़ासिक़ व मुस्तह़िक़े ला'नत। ह़दीस में फ़रमाया : **اَلْغِيبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنا** (या'नी) ग़ीबत सख़्त है ज़िना से। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج٥ ص٦٤ حديث ٦٥٩٠) और ज़ाहिर है कि क़त्ले मोमिन **ग़ीबत** से अशद (या'नी सख़्त तर) है। और **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : (پ٢ البقرة:١٩١) "**وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ**" फ़ितना क़त्ल से सख़्त तर है। और इन सब में ह़क़्क़ुल इ़बाद (या'नी बन्दों का ह़क़) है तो उस ज़िना से ज़रूर बदतर है जिस में ह़क़्क़ुल इ़बाद न हो मगर वोह **झूट** जिस से किसी का ज़रर (या'नी नुक़्सान) न हो कि बे मस्लह़ते शर-ई हो तो गुनाह ज़रूर है मगर इसे ज़िना के बराबर नहीं कह सकते कि येह सग़ीरा है बा'दे इसरार कबीरा होगा। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

***पीछा मेरा ग़ीबत की मुसीबत से छुड़ा दे***

***हर बात संभल कर करूं तौफ़ीक़ ख़ुदा दे***

**ज़िना छोटा गुनाह नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यहां शैत़ान कहीं वस्वसे डाल कर ज़िना पर न उक्साए कि येह तो मा'मूली सा गुनाह है। **वल्लाह !** हरगिज़ ऐसा नहीं, येह बात हमेशा ज़ेह्न में रखिये कि छोटे गुनाह को भी अगर कोई छोटा समझ कर करता है तो वोह **सख़्त कबीरा गुनाह** बन जाता है और ज़िना छोटा गुनाह भी नहीं बल्कि **गुनाहे कबीरा** है, इस का अ़ज़ाब पढ़िये और थर-थराइये नीज़ जब ज़िना का अ़ज़ाब इतना होलनाक है तो **ग़ीबत** का अ़ज़ाब कितना दर्दनाक होगा इस का तसव्वुर जमा कर ख़ुद को डराइये :

**दो$^2$ सांप नोच नोच कर खाएंगे : ह़ज़रते** सय्यिदुना मसरूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقُدُّوس से रिवायत है : जो शख़्स चोरी या शराब ख़ोरी या ज़िना में मुब्तला हो कर मरता है उस पर दो सांप मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं। (شَرْحُ الصُّدُور ص ١٧٢)

**जहन्नमी ताबूत :** मन्क़ूल है : जहन्नम में **आग के ताबूत** में कुछ लोग क़ैद होंगे कि जब वोह राह़त मांगेंगे तो उन के लिये ताबूत खोल दिये जाएंगे और जब उन के शो'ले जहन्नमियों तक पहुंचेंगे तो वोह ब-यक ज़बान फ़रियाद करते हुए कहेंगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन ताबूत वालों पर ला'नत

फ़रमा । येह वोह लोग हैं जो औ़रतों की शर्मगाहों पर ह़राम त़रीक़े से क़ब्ज़ा करते थे ।
(بَحرُالدُّمُوع ص١٦٧)

**जन्नत में दाख़िले से मह़रूम : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 300 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''आंसूओं का दरिया''** सफ़ह़ा 229 ता 230 पर है मन्क़ूल है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब जन्नत को पैदा फ़रमाया तो उस से फ़रमाया : ''कलाम कर ।'' तो वोह बोली : जो मुझ में दाख़िल होगा वोह सआ़दत मन्द है । तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! तुझ में आठ क़िस्म के लोग दाख़िल न होंगे : शराब का आ़दी, ज़िना पर इसरार करने वाला, चुग़ुल ख़ोर, दय्यूस, (ज़ालिम) सिपाही, हीजड़ा और रिश्तेदारी तोड़ने वाला और वोह शख़्स जो ख़ुदा की क़सम खा कर कहता है कि फ़ुलां काम ज़रूर करूंगा फिर वोह काम नहीं करता । (اِتحافُ السّادۃ للزّبیدی ج ٩ص ٣٤٥)

येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द **ह़ज़रते** अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : ज़िना पर इसरार करने वाले से मुराद हमेशा ज़िना करते रहने वाला नहीं, इसी त़रह़ शराब के आ़दी से मुराद येह नहीं जो हमेशा शराब पीता रहे बल्कि मुराद येह है कि जब उसे शराब मुयस्सर हो तो वोह पी ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वज्ह से शराब पीने से बाज़ न आए । इसी त़रह़ जब उसे ज़िना का मौक़अ़ मिले तो (कर ले और) इस से बाज़ न रहे और न ही अपने नफ़्स को इस बुरी ख़्वाहिश की तक्मील से रोके । बेशक ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है । (بَحرُالدُّمُوع ص١٦٧)

**नज़र दिल में शह्वत का बीज बोती है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **اَلْعَیْنَانِ تَزْنِیَانِ** या'नी आंखें भी ज़िना करती हैं । (مُسندِ اِمام احمد ج٢ص٨٤حدیث٣٩١٢)

लिहाज़ा आंखों की ह़िफ़ाज़त ज़रूरी है । हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : जो आदमी अपनी आंख को बन्द करने पर क़ादिर नहीं होता वोह अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त भी नहीं कर सकता। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص ١٢٥)

**आंखों में पिघला हुवा सीसा :** मन्क़ूल है : **जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।** (هِدایه ج٢ ص٣٦٨)

**आंखों में आग भर दी जाएगी : मुका-श-फ़तुल क़ुलूब में है :** जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी। (مُکاشَفَةُ الْقُلوب ص ١٠)

**आग की सलाई : ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : औ़रत के मह़ासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़ह्‌र में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की हिफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत **आग की सलाई** फैरी जाएगी। (بَحرُالدُّموع ص ١٧١)

**जहन्नम से आज़ाद होने वाली आंखें : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 300 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"आंसूओं का दरिया"** सफ़ह़ा 235 पर है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : **"ऐ मूसा !** मैं ने तीन क़िस्म की आंखों को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दिया है, **एक** वोह आंख जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा देती है, **दूसरी** वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से रुक जाती है और **तीसरी** वोह आंख जो मेरे ख़ौफ़ से रोती है, और आंसू के इलावा हर शै की एक जज़ा है और आंसू की जज़ा रह़मत, मग़्फ़िरत और जन्नत में दाख़िले के इलावा कुछ नहीं।" (بَحرُالدُّموع ص ١٧٢)

**तुम जन्नत में मेरे साथ होगे : एक** शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं सिर्फ़ **एक महीने** के रोज़े रखता हूं इस पर इज़ाफ़ा नहीं

करता, और सिर्फ़ **पांच** नमाज़ें पढ़ता हूं इस से ज़ियादा नहीं पढ़ता और मेरे **माल** में ज़कात फ़र्ज़ नहीं और न ही मुझ पर **हज** फ़र्ज़ है और न ही नफ़्ल हज करता हूं, मैं मरने के बा'द कहां जाऊंगा ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **तबस्सुम** फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया **:** तुम **जन्नत** में मेरे साथ होगे जब कि तुम अपने दिल को दो बातों या'नी **ख़ियानत और ह़सद** से बचाओ और अपनी ज़बान को दो बातों या'नी **ग़ीबत और झूट** से और दो बातों से आंखों को बचाओ या'नी जिस की त़रफ़ नज़र करना **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम क़रार दिया है उस की त़रफ़ न देखो और किसी मुसल्मान को ह़क़ारत से न देखो। (قُوتُ الْقُلوب ج ۱ ص ۴۳۳)

**इन्फ़िरादी कोशिश की ब–र–कत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** से ज़बान और **बद निगाही** से आंखों की ह़िफ़ाज़त करने का ज़ेह्न बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म–दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये, म–दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक म–दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं **: सरदारआबाद** (फ़ैसलआबाद, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई अपने शहर के एक मश्हूर सुन्नी जामिआ़ में **दर्से निज़ामी** के त़ालिबे इल्म थे। अटक शहर (पंजाब) के एक इस्लामी भाई कभी कभार सरदारआबाद अपने मामूंजान के घर तशरीफ़ लाते थे और उन के मामूं उस मद्रसे के क़रीब रिहाइश पज़ीर थे, वोह इस्लामी भाई दौराने क़ियाम उन के मद्रसे में भी आते और त़–लबा से मुलाक़ात कर के उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाते, इन की उन से दोस्ती हो गई थी, वोह इन्हें **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माहोल के बारे में बताया करते, उन की बातें सुन सुन कर वोह **दा'वते इस्लामी** के मुह़िब्बीन में शामिल हो चुके थे। उन्हीं की दा'वत पर इन्हें **फ़ैज़ाने मदीना** सरदारआबाद (सूसां रोड नज्द पुरानी टंकी मदीना टाऊन) में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हुई, उन की शिर्कत के पहले ही इज्तिमाअ़ में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने **इमामा शरीफ़** के फ़ज़ाइल पर बयान किया, जिसे सुन कर वोह इतना मु–तअस्सिर हुए कि हाथों हाथ इमामा ख़रीद कर अपने

सर पर सजा लिया और बस्ते से **फ़ैज़ाने सुन्नत** भी ख़रीदी और अपनी मस्जिद में इस का **दर्स** शुरूअ़ कर दिया। वक़्त गुज़रने के साथ उन्हों ने मुकम्मल त़ौर पर **म-दनी हुल्या** अपना लिया। इज्तिमाअ़ में अपने साथ दीगर त़-लबा को भी ले जाते, पहले हफ़्ते 3 इस्लामी भाई थे दूसरे हफ़्ते बढ़ कर इन की ता'दाद 12 हो गई। उन्हों ने दा'वते इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िलों** में भी सफ़र किया और अपने अ़लाक़े में म-दनी कामों की धूमें मचाना शुरूअ़ कर दीं। 1994 सि.ई. में **फ़ैज़ाने मदीना** सरदारआबाद में **मद्र-सतुल मदीना** में बत़ौरे नाज़िम सुन्नतों की ख़िदमत का मौक़अ़ मिला। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ उन्हें **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

*अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल*

*अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माह़ोल*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 646)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**इन्फ़िरादी कोशिश सवाब का आसान ज़रीआ़ है : इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! किस त़रह़ एक त़ालिबे इ़ल्म किसी इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। इज्तिमाई कोशिश के मुक़ाबले में **इन्फ़िरादी कोशिश** उ़मूमन सह्ल होती है क्यूं कि कसीर इस्लामी भाइयों के सामने "बयान" करने की सलाहि़य्यत हर एक में नहीं होती जब कि **इन्फ़िरादी कोशिश** हर कोई कर सकता है ख़्वाह उसे बयान करना आता हो या न आता हो। इन्फ़िरादी कोशिश सवाब कमाने का आसान ज़रीआ़ है। **म-दनी मर्कज़** के दिये हुए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत देते जाइये और सवाब का ख़ज़ाना लूटते जाइये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**जहन्नम का खाना और लिबास मिलेगा :** सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : जिस शख़्स को किसी मर्दे मुस्लिम की **बुराई** करने की वज्ह से खाने को मिला, **अल्लाह** तआ़ला उस को उतना ही जहन्नम से खिलाएगा और जिस को मर्दे मुस्लिम की **बुराई** की वज्ह से कपड़ा पहनने को मिला, **अल्लाह** तआ़ला उस को जहन्नम का उतना ही कपड़ा पहनाएगा। और जो किसी शख़्स की वज्ह से सुनाने और दिखाने की जगह में खड़ा हो तो **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ियामत के दिन सुनाने और दिखाने की जगह में खड़ा करेगा। (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٥٤ حدیث٤٨٨١)

**दोज़ख़ की आग के अंगारे खाएगा : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 6 सफ़्ह़ा 619 ता 620 पर फ़रमाते हैं : या'नी इस त़रह़ (पर) कि दो लड़े हुए मुसल्मानों में से एक के पास जावे और उसे ख़ुश करने के लिये दूसरे की **ग़ीबत** करे, उसे बुरा कहे, उसे नुक़्सान पहुंचाने की तदबीरें बताए ताकि इस ज़रीए़ से येह शख़्स इसे कुछ दे दे या खिला दे। ऐसे ख़ुशा-मदी लोग आजकल बहुत हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह दोज़ख़ की आग के अंगारे उन लुक़्मों के इवज़ में जिस क़दर यहां लुक़्मे खाए उतने ही वहां **अंगारे** खाएगा। जो किसी को ख़ुश करने के लिये मुसल्मान भाई की **ग़ीबत** करे या उसे सताए (और) इस **ग़ीबत** वग़ैरा के इवज़ कपड़ों का जोड़ा पाए तो उसे क़ियामत में इस जोड़े के इवज़ **आग का जोड़ा** पहनाया जाएगा। मुफ़्ती साह़िब मज़ीद इस फ़रमाने आ़ली ("जो किसी की वज्ह से दिखाने और सुनाने की जगह खड़ा हो....اِلَخ" के बारे में फ़रमाते हैं कि इस) के बहुत मआ़नी हैं : एक येह कि जो शख़्स किसी मश्हूर शरीफ़ आदमी की पगड़ी उछाले (या'नी उस को बदनाम करे) उस का मुक़ाबला करे ताकि इस मुक़ाबले से मेरी **शोहरत** हो दूसरे येह कि जो किसी शख़्स को दुन्या में झूटे त़रीक़े से उछाले ताकि इस के ज़रीए़ मुझे **इ़ज़्ज़त व रोज़ी** मिले। जैसे आज कल बा'ज़ झूटे पीरों के मुरीद उस की झूटी करामतें बयान करते फिरते हैं ताकि हम को भी उस के ज़रीए़ इ़ज़्ज़त मिले कि हम उस (पहुंचे हुए मुर्शिद) के बालके (या'नी मुरीद या शागिर्द) हैं। तीसरे येह कि जो

शख़्स दुन्या में नामो नुमूद चाहे नेकियां करे मगर नामवरी के लिये, या जो शख़्स किसी के ज़रीए से अपने (आप) को मश्हूर व नामवर करे क़ियामत में ऐसे शख़्सों को (सरे) आ़म रुस्वा किया जावेगा कि फ़िरिश्ता उसे ऊंची जगह खड़ा कर के ए'लान करेगा कि (ऐ) लोगो ! येह बड़ा झूटा मक्कार फ़रेबी (धोकेबाज़) था। (मिरआत)

**जहन्नम की गिज़ा और मशरूब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस से वोह लोग इब्रत ह़ासिल करें जो अपने अमीर, निगरान, अफ़्सर, सेठ, लीडर या किसी मालदार को अच्छा लगाने, उन की हमदर्दियां पाने, अपने आप को "वफ़ादार" जताने मगर ह़क़ीक़त में अपनी **ह़माक़त** पर मोह्र लगाने और खु़द को दोज़ख़ का ह़क़दार बनाने के लिये उस सेठ वग़ैरा के सामने उस के मुख़ालिफ़ की पोलें खोलते और मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से उन की बुराइयां करते हैं। आह ! न जहन्नम की गिज़ा खाई जा सकेगी न दोज़ख़ का लिबास पहना जा सकेगा। **जहन्नम की गिज़ा** का नक़्शा खींचते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 167 ता 168 पर फ़रमाते हैं : (जहन्नमियों को) ख़ारदार थूहड़ (एक कांटेदार ज़हरीला पौदा) खाने को दिया जाएगा, वोह ऐसा होगा कि अगर उस का एक क़त़रा दुन्या में आए तो उस की सोज़िश व बदबू तमाम अहले दुन्या की मईशत बरबाद कर दे और वोह गले में जा कर फन्दा डालेगा, उस के उतारने के लिये (दोज़ख़ी लोग) पानी मांगेंगे, उन को वोह खौलता पानी दिया जाएगा कि मुंह के क़रीब आते ही मुंह की सारी खाल गल कर उस में गिर पड़ेगी, और पेट में जाते ही आंतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और वोह शोरबे की त़रह़ बह कर क़दमों की त़रफ़ निकलेंगी, प्यास इस बला की होगी कि उस पानी पर ऐसे गिरेंगे जैसे तोंस (या'नी सख़्त प्यास) के मारे हुए ऊंट। (बहारे शरीअ़त)

*नारे जहन्नम से तू बचाना दे, ख़ुल्दे बरीं में मुझ को बसाना*

*या रब अज़ पए शाहे मदीना, या अल्लाह मेरी झोली भर दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**बे जा ए'तिराज़ात करने वाले :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे उन लोगों पर तअ़ज्जुब है जो **सालिह़ीन** या'नी नेक लोगों के लिये मुबाह़ (या'नी जाइज़ चीज़) को भी **ऐ़ब** समझते हैं लेकिन अपने लिये क़बीह़ (या'नी बद तरीन) गुनाहों को भी मा'यूब ख़याल नहीं करते। तू देखेगा कि उन लोगों में कोई ख़ुद तो **ग़ीबत**, चुग़ली, ह़सद, कीना, धोका, तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी की नुह़ूसतों में गिरिफ़्तार है और तौबा भी नहीं करता जब कि नेक लोगों पर मुबाह़ (या'नी जाइज़) लिबास, लज़ीज़ खाने और मुबाह़ (जाइज़) मिठाई के इस्ति'माल पर भी ए'तिराज़ करता है। (تَنبِيهُ المُغتَرِّين ص٦٦)

**ख़ुद चाहे ह़राम खाते हों मगर...... : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई बा'ज़ लोगों की येह आ़दत होती है कि ख़ुद चाहे सूदी क़र्ज़े ले कर, झूट बोल कर, मिलावटें और टेक्स की चोरियां कर के नापाक या ह़राम रोज़ी कमाएं मगर किसी आ़लिम, ख़त़ीब या इमाम साहि़ब को कहीं से नज़राना मिला, इन को लोगों के घर दा'वते त़आ़म में आता जाता देखा, किसी ने बच्चे वग़ैरा की विलादत की ख़ुशी में इन्हें मिठाई का डिब्बा पेश किया तो येह लोग अपने गन्दी आमदनियों को भूल कर उस आ़लिम साहि़ब की **ग़ीबत** पर उतर आते और مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ के गुनाहों भरे जुम्ले कहते सुनाई देते हैं : ﴾1﴿ खाऊ मौलवी है ﴾2﴿ पेटू है ﴾3﴿ ह़लवा ख़ोर है ﴾4﴿ नज़रानों के लिये मरता है ﴾5﴿ मुफ़्त की दा'वतें खा कर पेट निकल आया है ﴾6﴿ खा खा कर गरदन मोटी कर ली है ﴾7﴿ लालची मौलाना है वग़ैरा।

**दूसरे की आंख का तिन्का तो नज़र आता है मगर...... : याद रखिये !** इमाम या आ़लिम साहि़ब का किसी मुसल्मान से नज़राना, दा'वत या मिठाई क़बूल करना जाइज़ काम है गुनाह व ह़राम नहीं बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो कारे सवाब है। मो'तरिज़ को अपनी

आमदनी पर नज़र दौड़ानी चाहिये, ह़राम हो तो उस से भी नीज़ **ग़ीबतों**, तोह्‌मतों और बद गुमानियों से तौबा और इस के तक़ाज़े पूरे करने चाहिएं । ग़ौर तो कीजिये ! जब आप किसी की त़रफ़ एक उंगली उठाते हैं तो हाथ की तीन उंग्लियों का रुख़ ख़ुद आप की त़रफ़ हो जाता है गोया येह ख़ामोश तम्बीह (नोटिस) है कि उस को बा'द में छेड़ना पहले अपने आप को सुधार ! **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : दूसरे की आंख का तिन्का तो तुम्हें नज़र आ जाता है (या'नी ज़रा ज़रा सी बात में उस का ऐ़ब बयान करता फिरता है) मगर अपनी आंख का शहतीर (या'नी बड़ी लकड़ी, मत़लब येह कि अपना बहुत बड़ा ऐ़ब भी) नज़र नहीं आता !

(ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْيا ص ۹۵ رقم ۵۷)

*कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब — नेक कब ऐ मेरे अल्लाह बनूंगा या रब*
*कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा — कब मैं बीमार, मदीने का बनूंगा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ऐसे काम न करो कि लोग ग़ीबत करें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अ़वाम व ख़वास हर एक को चाहिये कि मोहतात़ ज़िन्दगी गुज़ारें ऐसे मुबाह़ आ'माल व अफ़आ़ल से भी अपने आप को बचाएं जो कि फ़त्ह़े बाबे ग़ीबत या'नी **ग़ीबत** का दरवाज़ा खुलने का सबब बनें इस ज़िम्न में फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 612 ता 616 पर एक फ़ारसी सुवाल जवाब (जिस का तरजमा भी वहीं मौजूद है) का अक्सर ह़िस्सा पेश किया जाता है, इसे पढ़ कर अन्दाज़ा किया जा सकता है कि ऐसी ह़-र-कतें करना किस क़दर बुरा है जो मुसल्मानों में **ग़ीबतों,** तोह्‌मतों और बद गुमानियों और आपसी नफ़रतों का सबब बनें चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते बा ब-र-कत में

**सुवाल** हुवा : उ़-लमाए शरीअ़त और मुफ़्तियाने त़रीक़त इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद एक मक़ाम पर इमामत व नियाबत के फ़राइज़ अन्जाम देता है लेकिन जो लोग सुवर और मुर्दार का गोश्त पका कर ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) को खिलाते हैं **ज़ैद** उन लोगों के घरों से खाना खाता है और कहता है कि ''मुर्दार और सुवर का गोश्त ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के लिये पकाने में कोई ह़रज नहीं, पकाने के बा'द हाथ धो डाले तो पाक हो जाते हैं।'' शह्र के अक्सर लोग **ज़ैद** के इस त़र्ज़े अ़मल को देख कर उन लोगों के घरों से खाना खाने लगे हैं जब कि कुछ लोग इस अ़मल से नफ़रत और सख़्त इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं और निज़ाअ़ (या'नी फ़साद) की सूरत बन गई है। लिहाज़ा किताबो सुन्नत की रोशनी में बयान फ़रमाया जाए कि शख़्से मज़्कूर (या'नी ज़ैद) के बारे में क्या शर-ई ह़ुक्म है और इस की मुआ़-वनत व इमदाद और इस से तआ़वुन करने वालों के बारे में शरीअ़त क्या फ़रमाती है ? **بَیِّنُوْا تُوْجَرُوْا** (बयान फ़रमाओ ताकि अज्रो सवाब पाओ)

**अल जवाब :** ऐसे निडर, बे ख़ौफ़ और तक़्वा से आ़री लोग जो काफ़िरों ग़ैर मुस्लिमों के लिये (सुवर व मुर्दार जैसी) ख़बीस तरीन और नजिस (या'नी नापाक) व ह़राम चीज़ें पकाने खिलाने का पेशा इख़्तियार करते हैं। ऐसे लोगों के हां से दीनदारों और तक़्वादार लोगों को खाना हरगिज़ नहीं खाना चाहिये क्यूं कि जहां **ह़राम** चीज़ों का इस्ति'माल कसरत से हो वहां बरतनों के नापाक अश्या से आलूदा होने का एह़तिमाल (या'नी शुबा) होता है। और दीनदार व तक़्वादार लोगों का ऐसे लोगों के हां जाना और उन के हां से ऐसे मश्कूक बरतनों में खाना खाना अ़वामुन्नास की निगाहों में बाइसे इल्ज़ाम व बाइसे **तोहमत** हो सकता है। ह़दीस शरीफ़ में है : ''जो कोई **अल्लाह** तआ़ला और क़ियामत पर ईमान रखता है तो वोह मक़ामाते तोहमत से बचे।'' लिहाज़ा ऐसी सूरते ह़ाल में इल्ज़ाम, ता'न और **तोहमत** से बचना ज़रूरी है ब सूरते दीगर येह इक़्दाम अपने दीनी भाइयों को कबीरा गुनाहों **ग़ीबत**, **बोहतान, कीना** और **बुरे अल्क़ाब** के इस्ति'माल में मुब्तला कर देगा। ह़दीसे मुबारक है : (लोगो !) जिन कामों को कान ना पसन्द करते हैं उन से बचो। (مُسند اِمام احمد ج ۵ ص۶۰۵ حدیث ۱۶۷۰۱) और दूसरी ह़दीसे पाक में है : और ऐसे कामों से परहेज़

करो जिन के इरतिकाब पर मा'ज़िरत करनी पड़े। (اَلْاَحادِیثُ الْمُخْتارَۃ ج۶ ص۱۸۸ حدیث۲۱۹۹) और बिग़ैर शर-ई मजबूरी के मुसल्मानों को मु-तनफ़्फ़िर करना (या'नी मुसल्मानों को नफ़रत दिलाना) मम्नूअ़ है। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا** या'नी मुसल्मानों को ख़ुश ख़बरी दो और नफ़रत न दिलाओ। (بُخاری ج۱ ص۴۲ حدیث ۶۹) शरीअ़त का मक़्सद जोड़ना, इत्तिहाद पैदा करना है, न कि तोड़ना। अ़क़्ले सलीम का तक़ाज़ा भी येही है कि लोगों को बे क़रारी में डाल कर नाराज़ न किया जाए और कराहत व इल्ज़ाम वाली जगह खड़े होने से परहेज़ किया जाए, ह़दीसे पाक में इर्शादे न-बवी है : **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाने के बा'द अ़क़्ल की बुन्याद लोगों से दोस्ती और मह़ब्बत रखना है। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۴ ص۳۳۹ حدیث ۱۲۳۳۲) फ़क़ीर (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने इस बाब की ह़दीसों को अपने रिसाले **जमालुल इज्माल** और इस की शर्ह़ **कमालुल इक्माल** में तफ़्सीलन बयान कर दिया है। ख़ुलासा येह कि अ़क़्ल व नक़्ल के ए'तिबार से इस त़रह़ का काम या इक़्दाम अपने अन्दर कई क़िस्म की क़बाह़तें (ख़राबियां) रखता है कि जिन का इन्कार नहीं किया जा सकता और ऐसे कामों का अन्जाम मज़्मूम होता है। (और) जब येह काम या इक़्दाम फ़ितना व फ़साद और मुसल्मानों के दरमियान तफ़रीक़ और फूट पड़ने की ह़द तक जा पहुंचे तो जुर्मे अ़ज़ीम बन जाता है चुनान्चे इर्शादे रब्बानी है : "**وَالْفِتْنَۃُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ**" : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और इन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है। (پ ۲ البقرہ ۱۹۱) और ह़दीस शरीफ़ में है कि फ़ितना सो रहा है उस के जगाने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵) अगर आप अच्छी त़रह़ ग़ौर करें तो येह वाज़ेह़ होगा कि इस क़िस्म के अफ़्आ़ल उन्ही लोगों से सरज़द होते हैं जो दीन और तक़ाज़ए दीन को चन्दां (या'नी बिल्कुल) अहम्मिय्यत नहीं देते, बे ख़ौफ़ हो कर बिल्कुल आज़ादाना ला परवाही वाली ज़िन्दगी गुज़ारना ज़िन्दगी का ह़ासिल (या'नी मक़्सदे ह़यात) समझते हैं। कुछ आगे चल कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के साथ मिल कर खाना पीना और इस क़िस्म के दूसरे काम करना कज फ़ित़रत (या'नी बद अख़्लाक़) और फ़ितने बाज़ लोगों का काम होता है। मज़ीद आगे चल कर फ़रमाते हैं : और जिस किसी ने येह कहा कि सुवर और मुर्दार का गोश्त

पकाने और ग़ैर मुस्लिमों को खिलाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता या कुछ मुज़ा–यक़ा और ख़त़रा नहीं, वोह शख़्से मज़्कूर (या'नी ज़ैद) ग़लत़ बात कहने का मुर–तकिब हुवा बिग़ैर इल्म व तह़क़ीक़ के इस क़िस्म का फ़ैसला सादिर कर देना हरगिज़ मुनासिब नहीं, बिग़ैर शर–ई मजबूरी के गन्दगियों से आलूदा होना सख़्त मम्नूअ़ और ना जाइज़ है बिल ख़ुसूस ऐसे कामों से परहेज़ करना बहुत ज़रूरी है जिन का ह़ासिल (या'नी नतीजा) उन कामों की इस्लाह़ करने का इरादा करना है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने बिगाड़ दिया है और काफ़िरों को खाना खिलाने के लिये मुसल्मानों का अपने हाथों ना जाइज़ व ह़राम चीज़ों को पकाना यक़ीनन ना जाइज़ और **ह़राम** है। और येह क़ाइदा व उसूल है कि **जिस चीज़ का लेना ह़राम है उस का देना भी ह़राम है। अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया है : وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ : **तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो। (پ ٦ المائدہ ٢) और **अल्लाह** तआ़ला पाक, बरतर और सब कुछ जानने वाला है।

*छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह     वोह ख़बरदार है क्या होना है*

*अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख     सर पे तलवार है क्या होना है*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 167)

**म–दनी चेनल पर म–दनी मुज़ाकरा सुनने की म–दनी बहार : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मु–तअ़द्दिद शो'बे हैं जिन के ज़रीए दुन्या में इस्लाम की बहारें लुटाई जा रही हैं, इन्हीं में एक शो'बा **"म–दनी चेनल"** भी है जिस के ज़रीए दुन्या के कई ममालिक में T.V. के ज़रीए घरों के अन्दर दाख़िल हो कर **दा'वते इस्लामी** इस्लाम का पैग़ाम आ़म कर रही है। **म–दनी चेनल** दुन्या का वाह़िद चेनल है जो कि सो फ़ीसदी इस्लामी रंग में रंगा हुवा है, इस में न फ़िल्में डिरामे हैं न गाने बाजे और न औ़रत की नुमाइश है न ही किसी क़िस्म की मूसीक़ी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म–दनी चेनल** के ज़रीए **कई कुफ़्फ़ार दामने इस्लाम में आ चुके हैं,** बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ों के पाबन्द बने हैं और ला ता'दाद अफ़राद गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों पर अ़मल करने लगे

हैं। **म-दनी चेनल** की ब-र-कतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये इस की एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा हो चुनान्चे **एक** इस्लामी भाई ने मुझे बर्क़ी डाक (E.MAIL) के ज़रीए एक "म-दनी बहार" पेश की उस का लुब्बे लुबाब है **:** आज कल येह हाल है कि दौराने गुफ़्त-गू अक्सर इस बात का अन्दाज़ा नहीं हो पाता कि **ग़ीबत** का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है ! एक बार हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से बाबुल मदीना आए हुए एक इस्लामी भाई ने चन्द इस्लामी भाइयों की मौजू-दगी में कहा **:** मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि मेरी बहन जो कि इन्तिहाई **ग़ुसीली** त़बीअ़त की है, अगर कभी किसी से नाराज़ हो जाए तो ख़ुद से बढ़ कर मुलाक़ात में पहल नहीं करती, मेरी भाभी और बहन में चन्द मुआ़-मलात की बिना पर आपस में चप-क़लश हुई और बहन ने बातचीत बन्द कर दी, हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कि उसी रात **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ सो फ़ीसदी इस्लामी **म-दनी चेनल** पर "म-दनी मुज़ाकरा" नश्र किया गया जिस में **ग़ीबत की तबाह कारियों** से बचने का ज़ेहन दिया गया था। मेरी बहन ने जब वोह म-दनी मुज़ाकरा सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी वोही **ग़ुसीली** बहन जो बढ़ कर किसी से मुलाक़ात नहीं करती थी अज़ख़ुद आगे बढ़ी और उस ने मेरी भाभी से न सिर्फ़ मुलाक़ात की बल्कि मुआ़फ़ी भी मांगी और दोनों में सुल्ह़ हो गई।

**बहार में चार ग़ीबतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अभी जो आप ने **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा की उस के आग़ाज़ में लिखा है कि दौराने गुफ़्त-गू अक्सर अन्दाज़ा ही नहीं होता कि **ग़ीबत** का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है तो वाक़ेई ऐसा ही है, ख़ुद इस **म-दनी बहार** में भी **4 ग़ीबतें** की गई हैं। अलबत्ता इन ग़ीबतों को "गुनाहों भरी ग़ीबतें" नहीं कहेंगे कि गुनाह होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह किसी मुअ़य्यन या'नी मख़्सूस फ़र्द की **ग़ीबत** हो, यहां म-दनी बहार में ऐ़ब के ह़वाले से सिर्फ़ "बहन" का तज़्किरा है मगर कौन सी बहन येह त़ै नहीं है, हो सकता है कि क़ाइल की कई बहनें हों। हां जिस के सामने म-दनी बहार बयान की उस को मुअ़य्यन (PARTICULAR) बहन का मा'लूम है या येह जानता है के क़ाइल की एक ही बहन है और म-दनी बहार भी बिग़ैर शर-ई इजाज़त के बयान की गई हो तो अब वोह **चारों ग़ीबतें** गुनाहों भरी हैं, बहर ह़ाल गुफ़्त-गू में एह़तियात़ का ज़ेह्न देने के लिये इस **म-दनी बहार** में मौजूद **चार**

**ग़ीबतों** का ज़िक्र किया जा रहा है : (1) मेरी बहन इन्तिहाई **ग़ुसीली** है (2 ता 3) अगर किसी से नाराज़ हो जाए तो ख़ुद से बढ़ कर सुल्ह़ की सूरत नहीं बनाती। येह दोनों **ग़ीबतें** दो दो मर्तबा की गई हैं (4) बहन और भाभी की आपस में चप-क़लश और नाराज़ी का तज़्किरा करना घर का राज़ फ़ाश करना हुवा जो कि एक ना शाइस्ता ह़-र-कत और मिन जुम्ला अस्बाबे **ग़ीबत** है। इस **म-दनी बहार** को बयान करने वाले इस्लामी भाई ने अपनी बहन के **ग़ुसीली** होने वग़ैरा का तज़्किरा अगर इस निय्यत से किया है कि इस से सुन्नतों भरे **म-दनी चेनल** की तश्हीर हो और लोगों को इस की अहम्मिय्यत का पता चले तो येह एक बहुत अच्छी निय्यत है। मगर ऐसे मौक़अ़ पर इशारे किनाए में बात करनी अन्सब (मुनासिब तर) है या'नी नाम लिये और अ़लामत ज़ाहिर किये बग़ैर इस त़रह़ रम्ज़ (या'नी इशारे) में बात करे के मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात की जा रही है वोह) समझ ही न सके कि किस के बारे में गुफ़्त-गू की जा रही है, म-सलन यूं कहे : एक इस्लामी भाई के साथ येह वाक़िआ़ पेश आया कि उन की बहन **ग़ुसीली** थी......اِلٰخ। मगर इस दौरान सन्जीदा अन्दाज़ ज़रूरी है वरना मख़्सूस अन्दाज़ में मुस्कुराने वग़ैरा से हो सकता है कि सुनने वाले समझ जाएं कि येह तो ख़ुद सुनाने वाले के अपने ही घर का क़िस्सा है!

*इलाही ! अपनी रह़मत से तू ह़िक्मत का ख़ज़ीना दे — हमें अ़क़्ले सलीम मौला ! पए शाहे मदीना दे*
*ख़ुदाया गुफ़्त-गू करने का तू म-दनी क़रीना दे — बचा ग़ीबत से, बक बक से, हमें क़ुफ़्ले मदीना दे*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की सह़ाबा** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم **से मह़ब्बत : सरकारे** दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं। (سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٤٨ حديث ٤٨٦٠)

**मुह़क़्क़िक़** अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए**" की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : "या'नी किसी की कोताही, फ़े'ले बद, आ़दते बद, उस ने येह किया या उस ने येह कहा, फ़ुलां इस त़रह़ कह रहा था।" (اشعة اللّمعات ج ٤ ص ٨٣) ह़दीस शरीफ़ के इस ह़िस्से "**मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं**" का ख़ुलासा करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी किसी की अ़दावत, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे। येह भी हम लोगों के लिये **बयाने क़ानून** है कि अपने **सीने** (मुसल्मानों के कीने से) साफ़ रखो ताकि इन में मदीने के अन्वार देखो, वरना **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सीनए रह़मत, नूरे करामत का गन्जीना है वहां कदूरत (या'नी बुग़्ज़ो कीने) की पहुंच ही नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 472)

**तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत :** سُبْحٰنَ اللهِ ! मज़्कूरा ह़दीसे मुबारक में वारिद शुदा इर्शादे गिरामी मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अपने ग़ुलामों से मह़ब्बत की अथाह गहराइयों का पता देता है ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के भाईजान, शहन्शाहे सुख़न, उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रते मौलाना **ह़सन** रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

*तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत*
*है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो*

(ज़ौक़े ना'त)

**पीर की नज़र से मुरीद को गिराने की कोशिश करने वालों को तम्बीह :** मज़्कूरा ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो कि शागिर्द की **उस्ताज़** से, बेटे की **बाप** से, मुलाज़िम की **सेठ** से, मा तह़्त की **निगरान** से और मुरीद की उस के **पीर साह़िब** से बिला मस्लह़ते शर-ई़ कमज़ोरियां और बुराइयां बयान कर के **ग़ीबत** का कबीरा गुनाह करने के साथ साथ

उस को उन की नज़र से गिरा देते हैं, शायद उन्हें इस बात का होश भी नहीं होता कि वोह ऐसा कर के कितनी बड़ी ख़राबियों का बाइस बनते हैं, ज़ाहिर है जब शागिर्द अपने उस्ताद की, मा तह़्त अपने **निगरान** की और मुरीद अपने **पीरो मुर्शिद** की नज़र से गिर गया तो बेचारे का जो अन्जाम होगा वोह हर ज़ी शुऊर समझ सकता है। काश ! येह **ग़ीबत** करने वाला **ग़ीबत** करने से क़ब्ल ख़ुद अपने लिये ग़ौर कर लेता कि अगर मुझे कोई अपने पीर साहिब या दीनी उस्ताज़ की निगाह से गिरा दे तो मुझ पर क्या गुज़रे ! ऐ काश ! पीरो मुर्शिद की नज़र से हम कभी भी न गिरें ! सद करोड़ काश ! हम हमेशा हमेशा अपने मुर्शिदे गिरामी की सीधी और मीठी मीठी नज़र में रहें :

***सदा पीरो मुर्शिद रहें मुझ से राज़ी***
***कभी भी न हों येह ख़फ़ा या इलाही***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 101)

**आह !** काश हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम गुनहगारों से सदा ख़ुश रहें, कभी भी हमें अपनी निगाहे इनायत से दूर न फ़रमाएं कि

***न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !***
***कि जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड़ दिया***

**या रब्बे मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी तमाम ख़ताओं को मुआफ़ फ़रमा दे और हमेशा हम पर रह़मत की नज़र रख। आह ! अगर तू नाराज़ हो गया तो हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** ! हम किस के दरवाज़े पर जाएंगे !

***गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी — हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !***
***अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा — गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

**"बड़ों" को भी चाहिये "छोटों" की ग़ीबत न सुनें :** "बड़ों" या'नी उस्तादों, निगरानों

वग़ैरा की ख़िदमतों में **म-दनी इल्तिजा** है कि जब कोई शख़्स आप के पास आ कर आप के किसी मा तह़्त की बिला मस्लह़ते शर-ई **ग़ीबत** करने लगे तो क़ुदरत होने की सूरत में फ़ौरन उसे रोक दीजिये, वरना **ग़ीबत** सुनने के गुनाह में पड़ सकते हैं। अगर **ग़ीबत** सुन कर आप को **ग़ुस्सा** आ गया और ज़बान से "कुछ" निकल गया तो हो सकता है कि वोही **ग़ीबत** करने वाला **मुग़्ताब** को या'नी जिस की **ग़ीबत** कर रहा था उस को आप के "अल्फ़ाज़" पहुंचा दे और फिर मज़ीद गुनाहों भरे मसाइल पैदा हों। बिलफ़र्ज़ **ग़ीबत** करने वाला आप के पास किसी की बुराई पहुंचाने में काम्याब हो भी गया हो और आप ने भी **ग़ीबत** से बचने के त़रीक़ों पर अ़मल न किया हो तो अपनी आख़िरत की भलाई की ख़ात़िर हाथों हाथ तौबा और इस के तक़ाज़े पूरे कर लीजिये और **ग़ीबत** करने वाले पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उसे भी तौबा करवा दीजिये नीज़ **मुग़्ताब** या'नी जिस की **ग़ीबत** की गई है उस के मु-तअ़ल्लिक़ हरगिज़ **बद गुमानी** मत कीजिये, न ही उस पर अपनी शफ़्क़तें कम कीजिये कि आप को जो कुछ किसी के बारे में बताया गया इस का कोई सुबूत भी नहीं, مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ग़ीबत** करने वाले के ज़रीए मिली हुई बात किसी और को बताने का जज़्बए शर पैदा होते ही इस **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़ेह्न में दोहराइये : كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِبًا اَنْ يُّحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ या'नी किसी इन्सान के झूटा होने को येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात (बिग़ैर तह़क़ीक़ किये) बयान कर दे। (مُقدّمہ صَحیح مُسلِم ص۸ حدیث۵) फिर इस ह़दीसे पाक में की हुई मुमा-न-अ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की निय्यत से उस बात को किसी के आगे बयान मत कीजिये वरना ख़ुद भी **ग़ीबत** व इफ़्क (तोहमत, बोहतान) वग़ैरा के गुनाहों की आफ़त में फंस जाएंगे। हां जिस की **ग़ीबत** की गई थी उस की तस्दीक़ हो जाने पर अच्छी अच्छी निय्यतें कर के उस मा तह़्त की ज़रूर इस्लाह़ फ़रमा दीजिये। आप को अगर्चे ब ज़ाहिर कोई बड़ाई मिल भी गई हो मगर **अल्लाहु** क़दीर عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हमेशा डरते रहिये, मह़्ज़ रस्मी कलामी नहीं दिल की गहराई से आ़जिज़ी आ़जिज़ी और आ़जिज़ी करते रहिये, अपनी कम मा-यगी व बे बिज़ा-अ़ती (या'नी कम हैसिय्यती) का ए'तिराफ़ करते हुए अ़र्ज़ कीजिये :

*ख़ाक मुझ में कमाल रख्खा है मुस्त़फ़ा ने संभाल रख्खा है*

*मेरे ऐ़बों पे डाल कर पर्दा मुझ को अच्छों में डाल रख्खा है*

*तेरा ए'जाज़ कब का मर जाता*

*तेरे टुकड़ों ने पाल रख्खा है*

**चुग़ुल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता : जब** भी आप के पास कोई आ कर किसी की **ग़ीबत** करे उस पर हरगिज़ ए'तिमाद मत कीजिये, क्यूं कि **ग़ीबत** करने के सबब वोह फ़ासिक़ हो जाता है और **फ़ासिक़** की ख़बर मो'तबर नहीं होती। ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद बिन शिहाब ज़ोहरी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی एक मर्तबा **बादशाह** सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स आया, **बादशाह** ने क़दरे ना गवारी के साथ उस से कहा : ''मुझे पता चला है तुम ने मेरे ख़िलाफ़ फ़ुलां फ़ुलां बात की है!'' उस ने जवाब दिया : मैं ने तो ऐसा कुछ नहीं कहा। **बादशाह** ने इसरार करते हुए कहा : जिस ने मुझे बताया है, वोह (कैसे झूट बोल सकता है बहुत) **सच्चा** आदमी है। तो ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम ज़ोहरी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने **बादशाह** को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : (आप को जिस ने इस त़रह़ की ख़बर दी वोह तो चुग़ली खाने वाला हुवा और) **''चुग़ुल ख़ोर कभी सच्चा हो नहीं सकता !''** येह सुन कर बादशाह संभल गया और कहने लगा : ह़ुज़ूर ! आप ने बिल्कुल बजा फ़रमाया। फिर उस शख़्स से कहा : اِذْهَبْ بِسَلَامٍ या'नी तुम सलामती के साथ लौट जाओ। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص١٩٣)

**सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **का त़र्ज़े अ़मल : अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फ़ी (NEGATIVE) बात की। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ़-मले की तह़क़ीक़ करें ! अगर तुम **झूटे** निकले तो इस आयते मुबा-रका के मिस्दाक़ क़रार पाओगे :

اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَیَّنُوْۤا (پ ۲۶ الحجرات ٦)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह्क़ीक़ कर लो।

और अगर तुम **सच्चे** हुए तो येह आयते करीमा तुम पर सादिक़ आएगी :

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِیْمٍ ۙ (پ ۲۹ القلم ۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

**और** अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआफ़ कर दें ! उस ने अ़र्ज़ की **: या अमीरल मुअमिनीन** ! मुआफ़ कर दीजिये आयिन्दा मैं ऐसा (या'नी ग़ीबतें और चुग़ल ख़ोरियां) नहीं करूंगा। (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۱۹۳) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए : एक** शख़्स ने किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन्हें उन के दोस्त की कुछ मन्फ़ी (NEGATIVE) बातें बताईं, इस पर उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़्सोस ! तुम मेरे पास **तीन बुराइयां** ले कर आए : (1) मुझे मेरे इस्लामी भाई से **नफ़रत** दिलाई (2) इस वज्ह से मेरे **दिल** को (तश्वीशों और वस्वसों में) मश्ग़ूल किया और (3) अपने अमीन नफ़्स पर **तोहमत** लगाई। (या'नी मैं तुम्हें अमानत दार समझता था मगर तुम तो पेट के हलके निकले !) (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۱۹۳)

**मह़ब्बतों के चोरों से बचो : बुज़ुर्गाने दीन** رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : अ़क़्लों के दुश्मनों और मह़ब्बतों के चोरों से बचो, येह चोर **बदगोई** करने वाले और **चुग़ली** खाने वाले हैं और चोर तो माल चुराते हैं जब कि येह (ग़ीबतें और चुग़लियां करने वाले) **लोग मह़ब्बतें चुराते हैं।** (اَلْمُستَطرَف ج ۱ ص ۱۵۱)

**जुदा होने तक ह़ालते जिहाद में : ह़ज़रते** सय्यिदुना मन्सूर बिन ज़ाज़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان

फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे पास उ़मूमन जो भी आ कर बैठता है वोह जब तक चला न जाए मैं गोया उस के साथ **ह़ालते जिहाद** में होता हूं क्यूं कि वोह मुझे मेरे दोस्त से **मु-तनफ़्फ़िर** करने (या'नी नफ़रत दिलाने) से बाज़ नहीं रहता, या मेरी **ग़ीबत** करने वालों की **ग़ीबतें** मुझ तक पहुंचा कर मुझे तश्वीश में डालता और आज़्माइश में मुब्तला करता है । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٦) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

*मुझे ग़ीबतों से बचा या इलाही बचूं चुग़्लियों से सदा या इलाही*
*कभी भी लगाऊं न तोहमत किसी पर दे तौफ़ीक़े सिद्क़ो वफ़ा या इलाही*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تعالٰی علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تعالٰی علٰی مُحَمَّد

**म-दनी चेनल की बदौलत मौत से 17 दिन क़ब्ल ईमान मिल गया :** सिद्दीक़आबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि 20 एप्रील 2009 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ बाबुल मदीना कराची के रिहाइशी तक़रीबन 50 सालह एक ग़ैर मुस्लिम ने जब **म-दनी चेनल** पर इस्लाम की ह़क़ीक़ी ता'लीमात को सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मु-तअस्सिर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया, उन का इस्लामी नाम मुह़म्मद सिद्दीक़ रखा गया । वोह जुमा'रात को **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के 12 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर भी बन गए । **म-दनी क़ाफ़िले** से वापस आने के दूसरे या तीसरे रोज़ ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची के नज़्दीक एक गाड़ी ने उन्हें कुचल दिया, येह ह़ादिसा जान लेवा साबित हुवा, यूं वोह इस्लाम की अनमोल दौलत से मालामाल होने के तक़रीबन 17 या 18 दिन बा'द इस दुन्या से रुख़्सत हो गए । **अल्लाह**

तआला उन की मग़्फ़िरत फ़रमाए। اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

*म-दनी चेनल की मुहिम है नफ़्सो शैत़ां के ख़िलाफ़ जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ए'तिराफ़*
*नफ़्से अम्मारा पे ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोरदार शर्मे इस्यां के सबब होगा गुनहगार अश्कबार*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 632)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मरने से क़ब्ल कोई सुधरता है तो कोई बिगड़ता है :** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुश नसीब बन्दे को मौत से सिर्फ़ 17 या 18 दिन क़ब्ल इस्लाम की दौलत नसीब हो गई। **अल्लाहु क़दीर** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** किस के बारे में क्या है येह किसी को नहीं पता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है, कोई तो अपनी सारी उ़म्र कुफ़्र में गुज़ार दे मगर मरते वक़्त **ईमान** की दौलत से सरफ़राज़ हो जाए जब कि कोई सारी उ़म्र नेकियों में बसर करने के बा वुजूद ब वक़्ते रुख़्सत **बुरे** ख़ातिमे से दो चार हो। हम रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ से भलाई का सुवाल करते हैं। एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के **मरने से एक साल पहले** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है। जब ऐसा ख़ुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है। उस वक़्त वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के साथ बुराई का इरादा करता है तो **मरने से एक साल क़ब्ल एक शैत़ान** उस पर मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है। उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटक्ने लगती है। उस वक़्त येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मिलने को। (مُسنَد ابنِ راھَوَیہ ج۳ ص۵۰۳)

*ईमान पे दे मौत मदीने की गली में*

*मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में : सुल्तानआबाद** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारे अ़लाक़े में एक ग़ैर मुस्लिम (उ़म्र तक़रीबन 30 साल) अपने दोस्तों के साथ रहता था जिन में कुछ मुसल्मान भी थे, आज कल के अक्सर नौ जवानों की त़रह़ येह लोग भी केबल पर फ़िल्में डिरामे देखा करते थे। जब र-मज़ानुल मुबारक (1429 सि.हि.) में **म-दनी चेनल** का आग़ाज़ हुवा तो केबल पर इस के म-दनी सिल्सिले जारी हुए, उस ग़ैर मुस्लिम ने जब येह सिल्सिले देखे तो उसे बड़े अच्छे लगे। अब वोह अक्सरो बेशतर **म-दनी चेनल** ही देखा करता, म-दनी चेनल की ब-र-कत से आख़िरे कार वोह कुफ़्र के अंधेरे से नजात पाने और इस्लाम के नूर से अपने दिल को चमकाने के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** ह़ाज़िर हुवा, और कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया। फिर येह इस्लामी भाई हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हज़ारों इस्लामी भाइयों और म-दनी चेनल के नाज़िरीन के सामने **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद हो कर क़ादिरी र-ज़वी भी बन गया। नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, कभी कभार सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सर पर सजा कर इस का फ़ैज़ भी लूटने लगा, **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में क़ुरआने मजीद पढ़ने का सिल्सिला भी शुरूअ़ कर दिया। सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी शरीक हुवा। **अल्लाह** तआ़ला उन को और हम सब को ईमान पर साबित क़दम रखे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

*म-दनी चेनल ह़क़ बयां करने में भी बेबाक है*
*नाच गानों और फ़िल्मों से येह चेनल पाक है*
*और शैत़ाने लई़ रन्जूर है मग़मूम है*
*म-दनी चेनल में नबी की सुन्नतों की धूम है*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 633)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती : ह़ज़रते** सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : तीन आदमियों की दुआ़ क़बूल नहीं होती ﴿1﴾ जो माले ह़राम खाता हो ﴿2﴾ जो ब कसरत **ग़ीबत** करता हो ﴿3﴾ जो कि मुसल्मानों से **ह़सद** रखता हो।

(تَنبِيهُ الغَافِلِين ص ٩٥)

**जन्नत की ज़मानत : नबियों** के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जो शख़्स अपने घर में बैठ रहे और किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** न करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये (जन्नत का) ज़ामिन है।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج٣ ص٤٦ حديث٣٨٢٢)

**जन्नत में आक़ा का पड़ोसी : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ता हो, उस के अ़याल (या'नी घर वाले) ज़ियादा और माल कम हो और वोह शख़्स मुसल्मानों की **ग़ीबत** न करता हो मैं और वोह **जन्नत** में इन दो की त़रह़ होंगे। (या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली मिला कर दिखाया) (مُسْنَد اَبِی يَعْلٰى ج١ ص٤٢٨ حديث٩٨٦)

## "या अल्लाह हमें जन्नत नसीब फ़रमा" के बाईस ह़ुरूफ़ की निस्बत से जन्नत की 22 झल्कियां

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में **जन्नत** के अन्दर मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का क्या ख़ूब म-दनी नुस्ख़ा बयान किया गया है ! سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله ! **जन्नत** की अ़-ज़मत की भी क्या ही बात है ! **दा'वते**

**इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 152 ता 162 पर तह़रीर कर्दा ''**जन्नत का बयान**'' में से चन्द झलकियां मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुंह में पानी आ जाएगा। **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत भरी **जन्नत** की चाहत में बेताब हो जाइये और इसे पाने की जिद्दो जह्द तेज़ तर कर दीजिये चुनान्चे लिखा है : ❁ अगर **जन्नत** की कोई नाख़ुन भर चीज़ दुन्या में ज़ाहिर हो तो तमाम आस्मान व ज़मीन उस से आरास्ता हो जाएं और ❁ अगर **जन्नती का कंगन** (या'नी कलाई का एक ज़ेवर) ज़ाहिर हो तो आफ़्ताब (सूरज) की रोशनी मिटा दे, जैसे आफ़्ताब सितारों की रोशनी मिटा देता है ❁ **जन्नत** की इतनी जगह जिस में कोड़ा (चाबुक, दुर्रा) रख सकें दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस के अन्दर जो कुछ है उस) से बेहतर है ❁ **जन्नत** की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं ❁ जन्नतियों को **जन्नत** में हर क़िस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा ❁ अगर किसी **परिन्द** को देख कर उस का गोश्त खाने को जी हो तो उसी वक़्त भुना हुवा उन के पास आ जाएगा ❁ अगर **पानी** वग़ैरा की ख़्वाहिश हो तो कूज़े ख़ुद हाथ में आ जाएंगे, उन में ठीक अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ **पानी, दूध, शराब, शह्द** होगा कि उन की ख़्वाहिश से एक क़त़रा कम न ज़ियादा, बा'द पीने के ख़ुद बख़ुद जहां से आए थे चले जाएंगे ❁ वहां की शराब दुन्या की सी नहीं जिस में बदबू और कड़वाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अ़क़्ल हो जाते हैं, आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं, वोह पाक शराब इन सब बातों से पाक व मुनज़्ज़ह है ❁ वहां नजासत, गन्दगी, पाख़ाना, पेशाब, थूक, रींठ, कान का मैल, बदन का मैल अस्लन (या'नी बिल्कुल) न होंगे ❁ एक ख़ुश्बूदार फ़रह़त बख़्श डकार आएगी, ख़ुश्बूदार फ़रह़त बख़्श पसीना निकलेगा ❁ सब खाना हज़्म हो जाएगा और ❁ डकार और पसीने से मुश्क की ख़ुश्बू निकलेगी ❁ हर वक़्त ज़बान से तस्बीह़ व तक्बीर ब क़स्द (या'नी इरादतन) और बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) मिस्ले सांस के जारी होगी ❁ कम से कम हर शख़्स के सिरहाने **दस हज़ार ख़ादिम** खड़े होंगे, ख़ादिमों में हर

एक के एक हाथ में चांदी का पियाला होगा और दूसरे हाथ में सोने का और हर पियाले में नए नए रंग की ने'मत होगी, जितना खाता जाएगा लज़्ज़त में कमी न होगी बल्कि ज़ियादती होगी, हर निवाले में **सत्तर** मज़े होंगे, हर मज़ा दूसरे से मुम्ताज़, वोह (मज़े) मअ़न (या'नी एक ही साथ) मह़सूस होंगे, एक का एह़सास दूसरे से मानेअ़ (या'नी रोकने वाला) न होगा ❁ जन्नतियों के न लिबास पुराने पड़ेंगे, न उन की जवानी फ़ना होगी ❁ अगर **जन्नत का कपड़ा** दुन्या में पहना जाए तो जो देखे बेहोश हो जाए, और लोगों की निगाहें उस का तह़म्मुल (या'नी बरदाश्त) न कर सकें ❁ अगर कोई **हूर** समुन्दर में थूक दे तो उस के थूक की शीरीनी (मिठास) की वज्ह से समुन्दर शीरीं (मीठा) हो जाए और एक रिवायत है कि अगर **जन्नत** की औ़रत सात समुन्दरों में थूके तो वोह शह्द से ज़ियादा शीरीं (या'नी मीठे) हो जाएं ❁ सर के बाल और पलकों और भवों के सिवा जन्नती के बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मगीं (या'नी सुरमा लगी) आंखें, **तीस बरस की उ़म्र** के मा'लूम होंगे कभी इस से ज़ियादा मा'लूम न होंगे ❁ फिर लोग (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से) एक बाज़ार में जाएंगे जिसे मलाएका घेरे हुए हैं, उस में वोह चीज़ें होंगी कि उन की मिस्ल न आंखों ने देखी न कानों ने सुनी, न क़ुलूब (या'नी दिलों) पर उन का ख़त़रा (ख़याल) गुज़रा, उस में से जो (चीज़) चाहेंगे, उन के साथ कर दी जाएगी और ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी और ❁ जन्नती उस बाज़ार में बाहम मिलेंगे, छोटे मर्तबे वाला बड़े मर्तबे वाले को देखेगा, उस का लिबास पसन्द करेगा, हुनूज़ (या'नी अभी) गुफ़्त-गू ख़त्म भी न होगी कि ख़याल करेगा, मेरा लिबास उस से अच्छा है और येह इस वज्ह से कि **जन्नत** में किसी के लिये ग़म नहीं ❁ जन्नती बाहम मिलना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास चला जाएगा। और उन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब में मुअ़ज़्ज़ज़ वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के वज्हे करीम के दीदार से हर सुब्ह़ व शाम मुशर्रफ़ होगा ❁ जब जन्नती **जन्नत** में जा लेंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से फ़रमाएगा : कुछ और चाहते हो जो तुम को दूं ? अ़र्ज़ करेंगे : तूने हमारे मुंह रोशन किये, **जन्नत** में दाख़िल किया, जहन्नम से नजात दी। उस वक़्त पर्दा, कि मख़्लूक़ पर था उठ जाएगा तो **दीदारे इलाही** से बढ़ कर उन्हें कोई चीज़ न मिली होगी।

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا زِیَارَۃَ وَجْھِکَ الْکَرِیْمِ بِجَاہِ حَبِیْبِکَ الرَّؤُوْفِ الرَّحِیْمِ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم، امین! (तरजमा :

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीब रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सदके़ अपना दीदार नसीब फ़रमा, आमीन)

*अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा*
*जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**हूरें पाने का अ़मल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबतों** और गुनाहों भरी बातों से जान छुड़ाइये और ख़ुद को **जन्नत** का ह़क़दार बनाइये। थोड़ी सी ज़बान चलाइये, اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْم ज़बान पर लाइये और **जन्नत की हूरें** पाइये। चुनान्चे एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चालीस साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की। एक बार दुआ़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत से मुझे जो कुछ **जन्नत** में मिलने वाला है उस की कोई झलक दुन्या में भी दिखा दे। अभी दुआ़ जारी थी कि यकदम मेह़राब शक़ हुई और उस में से एक ह़सीना व जमीला **हूर** बरआमद हुई, उस ने कहा कि तुझे **जन्नत** में मुझ जैसी **सो हूरें** इ़नायत की जाएंगी, जिन में हर एक की सो सो ख़ादिमाएं और हर ख़ादिमा की सो सो कनीज़ें होंगी और हर कनीज़ पर सो सो नाज़िमाएं (या'नी इन्तिज़ाम करने वालियां) होंगी। येह सुन कर वोह बुज़ुर्ग ख़ुशी के मारे झूम उठे और सुवाल किया : क्या किसी को **जन्नत** में मुझ से ज़ियादा भी मिलेगा ? जवाब मिला : इतना तो हर उस आ़म जन्नती को मिलेगा जो सुब्ह़ व शाम اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْم पढ़ लिया करता है। (رَوضُ الرَّیاحِین ص٥٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मुसल्मानों की आबरू वग़ैरा दूसरे मुसल्मान पर ह़राम है : नबियों** के सुल्त़ान, रह़मते आ़–लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मुसल्मान की सब चीज़ें मुसल्मान पर ह़राम हैं इस का माल और इस की **आबरू** और इस

का **ख़ून** । आदमी को बुराई से इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को **हक़ीर** जाने ।

(سُنَنِ ابوداوٗ ج ٤ ص ٣٥٤ حديث ٤٨٨٢)

**तकब्बुर किसे कहते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अपने से किसी को ह़क़ीर जानना **तकब्बुर** कहलाता है, तकब्बुर एक तो ख़ुद **ह़राम** है मज़ीद इस की वज्ह से **ग़ीबत** का गुनाह भी सरज़द होता है । मग़रूर आदमी जिस को ह़क़ीर जानता है उस की **हंसी** उड़ाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 26 **सू-रतुल हुजुरात** आयत नम्बर 11 में फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّ ۚ (پ٢٦ الحجرات ١١)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसे, अ़जब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों ।

**किसी को ह़क़ारत से मत देखो : ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : "**सुख़्रियह**" से मुराद येह है कि जिस की हंसी उड़ाई जाए, उस की त़रफ़ ह़क़ारत से देखना । इस हुक्मे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का मक़्सद येह है कि किसी को ह़क़ीर न समझो, हो सकता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक तुम से बेहतर, अफ़्ज़ल और ज़ियादा मुक़र्रब हो । चुनान्चे सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "कितने ही परेशान ह़ाल, परागन्दा बालों और फटे पुराने कपड़ों वाले ऐसे हैं कि जिन की कोई परवाह नहीं करता लेकिन अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर किसी बात की क़सम खा लें तो वोह ज़रूर उसे पूरा फ़रमा दे ।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٥ ص٤٥٩ حديث٣٨٨٠) इब्लीसे लईन ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़क़ीर जाना तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे हमेशा हमेशा के लिये ख़सारे (या'नी नुक़सान) में मुब्तला कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह**

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام हमेशा की इ़ज़्ज़त के साथ काम्याब हो गए, इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है । यहां इस मा'ना का भी एह़तिमाल (इम्कान) है कि किसी दूसरे को ह़क़ीर न जाने क्यूंकि मुम्किन है कि वोह अ़ज़ीज़ (या'नी इ़ज़्ज़त वाला) हो जाए और तू ज़लील हो जाए फिर वोह तुझ से इन्तिक़ाम ले ।

لَا تُهِیْنَ الْفَقِیْرَ عَلَّکَ اَنْ

تَرْکَعَ یَوْمًا وَّالدَّهْرُ قَدْ رَفَعَهٗ

या'नी : फ़क़ीर (या'नी ग़रीब आदमी) की तौहीन न कर शायद तू किसी दिन फ़क़ीर (या'नी ग़रीब) हो जाए और ज़माने का मालिक عَزَّوَجَلَّ उसे अमीर कर दे । (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکَبائِر ج۲ ص۱۱)

**मुसल्मान कौन ? मुहाजिर कौन ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मुसल्मान के लिये ज़रूरी है कि उस की ज़ात से किसी मुसल्मान को किसी त़रह़ की भी नाह़क़ तक्लीफ़ न पहुंचे, न इस का माल लूटे, न इ़ज़्ज़त ख़राब करे, न इसे झाड़े न इसे मारे नीज़ **मुसल्मानों** को आपस में झगड़ने से क्या वासित़ा ! येह तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ होते हैं, चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है **:** (कामिल) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे और (कामिल) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया है ।

(صَحیح بُخاری ج۱ ص۱۵ حدیث ۱۰)

**इस** ह़दीसे पाक के तह़त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि **कामिल मुसल्मान** वोह है जो लु-ग़तन (या'नी लु-ग़वी ए'तिबार से) और शरअ़न (भी) हर त़रह़ मुसल्मान हो । (और) वोह **मोमिन** है जो किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** न करे, गाली, त़ा'ना, चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ **तह़रीर** करे । मज़ीद फ़रमाते हैं कि **कामिल मुहाजिर** वोह मुसल्मान है जो तर्के वत़न के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लु-ग़तन (या'नी लु-ग़वी ए'तिबार से) **हिजरत** है जो हमेशा जारी

रहेगी। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 29)

**इशारे से तक्लीफ़ देना भी जाइज़ नहीं : सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे।** (سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٩١ حدیث ٥٠٠٤) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : **मुसल्मान** के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे **मुसल्मान** की त़रफ़ **आंख** से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे। (اَلزُّھد لِابن مُبارَک ص ٢٤٠ رقم ٦٨٩، اِتحافُ السّادَة للزّبیدی ج ٧ ص ١٧٧)

**दिल हिला देने वाली ख़ारिश : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मुसल्मान को यूं तो तक्लीफ़ व ईज़ा देना बहुत ही आसान लगता है। उस को झाड़ दिया इस को लताड़ दिया, उस की **ग़ीबत** कर दी इस पर तोहमत जड़ दी, लेकिन नाराज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त की सूरत में आख़िरत में येह सब बहुत भारी पड़ जाएगा, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला, **''ज़ुल्म का अन्जाम''** सफ़ह़ा 21 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन श-जरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ समुन्दर के कनारे होते हैं इसी त़रह़ जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुख़्ती ऊंटों जैसे सांप और ख़च्चरों जैसे बिच्छू रहते हैं। अहले जहन्नम जब अ़ज़ाब में कमी के लिये फ़रियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोह जूं ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की त़रफ़ भागेंगे फिर उन पर खुजली मुसल्लत़ कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां। तो कहा जाएगा : येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था। (اَلتَّرغیب وَالتَّرھیب ج ٤ ص ٢٨٠ حدیث ٥٦٤٩)

*ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है — उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है*
*तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई — हां एक दुआ़ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**जश्ने विलादत की ब-र-कत से क़िस्मत खुल गई : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मिल कर **जश्ने विलादत** की ख़ूब धूमें मचाइये इस की ब-र-कत के भी क्या कहने ! शह्र तराड़ कह्ल ज़िलअ़ सद हनोती (कश्मीर) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : **रबीउ़ल अव्वल** (1430 हि.) की बारहवीं शब हमारे यहां की मस्जिद में **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में **सब्ज़ झन्डे** और चरागां की तरकीब की जा रही थी। दरीं अस्ना चार अफ़राद जो कि नशाबाज़ थे मस्जिद के इमाम साहिब की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : हम नशा करने की तय्यारी कर ही रहे थे कि ख़याल आया आज ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रात भी क्या हम नशे का गुनाह करेंगे ! क्यूं न हम तौबा कर लें। लिहाज़ा आप के पास हाज़िर हुए हैं। चुनान्चे उन्हों ने तौबा की और मस्जिद में होने वाले **जश्ने विलादत** की बहारें लूटने में शरीक हो गए। इमाम साह़िब ने **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदारान से राबित़ा किया, इस्लामी भाई मस्जिद पहुंचे और उन्हों ने उन से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात की और हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िले** के जद्वल के मुत़ाबिक़ उन की तरबियत शुरूअ़ कर दी, उन का सीखने सिखाने का शौक़ दीदनी था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **जश्ने विलादत** की ब-र-कत से चारों ने नमाज़ों की पाबन्दी निभाने, दाढ़ी मुबारक सजाने, **63 रोज़ा सुन्नतों भरे तरबियती कोर्स** की सआ़दत पाने और मसाजिद आबाद फ़रमाने वग़ैरा वग़ैरा नेकियां बजा लाने की अच्छी अच्छी निय्यतें भी कीं, नीज़ घर वालों समेत सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के मुरीद बन गए। येह बयान देते वक़्त दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए उन्हें अभी चन्द ही रोज़ हुए हैं और वोह इस वक़्त सुन्नतों की

तरबियत के 12 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र में हैं।

***ख़ूब झूमो ऐ गुनहगारो तुम्हारी ईद है***

***हो गया बख़्शिश का सामां ईदे मीलादुन्नबी***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 380)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**चराग़ां देख कर काफ़िर ने इस्लाम क़बूल कर लिया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने ! **जश्ने विलादत** की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें हैं, आ़शिक़ाने रसूल **जश्ने विलादत** मनाते हैं जभी तो उन नशा बाज़ों को इस रह़मतों भरी रात का पता चला और उन के दिल में एह़तिराम पैदा हुवा और सीधे ऐसी मस्जिद में पहुंचे जहां जश्ने विलादत का **चराग़ां** हो रहा था और सब्ज़ सब्ज़ परचम लहरा रहे थे। जश्ने विलादत के चराग़ां की तो क्या बात है। एक इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि एक बार **जश्ने विलादत** के मौक़अ़ पर मस्जिद को सजा कर दुल्हन बनाया हुवा था, एक ग़ैर मुस्लिम क़रीब से गुज़रा उस ने सजावट के बारे में मा'लूमात की जब उसे बताया गया कि हम ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी में येह अ़ज़ीमुश्शान चराग़ां किया है, तो उस का दिल नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़-ज़मत से लबरेज़ हो गया कि आज विलादत को 1500 साल गुज़र गए इस के बा वुजूद मुसल्मान अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस क़दर तुज़ुको एह़तिशाम से जश्ने विलादत मनाते और अपनी मस्जिदों और घरों को यूं सजाते हैं तो बस येही दीन सच्चा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने कुफ़्र से तौबा की, कलिमा पढ़ा और ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हो गया।

**जश्ने विलादत का चराग़ां : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" (मुकम्मल) सफ़ह़ा 174 पर है **: अ़र्ज़ :** मीलाद शरीफ़ में झाड़ (या'नी पन्जशाख़ा मश्अ़ल), फ़ानूस,[1] फ़ुरूश[2] वग़ैरा

**1**. एक क़िस्म का शम्अ़दान जिस पर पिंजरे की शक्ल का बारीक कपड़ा या काग़ज़ चढ़ा होता है जो घुमाने या हवा के ज़ोर पर गर्दिश करता है। **2**. येह फ़र्श की जम्अ़ है। या'नी चूने वग़ैरा से ज़मीन की सत़ह़ हमवार करना।

से ज़ैबो ज़ीनत **इसराफ़** है या नहीं ? **इर्शाद :** उ़-लमा फ़रमाते हैं **:** لَاخَيْرَ فِى الْاِسْرَافِ وَلَا اِسْرَافَ فِى الْخَيْرِ (या'नी इसराफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इसराफ़ नहीं।) जिस शै से ता'ज़ीमे ज़िक्र शरीफ़ मक़्सूद हो, हरगिज़ **मम्नूअ़ नहीं हो सकती।**

**एक हज़ार शम्एं :** **इमाम** ग़ज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى) ने एह़याउल उ़लूम शरीफ़ में सय्यिद अबू अ़ली रूज़बारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से नक़्ल किया कि एक बन्दए सालेह़ ने मजलिसे ज़िक्र शरीफ़ तरतीब दी और उस में **एक हज़ार शम्एं** रोशन कीं। एक शख़्स ज़ाहिर बीन पहुंचे और येह कैफ़िय्यत देख कर **वापस** जाने लगे। बानिये मजलिस ने हाथ पकड़ा और अन्दर ले जा कर फ़रमाया कि जो **शम्अ़** मैं ने ग़ैरे ख़ुदा के लिये रोशन की हो वोह **बुझा** दीजिये। कोशिशें की जाती थीं और कोई शम्अ़ **ठन्डी** न होती। (اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۲۶ مُلَخَّصاً)

*लहराओ सब्ज़ परचम ऐ इस्लामी भाइयो !*
*घर घर करो चरागां कि सरकार आ गए*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 511)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस :** **पैकरे** अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया **:** क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस** कौन है ? **सह़ाबए** किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की **:** हम में **मुफ़्लिस** (या'नी ग़रीब मिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल। तो **फ़रमाया :** मेरी उम्मत में **मुफ़्लिस** वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फ़ुलां को गाली दी होगी, फ़ुलां पर **तोहमत** लगाई होगी, फ़ुलां का माल खाया होगा, फ़ुलां का ख़ून बहाया होगा और फ़ुलां को मारा होगा। पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का ह़िस्सा दे दिया जाएगा। अगर

उस के ज़िम्मे आने वाले हुक़ूक़ के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (صَحيح مُسلِم ص ۱۳۹۴ حديث ۲۵۸۱)

**आह ! क़ियामत के रोज़ क्या होगा !! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** डर जाओ ! लरज़ उठो ! ह़क़ीक़त में **मुफ़्लिस** वोह है जो नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व स-दक़ात, सख़ावतों, फ़लाही कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद क़ियामत में ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! कभी गाली दे कर, कभी तोहमत लगा कर, बिला इजाज़ते शर-ई डांट कर, बे इ़ज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मारपीट कर के, आ़रियतन (या'नी आ़रिज़ी तौ़र पर) ली हुई चीज़ें क़स्दन न लौटा कर, क़र्ज़ दबा कर और दिल दुखा कर जिन को दुन्या में नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उस पर डाल कर वासिले जहन्नम कर दिया जाएगा। लिहाज़ा अगर किसी की **ग़ीबत** कर ली है और उस को पता चल गया है या किसी त़रह़ की भी ह़क़ त-लफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ दुन्या ही में जिस की ह़क़ त-लफ़ी की है उस से बिग़ैर शरमाए मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लेने में आ़फ़िय्यत है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 24 सफ़्ह़ा 463 पर फ़रमाते हैं : यहां (दुन्या में) मुआ़फ़ करा लेना सह्ल (या'नी आसान) है, क़ियामत के दिन इस की उम्मीद मुश्किल कि वहां हर शख़्स अपने अपने ह़ाल में गिरिफ़्तार, नेकियों का त़लब गार (और) बुराइयों से बेज़ार होगा। पराई नेकियां अपने हाथ आते अपनी बुराइयां उस (या'नी दूसरे) के सर जाते किसे बुरी मा'लूम होती हैं ! यहां तक कि **ह़दीस** में आया है कि मां बाप का बेटे पर कुछ दैन (हुक़ूक़ का मुत़ा-लबा) आता होगा उसे रोज़े क़ियामत पीटेंगे कि हमारा दैन (ह़क़) दे ! वोह कहेगा : मैं तुम्हारा बच्चा हूं, या'नी शायद रह़्म करें, वोह (या'नी वालिदैन) तमन्ना करेंगे काश ! और ज़ियादा (ह़क़) होता (ताकि बेटे से नेकियां ले कर या अपने गुनाह उस के सर डाल कर अपनी ख़लासी करवाएं।) **त़-बरानी** में इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, उन्हों ने कहा कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना कि आप

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे कि वालिदैन का बेटे पर दैन होगा क़ियामत के रोज़ वालिदैन बेटे पर लपकेंगे तो बेटा कहेगा : मैं तुम्हारा बेटा हूं ! तो वालिदैन को ह़क़ दिलाया जाएगा और वोह तमन्ना करेंगे काश ! हमारा ह़क़ और ज़ाइद होता[1]। जब मां बाप का येह ह़ाल तो औरों से उम्मीद ख़ाम ख़याल (या'नी फ़ुज़ूल ख़याल), हां **करीम व रह़ीम मालिको मौला** جَلَّ جَلَالُہٗ وَ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی जिस पर रह़्म फ़रमाना चाहेगा तो यूं करेगा कि ह़क़ वाले को बे बहा क़ुसूरे जन्नत (या'नी जन्नत के आ़लीशान मह़ल्लात) मुआ-वज़े में अ़त़ा फ़रमा कर अ़फ़्वे ह़क़ (या'नी ह़क़ मुआ़फ़ करने) पर राज़ी कर देगा। एक करिश्मए करम में दोनों का भला होगा ! न इस की ह़-सनात (या'नी नेकियां) उसे दी गईं न उस की सय्यिआत (या'नी बदियां) इस के सर रखी गईं न उस का ह़क़ ज़ाएअ़ होने पाया बल्कि ह़क़ से हज़ारों द-रजे बेहतर अफ़्ज़ल पाया, रह़मते ह़क़ की बन्दा नवाज़ी (भी ख़ूब कि) ज़ालिम नाजी (या'नी नजात पाए और) मज़्लूम राज़ी (हो जाए), فَلِلّٰہِ الْحَمْدُ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا فِیْہِ کَمَا یُحِبُّ رَبُّنَا وَ یَرْضٰی (पस **अल्लाह** तआ़ला ही के लिये है ऐसी ह़म्दो सना जो बहुत ज़ियादा, पाकीज़ा और बा ब-र-कत है जैसा कि हमारे रब की पसन्द और रिज़ा है)

*या इलाही ! जब पड़े मह़शर में शोरे दारोगीर[2]*
*अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 132)

**मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त लोगों पर स-दक़ा की : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** एक ऐसी आफ़त है कि इस से बहुत ही कम मुसल्मान मह़फ़ूज़ होंगे, हमें **ग़ीबत** और दीगर गुनाहों से बचने, दूसरों को बचाने की भरपूर सअ़्य करनी चाहिये। ग़ीबत का एक सबब ज़ाती बुग़्ज़ो अ़दावत और नफ़रत भी है जिस का इ़लाज अ़फ़्व या'नी मुआ़फ़ करना है, इस को यूं समझिये कि आप की इ़ज़्ज़त या जान या माल को किसी ने नुक़्सान पहुंचाया हो जिस की वज्ह से उस की नफ़रत आप के दिल में बैठ गई हो और आप हर जगह हर मौक़अ़ पर उस की ग़ीबत करते फ़िरते हों

1. اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج ١٠ ص ٢١٩ حديث ١٠٥٢٦ ـ 2. शोरे दारोगीर या'नी पकड़ धकड़ का शोर

यक़ीनन इस त़र्ज़े अ़मल से आप को मुसल्सल आख़िरत का नुक़्सान होता रहेगा । तो आ़फ़िय्यत इसी में है कि नाराज़ी बाक़ी रखने के बजाए मुआ़फ़ करने की आ़दत बनाई जाए ताकि रन्जिशें और ना इत्तिफ़ाक़ियां परवान ही न चढ़ सकें سُبْحٰنَ اللہ ! बल्कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللہُ الْمُبِیْن से तो येह भी साबित है कि वोह पेशगी ही अपने हु़क़ूक़ मुआ़फ़ कर दिया करते थे । चुनान्चे इस की तरग़ीब दिलाते हुए रसूले बे मिसाल, साहि़बे जूदो नवाल, ह़बीबे रब्बे ज़ुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कसरत के साथ येह इर्शाद फ़रमाते : क्या तुम में से कोई एक इस बात से आ़जिज़ है कि वोह **अबू ज़मज़म** की त़रह़ हो । लोगों ने अ़र्ज़ की : **अबू ज़मज़म** कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : पहले लोगों (या'नी पिछली उम्मत) में एक शख़्स था वोह सुब्ह़ के वक़्त यूं कहता : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने आज के दिन अपनी इ़ज़्ज़त को उस आदमी पर स-दक़ा कर दिया जो मुझ पर ज़ुल्म करे । (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٢٦١ حدیث٨٠٨٢)

**पेशगी मुआ़फ़ करने वाले की मग़्फ़िरत हो गई : एक** मुसल्मान ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे पास माल नहीं कि मैं स-दक़ा करूं तो जो शख़्स मेरी इ़ज़्ज़त के दरपै हो तो येह मेरी त़रफ़ से उस पर **स-दक़ा** है । **अल्लाह** तआ़ला ने **नबी** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़्य भेजी कि मैं ने इस शख़्स को **बख़्श** दिया ।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ٣ ص ٢١٩)

**इमामे मज़्लूम की अपनी इ़ज़्ज़त के मु-तअ़ल्लिक़ सख़ावत : इमामे मज़्लूम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब अपने घर से निकलते तो कहते : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं आज **स-दक़ा** करूंगा और वोह येह कि आज जो मेरी **ग़ीबत** करे उस को मैं ने अपनी **इ़ज़्ज़त** दे दी । (حیاۃُ الحیوانِ الکُبری ج ١ ص ٢٠٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** शहज़ादए आ़ली वक़ार सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इर्शादे गिरामी के मा'ना येह हैं कि आज के रोज़ मेरी **ग़ीबत** करने वाले से दुन्या व आख़िरत में बदला नहीं लूंगा । इस से मुराद हरगिज़ येह नहीं कि **ग़ीबत** करना जाइज़ हो गया ।

**ग़ीबत** ब दस्तूर गुनाह ही रहेगी और इस की तौबा भी वाजिब होगी, नीज़ कोई येह न समझे कि जिस ने नफ़रत व अ़दावत और बुग़्ज़ो कीना से बचने के लिये पेशगी हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दिये हों उस के हुक़ूक़ तलफ़ करना जाइज़ हो जाता है ! याद रहे कि पेशगी मुआ़फ़ी बिला शुबा एक मुस्तह़्सन (या'नी पसन्दीदा) अ़मल है लेकिन इस के बा वुजूद साहिबे मुआ़-मला या'नी जो कि अपने हुक़ूक़ पेशगी मुआ़फ़ कर चुका है उस को ह़क़ तलफ़ होने पर मुत़ा-लबे का ह़क़ बाक़ी रहता है । हां जो हुक़ूक़ ज़मानए साबिक़ (या'नी गुज़रे हुए दिनों) में तलफ़ किये जा चुके हों उस को मुआ़फ़ कर देंगे तो ह़क़्क़ुल इ़बाद (या'नी बन्दे के हुक़ूक़) मुआ़फ़ हो जाएंगे अलबत्ता अब भी **हुक़ूक़ुल्लाह** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़) ज़िम्मे बाक़ी रहेंगे और उन के लिये तौबा ज़रूरी होगी बहर ह़ाल हमें चाहिये कि अ़फ़्वो दर गुज़र को इख़्तियार करें और न सिर्फ़ पेशगी मुआ़फ़ी का ज़ेह्न बनाएं बल्कि अब तक जिन लोगों ने हमारे हुक़ूक़ तलफ़ किये उन्हें भी रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये मुआ़फ़ कर दें । मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल की भी क्या बात है इस ज़िम्न में दो रिवायात मुला-ह़ज़ा हों चुनान्चे

**❶ मुआ़फ़ करने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**ग़ुस्से का इ़लाज**" सफ़ह़ा 32 पर है : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए । पूछा जाएगा किस के लिये अज्र है ? वोह कहेगा : "**उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं ।**" तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला ह़िसाब **जन्नत** में दाख़िल हो जाएंगे । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطّبرانی ج۱ ص۵۴۲ حدیث ۱۹۹۸)

**❷ जन्नत पाने के तीन[3] नुस्ख़े : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 48 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**ना चाक़ियों का इ़लाज**" सफ़ह़ा 28 ता 29 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** तआ़ला (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को (अपनी रह़मत से) **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा । मैं ने अ़र्ज़ की :

**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : ﴿1﴾ जो तुम से क़त़ए तअ़ल्लुक़ करे (या'नी तअ़ल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप करो ﴿2﴾ जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और ﴿3﴾ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج ۱ ص ۲۶۳ حدیث ۹۰۹)

ह़ज़रते मौलाना रूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم फ़रमाते हैं :

تو برائے وَصل کردن آمدی　　　　نے برائے فَصل کردن آمدی

(या'नी तू जोड़ पैदा करने के लिये आया है तोड़ पैदा करने के लिये नहीं आया) (مثنوی ج اوّل دفتر دوم ص ۱۷۳)

**म-दनी वसिय्यतें :** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत से अपने क़र्ज़दारों को पिछले क़र्ज़ों, माल चुराने वालों को चोरियों, हर एक को **ग़ीबतों,** तोह्मतों, तज़्लीलों, ज़र्बों समेत तमाम जानी माली हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये और आयिन्दा के लिये भी तमाम तर हुक़ूक़ पेशगी ही मुआ़फ़ कर दिये हैं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ 16 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "**म-दनी वसिय्यत नामा**" सफ़ह़ा 10 पर इ़ज़्ज़तो आबरू और जान के मु-तअ़ल्लिक़ है : मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे (ग़ीबतें करे), ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं, मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले। बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं। वु-रसा से भी दर-ख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें (और मुक़द्दमा वग़ैरा दाइर न करें)। अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े मह़शर में ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते़ कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो। (अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो इस की वज्ह से किसी क़िस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं। अगर "हड़ताल" इस का नाम है कि लोगों का कारोबार ज़बर दस्ती बन्द करवाया जाए। नीज़ दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वग़ैरा हो। तो बन्दों की ऐसी ह़क़ त-लफ़ियों को कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम जाइज़ नहीं कह सकता। इस त़रह़ की हड़ताल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

**ज़रूरी वज़ाहत :** क़त्ले मुस्लिम में शरअ़न तीन हुक़ूक़ हैं : ﴾1﴿ हक़्क़ुल्लाह ﴾2﴿ हक़्क़े मक़्तूल ﴾3﴿ हक़्क़े वु-रसा। मक़्तूल ने अगर ज़िन्दगी में पेशगी मुआ़फ़ कर दिया हो तो सिर्फ़ उसी का ह़क़ मुआ़फ़ होगा, **ह़क़्क़ुल्लाह** से ख़लासी के लिये सच्ची तौबा करे, **ह़क़्क़े वु-रसा** का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ वारिसों से है वोह चाहें तो मुआ़फ़ करें, चाहें तो क़िसास लें। अगर दुन्या में मुआ़फ़ी या क़िसास की तरकीब न बनी तो **क़ियामत** के रोज़ वु-रसा अपने ह़क़ का मुत़ा-लबा कर सकते हैं।

***सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब***
***बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है***

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171)

**मैं ने इल्यास क़ादिरी को मुआ़फ़ किया :** तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आ़जिज़ाना अ़र्ज़ करता हूं कि अगर मैं ने आप में से किसी की **ग़ीबत** की हो, **तोहमत** धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी त़रह़ से **दिल आज़ारी** की हो मुझे मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। दुन्या का बड़े से बड़ा ह़क़्क़ुल अ़ब्द जो तसव्वुर किया जा सकता है फ़र्ज़ कीजिये कि वोह मैं ने आप का तलफ़ कर दिया है वोह भी और छोटे से छोटा ह़क़ जो ज़ाएअ़ किया हो उसे भी मुआ़फ़ कर दीजिये और सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये। हाथ बांध कर **म-दनी इल्तिजा** है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी को मुआ़फ़ किया।"

**क़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा : जिस** का मुझ पर क़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आ़रियतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या ग़ुलाम ज़ादों से रुजूअ़ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का ह़क़दार बने। जो लोग मेरे मक़्रूज़ हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती क़र्ज़े मुआ़फ़ किये। या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

*तू बे हिसाब बख़्श कि हैं बे हिसाब जुर्म देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का*

(ज़ौक़े ना'त, स. 11)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**दिल का दर्द दूर हो गया : ग़ीबत** करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आमात** के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** पेशे ख़िदमत है चुनान्चे **ज़मज़म नगर** (हैदरआबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक अलाक़े "पक्का क़ल्आ" के एक इस्लामी भाई को अचानक **दिल में दर्द** हुवा। जब दवाओं से फ़ाएदा न हुवा तो उन्हों ने बाबुल मदीना कराची आ कर जिन्नाह अस्पताल में दिल का ऑपरेशन करवाया। मगर तक्लीफ़ ख़त्म होने के बजाए मज़ीद बढ़ गई, दर्द की बे शुमार दवाएं इस्ति'माल कीं, लेकिन फ़ाएदा न हुवा। आख़िरे कार एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में **आशिक़ाने रसूल** के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गए। **म-दनी क़ाफ़िले** में किसी क़िस्म की दवा इस्ति'माल की न ही परहेज़ी की सूरत बनी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत से **अल्लाह** तआला ने उन का दर्द दूर फ़रमा दिया।

*दिल में गर दर्द हो, डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे फ़रहतें, क़ाफ़िले में चलो*
*ऑपरेशन टलें, और शिफ़ाएं मिलें कर के हिम्मत चलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**दिल का बातिनी मरज़ बाइसे हलाकत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की भी कैसी कैसी ब-र-कतें हैं ! म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से दिल का ज़ाहिरी दर्द दूर हो गया, बातिनी अमराज़ वालों के اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल का बातिनी मरज़ भी **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से दूर होगा। **ख़ुदा की क़सम !** ज़ाहिरी दर्द के मुक़ाबले में दिल का बातिनी मरज़ करोड़ों द-रजे ख़तरनाक है। बल्कि दोनों में मुमा-सलत की कोई सूरत ही नहीं। दिल का ज़ाहिरी दर्द **सब्र** करने वाले के लिये सबबे दुख़ूले **जन्नत** है जब कि दिल का बातिनी मरज़ दुन्या व आख़िरत में बाइसे हलाकत है। बातिनी मरज़ को इस रिवायत से समझने की कोशिश फ़रमाइये चुनान्चे

**दिल का सियाह नुक़्ता : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल सफ़्हा 920 ता 921 पर है : ह़दीसे मुबारक में आता है : जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्ता बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक़्ता बनता है यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है। नती-जतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती। (تفسیر دُرِّ مَنثور ج۸ص۴۴٦)

**नसीह़त का असर न होने की वज्ह : अब** ज़ाहिर है कि जिस का दिल ही ज़ंग आलूद और सियाह हो चुका हो उस पर भलाई की बात और नसीह़त कहां असर करेगी ! ऐसे इन्सान का गुनाहों से बाज़ व बेज़ार रहना निहायत ही दुश्वार हो जाता है, उस का दिल नेकी की त़रफ़ माइल ही नहीं होता, अगर वोह नेकी की त़रफ़ आ भी गया तो बसा अवक़ात उस का जी इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से भागने ही की तदबीरें सोचता है। उस का नफ़्स उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, ग़फ़्लत उसे घेर लेती और वोह बद नसीब सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से दूर जा पड़ता है।

*गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही*
*बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105)

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ज़बान का ग़लत़ इस्ति'माल क़ब्र में फंसा सकता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खु़फ़्या तदबीर किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता वोह चाहे तो सग़ीरा गुनाह पर पकड़ फ़रमा ले और चाहे तो ढेरों गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो किसी एक अच्छे अ़मल के सबब अपने दामने रह़मत में ले ले चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्ह़ूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होल नाकियों से दो चार हुवा, **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : **"दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है ।"** अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े । इतने में एक साह़िब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअ़त्तर मुअ़त्तर थे वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान ह़ाइल हो गए । और उन्हों ने मुझे **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा । मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : **"तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मामूर किया गया है ।"** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٢٦٠)

*आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला*
*हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते ! :** سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! कसरते दुरूद शरीफ़ की ब-र-कत से **मदद** करने के लिये क़ब्र में जब **फ़िरिश्ता** आ सकता है तो तमाम फ़िरिश्तों के भी आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो फ़रियाद की है :

*मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा — इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आक़ा*
*रोशन मेरी तुरबत को लिल्लाह शहा करना — जब नज़्अ़ का वक़्त आए दीदार अ़ता करना*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**पुल सिरात़ पर रोक दिया जाएगा :** मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो शख़्स मुसल्मान पर कोई बात कहे उस से मक़्सूद **ऐ़ब** लगाना हो, **अल्लाह** तआ़ला उस को **पुल सिरात़ पर रोकेगा** जब तक उस चीज़ से न निकले जो उस ने कही । (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٥٤ حديث ٤٨٨٣)

**पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! किसी पर ऐ़ब लगाना कितनी ख़त़रनाक बात है ! तलवार की धार से तेज़ बाल से बारीक जहन्नम पर बने हुए **पुल सिरात़** पर रोक दिया जाना, ख़ुदा की क़सम ! बहुत बड़ी सज़ा है । **पुल सिरात़** के मु-तअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे पाक मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है, मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नम पर एक पुल है जो बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से तेज़ तर है, उस पर लोहे के आंकड़े (या'नी हुक) और कांटे हैं जो कि उसे पकड़ेंगे जिसे **अल्लाह** तआ़ला चाहेगा । लोग उस पर गुज़रेंगे, बा'ज़ पलक झपकने की त़रह़, बा'ज़ बिजली की त़रह़,

बा'ज़ हवा की त़रह़, बा'ज़ बेहतरीन और अच्छे घोड़ों और ऊंटों की त़रह़ (गुज़रेंगे) और फ़िरिश्ते कहते होंगे : "رَبِّ سَلِّمْ، رَبِّ سَلِّمْ" ऐ परवर्द गार सलामती से गुज़ार, ऐ परवर्द गार सलामती से गुज़ार। बा'ज़ मुसल्मान नजात पाएंगे, बा'ज़ ज़ख़्मी होंगे, बा'ज़ औंधे होंगे, बा'ज़ मुंह के बल **जहन्नम** में गिर पड़ेंगे। (مُسندِ اِمام احمدج ۹ ص ۴۱۵ حدیث ۲۴۸۴۷) तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "पुल सिरात़ की दहशत" (48 सफ़ह़ात) का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये बल्कि अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम फ़रमाइये।

*या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात़ आफ़्ताबे हाशिमी नूरुल हुदा का साथ हो*
*या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा[1] का साथ हो*
*या इलाही ! नामए आ'माल जब खुलने लगें*
*ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 133)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**किसी की तक्लीफ़ देख कर ख़ुश न हों : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : अपने भाई की **शमातत** न कर (या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मसर्रत न कर) कि **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़्म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा। (سُنَنِ تِرمِذی ج ۴ ص ۲۲۷ حدیث ۲۵۱۴)

**किसी की मुसीबत पर ख़ुश होने की मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शमातत** या'नी मुसल्मान की तक्लीफ़ पर ख़ुशी के इज़्हार से परहेज़ कीजिये। अगर किसी मुसल्मान की मुसीबत पर दिल में ख़ुद बख़ुद ख़ुशी पैदा हुई तो इस का क़ुसूर नहीं ताहम इस ख़ुशी को दिल से

---
1. ग़मज़ुदा या'नी ग़म दूर करने वाला।

निकालने की भरपूर सअ्य करे अगर ख़ुशी का इज़्हार करेगा तो **शमातत** का मुर-तकिब होगा। आज कल **शमातत** के नज़्ज़ारे आ़म हैं। एक त़ालिबे इ़ल्म पढ़ाई में कमज़ोर हो जाए, इम्तिह़ान में नाकाम हो जाए तो बा'ज़ अवक़ात दूसरा त़ालिबे इ़ल्म ख़ुश हो जाता है। इसी त़रह़ किसी बड़े ना'त ख़्वान की आवाज़ बैठ जाए तो कभी छोटा ना'त ख़्वान राज़ी होता है, यूं ही क़ुर्रा (या'नी क़ारी साहि़बान) मुबल्लिग़ीन, मुक़र्रिरीन, कारीगरों, दुकानदारों, कारख़ाने दारों वग़ैरा वग़ैरा के दिल में आज कल अक्सर एक दूसरे के ख़िलाफ़ "शमातत" का मज़्मूम जज़्बा दाख़िल हो जाता है। अगर आपस में नाराज़ी हो जाए फिर तो **शमातत** की आफ़त ब आसानी फ़रीक़ैन के दिलों में दाख़िल हो जाती है। इस के बा'द ज़ेह्न येह बन जाता है म-सलन जिस से नाराज़ी होती है अगर वोह या उस का बच्चा बीमार हो जाए, उस के यहां डाका पड़ जाए, माल चोरी हो जाए, कारोबार ठप हो जाए, घर ढे (या'नी गिर) पड़े, ह़ादिसा हो जाए, मुक़द्दमा क़ाइम हो जाए, पोलीस गिरिफ़्तार कर ले, गाड़ी का नुक़्सान या चालान हो जाए, अल ग़रज़ किसी क़िस्म की भी मुसीबत आए इस पर बा'ज़ लोग ख़ुशी का इज़्हार कर के **शमातत** की आफ़त में जा पड़ते हैं बल्कि बा'ज़ जो कि ज़रूरत से ज़ियादा बातूनी और बे अ़मल होने के बा वुजूद अपने आप को "पहुंचा हुवा" समझ बैठते हैं वोह तो यहां तक बोल पड़ते हैं कि देखा ! हम को सताया तो उस के साथ "ऐसा" हो गया ! गोया वोह छुपी बातों और सर बस्ता (या'नी ख़ुफ़्या) राज़ों के जानने वाले हैं और आं बदौलत (या'नी इन) को अपने मुख़ालिफ़ पर आने वाली मुसीबत के अस्बाब मा'लूम हो जाते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **एह़याउल उ़लूम** जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 171 पर फ़रमाते हैं : **कहा गया है कि कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन की सज़ा "बुरा ख़ातिमा" है हम इस से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की पनाह चाहते हैं। येह गुनाह "विलायत और करामत का झूटा दा'वा करना है।"**

*म-दनी ! गुनाह की आ़दतें नहीं जातीं आप ही कुछ करें*

*मैं ने कोशिशें की बहुत मगर मेरी ह़ालत आह ! बुरी रही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 395)

**तीन[3] काम नहीं कर सकते तो यूं कर लो : एक** दाना का क़ौल है कि अगर तीन काम करने से आ़जिज़ हो तो फिर तीन काम यूं कर लो (1) अगर भलाई नहीं कर सकते तो बुराई से भी रुक जाओ (2) अगर लोगों को नफ़्अ़ नहीं दे सकते तो तक्लीफ़ भी मत दो (3) अगर नफ़्ली रोज़ा नहीं रख सकते तो (ग़ीबत कर के) लोगों का गोश्त भी मत खाओ। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٨٩)

**मुसल्मान की इ़ज़्ज़त बुज़ुर्गों की नज़र में : एक** बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हम ने अस्लाफ़ (या'नी गुज़श्ता बुज़ुर्गों) को देखा कि वोह ह़ज़रात लोगों की बे इ़ज़्ज़ती करने से बचने को नमाज़ रोज़े से बढ़ कर इ़बादत तसव्वुर किया करते थे।" (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِى الدُّنيا ص٩٤ رقم٥٥)

**दुन्या जहान की दौलत एक त़रफ़ और ग़ीबत एक त़रफ़ : ह़ज़रते** सय्यिदुना वह्ब मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : दुन्या की आफ़रीनिश (या'नी पैदाइश) से ले कर फ़ना होने तक की तमाम दुन्यवी ने'मतें भी बिलफ़र्ज़ मेरे पास हों और मैं उन्हें राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लुटा दूं तब भी इतने बड़े अ़ज़ीम सवाब के काम के मुक़ाबले में बेहतर येह समझता हूं कि **ग़ीबत** छोड़ दूं। इसी त़रह़ दुन्या और इस की तमाम ने'मतों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में लुटाने से बेहतर समझता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या की जानिब मेरी नज़र न उठे। इस के बा'द पारह 26 **सू-रतुल ह़ुजुरात** की आयत नम्बर 12 का येह ह़िस्सा तिलावत किया :

لَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ (پ٢٦ الحجرات ١٢) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** एक दूसरे की **ग़ीबत** न करो।

और पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 30 का येह ह़िस्सा तिलावत किया :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ (پاره ١٨ النور ٣٠) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें। (تَنبِيهُ الغافِلين ص٨٩)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों से किस क़दर नफ़रत करते थे, वोह ह़ज़रात जानते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से बढ़ कर कोई नुक़्सान मु-तसव्वर ही नहीं, अगर किसी एक गुनाह पर ही आख़िरत में पकड़

हो गई तो ख़ुदा की क़सम ! सख़्त रुस्वाई का सामना होगा और अगर ज़िन्दगी में एक ही बार **ग़ीबत** की और मुग़्ताब (या'नी जिस की ग़ीबत की गई उस) को मा'लूम हो गया और उस से मुआ़फ़ करवाना रह गया और उस पर बरोज़े क़ियामत गिरिफ़्त कर ली गई तो न जाने क्या बनेगा ! आह ! हुक़ूक़ुल इबाद का मुआ़-मला बहुत सख़्त है।

**हरनिया के दर्द का ख़ातिमा : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये ज़िक्रुल्लाह की कसरत का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस से दीनो दुन्या की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो बीमारियों से भी शिफ़ाएं मिलेंगी। इस ज़िम्न में एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई का **हरनिया का ऑपरेशन** हुवा था लेकिन 12 माह गुज़र जाने के बा वुजूद तक्लीफ़ ब दस्तूर बाक़ी थी, कई डॉक्टरों को दिखाया और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दवाएं इस्तिमा'ल की, मगर फ़ाएदा न हुवा। एक दिन एक इस्लामी भाई ने **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी तो उन्हों ने अपनी तक्लीफ़ का उ़ज़्र दिया, मगर उस इस्लामी भाई ने उन पर काफ़ी **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये तय्यार कर ही लिया और वोह आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** ह़ाज़िर हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की उन का **हरनिया का वोह दर्द जो किसी दवा को जवाब नहीं दे रहा था** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले के दौरान ही ख़त्म हो गया।**

*हरनिया का हो दर्द इस से हो रंग ज़र्द मत डरें चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो*

*रह़मतें लूटने ब-र-कतें लूटने आइये ना ! चलें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**बीमारी की फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! हरनिया का दर्द जो किसी दवा से न जाता था **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत से चला गया। देखिये शिफ़ा मिन जानिबिल्लाह عَزَّوَجَلَّ या'नी शिफ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलती है, बिल्फ़र्ज़ किसी का **म-दनी क़ाफ़िले** में दर्द न भी जाए और बीमारी दूर न भी हो तब भी दिल बरदाश्ता नहीं होना चाहिये, बीमारी के फ़ज़ाइल पर नज़र रखते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 802 पर है **: रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीमारियों का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि **मोमिन** जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी **गुनाहों से कफ़्फ़ारा** हो जाती है और आयिन्दा के लिये नसीह़त और **मुनाफ़िक़** जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल **ऊंट** की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ! एक शख़्स ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) बीमारी क्या चीज़ है, मैं तो कभी बीमार न हुवा ? फ़रमाया : हमारे पास से उठ जा कि तू हम में से नहीं। (سُنَنِ ابوداؤد ج۳ص۲۴۵ حدیث ۳۰۸۹)

*मैं अपने ख़ैरुल वरा के सदक़े, मैं उन की शाने अ़ता के सदक़े*

*भरा है ऐबों से मेरा दामन, हुज़ूर फिर भी निभा रहे हैं*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**एक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला, "**ज़ुल्म का अन्जाम**" सफ़हा 11 ता 13 पर ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की किताब "**तम्बीहुल मुग़्तरीन**" के ह़वाले से नक़्ल किया गया है : **मश्हूर** ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक इस्राईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ बन्दगी करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इ़बादत करता, न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर **एक लकड़ी** जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर **दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआ़-मला हुक़ूक़ुल इ़बाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था उस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص ٥١)

**गेहूं का दाना तोड़ने का उख़रवी नुक़्सान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! एक तिन्का जन्नत में दाख़िले से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'मूली लकड़ी के ख़िलाल की तो बात ही कहां है। बा'ज़ लोग दूसरों के लाखों बल्कि करोड़ों रुपै हड़प कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हिदायत इनायत फ़रमाए। आमीन। एक और इ़ब्रत नाक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये जिस में सिर्फ़ एक गेहूं के दाने के बिला इजाज़त खाने के नहीं सिर्फ़ तोड़ डालने के उख़रवी नुक़्सान का तज़्किरा है। चुनान्चे मन्क़ूल है कि एक शख़्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, लेकिन ह़िसाबो किताब हुवा यहां तक कि उस दिन के बारे में भी मुझ से पूछगछ हुई जिस रोज़ मैं रोज़े से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब इफ़्त़ार का वक़्त हुवा तो मैं ने गेहूं की एक बोरी में से गेहूं

का एक दाना उठा लिया और उस को तोड़ कर खाना ही चाहता था कि एक दम मुझे एह़सास हुवा कि येह दाना मेरा नहीं, चुनान्चे मैं ने उसे जहां से उठाया था फ़ौरन उसी जगह डाल दिया। और उस का भी ह़िसाब लिया गया यहां तक कि उस पराए **गेहूं के तोड़े जाने के नुक़्सान के ब क़दर मेरी नेकियां मुझ से ली गईं।** (مِرقاۃُ المَفاتِیح ج۸ ص۸۱۱ تحتَ الحدیث۵۰۸۳)

*हम डूबने ही को थे कि आक़ा की मदद ने — गिर्दाब से खींचा हमें तूफ़ां से निकाला*
*लाखों तेरे सदक़े में कहेंगे दमे मह़शर — ज़िन्दां[1] से निकाला हमें ज़िन्दां से निकाला*

(ज़ौक़े ना'त, स. 40, 41)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये कहे : ह़ज़रते** सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : अपने भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस का ज़िक्र उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ अपनी ग़ैर मौजू-दगी में तुम अपना ज़िक्र होना पसन्द करते हो। (تَنبِیہُ المُغتَرِّین ص۱۹۲)

**फ़ुलां ने मेरी ग़ीबत की येह जान कर ग़ुस्से न हों :** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : अपनी **ग़ीबत** करने वाले पर **मुश्तइल** (या'नी ग़ुस्से) होना मुनासिब नहीं उस से तो तुम्हें मह़ब्बत करनी चाहिये कि उस के **ग़ीबत** करने की वज्ह से तुम्हें सवाब ह़ासिल हो रहा है! अगर्चे उस ने इस बात का क़स्द (या'नी इरादा) नहीं किया। मज़ीद फ़रमाते हैं : जो शख़्स उस आदमी पर ग़ुस्सा करे जिस की नेकियां अपने हाथ आ रही हैं वोह बे वुक़ूफ़ है अलबत्ता किसी शर-ई वज्ह से ग़ज़ब नाक होना सह़ीह़ है। (تَنبِیہُ المُغتَرِّین ص۱۹۳)

**ग़ीबत करने वाले को समझाने का एक नया अन्दाज़ :** سُبحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है आप

1. ज़िन्दां : या'नी क़ैद ख़ाना

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इर्शादे गिरामी से हमें येह भी दर्स मिल रहा है कि अगर **ग़ीबत** करने वाले के साथ जवाबी कारवाई की गई तो नफ़रत की दीवार मज़ीद मज़्बूत़ हो जाएगी, फ़साद बढ़ेगा और अगर उस को महब्बत से समझाने की कोशिश की गई तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **ग़ीबत** ही से बाज़ आ जाएगा। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला, **"ना चाक़ियों का इलाज"** सफ़्ह़ा 22 ता 23 पर है : येह उसूल याद रखिये कि नजासत को नजासत से नहीं, पानी से पाक किया जाता है लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी भरा सुलूक करे तब भी आप उस के साथ महब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के मुस्बत नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा। **वल्लाहिल मुजीब** عَزَّوَجَلَّ ! वोह लोग बड़े ख़ुश नसीब हैं जो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए ज़ुल्म करने वाले को मुआ़फ़ कर देते और बुराई को भलाई से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरग़ीब के ज़िम्न में पारह 24 सूरए **حٰمٓ السَّجْدَه** की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

***चश्मे करम हो ऐसी कि मिट जाए हर ख़त़ा***
***कोई गुनाह मुझ से न शैत़ां करा सके***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 412)

**अल्लाहु जब्बार** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार : ह़ज़रते** सय्यिदुना **बक्र मु-ज़नी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह लोगों के ऐबों का वकील बना हुवा है (या'नी सब की पोलें खोलता और **ग़ीबतें** करता फिरता है) तो जान लो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन है और **अल्लाहु** जब्बार عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** का शिकार है।

(تنبیهُ المُغتَرِّین ص۱۹۷)

**सामने कुछ पीछे कुछ :** ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : उन लोगों पर तअ़ज्जुब है जो पीछे से तो इस्लामी भाइयों की **ग़ीबत** कर के उन की इ़ज़्ज़त की धज्जियां उड़ाते हैं मगर जब सामने आते हैं तो ख़ूब मह़ब्बत का इज़्हार करते और उन की ता'रीफ़ शुरूअ़ कर देते हैं । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٧)

**निफ़ाक़ से नफ़रत : जब** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق तारिकुद्दुन्या (या'नी गोशा नशीन) हो गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर कहा : तारिकुद्दुन्या होने से मख़्लूक़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मह़रूम हो गई है ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस के जवाब में मुन्द-र-जए ज़ैल दो शे'र पढ़े :

ذَهَبَ الْوَفَاءُ ذِهَابَ اَمْسِ الذَّاهِبِ وَالنَّاسُ بَيْنَ مُخَايِلٍ وَّ مَآرِبِ

يُفْشُوْنَ بَيْنَهُمُ الْمَوَدَّةَ وَالْوَفَا وَقُلُوْبُهُمْ مَحْشُوَّةٌ بِعَقَارِبِ

या'नी वफ़ा किसी जाने वाले कल की त़रह़ चली गई और लोग अपने ख़यालात में ग़र्क़ हो कर रह गए । लोग यूं तो एक दूसरे के साथ इज़्हारे मह़ब्बत व वफ़ा करते हैं लेकिन उन के दिल एक दूसरे के बुग़्ज़ो कीने के बिच्छूओं से लबरेज़ हैं ! (تذكرةُ الاولياء ص٢٢)

**आज कल निफ़ाक़ का अन्दाज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق लोगों की मुना-फ़क़त वाली रविश से तंग आ कर ख़ल्वत (तन्हाई) में तशरीफ़ फ़रमा हो गए । उस पाकीज़ा दौर में भी येह सूरते ह़ाल होने लगी थी तो अब तो जो ह़ाल बेह़ाल है उस का किस से शिक्वा कीजिये । आह ! आज कल तो अक्सर लोगों का ह़ाल ही अ़जीब हो गया है जब बाहम मिलते हैं तो एक दूसरे के साथ निहायत ता'ज़ीम के साथ पेश आते और ख़ूब ह़ाल अह़वाल पूछते हैं, हर त़रह़ की ख़ातिर दारी और ख़ूब मेहमान दारी करते हैं कभी ठन्डी बोतल पिला कर निहाल करते हैं तो कभी चाय पिला कर, पान गुटके से मुंह लाल करते हैं । ब ज़ाहिर हंस हंस कर खुश कलामी व क़ीलो क़ाल करते हैं मगर अपने दिल में उस के

बारे में बुग़्ज़ो मलाल रखते हैं, इसी लिये तो मिलने वाले जूं ही जुदा होते हैं उन की **ग़ीबतें** शुरूअ़ कर देते हैं, उन के उ़यूब बयान कर के हंसते हैं कि फ़ुलां शख़्स ऐसा है फ़ुलां वैसा है फ़ुलां शख़्स को क्या हो गया है हमेशा बन ठन कर फिरता है और फ़ुलां शख़्स की चाल कैसी अ़जीब है कि देख कर हंसी आती है और फ़ुलां शख़्स कितना बे ह़या है कि उस की बातों को बयान करने ही से हम को शर्म आती है और फ़ुलां शख़्स मग़रूर मा'लूम होता है कि लोगों से बातें बहुत कम करता है और फ़ुलां शख़्स बे वुक़ूफ़ है लोगों से बात करने की तमीज़ नहीं रखता और फ़ुलां शख़्स अ़जीब मस्ख़रा है कि गोया हीजड़ा हो ! फ़ुलां बहुत शरारती है, फ़ुलां मेरे पैसे खा गया है, अरे वोह तो पक्का 420 है।

*ग़ीबतो चुग़ली की आफ़त से बचें — येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये*
*ज़ाहिरो बात़िन हमारा एक हो — येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** हि़स्सा 16 सफ़ह़ा 173 पर है : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अपने भाई को ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाया जिस से वोह तौबा कर चुका है, तो मरने से पहले वोह ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला हो जाएगा। (سُنَنِ تِرمِذی ج ٤ ص٢٢٦ حديث ٢٥١٣)

**ताइब को शरमिन्दा किया तो ख़ुद गुनाह में फंस गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा जब कोई मुसल्मान किसी गुनाह से तौबा कर ले तो अब उस गुनाह के बारे में उस को शरमिन्दा नहीं करना चाहिये इस ज़िम्न में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی

फ़रमाते हैं : अ़क्ल मन्द को चाहिये कि किसी को उस के उस गुनाह की वज्ह से आ़र (या'नी शर्म) न दिलाए (जिस से वोह तौबा कर चुका हो) क्यूं कि मैं ने एक बार किसी को (तौबा के बा वुजूद) उस के गुनाह के सबब आ़र दिलाई (या'नी शरमिन्दा किया) तो बीस साल के बा'द मैं खु़द उस में मुब्तला हो गया। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص۱۹۷)

**दरख़्त लगा रहा हूं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बे जा बक बक की आ़दत आदमी को न बोलने का बुलवाती और नाकों चने चबवाती है, ख़ूब **ग़ीबतें** करवाती और चुग़्लियां खिलवाती है, आदमी चुप रहे इसी में आ़फ़िय्यत है और बोलना है तो अच्छा बोले, **ज़िक्रुल्लाह** करे देखिये ! **हमारे** मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ज़बान का कितना प्यारा इस्ति'माल बताया आप भी सुनिये और झूमिये चुनान्चे "सु-नने इब्ने माजह" की रिवायत में है : (एक बार) मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या कर रहे हो ? अ़र्ज़ की : **दरख़्त** लगा रहा हूं। फ़रमाया : मैं बेहतरीन **दरख़्त** लगाने का त़रीक़ा बता दूं ! **سُبْحٰنَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَر** पढ़ने से हर कलिमे के इवज़ (या'नी बदले) **जन्नत** में एक दरख़्त लग जाता है। (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٢٥٢ حديث ٣٨٠٧)

**जन्नत में चार[4] दरख़्त लगेंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़दीसे पाक में चार कलिमे इर्शाद फ़रमाए गए हैं : ﴿1﴾ سُبْحٰنَ الله ﴿2﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰه ﴿3﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله ﴿4﴾ اَللهُ اَكْبَر येह चारों कलिमात पढ़ें तो **जन्नत** में **चार दरख़्त** लगाए जाएं और कम पढ़ें तो कम। म-सलन अगर سُبْحٰنَ الله कहा तो एक दरख़्त। इन कलिमात को पढ़ने के लिये ज़बान चलाते जाइये और जन्नत में ख़ूब ख़ूब दरख़्त लगवाते जाइये।

عُمر راضائع مَکُن در گفتگو      ذِکر اُوکُن ذکر اُوکُن ذکر اُو

(या'नी फ़ालतू बातों में उ़म्रे अ़ज़ीज़ ज़ाएअ़ मत कर, **ज़िक्रुल्लाह** कर, **ज़िक्रुल्लाह** कर, **ज़िक्रुल्लाह**)

**80 बरस के गुनाह मुआफ़ : इसी** त़रह़ ज़बान का एक अच्छा इस्ति'माल येह भी है कि **दुरूदो सलाम** पढ़ते रहिये और गुनाह बख़्शवाते रहिये जैसा कि **दुर्रे मुख़्तार** में है : जो सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूद भेजे और वोह क़बूल हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के अस्सी (80) बरस के गुनाह** मिटा देगा। (دُرِّمُختار ج ۲ ص ۲۸٤)

**बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्नूअ़ है : बा'ज़** लोग ज़बान का ग़लत़ इस्ति'माल करते हुए इस त़रह़ कह देते हैं : "**बिस्मिल्लाह** कीजिये !" "आओ जी **बिस्मिल्लाह** !" "मैं ने **बिस्मिल्लाह** कर डाली", ताजिर ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन "बोनी" कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग इस को भी "**बिस्मिल्लाह**" कहते हैं, म-सलन "मेरी तो आज अभी तक **बिस्मिल्लाह** ही नहीं हुई !" जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़ खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से कहता है : आइये ! आप भी खा लीजिये, आ़म तौ़र पर जवाब मिलता है : "**बिस्मिल्लाह**" या इस त़रह़ कहते हैं : "**बिस्मिल्लाह** कीजिये !" मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 16 सफ़ह़ा 22 पर है कि इस मौक़अ़ पर इस त़रह़ **बिस्मिल्लाह** कहने को उ़-लमा ने बहुत सख़्त मम्नूअ़ क़रार दिया है। (बहारे शरीअ़त) हां येह कह सकते हैं : **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खा लीजिये। बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर दुआ़इया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, म-सलन بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُم या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें ब-र-कत दे। या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत दे।

**बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है : ह़राम** व ना जाइज़ काम से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए, ह़रामे क़त़्ई काम से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ना कुफ़्र है चुनान्चे "फ़तावा आ़लमगीरी" में है : शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त या जूआ खेलते वक़्त **बिस्मिल्लाह** कहना कुफ़्र है। (فتاوٰی عالَمگیری ج ۲ ص ۲۷۳)

**कब ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **करना गुनाह है ! : याद रखिये !** ज़बान से ज़िक्रो दुरूद बाइसे अज्रो

सवाब भी है और बा'ज़ सूरतों में मम्नूअ़ भी म-सलन ''मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 533 पर है **:** गाहक को सौदा दिखाते वक़्त ताजिर का इस ग़रज़ से **दुरूद शरीफ़** पढ़ना या سُبْحٰنَ اللّٰه कहना कि उस चीज़ की उ़म्दगी ख़रीदार पर ज़ाहिर करे **ना जाइज़** है। यूंही किसी बड़े को देख कर इस निय्यत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ना कि लोगों को उस के आने की ख़बर हो जाए ताकि उस की ता'ज़ीम को उठें और जगह छोड़ दें **ना जाइज़** है। (رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۲۸۱)

## इस्तिक़्बाल के लिये अल्लाह अल्लाह की सदाएं बुलन्द करना :

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मज़्कूरा जुज़्इये के पेशे नज़र मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) अक्सर इस्लामी भाइयों को समझाता रहता हूं कि मेरी आमद पर ''**अल्लाह अल्लाह**'' की सदाएं बुलन्द न किया करें क्यूं कि ब ज़ाहिर यहां ज़िक्रुल्लाह नहीं इस्तिक़्बाल मक़्सूद होता है।

*जो है ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ज़ुल जलाल — उस की ग़फ़्लत है उस पर वबालो नकाल[1]*
*का़'रे ग़फ़्लत[2] से हम को ख़ुदाया निकाल — हम हों ज़ाकिर[3] तेरे और मज़्कूर[4] तू*
*अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू*

(सामाने बख़्शिश, स. 15)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## अपनी नेकियां तुम्हें क्यूं दूं ? :

**एक** शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से कहा **:** मुझे ख़बर मिली है आप मेरी **ग़ीबत** करते हैं! फ़रमाया **:** मेरे नज़्दीक तुम्हारी अहम्मिय्यत इतनी ज़ियादा भी नहीं कि मैं अपनी नेकियां तुम्हारे ह़वाले कर दूं। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ۱۸۳)

## ग़ीबत गोया नेकियां फेंकने की मशीन है :

**ह़ज़रते** सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़

1. दुख, अ़ज़ाब। 2. ग़फ़्लत का गढ़ा। 3. ज़िक्र करने वाला 4. ज़िक्र किया गया

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** करने वाले की मिसाल उस शख़्स जैसी है : जो मिन्जनीक़ (या'नी पथ्थर फेंकने की हाथ से चलाई जाने वाली पुराने दौर की मशीन) के ज़रीए अपनी नेकियों को मशरिक़ व मग़रिब हर त़रफ़ फेंकता है। (تَنبِیہُ الْمُغتَرّین ص۱۹۳)

**कभी ग़ीबत नहीं की : हज़रते** सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی का इर्शाद है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू आ़सिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْحَاکِم फ़रमाते हैं : मुझे जब से अ़क़्ल (या'नी समझ) आई है कि **ग़ीबत** ह़राम है मैं ने कभी भी **ग़ीबत** नहीं की। (تَھذِیبُ الْاسماء وَاللُّغات لِلنَّوَوی ص۸۳۶)

**जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग़–लत़ियां करता है : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक–त–बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''मिन्हाजुल आ़बिदीन''** सफ़ह़ा 108 पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ज़बान की ह़िफ़ाज़त से नेक आ'माल मह़फ़ूज़ होते हैं क्यूं कि जो शख़्स ज़बान का ध्यान नहीं रखता, हर वक़्त बोलता ही रहता है, वोह उ़मूमन लोगों की **ग़ीबत** में मुब्तला हो जाता है। (مِنْھاجُ الْعابِدِین(عربی) ص۶۵) मश्हूर मुह़ा–वरा है : **مَنْ کَثُرَ لَغَطُہٗ کَثُرَ سَقَطُہٗ** या'नी जो ज़ियादा बोलता है ज़ियादा ग़–लत़ियां करता है।

**दीवाने हो जाओ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर लब खोलना और मुंह से बोलना ही है तो तिलावत कीजिये, ना'त शरीफ़ पढ़िये, ख़ूब ख़ूब ज़िक्रे इलाही कीजिये। **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ इस कसरत के साथ ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ किया करो कि लोग दीवाना कहने लगें। (اَلْمُستَدرَک لِلْحاکِم ج۲ ص۱۷۳ حدیث ۱۸۸۲) ﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इतनी कसरत से ज़िक्र करो कि मुनाफ़िक़ीन तुम्हें रियाकार कहने लगें। (اَلْمُعجَمُ الْکَبِیر لِلطّبَرانی ج۱۲ ص۱۳۱ حدیث ۱۲۷۸۶)

**जन्नत के मह़ल्लात ह़ासिल करने का नुस्ख़ा : ज़बान** के उ़म्दा इस्ति'माल के लिये एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत सुनिये और झूमिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को 10 बार पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला

उस के लिये **जन्नत में मह़ल** बनाता है जिस ने 20 बार पढ़ा उस के लिये दो मह़ल बनाता है जिस ने 30 बार पढ़ा उस के लिये तीन मह़ल बनाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त हमारे बहुत से मह़ल्लात होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल इस से भी ज़ियादा वसीअ़ है।

(سُنَنِ دارمی ج۲ ص۵۵۲ حدیث۳۴۲۹)

***अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी***

***ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

**صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**تُوبُوا اِلَی الله! اَسْتَغْفِرُ الله**

**صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**ग़ीबत की बदबू :** **ग़ीबत** करने से एक मख़्सूस **बदबू** निकलती है। पहले जब कोई **ग़ीबत** करता था तो बदबू के सबब सब को मा'लूम हो जाता था कि **ग़ीबत** हो रही है ! मगर अब **ग़ीबत** की इस क़दर कसरत हो गई है कि हर त़रफ़ इस की **बदबू** के भबके उठ रहे हैं मगर हमें **बदबू** नहीं आती क्यूं कि हमारी नाक इस की बदबू से अट गई है। इस को यूं समझिये कि जब गटर साफ़ की जा रही होती है तो आ़म शख़्स उस की बदबू के बाइस वहां खड़ा नहीं रह सकता मगर भंगी को कुछ भी पता नहीं चलता इस लिये कि उस की नाक उस गन्दगी की बदबू से अट चुकी होती है। चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 720 पर है : **झूट** और **ग़ीबत** मा'नवी नजासत (या'नी बात़िनी गन्दगियां) हैं व लिहाज़ा **झूटे** के मुंह से ऐसी **बदबू** निकलती है कि ह़िफ़ाज़त के फ़िरिश्ते उस वक़्त उस के पास से दूर हट जाते हैं जैसा कि ह़दीस में वारिद हुवा है और इसी त़रह़ एक बदबू की निस्बत **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि येह उन के मुंह की सड़ांद (या'नी बदबू) है जो मुसल्मानों की **ग़ीबत** करते हैं और हमें जो **झूट**

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

या **ग़ीबत** की बदबू मह़सूस नहीं होती उस की वज्ह येह है कि हम उस से मालूफ़ (या'नी इस के आ़दी) हो गए हमारी नाकें उस से भरी हुई हैं जैसे चमड़ा पकाने वालों के मह़ल्ले में जो रहता है उसे उस की **बदबू** से ईज़ा नहीं होती दूसरा आए तो उस से नाक न रखी जाए। मुसल्मान इस नफ़ीस फ़ाएदे (या'नी उ़म्दा नतीजे) को याद रखें और अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरें, **झूट** और **ग़ीबत** तर्क करें। क्या (عَزَّوَجَلَّ) **مَعَاذَ الله** मुंह से पाख़ाना निकलना किसी को पसन्द होगा ? बात़िन की नाक खुले तो मा'लूम हो कि **झूट** और **ग़ीबत** में पाख़ाने से बदतर सड़ांद (या'नी बदबू) है **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब बन्दा **झूट** बोलता है, उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।" (سُنَنِ ترمذی ج۳ ص۳۹۲ حدیث ۱۹۷۹) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रावी है हम ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर थे कि एक बदबू उठी, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो कि येह बदबू क्या है, येह उन की बदबू है जो मुसल्मानों की **ग़ीबत** करते हैं। (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنیا ص۱۰٤ رقم۷۰)

*अल्लाह हमें झूट से ग़ीबत से बचाना     मौला हमें क़ैदी न जहन्नम का बनाना*

*ऐ प्यारे ख़ुदा अज़ पए सुल्त़ाने ज़माना     जन्नत के मह़ल्लात में तू हम को बसाना*

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!     صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد**

**تُوبُوا اِلَى الله!     اَسْتَغْفِرُ الله**

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!     صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد**

**हर बाल के बदले एक एक नूर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल सीखना चाहिये। वरना ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **ग़ीबतें** और तोह्मतें और मुख़्तलिफ़ गुनाहों की शामतें आख़िरत में फंसा सकती हैं। वाक़ेई अगर हम अपनी ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल करें तो वक़्तन फ़ वक़्तन ढेर सारी नेकियां ह़ासिल कर सकते हैं। ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बाज़ार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले क़ियामत में **नूर** होगा।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۱ ص٤١٢ حدیث ٥٦٧)

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोजे़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الايمان)

**दर्स देने वालों के लिये दुआ़ए अ़त्तार : याद रहे !** तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ़, दुरूदो सलाम, ना'त, ख़ुत़्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा सब "ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ" में शामिल हैं। इस्लामी भाइयों को चाहिये कि रोज़ाना कम से कम 12 मिनट बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स दें। जितनी देर तक दर्स देंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उतनी देर तक के लिये दीगर फ़ज़ाइल के इ़लावा उसे बाज़ार में **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करने का सवाब भी ह़ासिल होगा। **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की भी क्या ख़ूब **म-दनी बहारें** हैं, काश ! इस्लामी भाई मस्जिद, घर, बाज़ार, चोक, दुकान वग़ैरा में और इस्लामी बहनें घर में रोज़ाना **दो दर्स** देने या सुनने का मा'मूल बना कर ख़ूब ख़ूब सवाब लूटें और साथ ही साथ इस **दुआ़ए अ़त्तार** के भी ह़क़दार बन जाएं **: या रब्बे मुह़म्मद** عَزَّوَجَلَّ ! जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहन रोज़ाना दो दर्स दें या सुनें उन को और मुझे बे ह़िसाब बख़्श और हमें हमारे **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में इकठ्ठा रख।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیه واٰله وسلّم

**तन्हा दर्स देने की ब-र-कत : फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की म-दनी बहारों के तो क्या ही कहना ! लाइन्ज़ एरिया (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई अपने घर की छत पर खड़े थे कि उन की नज़र गली में खड़े **दा'वते इस्लामी** के एक बा इमामा इस्लामी भाई पर पड़ी जो अकेले ही **चोकदर्स** दे रहे थे एक भी इस्लामी भाई दर्स सुनने के लिये रुक नहीं रहा था। वोह यूं तो दीन से अ़-मली त़ौर पर इस क़दर दूर थे कि सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाते मगर न जाने क्यूं उन को तन्हा दर्स देता देख कर उन्हें तर्स आ गया सोचा कि चलो बेचारे के साथ कोई नहीं बैठा तो मैं ही जा कर बैठ जाता हूं, घर से बाहर निकले और वोह **चोकदर्स** में शरीक हो गए। سُبْحٰنَ اللّٰه उन का चोकदर्स में शिर्कत उन की हिदायत का सबब बन गई और वोह **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने यहां **म-दनी इन्आ़मात** की ज़िम्मेदारी भी मिली। एक दिन तो वोह था कि येह सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाया करते थे और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब ख़ुद इन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ का ताज जगमगा रहा है।

**मक़्बूलिय्यत का मदार क़िल्लत व कसरत पर नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की कितनी ज़बर दस्त ब-र-कत है ! वोह इस्लामी भाई कैसे जज़्बे वाले थे कि कोई न मिला तो तन्हा चोकदर्स शुरूअ़ कर दिया ! इस में सभी के लिये दर्स के **म-दनी फूल** हैं उन का अकेले दर्स देना एक मुसल्मान के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता होने का सबब बन गया। येह भी अन्दाज़ा लगाइये कि तन्हा दर्स देते हुए देख कर जब ऐसे शख़्स को रह़्म आ गया जो कि इन चीज़ों से दूर भागता था तो **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला तन्हा या कम ता'दाद में दर्स देने वालों से कितनी मह़ब्बत करता और किस क़दर उन पर रह़मो करम फ़रमाता होगा। **याद रखिये !** क़िल्लत व कसरत पर मक़्बूलिय्यत का दारो मदार नहीं। जो इस्लामी भाई भीड़भाड़ के बिग़ैर और ईको साउन्ड न हो तो बयान या ना'त शरीफ़ पढ़ने के लिये तय्यार नहीं होते उन की तरग़ीब के लिये अ़र्ज़ है कि बारगाहे ख़ुदा वन्दी में सिर्फ़ इख़्लास देखा जाता है। ह़ाज़िरीन और चाहने वालों की कसरत हो मगर ख़ुलूस न हो तो कोई फ़ाएदा नहीं होता। यक़ीनन जितने भी अम्बिया हुए सब के सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल तरीन बन्दे हैं और हर एक ने 100 फ़ीसदी अपनी ज़िम्मेदारी निभाई मगर बा'ज़ **अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर सिर्फ़ एक ही आदमी ईमान लाया चुनान्चे

**सिर्फ़ एक फ़र्द ने तस्दीक़ की : रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जन्नत के बारे में सब से पहले शफ़ाअ़त करने वाला होउंगा, और किसी नबी की तस्दीक़ इतनी न की गई जितनी मेरी तस्दीक़ की गई, बा'ज़ **अम्बियाए किराम** (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) वोह हैं जिन की तस्दीक़ उन की उम्मत में से सिर्फ़ एक शख़्स ने की है। (صَحیح مُسلِم ص١٢٨ حديث٣٣٢)

**950 साल में सिर्फ़ 80 आदमी ईमान लाए : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : इस फ़रमाने आ़ली के **एक** मा'ना येह हैं कि जितने ज़ियादा लोगों ने मुझ पर ईमान क़बूल किया इतने लोग किसी और नबी पर ईमान नहीं लाए येह बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि दूसरे नबी किसी ख़ास क़ौम के नबी होते

थे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारे जहान के नबी हैं नीज़ और नबियों का ज़मानए नुबुव्वत महदूद था, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत ता क़ियामत है। मज़ीद लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने साढ़े नव सो (950) साल तब्लीग़ फ़रमाई मगर सिर्फ़ अस्सी (80) आदमी ईमान लाए आठ (8) आदमी अपने घर के, बहत्तर (72) आदमी दूसरे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तेईस (23) साल तब्लीग़ फ़रमाई, देख लो आज तक क्या ह़ाल है !

(मिरआत, जि. 8, स. 6,7)

**ग़ीबत गुनाहे कबीरा है :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में है कि (1) **ग़ीबत** सूद से बढ़ कर है (2) अगर इसे (या'नी ग़ीबत को) समुन्दर के पानी में डाल दिया जाए तो उसे भी बदबूदार कर दे (3) (ग़ीबत करने वाले) दोज़ख़ में मुर्दार खा रहे थे (4) उन (ग़ीबत करने वालों) की फ़ज़ा बदबूदार थी (5) उन्हें (या'नी ग़ीबत करने वालों को) क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा था।" इन में से बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका ही इस के **कबीरा** होने के लिये काफ़ी हैं, पस जब येह सारी जम्अ़ हो जाएं तो फिर **ग़ीबत** क्यूंकर **कबीरा गुनाह** न कहलाएगी ? (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكبائِر ج٢ ص ٢٨)

**आ़लिम के बारे में एह़तियात़ की ह़िकायत :** ह़ज़रते शैख़ अफ़्ज़लुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين से जब किसी आ़लिमे दीन के मक़ाम के बारे में पूछा जाता तो (ग़ीबत में जा पड़ने के ख़ौफ़ से) फ़रमाते : मेरे इलावा किसी और से पूछो मैं तो लोगों को कमाल और बेहतरी ही की निगाह से देखता (और हर एक के बारे में हुस्ने ज़न से काम लेता) हूं, मेरे पास कश्फ़ नहीं जिस के ज़रीए इन के उन मक़ामात की मा'लूमात कर सकूं जो रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ के यहां हैं। और ह़दीस शरीफ़ में है : اَلظَّنُّ اَكْذَبُ الْحَدِيث[1] (**तरजमा :** बद गुमानी सब से झूटी बात है।) (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٣)

**अच्छा गुमान इबादत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज कल बद गुमानी का मरज़ आ़म है। मुसलमान के बारे में अच्छा गुमान कर के सवाब कमाना चाहिये चुनान्चे फ़रमाने

मदीना

[1] صَحيح بُخارى ج٤ ص١١٧ حديث٦٠٦٦

मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ** या'नी हुस्ने ज़न उम्दा इबादत से है। (سُنَنِ ابوداؤد ج٤ ص٣٨٨ حديث ٤٩٩٣) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मतालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर **बद गुमानी** न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक **इबादत** है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 621)

**आलिम की ग़ीबत करने वाला रहमत से मायूस : अफ़्सोस !** आज कल مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ उ-लमा की ब कसरत **ग़ीबत** की जाती है। लिहाज़ा शैतान किसी आलिमे दीन की **ग़ीबत** पर उभारे तो हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر के इस इर्शाद को याद कर के ख़ुद को डराइये : जिस ने किसी फ़क़ीह (आलिम) की **ग़ीबत** की तो क़ियामत के रोज़ उस के चेहरे पर लिखा होगा : **"येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस है।"** (مُكاشَفةُ القُلوب ص ٧١)

**दोज़ख़ के कुत्ते काटेंगे : ग़ीबत** उ-लमा की हो या अवाम की, ग़ीबत फिर ग़ीबत ही है, **ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम !** इस का अज़ाब न सहा जा सकेगा चुनान्चे एक बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : लोगों की **ग़ीबत** न करो वरना **दोज़ख़ के कुत्ते** तुम्हें काटेंगे। (تفسيردُرِّ مَنثور ج٧ ص٥٧٢، مِنہاجُ العابِدین ص٦٦)

**रात के सन्नाटे में कुत्ता हम्ला आवर हो तो...... : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मज़्कूरा रिवायत को बार बार पढ़िये और तसव्वुर कीजिये कि रात का सन्नाटा हो, कुत्ता भोंकता हुवा पीछे आ रहा हो और आप उस से बचने के लिये तदबीरें कर रहे हों कि यकायक झपट कर आप के कुरते का दामन अपने मुंह से पकड़ ले ! उस वक़्त आप की हालत क्या होगी ! अब ग़ौर कीजिये किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** कर दी और मरने के बा'द अगर सज़ाअन **जहन्नम के कुत्ते** ने कुरते के दामन को नहीं बदन को और वोह भी पकड़ा ही नहीं काटना शुरूअ़ कर दिया तो उस वक़्त क्या गुज़रेगी !

*कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी* *क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 712)

**उ़-लमा की ग़ीबत की 15 मिसालें :** ह़ालात बहुत ना गुफ़्ता बिह हैं, शैत़ान ने अक्सर मुसल्मानों को उ़-लमाए ह़क़ से काफ़ी दूर कर दिया है, अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! मुंह भर कर अब उ़-लमाए किराम की **ग़ीबतें** की जाती हैं। उ़-लमा की **ग़ीबत** की चन्द मिसालें मुला-ह़ज़ा हों : ✿ वा'ज़ के पैसे लेता है ✿ बड़ा बद ज़बान है ✿ पेटू है ✿ ह़लवे मांडे खाता है ✿ खाना डट कर खाता है ✿ उस दिन उलटे हाथ से पानी पी रहा था ✿ अपने आप को सब से बड़ा आ़लिम समझता है ✿ वा'ज़ में नाक से बोलता है ✿ बहुत लम्बा बयान करता है ✿ बयान में बस क़िस्से कहानियां सुनाता है ✿ आवाज़ भी "ख़ास" नहीं ✿ भई ! ज़रा बच के रहना "अ़ल्लामा साहिब" हैं ✿ लालची है ✿ छोड़ो छोड़ो यार ! वोह तो **मौलवी** है ✿ (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़लिमों को बा'ज़ लोग ह़क़ारत से कह देते हैं) येह मुल्ला लोग।

**आ़लिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं : आ़म** आदमी और आ़लिमे दीन की **ग़ीबत** में बड़ा फ़र्क़ है, आ़लिम की **ग़ीबत** में अक्सर उस की तौहीन का पहलू भी होता है जो कि काफ़ी तश्वीश नाक है। **आ़लिम की तौहीन की तीन सूरतें** और इन के बारे में हुक्मे शर-ई बयान करते हुए मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 129 पर फ़रमाते हैं : ﴾1﴿ अगर आ़लिमे (दीन) को इस लिये बुरा कहता है कि वोह "आ़लिम" है जब तो **सरीह़ काफ़िर** है और ﴾2﴿ अगर ब वज्हे इ़ल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत (या'नी दुश्मनी) के बाइस बुरा कहता है, गाली देता (है और) तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और ﴾3﴿ अगर बे सबब (या'नी बिला वज्ह) रन्ज (बुग़्ज़) रखता है तो مَرِيْضُ الْقَلْبِ وَ خَبِيْثُ الْبَاطِن (या'नी दिल का मरीज़ और नापाक बात़िन वाला) है और उस (या'नी आ़लिम से ख़्वाह म ख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाले) के **कुफ़्र** का अन्देशा है। "ख़ुलासा" में है : **مَنْ اَبْغَضَ عَالِماً مِّنْ غَيْرِ سَبَبٍ ظَاهِرٍ خِيْفَ عَلَيْهِ الْكُفْر** या'नी जो बिला किसी ज़ाहिरी वज्ह के आ़लिमे दीन से बुग़्ज़ रखे उस पर कुफ़्र का ख़ौफ़ है।

(خُلاصَةُ الفتاوٰی ج٤ ص٣٨٨)

# उ़-लमा की तौहीन के बारे में चन्द सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं :

## आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन

**सुवाल :** क्या आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन भी **कुफ़्र** है ?

**जवाब :** ब सबबे इ़ल्मे दीन आ़लिमे बे अ़मल की **तौहीन** करना भी **कुफ़्र** है। **आ़लिमे बे अ़मल** भी इ़ल्मे दीन की वज्ह से जाहिल इ़बादत गुज़ार से ब द-र-जहा अफ़्ज़ल व बेहतर है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** और क़ुरआन शरीफ़ इन्हें (या'नी उ़-लमाए ह़क़ को) मुत्लक़न **वारिस** बता रहा है, ह़त्ता कि इन (में) के बे अ़मल (आ़लिम) को भी या'नी जब कि अ़क़ाइदे ह़क़ पर मुस्तक़ीम (या'नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा सुन्नी) और हिदायत की त़रफ़ दाई (बुलाने वाला) हो कि **गुमराह** (आ़लिम) **और गुमराही की त़रफ़ बुलाने वाला** (मौलवी ) **वारिसे नबी नहीं नाइबे इब्लीस है।** وَالعِیَاذُ بِاللّٰہِ تعالٰی हां, रब عَزَّوَجَلَّ ने तमाम **उ़-लमाए शरीअ़त** को कहां **वारिस** फ़रमाया है ? यहां तक कि इन के **बे अ़मल** को भी ! हां, वोह हम से पूछिये, **मौला** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है **:**

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِیْنَ اصْطَفَیْنَا مِنْ عِبَادِنَاۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَیْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِیْرُؕ(۳۲) (پ۲۲فاطر۳۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को तो इन में कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और इन में कोई मियाना चाल पर है और इन में कोई वोह है जो **अल्लाह** के ह़ुक्म से भलाइयों में सब्क़त ले गया येही बड़ा फ़ज़्ल है।

मज़्कूरा बाला आयते करीमा **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 530 पर नक़्ल करने के बा'द मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن मज़ीद फ़रमाते हैं **: देखो बे अ़मल** (उ़-लमा जो) **कि**

**गुनाहों से अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहे हैं उन्हें भी किताब का वारिस बताया और निरा** (या'नी फ़क़त्) **वारिस ही नहीं बल्कि अपने चुने हुए बन्दों में गिना। अह़ादीस** में आया, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस आयत की **तफ़्सीर** में फ़रमाया : हम में का जो सब्क़त (बरतरी) ले गया वोह तो सब्क़त ले ही गया और जो मु-तवस्सित़ (या'नी दरमियाना) ह़ाल का हुवा वोह भी नजात वाला है और जो अपनी जान पर ज़ालिम (या'नी गुनहगार) है उस की भी **मग़िफ़रत** है। (تفسیر دُرّمنثور ج۷ ص۲۵) आ़लिमे शरीअ़त अगर अपने इ़ल्म पर आ़मिल भी हो (जब तो वोह मिस्ले) **चांद** है (जो) कि आप (ख़ुद भी) ठन्डा और तुम्हें (भी) रोशनी दे वरना (आ़लिमे बे अ़मल मिस्ले) **शम्अ़** है कि ख़ुद (तो) जले मगर तुम्हें नफ़्अ़ दे। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : उस शख़्स की मिसाल जो लोगों को ख़ैर (या'नी भलाई) की ता'लीम देता और अपने आप को भूल जाता है उस फ़तीले (या'नी चराग़ की बत्ती) की त़रह़ है कि लोगों को रोशनी देता है और ख़ुद जलता है।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۱ ص۷٤ حدیث ۱۱)

## जाहिल को आ़लिम से बेहतर जानना कैसा ?

**सुवाल :** जाहिल को आ़लिम से बेहतर समझना कैसा ?

**जवाब :** अगर इ़ल्मे दीन से नफ़रत के सबब जाहिल को आ़लिम से बेहतर समझता है तो येह **कुफ़्र** है। **फ़ु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कहना : "इ़ल्म से जहालत बेहतर है या आ़लिम से जाहिल अच्छा होता है।" **कुफ़्र** है। (مَجمَعُ الاَنهُر ج۲ ص۵۱۱) जब कि इ़ल्मे दीन की तौहीन मक़्सूद हो।

## त़ालिबे इ़ल्मे दीन को कूंएं का मेंडक कहना

**सुवाल :** दीनी त़ालिबे इ़ल्म या आ़लिमे दीन को ब नज़रे ह़क़ारत **कूंएं का मेंडक** कहना कैसा है ?

**जवाब :** कुफ़्र है।

## "मौलवी लोग क्या जानते हैं" कहना कैसा ?

**सुवाल :** एक शख़्स ने किसी बात पर ह़क़ारत के साथ कहा : **"मौलवी लोग क्या जानते हैं !"** उस का इस त़रह़ कहना कैसा ?

**जवाब :** कुफ़्र है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मौलवी लोग क्या जानते हैं !" कहना **कुफ़्र** है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 244) जब कि उ़-लमा की तह़क़ीर मक़्सूद हो।

## "दीन पर अ़मल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है" कहना कैसा ?

**सुवाल :** येह कहना कैसा है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीन को आसान उतारा था मगर मौलवियों ने मुश्किल बना दिया !"

**जवाब :** येह उ़-लमा की तौहीन की वज्ह से **कलिमए कुफ़्र** है। क्यूं कि **फ़ु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **اَلْاِسْتِخْفَافُ بِالْاَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرٌ** या'नी अशराफ़ (सादाते किराम) और उ़-लमा की तह़क़ीर (इन्हें घटिया जानना) **कुफ़्र** है। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج۲ ص۵۰۹)

## मौलवियों वाला अन्दाज़

**सुवाल :** सुन्नी आ़लिमे दीन की त़र्ज़ पर क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ किये जाने वाले किसी मुबल्लिग़ के बयान को ह़क़ारतन "मौलवियों वाला अन्दाज़" कहना कैसा ?

**जवाब : कुफ़्र** है। क्यूं कि इस में उ़-लमाए ह़क़ की **तौहीन** है।

## "आ़लिम सारे ज़ालिम" कहने का ह़ुक्मे शर-ई

**सुवाल :** "आ़लिम सारे ज़ालिम" येह मक़ूला कैसा है ?

**जवाब :** मुत़्लक़न उ़-लमाए ह़क़्क़ा के बारे में ऐसा जुम्ला कहना **कुफ़्र** है।

## आ़लिमे दीन को ह़क़ारत से मुल्ला कहना

**सुवाल :** जो उ़-लमाए किराम को तह़क़ीर की निय्यत से "मुल्ला मुल्ला" या "मुल्ला लोग" कहे उस के लिये क्या ह़ुक्म है ?

**जवाब :** अगर ब सबबे इ़ल्मे दीन उ़-लमाए किराम की तह़क़ीर (या'नी ह़क़ारत) की निय्यत से कहा तो **कलिमए कुफ़्र** है। चुनान्चे मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं **:** जिस ने (तौहीन की निय्यत से) **आ़लिम** को उ़वैलिम या अ़-लवी (या'नी मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की औलाद) को उ़लैवी कहा उस ने **कुफ़्र** किया। (مِنَحُ الرَّوض لِلقارى ص ٤٧٢) उर्दू ख़्वां ''उ़वैलिम'' या ''उ़लैवी'' नहीं बोलते। अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात बेबाकों की ज़बानों से **मौलवा, मुल्लड़** वग़ैरा अल्फ़ाज़ सुनना (सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ को) याद पड़ता है। बहर ह़ाल **आ़लिमे दीन की ब सबबे इ़ल्मे दीन तौहीन करना या अ़-लवी साहि़बान या सादाते किराम की** शराफ़ते ह़सब नसब के सबब किसी क़िस्म का तौहीन आमेज़ लफ़्ज़ बोलना कुफ़्र है।

## ''मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे'' कहना

**सुवाल :** ''दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करोगे तो ऐ़श करोगे, इ़ल्मे दीन सीख कर मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे'' येह कहना कैसा ?

**जवाब :** इस जुम्ले में इ़ल्मे दीन की तौहीन का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** है। क़ाइल पर **तौबा व तज्दीदे ईमान** लाज़िम है और अगर इ़ल्म व उ़-लमा की तौहीन ही मक़्सूद थी तो **क़त़्ई कुफ़्र** है क़ाइल **काफ़िर व मुरतद** हो गया और उस का **निकाह़** भी टूटा और पिछले नेक आ'माल भी ज़ाएअ़ हुए।

## तौहीने उ़-लमा के मु-तअ़ल्लिक़ 10 पैरे

﴾1﴿ जितने **मौलवी** हैं सब बद मआ़श हैं कहना **कुफ़्र** है जब कि ब सबबे इ़ल्मे दीन, उ़-लमाए किराम की तह़क़ीर की निय्यत से कहा हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 454) ﴾2﴿ येह कहना **:** ''आ़लिम लोगों ने देस ख़राब कर दिया।'' **कलिमए कुफ़्र है** (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 605) ﴾3﴿ येह कहना **कुफ़्र** है कि ''मौलवियों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये'' ﴾4﴿ जो कहे **:** ''इ़ल्मे दीन, को क्या करूंगा ! जेब में रुपै होने चाहिएं।'' कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है। ﴾5﴿ किसी ने आ़लिम से कहा **:** ''जा और इ़ल्मे दीन को किसी बरतन में संभाल

कर रख।'' येह **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲۷۱) ﴾6﴿ जिस ने कहा : ''उ़-लमा जो बताते हैं उसे कौन कर सकता है !'' येह क़ौल कुफ़्र है। क्यूं कि इस कलाम से लाज़िम आता है कि शरीअ़त में ऐसे अह़काम हैं जो त़ाक़त से बाहर हैं या उ़-लमा ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर झूट बांधा है مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ ! (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧١) ﴾7﴿ येह कहना : ''सरीद का पियाला इ़ल्मे दीन से बेहतर है।'' **कलिमए कुफ़्र** है। (ایضاً ص ٤٧٢) ﴾8﴿ **आ़लिमे** दीन से उस के इ़ल्मे दीन की वज्ह से बुग़्ज़ रखना कुफ़्र है या'नी इस वज्ह से कि वोह आ़लिमे दीन है। ﴾9﴿ जो कहे : ''फ़साद करना **आ़लिम** बनने से बेहतर है'' ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲۷۱) ﴾10﴿ **याद रहे !** सिर्फ़ **उ़-लमाए अहले** सुन्नत ही की ता'ज़ीम की जाएगी। रहे बद मज़्हब उ़-लमा, तो उन के साए से भी भागे कि उन की ता'ज़ीम ह़राम, उन का बयान सुनना, उन की कुतुब का मुत़ा-लआ़ करना और उन की सोह़बत इख़्तियार करना **ह़राम** और ईमान के लिये ज़हरे हलाहिल है।

**काश मैं दरख़्त होता ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आ़लिमे दीन की शाने अ़-ज़मत निशान में बे अ-दबी से बचना बहुत ज़रूरी है। ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई ऐसी भूल हो गई जिस से ईमान से हाथ धोना पड़ गया तो **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम !** बहुत रुस्वाई होगी कि बरोज़े क़ियामत काफ़िरों को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा जहां उन्हें हमेशा हमेशा अ़ज़ाब में रहना पड़ेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ज़बान की लग़्ज़िशों से भी बचाए और हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन। हमारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان क़ब्रो आख़िरत के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बहुत डरते थे, ग़-ल-बए ख़ौफ़ के वक़्त इन ह़ज़रात की ज़बान से बसा अवक़ात इस त़रह़ के कलिमात अदा होते थे : काश ! हमें दुन्या में बत़ौरे इन्सान न भेजा जाता कि इन्सान बन कर दुन्या में आने के बाइ़स अब ख़ातिमा बिल ईमान, क़ब्र व क़ियामत के इम्तिह़ान वग़ैरा के कठिन मराह़िल दरपेश हैं। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में डूब कर फ़रमाया : अगर तुम वोह जान लो जो मौत के बा'द होना है तो तुम पसन्दीदा खाना पीना छोड़ दो, सायादार घरों में न रहो बल्कि वीरानों का रुख़ कर जाओ और तमाम उ़म्र आहो ज़ारी में बसर कर दो इस के बा'द फ़रमाने लगे : **काश ! मैं दरख़्त होता जिसे काट दिया जाता।**

(اَلزُّھد لِلامام اَحمد بن حنبل ص١٦٢ رقم ٧٤٠)

*मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या नख़्ल[1] बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 159)

**काश मुझे ज़ब्ह़ कर दिया जाता : इब्ने अ़साकिर** ने "तारीख़े दिमश्क़" जिल्द 47 सफ़ह़ा 193 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से येह कलिमात नक़्ल किये हैं : **काश !** मैं दुम्बा होता, मुझे किसी मेहमान के लिये ज़ब्ह़ कर दिया जाता, मुझे खाते और खिला देते।

*जां कनी[2] की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश ! मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता*
*मर्ग़-ज़ारे[3] त़यबा का काश होता परवाना गिर्दे शम्अ़ फिर फिर कर काश ! जल गया होता*
*काश ! ख़र[4] या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और*
*आप ने भी खूंटे से बांध कर रखा होता*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 160)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد**

**تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله**

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد**

**आह ! मेरे गुनाह !! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** उ़-लमाए किराम का मक़ाम समझने, इन के एह़तिराम का जज़्बा पाने, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत उठाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) भी है। इन में क़ुरआने करीम पढ़िये अगर पढ़े हुए हैं तो पढ़ाइये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये

1. खजूर का दरख़्त, आ़म दरख़्त, 2. नज़्अ़ का आ़लम, इन्सान की रूह़ निकलने का अ़मल, 3. सब्ज़ा ज़ार 4. गधा

अ़र्ज़ है, एक इस्लामी भाई गुनाहों भरे मुख़्तलिफ़ मुआ़-मलात में मसरूफ़ रहा करते थे। जिन में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ V.C.R की लीड सप्लाय करना, रातों को औबाश लड़कों के साथ घूमना, रोज़ाना दो बल्कि तीन तीन फ़िल्में देखना, वेरायटी प्रोग्राम्ज़ में रातें काली करना शामिल था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े नयाआबाद के एक इस्लामी भाई की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से अ़लाक़े के **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में उन की जाने की तरकीब बनी, और इस त़रह़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर म-दनी कामों में मसरूफ़ हो गए।

*हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब सिखाता है हर दम सदा म-दनी माह़ोल*
*हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई है बेह़द मह़ब्बत भरा म-दनी माह़ोल*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 647)

**ता'लीमे क़ुरआन के दो[2] फ़ज़ाइल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उ़मूमन रोज़ाना इशा के बा'द हज़ारहा **मद्र-सतुल मदीना** क़ाइम किये जाते हैं जहां फ़ी सबीलिल्लाह **क़ुरआने करीम** की ता'लीम दी जाती है। ता'लीमे क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइल के क्या कहने ! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 127 से **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ तुम में बेहतर वोह शख़्स है, जो क़ुरआन सीखे और सिखाए। (بُخاری ج۳ص۴۱۰ حدیث ۵۰۲۷) ﴾2﴿ जो क़ुरआन पढ़ने में माहिर है, वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है (या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तक्लीफ़ के साथ अदा करता है) उस के लिये दो अज्र हैं।

(صَحیح مُسلِم ص ۴۰۰ حدیث۷۹۸)

*येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए*
*हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**गुस्ताख़े रसूल का अन्जाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर **ग़ीबत** की कसरत के सबब रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा और हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया और कोई बद नसीब مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ **काफ़िर** हो कर मरा तो ख़ुदा की क़सम कहीं का न रहेगा। कुफ़्र पर मरने वाला हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा, काफ़िरों के अन्जाम के बारे में मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इर्शाद पढ़िये और तौबा तौबा कीजिये और अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़ूब कुढ़िये चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 502 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" (मुकम्मल, मुख़र्रजा) सफ़ह़ा 147 पर है **:** एक मर्तबा आ़स (जो कि बहुत बड़ा गुस्ताख़े रसूल काफ़िर था वोह) सफ़र को गया। तकान (या'नी थकन) के बाइ़स एक दरख़्त से तकिया (या'नी टेक) लगा कर बैठ गया। जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ब हुक्मे रब्बुल आ़-लमीन (عَزَّوَجَلَّ) तशरीफ़ लाए और उस का सर पकड़ कर दरख़्त से **टकराना** शुरूअ़ किया। वोह चिल्लाता था कि अरे कौन मेरे सर को दरख़्त से टकरा रहा है ? उस के साथी कहते थे कि हमें कोई नज़र नहीं आता। यहां तक कि **जहन्नम** वासिल हुवा (या'नी मर कर जहन्नम पहुंचा)। **क़ियामत** के दिन अबू जह्ल जहन्नमी की सब से जुदा **ह़ालत** होगी **:** येह अपने आप को مَعَاذَ الله "अ़ज़ीज़ व करीम" कहा करता या'नी इ़ज़्ज़त वाला व करम वाला। **दारोग़ए दोज़ख़** (या'नी दोज़ख़ के निगरान फ़िरिश्ते) को हुक्म होगा कि इस के सर पर **गुर्ज़** मारो ! जिस के लगते ही एक बड़ा **ख़ला** (बहुत बड़ा गढ़ा) सर में हो जाएगा और जिस की वुस्अ़त इतनी न होगी जितनी तुम ख़याल करते हो बल्कि जिस की एक **दाढ़** कोहे उहुद (या'नी उहुद पहाड़) के बराबर होगी उस के सर फटने से जो **ख़ला** (गढ़ा) होगा वोह किस क़दर **वसीअ़** होगा ! ग़रज़ उस **ख़ला** (गढ़े) में जहन्नम का खौलता हुवा पानी भरा जाएगा और उस से कहा जाएगा **:**

ذُقۡ ۚۙ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡكَرِيۡمُ ﴿۴۹﴾ (پ۲۵ الدخان ۴۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** चख तू तो इ़ज़्ज़त व करम वाला है ।

और काफ़िर को येही पानी पिलाया जाएगा कि जब मुंह के क़रीब आएगा मुंह उस में **गल** कर गिर पड़ेगा और जब पेट में उतरेगा, **आंतों के टुकड़े** कर देगा, और उस पानी को ऐसा पियेंगे जैसे तोंस (या'नी न बुझने वाली प्यास) के मारे ऊंट । भूक से बेताब होंगे तो **ख़ारदार थूहड़**[1] खौलता हुवा, चर्ख़ दिये (या'नी पिघले) हुए तांबे की त़रह़ उबलता हुवा खिलाएंगे जो पेट में जा कर खौलते हुए पानी की त़रह़ **जोश** मारेगा और भूक को कुछ फ़ाएदा न देगा । अन्वाअ़ अन्वाअ़ (या'नी त़रह़ त़रह़) के अ़ज़ाब होंगे । हर त़रफ़ से मौत आएगी और **मरेंगे** कभी नहीं, न कभी उन के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) होगी ।

*ख़ुदाया बुरे ख़ातिमे से बचाना पढ़ूं कलिमा जब निकले दम या इलाही*
*गुनाहों से भरपूर नामा है मेरा मुझे बख़्श दे कर करम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 110)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**गर्मियों में रोज़ा आसान मगर चुप रहना मुश्किल :** **जिन** लोगों की ज़बान क़ैंची की त़रह़ चलती रहती है वोह झूट, **ग़ीबत**, तोहमत और चुग़ली वग़ैरा आफ़तों में अक्सर मुब्तला होते रहते हैं, वाक़ेई **ज़बान** पर **क़ुफ़्ले मदीना** लगाना या'नी इस को क़ाबू में रखना निहायत ज़रूरी है अगर्चे येह मुश्किल ही सही मगर कोशिश करेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसानी कर देगा । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" सफ़ह़ा 107 पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

1. एक ख़ारदार ज़हरीला पौदा जिस के पत्ते सब्ज़ और फूल रंग बिरंगे होते हैं ।

मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैदुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा नफ़्स बसरा जैसे गर्म शह्र के अन्दर और वोह भी सख़्त गर्मियों में रोज़ा रखने की तो कुव्वत रखता है मगर **फ़ुज़ूल गोई** से ज़बान को रोकने की त़ाक़त नहीं रखता ! (مِنهاجُ العابِدین(عربی) ص ٦٤) अगर इन **तीन उसूलों** को पेशे नज़र रख लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बड़ा नफ़्अ़ होगा : ﴾1﴿ बुरी बात कहना हर ह़ाल में बुरा है ﴾2﴿ फ़ुज़ूल बात से ख़ामोशी अफ़्ज़ल है ﴾3﴿ भलाई की बात करना ख़ामोशी से बेहतर है।

***मेरी ज़बान पे क़ुफ़्ले मदीना लग जाए फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब !***
***करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़त़ा या रब !***
***ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां***
***मुझे नसीब हो तौबा है इल्तिजा या रब !***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 83,78,87)

**जिगर का केन्सर ठीक हो गया : ज़बान** पर क़ुफ़्ले मदीना लगाने का ज़ेह्न बनाने, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और जहां कहीं **"दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत"** होता देखें उस में ख़ुशदिली के साथ ब निय्यते सवाब ज़रूर शिर्कत फ़रमाएं नीज़ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ह़ाज़िरी किसी सूरत में भी तर्क न फ़रमाएं, आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे **गुलिस्ताने मुस्त़फ़ा** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के

**बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे तीन रोज़ा इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की जिन की बेटी को **जिगर का केन्सर** था। वोह दुआ़ए शिफ़ा करने का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए। उन्हों ने इज्तिमाए़ पाक में ख़ूब दुआ़ की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का चेकअप करवाया तो येह देख कर डॉक्टर ह़ैरानो शश्दर रह गए कि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था !** डॉक्टरों की पूरी टीम वर्त़ए ह़ैरत में डूबी हुई थी कि आख़िर केन्सर गया कहां ! जब कि इज्तिमाए़ पाक में जाने से पहले मरीज़ा की ह़ालत इस क़दर ख़राब थी कि उस के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाए़ पाक (मदीनतुल औलिया, मुलतान) में शिर्कत की ब-र-कत से अब उस लड़की के जिगर में **केन्सर** का नामो निशान तक न रहा था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिह़ह़त है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है।

*अगर दर्दे सर हो, कहीं केन्सर हो — दिलाएगा तुम को शिफ़ा म-दनी माह़ोल*
*शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी — यक़ीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माह़ोल*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**कोई मरज़ ला इलाज नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से डॉक्टरों के बक़ौल ला इलाज माना जाने वाला केन्सर भी ठीक हो गया, ह़क़ीक़त येह है कि कोई मरज़ ऐसा नहीं जिस की दवा न हो चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 114 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"घरेलू इलाज"** सफ़ह़ा 1 पर है **: अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़ह़त निशान है **:** हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है। (صَحِيح مُسلِم ص ١٢١٠ حديث ٢٢٠٤)

**केन्सर के दो इलाज :** ﴾1﴿ पिसा हुवा **काला ज़ीरा** तीन तीन ग्राम दिन में तीन मर्तबा पानी

से इस्ति'माल कीजिये ﴾2﴿ रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस **हलदी** खाने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कभी **केन्सर** नहीं होगा।

**ग़ीबत के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** सिर्फ़ ज़बान ही से नहीं और त़रीक़ों से भी की जा सकती है म-सलन ﴾1﴿ इशारे से ﴾2﴿ लिख कर ﴾3﴿ मुस्कुरा कर (म-सलन आप के सामने किसी की ख़ूबी, बयान हुई और आप ने तन्ज़िया अन्दाज़ में मुस्कुरा दिया जिस से ज़ाहिर होता हो कि "तुम भले ता'रीफ़ किये जाओ, मैं इस को ख़ूब जानता हूं!") ﴾4﴿ दिल के अन्दर **ग़ीबत** करना या'नी **बद गुमानी** को दिल में जमा लेना। म-सलन बिग़ैर देखे बिला दलील या बिग़ैर किसी वाज़ेह़ क़रीने के ज़ेह्न बना लेना कि "फ़ुलां में वफ़ा नहीं है।" या "फ़ुलां ने ही मेरी चीज़ चुराई है" या "फ़ुलां ने यूंही गप लगा दिया है" वग़ैरा ﴾5﴿ अल ग़रज़ हाथ, पाउं, सर, नाक, होंट, ज़बान, आंख, अब्रू, पेशानी पर बल डाल कर या लिख कर, फ़ोन पर SMS कर के, इन्टरनेट पर चेटिंग के ज़रीए, बर्क़ी डाक (या'नी E.MAIL) से या किसी भी अन्दाज़ से किसी के अन्दर मौजूद बुराई या ख़ामी दूसरे को बताई जाए वोह **ग़ीबत** में दाख़िल है।

**मोमिनों पर तीन एह़सान करो ! : ह़ज़रते** सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तुम से मोमिनों को अगर तीन फ़वाइद ह़ासिल हों तो तुम मोह़सिनीन (या'नी एह़सान करने वालों) में शुमार किये जाओगे ﴾1﴿ अगर इन्हें नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो नुक़्सान भी न पहुंचाओ ﴾2﴿ इन्हें ख़ुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा भी न करो ﴾3﴿ इन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो। (تَنبِیهُ الْغافِلین ص۸۸)

**मुसल्मान की भलाई बयान करने वालों के लिये फ़िरिश्तों की दुआ़ :** मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاجِد (जिन का 103 सि.हि. में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में सज्दे की ह़ालत में विसाल हुवा) फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई का भलाई के साथ ज़िक्र करता है तो उस के साथ रहने वाले फ़िरिश्ते उसे दुआ़ देते हैं कि "तुम्हारे लिये भी इस की मिस्ल हो" और जब कोई अपने भाई को बुराई (या'नी ग़ीबत वग़ैरा) से याद करता

है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : तूने उस की पोशीदा बात ज़ाहिर कर दी ! ज़रा अपनी त़रफ़ देख और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र कर कि उस ने तेरा पर्दा रखा हुवा है। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٨٨)

*मुजरिम हूं दिल से ख़ौफ़े क़ियामत निकाल दो*
*पर्दा गुनहगार पे दामन का डाल दो*

**मीठे बोल की मीठी ह़िकायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! मुसल्मान के बारे में भलाई वाला **मीठा बोल** बोलने वाले को फ़िरिश्ते दुआ़ए ख़ैर से नवाज़ते हैं और **ग़ीबत** वग़ैरा करने वालों को तम्बीह करते हैं लिहाज़ा हमें हमेशा ज़बान से **मीठा बोल** अदा करने की सअ़्य करनी चाहिये और **मीठा बोल** तो फिर **मीठा बोल** है इस की मिठास वोह रंग लाती है कि अ़क़्लें दंग रह जाती हैं ! इस ज़िम्न में एक **ह़िकायत** सुनिये और झूमिये चुनान्चे **ख़ुरासान** के एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में हुक्म हुवा : "तातारी क़ौम में इस्लाम की दा'वत पेश करो !" उस वक़्त **हलाकू** का बेटा तगूदार बर सरे इक़्तिदार था। वोह **बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सफ़र कर के तगूदार के पास तशरीफ़ ले आए। सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसल्मान मुबल्लिग़ को देख कर उसे मस्ख़री सूझी और कहने लगा : "मियां ! येह तो बताओ तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे या मेरे कुत्ते की दुम ?" बात अगर्चे ग़ुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा निहायत नरमी के साथ फ़रमाने लगे : "मैं भी अपने ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुत्ता हूं अगर जां निसारी और वफ़ादारी से उसे ख़ुश करने में काम्याब हो जाऊं तो मैं अच्छा वरना आप के कुत्ते की दुम ही मुझ से अच्छी।" चूंकि वोह एक बा अ़मल मुबल्लिग़ थे **ग़ीबत** व चुग़ली, ऐबजूई और बद कलामी नीज़ फ़ुज़ूल गोई वग़ैरा से दूर रहते हुए अपनी ज़बान **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हमेशा तर रखते थे लिहाज़ा उन की ज़बान से निकले हुए **मीठे बोल** तासीर का तीर बन कर तगूदार के दिल में पैवस्त हो गए कि जब उस ने अपने "ज़हरीले कांटे" के जवाब में उस बा अ़मल मुबल्लिग़ की त़रफ़ से "ख़ुशबूदार **म-दनी फूल**" पाया तो पानी पानी हो गया और नरमी से बोला : आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां क़ियाम फ़रमाइये। चुनान्चे

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के पास मुक़ीम हो गए। **तगूदार** रोज़ाना रात आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे **नेकी की दा'वत** पेश करते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने तगूदार के दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया! वोही **तगूदार** जो कल तक **इस्लाम को सफ़्ह़ए** हस्ती से मिटाने के दर पै था आज इस्लाम का शैदाई बन चुका था। उसी **बा अ़मल मुबल्लिग़** के हाथों **तगूदार** अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसल्मान हो गया उस का इस्लामी नाम **अह़मद** रखा गया। तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग़ के **मीठे बोल** की ब-र-कत से वस्ते एशिया की ख़ूंख़ार तातारी सल्त़नत इस्लामी हुकूमत से बदल गई। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े बे ह़िसाब हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالى عليه واٰله وسلَّم

**मीठी ज़बान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** देखा आप ने? मुबल्लिग़ हो तो ऐसा! अगर **तगूदार** के तीखे जुम्ले पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़ुस्से में आ जाते तो हरगिज़ येह **म-दनी नताइज** बरआमद न होते। लिहाज़ा कोई कितना ही ग़ुस्सा दिलाए हमें अपनी **ज़बान** को क़ाबू में ही रखना चाहिये कि जब येह बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए खेल भी बिगाड़ कर रख देती है। **मीठी ज़बान** ही तो थी कि जिस की शीरीनी और चाश्नी ने **तगूदार** जैसे वह़शी और ख़ूंख़ार इन्साने बद तर अज़ हैवान को इन्सानिय्यत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाइज़ कर दिया।

*है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में*
*हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में*

**ज़िक्रो दुआ़ के अन्दाज़ पर ग़ीबत : हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने **एह़याउल उ़लूम** जिल्द 3 में सब से बद तरीन **ग़ीबत** का तज़्किरा करते हुए जो कुछ फ़रमाया है उस की रोशनी में अ़र्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं : बा'ज़ लोग ज़रूरत से कुछ ज़ियादा ही होशियार होते हैं और वोह शैत़ान के झांसे में आ कर,

اَلْحَمْدُ لِلّٰه, سُبْحٰنَ الله कह कर नीज़ दुआइया जुम्ले बोल कर **ग़ीबत** बल्कि साथ ही साथ रियाकारी के भी मुर–तकिब हो जाते हैं ! म–सलन शख़्सिय्यात या अरबाबे इक़्तिदार की त़रफ़ मैलान रखने वाले किसी आदमी का तज़्किरा निकलने पर साफ़ लफ़्ज़ों में बुराई करने के बजाए कुछ इस त़रह़ बोलेंगे : اَلْحَمْدُ لِلّٰه वज़ीरों, अफ़्सरों और सरमाया दारों से अपना कोई वासित़ा नहीं, इन दुन्यादारों के आगे कौन ज़लील हो ! (यूं इनडायरेक्ट उस मख़्सूस आदमी की जो बड़े लोगों से मेलजोल रखता है **ग़ीबत** हो चुकी) या किसी की बात चलने पर उस के बारे में यूं कहेंगे : हम बे ह़याई से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं, इलाही ख़ैर फ़रमा। यूं **ज़िक्र व दुआ** के अन्दाज़ में किसी मख़्सूस आदमी के तज़्किरे के मौक़अ़ पर बिला इजाज़ते शर–ई उस के "बे ह़या" होने का इज़्हार कर के उस की **ग़ीबत** में मुब्तला हुए और बन्द लफ़्ज़ों में अपनी पारसाई (या'नी बा ह़या होने) का ए'लान कर के **रियाकारी** की तबाहकारी में जा पड़ने का ख़त़रा मोल लिया। इसी अन्दाज़ में दुआ ही दुआ के अन्दर मख़्सूस आदमियों की दीगर ख़ामियों के इनडायरेक्ट या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में तज़्किरे कर डालते और सवाब के बजाए अ़ज़ाब के ह़क़दार बनते हैं। इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात किसी की ता'रीफ़ कर के भी **ग़ीबत** की **अ़मीक़** (या'नी गहरी) खाई में जा पड़ते हैं म–सलन कहेंगे : "سُبْحٰنَ الله ! फ़ुलां पक्का नमाज़ी परहेज़ गार है, उस के अख़्लाक़ भी उ़म्दा हैं मगर बेचारा ऐसी बात में मुब्तला है जिस में हम सभी घिरे हुए हैं मेरा मत़लब है कि उस में **सब्र** की कमी है !" देखा आप ने ! शैत़ान ने किस क़दर चालाकी के साथ ता'रीफ़ करवा कर और क़ाइल की तवाज़ोअ़ और इन्किसारी ख़ुद अपनी ही ज़बानी बुलवा कर अगले को "बे सब्र" कहलवा कर **ग़ीबत** की आफ़त में फंसा दिया ! इस मिसाल को आसान अन्दाज़ में यूं समझिये जैसा कि बा'ज़ों की आ़दत होती है कि यार वोह है तो शरीफ़ आदमी मगर उस का मेरी त़रह़ दिल ज़रा छोटा है, उस को यूं तो दीन से बहुत **मह़ब्बत** है मगर मेरी त़रह़ नमाज़ों में सुस्त है, फ़ुलां आदमी अच्छा है मगर मेरी त़रह़ ठन्डा है कि इस्तिन्जा ख़ाने में जाता है तो बैठ जाता है वग़ैरा। इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात किसी के ऐ़ब या उस की ख़त़ा का यूं तज़्किरा किया जाता है : "बेचारे से ग़ुस्से ही ग़ुस्से में फ़ुलां को थप्पड़ मार

देने की जो भूल हुई है इस पर मुझे सख़्त अफ़्सोस है ! मैं दुआ़ करता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रहूम फ़रमाए।'' इस त़रह़ **दुआ़** के अन्दाज़ में उस मुसल्मान के ग़ुस्से में आ कर ज़ुल्मन किसी को थप्पड़ जड़ देने के ऐब व ख़त़ा का तज़्किरा कर डाला, और **ग़ीबत** की मुसीबत गले पड़ी। दुआ़ वाली मिसाल देने के बा'द हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : **इज़्हारे अफ़्सोस** और दुआ़ में येह शख़्स **झूट** बोलता है, **दुआ़** करनी ही थी तो नमाज़ के बा'द चुपके से भी की जा सकती थी और अगर अफ़्सोस ही था तो उस की ख़त़ा का जो अब इस ने डंका बजाया इस पर भी अफ़्सोस होना चाहिये था ! इसी त़रह़ अगर किसी के गुनाह का पता लग जाता है तो बा'ज़ नादान लोग सब के सामने इस त़रह़ कहते हैं : ''बेचारा (म-सलन फ़ुलां के पैसे ख़ुर्द बुर्द करने की) बहुत बड़ी आफ़त में फंस गया है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की और हमारी तौबा क़बूल फ़रमाए।'' **येह दुआ़ भी ह़क़ीक़त में दुआ़ नहीं बल्कि ग़ीबत का एक बद तरीन अन्दाज़ है।** (ماخوذ از: اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص۱۷۹)

**क़ियामत का होशरुबा मन्ज़र : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** की ह़क़ीक़त को समझने और अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने का ज़ेह्न बनाइये, ख़ुद को क़हूरे इलाही جَلَّ جَلَالُهٗ से डराइये और ज़रा **क़ियामत के होशरुबा मन्ज़र** को तसव्वुर में लाइये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 133 ता 135 के मज़्मून का ख़ुलासा है : इस वक़्त सूरज **चार हज़ार बरस** की राह पर है और इस त़रफ़ उस की पीठ है, **क़ियामत** के दिन सूरज सिर्फ़ एक मील पर होगा और उस का मुंह इस त़रफ़ होगा, भेजे खौलते होंगे और इस कसरत से पसीना निकलेगा कि सत्तर गज़ ज़मीन में जज़्ब हो जाएगा, फिर जो पसीना ज़मीन न पी सकेगी वोह ऊपर चढ़ेगा, किसी के **टख़्नों** तक होगा, किसी के **घुटनों** तक, किसी के **कमर**, किसी के **सीने,** किसी के **गले** तक, और काफ़िर के तो **मुंह** तक चढ़ कर मिस्ल लगाम के जकड़ जाएगा, जिस में वोह डुबकियां खाएगा। उस गरमी की ह़ालत में **प्यास** की जो कैफ़िय्यत होगी मोह़ताजे बयान नहीं, **ज़बानें सूख**

**कर कांटा** हो जाएंगी, बा'ज़ों की ज़बानें मुंह से बाहर निकल आएंगी, दिल उबल कर गले को आ जाएंगे, हर मुब्तला ब क़दरे गुनाह तक्लीफ़ में मुब्तला किया जाएगा, जिस ने **चांदी सोने** की ज़कात न दी होगी उस माल को ख़ूब गर्म कर के उस की करवट और पेशानी और पीठ पर दाग़ करेंगे, जिस ने **जानवरों** की ज़कात न दी होगी उस के जानवर क़ियामत के दिन ख़ूब तय्यार हो कर आएंगे और उस शख़्स को वहां लिटाएंगे और वोह जानवर अपने सींगों से मारते और पाउं से रौंदते उस पर गुज़रेंगे, जब सब इसी त़रह़ गुज़र जाएंगे फिर उधर से वापस आ कर यूहीं उस पर गुज़रेंगे, इसी त़रह़ करते रहेंगे, यहां तक कि लोगों का ह़िसाब ख़त्म हो। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس। फिर बा वुजूद इन मुसीबतों के कोई किसी का पुरसाने ह़ाल न होगा, भाई से भाई भागेगा, मां बाप औलाद से पीछा छुड़ाएंगे, बीबी बच्चे अलग जान चुराएंगे, हर एक अपनी अपनी मुसीबत में गिरिफ़्तार, कौन किस का मददगार होगा.....! ह़ज़रते **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म होगा, ऐ आदम ! दोज़ख़ियों की जमाअ़त अलग कर, अ़र्ज़ करेंगे : कितने में से कितने ? इर्शाद होगा : **हर हज़ार से नव सो निनानवे,** येह वोह वक़्त होगा कि बच्चे मारे ग़म के बूढ़े हो जाएंगे, ह़म्ल वाली का ह़म्ल साक़ित़ हो जाएगा, लोग ऐसे दिखाई देंगे कि नशे में हैं, ह़ालां कि नशे में न होंगे, व लेकिन **अल्लाह** का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है, ग़रज़ किस किस मुसीबत का बयान किया जाए, एक हो, दो$^{2}$ हों, सो$^{100}$ हों, हज़ार$^{1000}$ हों तो कोई बयान भी करे, हज़ारहा मसाइब और वोह भी ऐसे शदीद कि अल अमां अल अमां.....! और येह सब तक्लीफ़ें दो चार घन्टे, दो चार दिन, दो चार माह की नहीं, बल्कि क़ियामत का दिन, कि **पचास हज़ार** बरस का एक दिन होगा। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 133 ता 135)

**लोग मुत़ा-लबे कर रहे होंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ऐसे **होशरुबा** ह़ालात में चारों जानिब से नफ़्सी नफ़्सी की आवाज़ बुलन्द होगी, हर त़रफ़ से वावेला की आवाज़ कान में पड़ेगी, दोज़ख़ सामने जोश मारती हुई होगी, हर ह़क़ वाला अपने ह़क़ का मुत़ा-लबा करेगा और रब्बुल इ़ज़्ज़त की ख़िदमत में नालिश (या'नी फ़रियाद) करेगा, कोई कहेगा : इस ने मेरी **ग़ीबत** की, इस

ने मेरा मज़ाक़ उड़ाया, कोई बोलेगा : इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया, कोई कहेगा : इस ने मुझे अह़मक़ कहा, कोई कहेगा : इस ने मुझे बे वुक़ूफ़ बोला, कोई पुकारेगा : इस ने मुझे क़त्ल किया, कोई फ़रियाद करेगा : इस ने मेरा क़र्ज़ा दबा लिया, कोई कह रहा होगा : इस ने मेरी किताब छुपाई, कोई कहेगा : इस ने मुझे घूर कर देखा और डरा दिया था, किसी का दा'वा होगा : इस ने मुझे बिला वज्ह झाड़ा था, कोई बोल रहा होगा : इस ने मेरा ऐ़ब खोल दिया था, कोई कहता होगा : इस ने मुझे धक्का मारा था। बहर ह़ाल तमाम अहले ह़ुक़ूक़ और जिन्हों ने ह़क़ तलफ़ किये होंगे उन को फ़िरिश्ते परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के सामने ह़ाज़िर करेंगे, येह लोग नदामत से सर झुकाए हुए होंगे, और **अल्लाह** तबा–र–क व तआ़ला हर एक के साथ अ़द्लो इन्साफ़ फ़रमाएगा, हर ह़क़ वाले को ख़ुश करेगा, उन लोगों की नेकियां इन को देगा और इन की बदियां उन के सर डालेगा। फिर अगर फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ शामिले ह़ाल हुवा तो उन की नजात हो जाएगी वरना जहन्नम में पड़े एक मुद्दत तक जलेंगे।

*शान और शौकत के होने का अ़ज़ीज़ — है अ़बस अरमान आख़िर मौत है*
*ऐ़शो ग़म में साबिरो शाकिर रहे — है वोही इन्सान आख़िर मौत है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**इस्लाह़ का ह़सीन अन्दाज़ : मीठे** मीठे म–दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब किसी की बात पहुंचती जो ना गवार गुज़रती तो उस का पर्दा रखते हुए उस की **इस्लाह़ का येह ह़सीन अन्दाज़** होता कि इर्शाद फ़रमाते : **مَا بَالُ اَقْوَامٍ يَقُوْلُوْنَ كَذَا وَكَذَا** या'नी लोगों को क्या हो गया जो ऐसी बात कहते हैं। (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٢٩ حديث٤٧٨٨)

**काश !** हमें भी इस्लाह़ का ढंग आ जाए, हमारा तो अक्सर ह़ाल येह होता है कि अगर किसी को समझाना भी हो तो बिला ज़रूरते शर–ई सब के सामने नाम ले कर या उसी की त़रफ़

देख कर इस तरह़ समझाएंगे कि बेचारे की पोलें भी खोल कर रख देंगे। अपने ज़मीर से पूछ लीजिये कि येह समझाना हुवा या अगले को ज़लील (DEGRADE) करना हुवा ? इस तरह़ सुधार पैदा होगा या मज़ीद बिगाड़ बढ़ेगा ? याद रखिये ! अगर हमारे रो'ब से सामने वाला चुप हो गया या मान गया तब भी उस के दिल में ना गवारी सी रह जाएगी जो कि बुग़्ज़ो कीना **ग़ीबत** व तोहमत वग़ैरा के दरवाज़े खोल सकती है। ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "जिस किसी ने अपने भाई को ए'लानिया नसीह़त की उस ने उसे ऐ़ब लगाया और जिस ने चुपके से की तो उसे ज़ीनत बख़्शी।" (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص١١٢ رقم٧٦٤١) अलबत्ता अगर पोशीदा नसीह़त नफ़्अ़ न दे तो फिर (मौक़अ़ और मन्सब की मुना-सबत से) ए'लानिया नसीह़त करे। (تَنبِیهُ الْغافِلِین ص٤٩)

**ह़ाजी मुश्ताक़ सुनहरी जालियों के रू बरू :** **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा मुकम्मल शिर्कत कीजिये न जाने किस के सदक़े किस पर कब करम हो जाए ! आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़्रोज़ **म-दनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है : बाबुल इस्लाम सिन्ध की एक मस्जिद के मुअज़्ज़िन साहिब ने 2004 सि.ई. में **सह़राए मदीना** (बाबुल मदीना, कराची) में होने वाले तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में जब **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ हुवा तो आंखें बन्द कर के **ज़िक्रुल्लाह** में मस्त हो गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन पर बाबे करम खुल गया और उन्हों ने ख़ुद को **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में पाया। लोग जूक़ दर जूक़ त़वाफ़े ख़ानए का'बा में मश्ग़ूल थे। ज़िक्रुल्लाह के बा'द जब रिक़्क़त भरे अन्दाज़ में **तसव्वुरे मदीना** का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने ख़ुद को **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में पाया, **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** निगाहों के सामने था, इतने में सुनह़री जालियां जल्वे बिखेरने लगीं। वहां उन्हों ने देखा कि दा'वते इस्लामी की

मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम निगरान, खुश इल्हान ना'त ख्वान बुलबुले रौज़ए रसूल **हाजी मुश्ताक़ अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى **सुनहरी जालियों के रू बरू** दस्त बस्ता हाज़िर हैं, वोह भी हाथ बांध कर चन्द क़दम पीछे खड़ा हो गए, उन पर रिक्क़त तारी थी, जज़्बात क़ाबू में न रहे और वोह दीवानगी के आलम में आगे बढ़ते हुए **सुनहरी जालियों** के मज़ीद क़रीब हो गए, करम बालाए करम कि जालियां खुल गईं, हर तरफ़ नूरुन अला नूर हो गया,उन का कहना है कि **खुदा की क़सम ! मेरी निगाहों के सामने मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **जल्वा फ़रमा थे उन्हों ने मुझ गुनहगार को मुसा-फ़हा** (या'नी हाथ मिलाने) **की सआदत इनायत फ़रमाई। वल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! हाथ ऐसे मुलायम थे जिस की कोई मिसाल नहीं।**

*करम तुझ पे शाहे मदीना करेंगे — तू अपना ले दिल से ज़रा म-दनी माहोल*
*खुदा के करम से दिखाएगा इक दिन — तुझे जल्वए मुस्तफ़ा म-दनी माहोल*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मुक़द्दर वालों के सौदे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, बस जिस पर करम हो जाए ! हम सभी को चाहिये कि जल्वए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हसरत दिल में बढ़ाएं और तमन्नाए दीदार में अश्क बहाएं, वोह **आशिक़ाने रसूल** किस क़दर बख़्त बेदार हैं जो जल्वए यार से अपनी आंखें ठन्डी करते हैं, उश्शाक़ की भी क्या शान है,

*बहारे खुल्द सदक़े हो रही है रूए आशिक़ पर*
*खिली जाती हैं कलियां दिल की तेरे मुस्कुराने से*

(जौक़े ना'त, स. 150)

**दीदारे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का वज़ीफ़ा : दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत"** (मुकम्मल) सफ़हा 115 ता 116 पर है :

**अर्ज़ :** हबीबे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारते शरीफ़ा हासिल होने का क्या तरीक़ा है ?

**इर्शाद :** दुरूद शरीफ़ की कसरत शब में और सोते वक़्त के इलावा हर वक़्त तक्सीर (या'नी कसरत) रखे बिल ख़ुसूस इस दुरूद शरीफ़ को बा'दे इशा सो बार या जितनी बार पढ़ सके पढ़े

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُّصَلِّىَ عَلَيْهِ**

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ**

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى لَهٗ**

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ**

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ**

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ ط**

**हुसूले ज़ियारते अक़्दस** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये इस से बेहतर सीग़ा नहीं मगर ख़ालिस **ता'ज़ीमे शाने अक़्दस** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये पढ़े इस **निय्यत** को भी जगह न दे कि मुझे ज़ियारत अ़ता हो, आगे उन का **करम** बेह़द व बे इन्तिहा है ।

**فِراق ووَصل چہ خَواهی رِضائے دوست طَلَب**

**کہ حَیف باشَد اَز و غیرِ اُوتمنّائی**

(या'नी नज़्दीकी व दूरी से क्या मत़लब ! दोस्त की ख़ुशनूदी त़लब कर कि इस के इलावा दोस्त से किसी और शै की आरज़ू करना क़ाबिले अफ़्सोस है)

*जल्वए यार इधर भी कोई फैरा तेरा*

*ह़स्रतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा*

(ज़ौक़े ना'त, स. 15)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत नेकियों को जला देती है : आह !** हमारे मुआ-शरे की बरबादी ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! **ग़ीबत** करने और सुनने की आदत ने हर त़रफ़ तबाही मचा रखी है। मन्क़ूल है : आग भी खुश्क लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी **ग़ीबत** बन्दे की **नेकियों को जला** कर रख देती है। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۱۸۳)

**मेरी नेकियां कहां गईं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** की तबाह कारियों में से येह भी है कि इस की वज्ह से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के रोज़ इन्सान के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा, वोह कहेगा मैं ने जो फुलां फुलां नेकियां की थीं वोह कहां गईं ? कहा जाएगा : तूने जो **ग़ीबतें** की थीं इस वज्ह से मिटा दी गईं हैं। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۳ ص ۳۳۲ حدیث ۳۰)

**क़ियामत में एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब होगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आह ! बरोज़े क़ियामत एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब होगा। ग़ौर कीजिये ! इस फ़ानी दुन्या में "उ़म्रे अ़ज़ीज़ के चार दिन" गुज़ारने के बा'द हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा और फिर उस की वह़शत आमेज़ तन्हाइयों में न जाने कितना अ़र्सा हमारा क़ियाम होगा। फिर जब अ़र्सए मह़शर में ह़िसाबो किताब के लिये ह़ाज़िरी होगी तो अपना हर हर अ़मल अपने नामए आ'माल में लिखा हुवा दिखाई देगा जैसा कि क़ुरआने मजीद, फुरक़ाने ह़मीद के पारह 30 **सू-रतुज़्ज़िल्ज़ाल** आयत नम्बर 6 ता 8 में इर्शाद होता है :

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

**आह ! अल्लाहु** क़दीर عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर** हमारे बारे में क्या है कुछ नहीं मा'लूम, आया बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से परवानए मग़्फ़िरत जारी होगा या (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) दुख़ूले जहन्नम का हुक्म मिलेगा इस का कुछ नहीं पता। (نَسْئَلُ الْعَافِيَة या'नी हम आफ़िय्यत का सुवाल करते हैं)

*गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी !*
*हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब!*
*अफ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा*
*गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब!*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**जिस की ग़ीबत की जाए वोह फ़ाएदे में...... : जब** आप को मा'लूम हो कि मेरी **ग़ीबत** की गई है तो सीख़ पा होने (या'नी ग़ुस्से में आ जाने) के बजाए **सब्रो तहम्मुल** से काम लीजिये और यूं भी नुक़्सान उसी का होता है जिस ने **ग़ीबत** की, जिस की **ग़ीबत** की गई वोह तो फ़ाएदे ही में रहता है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : बन्दे को क़ियामत के दिन जब उस का नामए आ'माल दिया जाएगा तो वोह उस में ऐसी नेकियां देखेगा जो इस ने न की होंगी, अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरे लिये कहां से आ गईं ? कहा जाएगा : येह वोह नेकियां हैं जो लोगों ने तुम्हारी **ग़ीबत** की थी। (تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص١٩٢)

**मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा ह़क़दार है : ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सामने किसी ने **ग़ीबत** का तज़्किरा किया तो फ़रमाया : अगर मैं किसी की **ग़ीबत** करना दुरुस्त जानता तो अपनी मां की **ग़ीबत** करता क्यूं कि मेरी नेकियों की सब से ज़ियादा ह़क़दार वोही है। (مِنهَاجُ الْعَابِدِین ص٦٥)

**मां के पूरे हुक़ूक़ अदा नहीं किये जा सकते : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दिल को चोट लगाने के लिये इस **ह़िकायत** में इब्रत के काफ़ी **म-दनी फूल** हैं, गोया फ़रमा रहे हैं कि नेकियां

चूंकि अनमोल हैं और मां के हुक़ूक़ से भी सुबुक दोशी मुम्किन नहीं लिहाज़ा अगर नेकियां किसी को देनी ही हों तो इन्सान अपनी मां ही को क्यूं न दे दे ! इस **ह़िकायत** से मां की अहम्मिय्यत का भी पता चलता है। बहर ह़ाल **ग़ीबत** में कोई भलाई नहीं इस में रुस्वाई ही रुस्वाई है।

*ऐ प्यारे ख़ुदा अज़ पए सुल्ताने मदीना*

*ग़ीबत की नुहूसत से मेरी जान छुड़ा दे*

**आधे गुनाह मुआफ़ :** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : अगर कोई आप की **ग़ीबत** करे तो परेशान न हों, **ग़ीबत** करने वाला ना दानिस्ता तौ़र पर आप ही के साथ भलाई कर रहा है ! हमें येह बात पहुंची है कि जिस की एक बार **ग़ीबत** की जाए उस के निस्फ़ (या'नी आधे) गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٤)

**सारी रात की इ़बादत और ग़ीबत : एक** बार ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की नमाज़े तहज्जुद फ़ौत हो गई तो ज़ौजए मोह़-त-रमा ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इस पर आ़र (या'नी गै़रत) दिलाई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : गुज़श्ता शब कुछ अफ़राद सारी रात नवाफ़िल में मसरूफ़ रहे हैं और सुब्ह़ उन्हों ने मेरी **ग़ीबत** की है तो उन की उस रात की इ़बादत बरोज़े क़ियामत मेरे मीज़ाने अ़मल (या'नी आ'माल तुलने की तराज़ू) में रख दी जाएगी !

(مِنْهاجُ الْعابِدِين ص٦٦)

**100 बरस की नफ़्ली इ़बादत और एक ग़ीबत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين के फ़रामीन में ह़िक्मत के बे शुमार **म-दनी फूल** होते हैं, मज़्कूरा **ह़िकायत** में **ग़ीबत** करने वालों को बड़े अछूते अन्दाज़ में चोट लगाई गई है ताकि वोह **ग़ीबतें** कर के अपनी इ़बादतें दाव पर न लगाएं, इस ह़िकायत से येह म-दनी फूल भी मिला कि जो आदमी ख़्वाह सारी सारी रात इ़बादात में गुज़ारे मगर **ग़ीबतों** से बाज़ न आए तो उस की इ़बादात व रियाज़ात उन लोगों को दे दी जाएंगी जिन की **ग़ीबतें** और ह़क़ त-लफ़ियां की हैं ! सच पूछो तो 100 बरस की नफ़्ली इ़बादत के मुक़ाबले में सिर्फ़ एक बार की **ग़ीबत** ज़ियादा ख़त़रनाक है क्यूं कि अगर कोई शख़्स

ज़िन्दगी में कभी भी नफ़्ली इबादत नहीं करेगा तब भी क़ियामत में इस पर उस की गिरिफ़्त (या'नी पकड़) नहीं है जब कि **ग़ीबत** में रब्बुल इ़ज़्ज़त की मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) और सवाबे आख़िरत की इज़ाअ़त (या'नी ज़ाएअ़ होना) और हलाकत है। दुन्या की सारी दौलत का हाथ से जाते रहना अगर्चे नफ़्स पर गिरांबार है मगर ह़क़ीक़त में बहुत छोटा नुक़्सान है और क़ियामत में **"एक नेकी"** भी अगर किसी को ह़क़ त–लफ़ी के इ़वज़ देनी पड़ी तो ख़ुदा की क़सम येह बहुत बड़ा नुक़्सान है।

*मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं*

*रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तार क़ादिरी का*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 178)

**ह़ाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** की बद ख़स्लत से जान छुड़ाइये, नेकियां बचाइये बल्कि ख़ूब बढ़ाइये, नेकियां बढ़ाने के मक्की म–दनी नुस्ख़े अपनाइये और जन्नतुल फ़िरदौस के ह़क़दार बन जाइये, سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो अपनी ज़बान को **नेकी की दा'वत**, सुन्नतों भरे **बयान** और ज़िक्रो दुरूद में लगाए रखते हैं। मुसल्मान की ह़ाजत रवाई करना कारे सवाब है नीज़ बीमार या परेशान मुसल्मान को तसल्ली देना भी **ज़बान** का अ़ज़ीमुश्शान इस्ति'माल है। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है दोनों फ़रमाते हैं : जो अपने किसी मुसल्मान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **पछत्तर हज़ार मलाएका** के ज़रीए़ साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ोत़ाज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक ह़ज और एक उ़म्रे का सवाब लिखता है। और जिस ने मरीज़ की इ़यादत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **पछत्तर हज़ार मलाएका** के ज़रीए़ साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस

के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक द-रजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطّبرانی ج۳ص۲۲۲حدیث۴۳۹۶)

**जन्नत के दो² जोड़े : जब** किसी का बच्चा बीमार हो जाए, कोई बे रोज़गार या क़र्ज़दार हो जाए, ह़ादिसे का शिकार हो जाए, चोर या डाकू माल ले कर फ़िरार हो जाए, कारोबार में नुक़्सान से हम-कनार हो जाए कोई चीज़ गुम हो जाने के सबब बे क़रार हो जाए, अल ग़रज़ किसी त़रह़ की भी परेशानी से दो चार हो जाए उस की दिलजूई के लिये **ज़बान** चलाना बहुत बड़े सवाब का काम है चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रूह़ परवर है : "जो किसी **ग़मज़दा** शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूह़ों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी **मुसीबत ज़दा** से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج۶ ص ۴۲۹ حدیث ۹۲۹۲)

*या ख़ुदा सदक़ा नबी का बख़्श मुझ को बे ह़िसाब*
*नज़्ओ क़ब्रो ह़श्र में मुझ को न देना कुछ अ़ज़ाब*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**ग़ीबत सुनना भी ह़राम है : ख़ा-तमुल** मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने गाना गाने और गाना सुनने से और **ग़ीबत** करने और **ग़ीबत** सुनने से और चुग़ली करने और चुग़ली सुनने से मन्अ़ फ़रमाया। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص۵۶۰حدیث۹۳۷۸) ह़ज़रते

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** सुनने वाला भी **ग़ीबत** करने वालों में से एक होता है । (فیضُ القدیر ج۳ ص۶۱۲ تحتَ الحدیث۳۹۶۹)

**ग़ीबत में शिर्कत के तमाम अन्दाज़ गुनाह हैं :** **ग़ीबत** सुनने पर ख़ुश होना और इस की त़रफ़ तवज्जोह से कान लगाना दिलचस्पी लेते हुए हां, हूं, हैं, जी वग़ैरा आवाज़ें निकालना भी **ग़ीबत** है । **ग़ीबत** सुनने वाले की इस ह़-र-कत से **ग़ीबत** करने वाले को मज़ीद तक़्वियत मिलती है और वोह मज़ीद बढ़ चढ़ कर **ग़ीबत** करता है, इसी त़रह़ **ग़ीबत** सुन कर ख़ुशी और तअ़ज्जुब का इज़्हार भी गुनाह है म-सलन ह़ैरत के साथ कहना : अरे ! येह ऐसा शख़्स है ! मैं तो इस को अच्छा आदमी समझता था । दिलचस्पी के साथ **ग़ीबत** सुनने, तअ़ज्जुब का इज़्हार करने, हां में हां मिलाने के अन्दाज़ में सर हिलाने वग़ैरा में **ग़ीबत** करने वाले की पज़ीराई और ह़ौसला अफ़्ज़ाई का सामान है बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर बिला इजाज़ते शर-ई ख़ामोश रहने वाला भी **ग़ीबत** में शरीक ही माना जाएगा । (ماخوذ از : اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۱۸۰)

**बादशाह की सड़ी हुई लाश : एक** मर्तबा कुछ लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने एक **बादशाह** की बुराइयां बयान करना शुरूअ़ कर दीं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोशी से सुनते रहे, ख़ुद उस के बारे में कोई अच्छी या बुरी बात नहीं की । जब रात सोए तो ख़्वाब में देखा कि उसी **बादशाह की सड़ी हुई बदबूदार लाश** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने रखी है और एक आदमी कह रहा है : "इसे खाओ !" फ़रमाया : मैं इसे क्यूं खाऊं ? उस ने जवाब दिया : इस लिये कि तुम्हारे सामने इस **बादशाह की ग़ीबत** की गई थी । फ़रमाया : मगर मैं ने तो इस के बारे में कोई अच्छा या बुरा कलाम नहीं किया ! जवाब मिला : लेकिन तुम इस की **ग़ीबत** सुनने पर रिज़ा मन्द थे । (صِفَةُ الصَّفوة لابن الجوزی ج۳ص۱۰۴) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ज़्म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद किसी की **ग़ीबत** करते न अपने सामने किसी को **ग़ीबत** करने देते बल्कि अगर कोई **ग़ीबत** करने की कोशिश करता तो उसे मन्अ़ फ़रमा देते अगर

वोह बाज़ आ जाता तो ठीक वरना आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां से उठ खड़े होते।

(حِلْيَةُ الاولياء ج۳ص۱۲۷رقم۳٤۱۸)

**सियासी तब्सिरों की बैठकें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि सियासी क़ाइदीन, अरबाबे इक़्तिदार और हुक्मरान त़ब्क़े की **ग़ीबत** की भी खुली छूट नहीं। सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल शायद ही हमारी कोई निशस्त ऐसी हो जिस में किसी सियासी लीडर या वज़ीर या क़ौमी या सूबाई एसेम्बली के किसी रुक्न की इ़ज़्ज़त की धज्जियां न उड़ाई जाती हों। कभी वज़ीरे आ'ज़म ह-दफ़े तन्क़ीद होता है तो कभी सद्र, कभी वज़ीरे आ'ला की शामत आती है तो कभी गवर्नर की। मुख़्तलिफ़ लोगों के मु-तअ़ल्लिक़ नाम बनाम ज़ोरदार मन्फ़ी (NEGATIVE) बह़सें की जातीं, जी भर कर कीचड़ उछाला जाता और एक से एक बुरे नाम रखे जाते हैं। ग़ौर से सुनिये ! रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 **सू-रतुल हुजुरात** आयत नम्बर 11 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ (پ۲٦الحجرات:۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो।

**फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 300 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"आंसूओं का दरिया"** सफ़हा 246 ता 247 पर येह ह़दीसे पाक लिखी है : ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : जिस ने किसी मुसल्मान को उस के नाम के इ़लावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर मलाएका ला'नत भेजते हैं। (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص٥٢٥ حديث٨٦٦٦)

**अख़्बारी ख़बरों का ह़ाल बे ह़ाल :** मनचले नौ जवानों की अक्सर मंडलियों और बड़े बूढ़ों की कसीर बैठकों में हुक्मरानों और सियासी लीडरों के बारे में **ग़ीबतों**, तोहमतों, बद गुमानियों

और ऐ़ब दरियों का वोह मन्हूस सिलसिला चलता है कि **!اَلْاَمَان وَ الْحَفِيظ** फिर सितम बालाए सितम येह कि दलील भी किसी के पास कुछ नहीं होती ! शायद कोई कहे कि क्यूं नहीं हम ने फ़ुलां अख़्बार में पढ़ा था, अब बिलफ़र्ज़ वोह अख़्बार फ़िल्मी अदाकाराओं की फ़ोह्श अदाओं की तस्वीरों से भरपूर इश्तिहारों, गन्दी ह़-र-कतों की जज़्बात भड़काने वाली (SEX APEALING) ख़बरों, छुप कर गुनाह करने वालों की बिला ज़रूरते शर-ई आबरू रेज़ियों, हुक्मरानों, सियासत दानों और मुआ़-शरे के हर त़ब्क़े के मुसल्मानों की तज़्लीलों, तोह्मतों और इल्ज़ाम तराशियों और मरे हुए मुसल्मानों तक की **ग़ीबतों** से भरपूर रहता हो तो मेरे ख़याल में अगर कोई **वलिय्युल्लाह** भी ग़ीबतों और **गुनाहों भरी ख़बरों** से भरपूर और बे पर्दा औ़रतों की तस्वीरों से मा'मूर ऐसा **अख़्बार** पढ़ने में मश्ग़ूल हो तो शायद अपनी **विलायत** न बचा पाए ! बुराइयों से सरशार किसी ऐसे **अख़्बार** में छपी हुई ''ऐ़ब दरियों और ग़ीबतों भरी ख़बर'' को दलील कैसे बनाया जा सकता है ! अगर ख़बर सच्ची भी थी तब भी बिला मस्लह़ते शर-ई किसी मुसल्मान की बुराई (छापने और) बयान करने और इस त़रह़ की गुनाहों भरी ख़बर बिला इजाज़ते शर-ई पढ़ने की शरीअ़त ने कब इजाज़त दी है ! इसी को तो इस्लाम ने ऐ़ब दरी और **ग़ीबत** क़रार दे कर इस की भरपूर अन्दाज़ में हौसला शिकनी फ़रमाई है।

**कुत्तों की त़रह़ काटते और नोचते होंगे ! : बहर ह़ाल** ऐसी सोहबतों और बैठकों को तर्क करना ज़रूरी है जिन में गुनाहों भरी बह़सें छिड़तीं, ह़ालाते ह़ाज़िरा पर फ़ुज़ूल तिब्सरे होते, मुसल्मानों की इ़ज़्ज़तें पामाल होतीं और ख़ूब **ग़ीबतें** की जाती हैं। आप की तख़्वीफ़ (या'नी अ़ज़ाब से डराने) के लिये अ़र्ज़ है कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 300 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''आंसूओं का दरिया''** सफ़ह़ा 253 पर है **:** एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये मिल कर बैठने वाले और गुनाहों पर एक दूसरे की मदद करने वाले जम्अ़ होंगे, फिर वोह घुटनों के बल खड़े होंगे और एक दूसरे को **कुत्तों की त़रह़ काटते और नोचते होंगे,** येह वोह बद

नसीब होंगे जो बिगै़र तौबा किये दुन्या से रुख़्सत हुए होंगे। (بَحرُالدُّمُوع(عربی) ١٨٥)

***मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा***
***चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 115)

**दुआ़ए क़ुनूत पढ़ने वाले अपना वा'दा निभाएं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बुरी सोह़बतों से बचना बेह़द ज़रूरी है वरना आख़िरत तबाह हो सकती है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस में "सिर्फ़ ज़बान" से लफ़्ज़ निकाले जाएं और मा'ना मुराद न हों। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 567) तो आप की याद दिहानी के लिये अ़र्ज़ है कि **नमाज़े वित्र** में आप येह **दुआ़ए क़ुनूत** तो पढ़ते ही होंगे जिस में है : وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط या'नी "(या **अल्लाह** ! हम) अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस को जो तेरी ना फ़रमानी करे" अगर आज से पहले मा'ना मा'लूम नहीं थे तो चलिये अब पता चल गया लिहाज़ा अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये जाने वाले रोज़ रोज़ के इस वा'दे को अब अ़-मली जामा पहना ही दीजिये और नमाज़ न पढ़ने वालों, गालियों, बद गुमानियों, तोह्मतों, **ग़ीबतों,** चुग़्लियों और त़रह़ त़रह़ से ना फ़रमानियों में मुलव्वस रहने वालों फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों की बैठकों और उन की सोह़बतों से तौबा कर लीजिये। और क़ुरआने करीम भी ऐसों की सोह़बत से मन्अ़ फ़रमाता है, जैसा कि पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 68 में इर्शाद होता है :

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

तफ़्सीराते अह़मदिय्या में इस आयते मुबा-रका के तह़्त लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुब्तदिईन या'नी गुमराह व बद दीन और फ़ासिक़ीन हैं। (تفسیرات اَحمدیه ص٣٨٨)

**नेकी की दा'वत देने के लिये फ़ासिक़ों के पास जाना जाइज़ है : जो** इस्लामी भाई मुत्तक़ी परहेज़ गार हो, वोह यारी दोस्ती में नहीं बल्कि सिर्फ़ नेकी की दा'वत की ह़द तक ना फ़रमानों और बिगड़े हुए लोगों के साथ बैठ सकता है चुनान्चे पारह 7 **सू-रतुल अन्आम** आयत नम्बर 69 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ (پ۷، الانعام:۶۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और परहेज़ गारों पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं, हां नसीह़त देना शायद वोह बाज़ आएं ।

**ह़ज़रते** सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीह़त और इज़्हारे ह़क़ के लिये इन के पास बैठना जाइज़ है ।

**ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़ :** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن को **ग़ीबत** के मुआ-मले में **अल्लाहु** दावर عَزَّوَجَلَّ का इस क़दर डर रहता था कि जिन के ज़ुल्मो सितम की दास्तानें मश्हूरो मा'रूफ़ होतीं उन का भी बिला ज़रूरते शर-ई तज़्किरा करने से बचते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن से अ़र्ज़ की गई : क्या बात है कि आप ने कभी भी ह़ज्जाज (बिन यूसुफ़) के बारे में दो लफ़्ज़ नहीं बोले ! (या'नी उसे बुरा भला नहीं कहा) फ़रमाया : "मैं (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से) डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआला तौह़ीद की ब-र-कत से उसे तो छोड़ दे (या'नी चूंकि वोह मुसल्मान था लिहाज़ा इस निस्बत के सबब अपने फ़ज़्लो करम से उसे बे ह़िसाब बख़्श दे) और मुझे उस की ग़ीबत करने की वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे ।" (تفسیر روحُ البیان ج۹ ص۹۰)

**तीन उ़यूब की नुहूसत की इब्रतनाक ह़िकायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है, उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** किस के बारे में क्या है वोह कोई नहीं जानता, लिहाज़ा

कोई मुसल्मान ख़्वाह कितना ही बड़ा गुनहगार हो उस के बारे में हम येह नहीं कह सकते कि येह ज़रूर ही जहन्नम में जाएगा, जब उस की तदबीर ग़ालिब आती है तो बड़े बड़ों की वोह पकड़ हो जाती है कि **!اَلْاَمَان وَ الْحَفِيظ** । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 480 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बयानाते अ़त्तारिय्या**" हिस्सए अव्वल के सफ़हा 113 ता 115 पर है : "मिन्हाजुल आ़बिदीन" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इयाज़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने एक शागिर्द की नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़ने लगे। तो उस शागिर्द ने कहा : "**सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो।**" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन[1] फ़रमाई। वोह बोला : "**मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढूंगा मैं इस से बेज़ार हूं।" बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई।** ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा। चालीस[40] रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे। चालीस[40] दिन के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ख़्वाब** में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : **तीन उ़यूब** के सबब से : (1) **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कुछ और (2) **ह़सद** कि मैं अपने साथियों से ह़सद करता था (3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से त़बीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था। (مِنهاجُ العابِدين ص ١٠١)

**नज़्अ़ में कुफ़्र बकने का शर-ई मस्अला : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बरह़क़ को राज़ी करने के लिये उस की बारगाहे बेकस

---

**1.** मरने वाले को येह न कहा जाए कि कलिमा पढ़ बल्कि तल्क़ीन का सह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि सकरात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।

पनाह में झुक जाइये। आह ! **चुग़ली, ह़सद** और **शराब नोशी** के सबब वलिय्ये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिय्या कलिमात बोल कर मरा। यहां एक ज़रूरी मस्अला समझ लीजिये चुनान्चे **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मरते वक़्त **مَعَاذَ الله** उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुम्किन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह कलिमा निकल गया। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 158, دُرِّمُختار ج ٣ ص ٩٦)

**अक्सर ख़त़ाएं ज़बान से होती हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई ग़लत़ चलने वाली ज़बान इन्सान को बहुत परेशान करती है, इन्सान इसी ज़बान से गालियां निकाल कर, झूट बोल कर, **ग़ीबतें** कर के चुग़्लियां खा कर अपनी आख़िरत को दाव पर लगाता है। इस ज़बान की आफ़तों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह ! मशहूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इन्सान की अक्सर ख़त़ाएं उस की ज़बान से होती हैं।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج١٠ص١٩٧حديث١٠٤٤٦)

**रोज़ाना सुब्ह़ आ'ज़ा ज़बान की ख़ुशामद करते हैं : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के तमाम आ'ज़ा **ज़बान** के सामने आ़जिज़ाना येह कहते हैं : हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर ! क्यूं कि हम तुझ से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम सीधे रहेंगे अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े होंगे।

(سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص١٨٣ حديث ٢٤١٥)

**जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : नफ़्अ़ व नुक़्सान, राह़त व आराम, तकालीफ़ व आलाम में (ऐ ज़बान !) हम तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू ख़राब होगी हमारी शामत आ जावेगी तू दुरुस्त होगी हमारी इ़ज़्ज़त होगी। ख़याल रहे कि **ज़बान** दिल की

तरजुमान है इस की अच्छाई बुराई दिल की अच्छाई बुराई का पता देती है। (मिरआत, जि. 6, स. 465)

**ज़बान की बे एह़तियाती की आफ़तें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई ज़बान अगर टेढ़ी चलती है तो बा'ज़ अवक़ात फ़सादात बरपा हो जाते हैं, इसी **ज़बान** से अगर मर्द अपनी बीवी को त़लाक़ कह दे तो (कई सूरतों में) **त़लाक़े मुग़ल्लज़ा** वाक़ेअ़ हो जाती है, इसी **ज़बान** से अगर किसी को बुरा भला कहा और उस को तै़श (या'नी गुस्सा) आ गया तो बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक नौबत पहुंच जाती है। इसी **ज़बान** से अगर किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर-ई डांट दिया और उस की दिल आज़ारी कर दी तो यक़ीनन इस में गुनहगारी और जहन्नम की ह़क़दारी है। **"त़-बरानी शरीफ़"** की रिवायत में है, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج٢ ص٣٨٦ حديث٣٦٠٧)

**हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी : ह़ज़रते** सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं, सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : कोई शख़्स अच्छी बात बोल देता है उस की इन्तिहा नहीं जानता इस की वज्ह से उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा उस दिन तक के लिये लिखी जाती है जब वोह उस से मिलेगा। और एक आदमी बुरी बात बोल देता है जिस की इन्तिहा नहीं जानता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की वज्ह से अपनी नाराज़ी उस दिन तक लिख देता है जब वोह उस से मिलेगा। (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص١٤٣ حديث٢٣٢٦)

**पहले तोलो फिर मुंह से बोलो : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (बा'ज़ अवक़ात आदमी) कोई बात ऐसी बुरी बोल देता है जिस से रब तआ़ला हमेशा के लिये नाराज़ हो जाता है लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि बहुत सोच समझ कर बात किया करे। **ह़ज़रते (सय्यिदुना) अ़ल्क़मा** (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) फ़रमाया करते थे कि मुझे बहुत सी बातों से बिलाल इब्ने ह़ारिस (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) की (मज़्कूरा) ह़दीस रोक देती है। (مرقات) या'नी मैं कुछ बोलना चाहता हूं कि येह ह़दीस सामने आ जाती है और

मैं (इस ख़ौफ़ से) ख़ामोश हो जाता हूं (कि कहीं ऐसी बात मुंह से न निकल जाए जिस की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमेशा के लिये मुझ से नाराज़ हो जाए)। (मिरआत, जि. 6, स. 462)

**क़ुफ़्ले मदीना लगाने ही में आ़फ़िय्यत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बे सोचे समझे बोल पड़ना बेह़द ख़त़रनाक नताइज का ह़ामिल हो सकता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हमेशा हमेशा की **नाराज़ी** का बाइ़स बन सकता है। यक़ीनन **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी अपने आप को ग़ैर ज़रूरी बातों से बचाने ही में आ़फ़िय्यत है। ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ गुफ़्त-गू लिख कर या इशारे से कर लिया करना बेह़द मुफ़ीद है क्यूं कि जो ज़ियादा बोलता है उ़मूमन ख़त़ाएं भी ज़ियादा करता है, राज़ भी फ़ाश कर डालता है। **ग़ीबत** व चुग़ली और ऐ़बजूई जैसे गुनाहों से बचना भी ऐसे शख़्स के लिये बहुत दुश्वार होता है बल्कि बक बक का आ़दी बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्रिय्यात** भी बक डालता है !

**दिल की सख़्ती का अन्जाम : अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमाए और हमारी ज़बान को लगाम नसीब करे कि येह **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल रह कर फ़ुज़ूल बोल बोल कर दिल को भी सख़्त कर देती है। **अल्लाहु ग़नी** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी मक्की म-दनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : फ़ोह़्श गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है।

(سُنَنِ تِرمِذی ج٣ ص٤٠٦ حدیث٢٠١٦)

**बक बक की आ़दत कुफ़्र में डाल सकती है : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स ज़बान का बेबाक हो कि हर बुरी भली बात बे धड़क मुंह से निकाल दे तो समझ लो कि **उस का दिल सख़्त है** उस में **ह़या** नहीं। **सख़्ती** वोह दरख़्त है जिस की जड़ इन्सान के दिल में है और इस की शाख़ दोज़ख़ में। ऐसे बे धड़क इन्सान का अन्जाम येह होता है कि वोह **अल्लाह रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाह में भी बे अदब हो कर **काफ़िर** हो जाता है।

(मिरआत, जि. 6, स. 641)

*जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में*
*सरकार ! मगर दिल की क़सावत[1] नहीं जाती*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 382)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत करने वाला क़ाबिले रह़म है : एक** बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने कहा : फ़ुलां शख़्स आप की इस क़दर बुराई बयान करता है कि मुझे आप पर रह़म आता है। फ़रमाया : "क़ाबिले रह़म तो वोह शख़्स ख़ुद है।" (تفسیرِ قرطبی ج۸ص۲۴۲) سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! हमारे बुज़ुर्गों का इख़्लास व अख़्लाक़ सद करोड़ मरह़बा ! इन की **म-दनी सोच** की भी क्या बात है ! अपनी बे तह़ाशा बुराइयां करने वाले पर भी ग़ुस्सा नहीं आ रहा बल्कि दिल मुत़्मइन है कि मेरा अपना क्या जाता है ! **ग़ीबत** करने वाला ही नुक़्सान उठाता है और वोह नादान इन मा'नों में क़ाबिले रह़म ही है कि अपनी नेकियां बरबाद कर रहा और गुनहगार हो कर अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पा रहा है।

*दर्दे सर हो या बुख़ार आए तड़प जाता हूं — मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब !*
*अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा — गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

**"बहुत सोता है" कहना ग़ीबत है : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के बारे में मरवी है कि इन में से एक ने दूसरे से फ़रमाया कि **اِنَّ فُلَانًا لَنَؤُوْمٌ या'नी फ़ुलां शख़्स बहुत सोता है** फिर उन्हों ने सरकारे मदीना

1. या'नी सख़्ती

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सालन मांगा ताकि रोटी खाएं, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम सालन खा चुके हो। उन्हों ने अ़र्ज़ की : हमें तो इस का इ़ल्म नहीं। फ़रमाया : हां क्यूं नहीं तुम दोनों ने अपने भाई का गोश्त खाया है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٣ ص ١٨٠، اِتحافُ السّادَة للزّبیدی ج ٩ ص ٣٠٧)

**ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने में शरीक है :** **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : तो देखो किस त़रह़ सुल्त़ाने अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों को इस मस्अले में जम्अ़ किया (ह़ालां कि ज़बान से सिर्फ़) एक ने **ग़ीबत** की मगर दूसरे ने उसे सुना (लिहाज़ा वोह भी **ग़ीबत** में शरीक ठहराए गए) (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٣ ص ١٨٠)

**खाने और बोलने से मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 12 मिसालें :** **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा ज़ियादा सोने वाले के बारे में पीछे से कहना कि "सोता बहुत है" **ग़ीबत** है। मज़ीद खाने और बोलने से मु-तअ़ल्लिक़ **ग़ीबत** की 12 मिसालें मुला-ह़ज़ा हों : ❁ खाता बहुत है ❁ जब देखो खाता रहता है ❁ इस को तो हर वक़्त खाने ही की पड़ी रहती है ❁ बे चबाए निगल जाता है ❁ बोटियां अपनी त़रफ़ सरका लेता है ❁ जहां नियाज़ का खाना हो वहां पहुंच जाता है ❁ क़ुरआन ख़्वानी/ इज्तिमाअ़/ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त/ उ़र्स शरीफ़ में खाने के वक़्त पहुंचता है ❁ मय्यित के तीजे का खाना भी नहीं छोड़ता ❁ बोलता बहुत है ❁ दूसरों की बारी नहीं आने देता ❁ दूसरों की बात काट देता है ❁ अगले को बातों ही बातों में खा जाता है वग़ैरा वग़ैरा। मज़्कूरा रिवायत से مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन या'नी सय्यिदैना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में किसी त़रह़ की बुराई ज़ेह्न में न लाई जाए, येह ज़मानए तरबियत के मुआ़-मलात हैं। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इस त़रह़ के मु-तअ़द्दिद वाक़िआ़त कुतुबे अह़ादीस में मिलते हैं। चुनान्चे

**पीछे से इशारतन "ठिगना" कहना ग़ीबत है :** **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना

आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم से अ़र्ज़ की : सफ़िय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के लिये येह काफ़ी है कि वोह ऐसी हैं ऐसी हैं या'नी **पस्ता क़द** हैं, हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इर्शाद फ़रमाया कि "तुम ने ऐसा कलिमा कहा (या'नी ऐसी बात कही) कि अगर समुन्दर में मिलाया जाए तो उस पर ग़ालिब आ जाए।" (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٥٣ حدیث ٤٨٧٥) या'नी किसी पस्ता क़द को भी ❁ पस्ता क़द ❁ नाटा ❁ ठिगना कहना **ग़ीबत** में दाख़िल है, जब कि बिला ज़रूरत हो।

**किसी के फ़ित़री ऐ़ब बयान करना बड़े ख़ौफ़ की बात है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लम्बा** और ठिगना वग़ैरा होना येह फ़ित़री उ़यूब हैं बिला मस्लह़ते शर-ई पीठ पीछे किसी मुसल्मान के इन ऐ़बों का तज़्किरा भी **ग़ीबत** है बल्कि इस के बारे में **हु़ज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : अगर उस के ऐ़ब का तअ़ल्लुक़ उस की ख़िल्क़त (या'नी फ़ित़रत) से है तो उस की बुराई बयान करना गोया (مَعَاذَ الله) **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ बुराई को मन्सूब करना है क्यूं कि जो आदमी किसी सन्अ़त (या'नी बनावट, कारीगरी) में ऐ़ब निकालता है वोह गोया सानेअ़ (या'नी बनाने वाले) की ख़राबी बयान करता है। किसी शख़्स ने एक दाना से कहा : ओ बद सूरत ! उस ने जवाब दिया कि चेहरा बनाना मेरे इख़्तियार में नहीं वरना ख़ूबसूरत बना लेता। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص١٨٤)

**किसी को "कमज़ोर है" कहना ! : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में हम लोग ह़ाज़िर थे कि एक आदमी जब उठ कर चला गया तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! مَا اَضْعَفَ فُلَانًا : **फ़ुलां कितना कमज़ोर है !** फ़रमाया : "तुम ने अपने रफ़ीक़ (या'नी साथी) की **ग़ीबत** की और उस का गोश्त खाया।" (مُسْنَد اَبِی یَعْلٰی ج٥ ص٣٦٢ حدیث ٦١٢٥)

# "ग़ीबत मत करो" के नव हुरूफ़ की निस्बत से किसी की कमज़ोरी के इज़्हार की ग़ीबत की 9 मिसालें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा, बिला इजाज़ते शर-ई किसी को "कमज़ोर" कहना भी **ग़ीबत** में दाख़िल है। इसी त़रह़ ❁ सूखा साखा ❁ मरयल ❁ मरयल टट्टू ❁ बुड्ढा फूंस (खूसट) ❁ हड्डियों का ढांचा ❁ हड पिन्जर ❁ क़ब्र में पाउं लटक चुके हैं ❁ सूखी लकड़ी ❁ फूंक मारो तो उड़ जाए वग़ैरा अल्फ़ाज़ भी **ग़ीबत** के हैं क्यूं कि कोई समझदार इन्सान अपने लिये इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ सुनना पसन्द नहीं करता।

*बचूं ग़ीबतों से बचूं चुग़लियों से हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही*
*ज़बां पर लगाम मेरी लग जाए मौला सदा तोहमतों से बचा या इलाही*

**किसी के मा'यूब मरज़ का तज़्किरा करना : सुल्त़ाने** अम्बियाए किराम, शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम, मह़बूबे रब्बुस्सलाम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक आदमी का तज़्किरा करते हुए जब अ़र्ज़ की गई : फ़ुलां शख़्स ख़ुद नहीं खा सकता यहां तक कि कोई उसे खिलाए और न ही चल सकता है यहां तक कि कोई उसे चलाए। तो फ़रमाया : "तुम ने उस की **ग़ीबत** की।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने तो वोह बात बयान की है जो उस में मौजूद है। इर्शाद फ़रमाया : **ग़ीबत के लिये इतना ही काफ़ी है कि तुम ने अपने भाई का ऐ़ब बयान किया।** (حِلْیَۃُ الْاولیاء ج۸ ص۲۰۴ رقم ۱۱۸۸۳)

**लूले लंगड़े की ग़ीबत :** ताबेई बुज़ुर्ग **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर तुम्हारे पास से कोई लुन्जा (या'नी लूला या लंगड़ा) गुज़रे और तुम उस के लुन्जे पन के ऐ़ब का तज़्किरा करो तो येह भी **ग़ीबत** है।" (تفسیر دُرِّ مَنْثور ج۷ ص ۵۷۱) मा'लूम हुवा कि किसी लुन्जे को भी बिला इजाज़ते शर-ई पीठ पीछे लुन्जा कहना **ग़ीबत** है इसी त़रह़ किसी को ❁ लंगड़ा ❁ गन्जा ❁ अन्धा ❁ काना ❁ लूला ❁ तुतला ❁ हक्ला ❁ गूंगा ❁ बहरा ❁ कुबड़ा वग़ैरा कहना भी **ग़ीबत** है।

**लिबास की ख़ामी बताना भी ग़ीबत है : उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थी, मैं ने एक औ़रत के बारे में कहा : **اِنَّ ھٰذِہٖ لَطَوِیْلَۃُ الذَّیْلِ** या'नी येह **लम्बे दामन वाली है**। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **اِلْفَظِیْ اِلْفَظِیْ** या'नी जो कुछ तेरे मुंह में है निकाल फेंक। तो मैं ने मुंह से गोश्त का टुकड़ा निकाल कर फेंका। (الصّمت مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج٧ص١٤٥حديث ٢١٦)

## "ग़ीबत करना निहायत ही सख़्त गुनाह है" के चौबीस हु़रूफ़ की निस्बत से लिबास के मु–तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 24 मिसालें

मा'लूम हुवा कि पीठ पीछे किसी के लिबास की ख़राबी का बयान करना भी **ग़ीबत** है लिबास के मु–तअ़ल्लिक़ **ग़ीबत** की 24 मिसालें मुला–ह़ज़ा हों : (दर्जे ज़ैल बातें दुरुस्त हों तो **ग़ीबत** वरना इस से बड़े गुनाह **तोहमत** में दाख़िल होंगी) ❁ उस की आस्तीन लम्बी है ❁ कपड़े बे ढंगे हैं ❁ कपड़े मैले हैं ❁ कपड़ों को गन्दगी से नहीं बचाता ❁ कपड़ों से बदबू आती है ❁ कपड़ों का डीज़ाइन सही़ह़ नहीं ❁ बड़े भाई का कुरता चढ़ा लिया है ❁ इस को कपड़े पहनने का ढंग नहीं आता ❁ इमामा सही़ह़ से बांधना नहीं आता ❁ उस की चादर मैली चिकट हो गई है ❁ मोज़े फटे हुए पहनता है ❁ लन्डा बाज़ार के (सेकन्ड हेन्ड) कपड़े पहनता है ❁ घटिया वाला कपड़ा है ❁ औ़रतों वाले रंगों के कपड़े पहनने का बहुत शौक़ है ❁ उस लिबास में तो वोह मस्त मलंग लगता है ❁ ज़रा देखो तो बड़े भाई की क़मीस और छोटे भाई की शलवार चढ़ा ली है, कितना अ़जीब लग रहा है ❁ कितना कन्जूस है कि इतना पैसे वाला हो कर भी कपड़े बिल्कुल सादे पहनता है ❁ बाप चपरासी है मगर बेटे के कपड़े तो देखो ! ❁ मांगा हुवा सूट पहना होगा वरना इस की इतनी औक़ात कहां ! ❁ येह इस लिये फटे पुराने कपड़े पहनता है ताकि पार्टियों से माल बटोरना आसान हो ❁ जब देखो उस के कपड़े कहीं न कहीं से फटे हुए होते हैं ❁ अपनी

गुरबत ज़ाहिर करने और लोगों की हमदर्दियां पाने के लिये पैवन्द लगे कपड़े पहनता है ❁ क़र्ज़े ले कर इतना महंगा सूट लेने की इसे क्या ज़रूरत थी ❁ उफ़! उस ने किस क़दर अ़जीब लिबास पहना हुवा था।

*शराबे महब्बत कुछ ऐसी पिला दे — कभी भी नशा हो न कम या इलाही*
*मुझे अपना आ़शिक़ बना कर बना दे — तू सर ता पा तस्वीरे ग़म या इलाही*

वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 109)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**जूए के कारोबार से तौबा :** **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **सूई** डिवीज़न डेरा बगटी (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) के एक स्कूल टीचर **तम्बोला** (एक क़िस्म का खेल जिस में पैसों का जूआ होता है) की दुकान चलाते थे। 2004 ई. में पाकिस्तान के सूबे बाबुल इस्लाम (सिन्ध) सत्ह़ पर **सह़राए मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में इन्हें ख़ुश क़िस्मती से शिर्कत की सआ़दत मिल गई, आख़िर में जब दुआ़ हुई तो उन पर रिक्क़त त़ारी हो गई। उन्हों ने साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा करने के साथ साथ नमाज़े बा जमाअ़त पाबन्दी से

अदा करने की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ से वापस आते ही **तम्बोला** का काम यक्सर ख़त्म कर दिया, दाढ़ी शरीफ़ रख ली और स्कूल में दर्स भी जारी कर दिया और **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में कुरआने पाक पढ़ना शुरूअ़ कर दिया।

**जूआ ह़राम है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की भी क्या बात है! **अल्लाहु** तव्वाब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से इन में शरीक होने वालों में से न जाने कितने ही दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है, इन इज्तिमाआ़त में शिर्कत दोनों जहानों के लिये बाइसे सआ़दत है। अभी आप ने **म-दनी बहार** समाअ़त फ़रमाई इस में **तम्बोला** के कारोबार से **तौबा** का तज़्किरा है। **तम्बोला** "जूआ" ही की एक सूरत है, **जूआ** में एक दूसरे का माल नाह़क़ खाया जाता है जो कि शरअ़न ह़राम है। **जूआ** खेलना, **जूआ** का अड्डा चलाना **जूए** के आलात बेचना ख़रीदना सब इस्लाम में ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। अफ़्सोस! आज कल मुसल्मानों में **जूआ** काफ़ी आ़म है, **जूआ** की ऐसी भी सूरतें हैं कि लोग ला इ़ल्मी की वज्ह से उन में मुब्तला हो जाते हैं। लिहाज़ा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **जूआ** के बारे में कुछ मा'लूमात ह़ासिल कर लीजिये।

**जूआ खेलना गुनाह है :** पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 219 में **अल्लाहु** रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِؕ قُلْ فِیْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِیْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ٘ وَ اِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَاؕ

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है।

**ह़ज़रते** सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़त लिखते हैं **: जूए** में कभी मुफ़्त का माल हाथ

आता है और गुनाहों और मुफ़्सिदों (या'नी ख़राबियों) का क्या शुमार ! अ़क़्ल का ज़वाल, ग़ैरत व ह़मिय्यत का ज़वाल, इ़बादात से मह़रूमी लोगों से अ़दावतें (या'नी दुश्मनियां) सब की नज़र में ख़्वार (या'नी ज़लील) होना दौलत व माल की इज़ाअ़त (या'नी बरबादी)।

**जूआ शैत़ानी काम है :** पारह 7 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 90 ता 91 में **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ। शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवावे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ?

**ह़ज़रते** सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस के तह़्त लिखते हैं : इस आयत में शराब और **जूए** के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और **जूए बाज़ी** का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग़्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों (या'नी बुराइयों) में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से मह़रूम हो जाता है।

**जूआ में जीता हुवा माल ह़राम है :** पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 188 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद होता है :

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ (پ۲ البقرہ: ۱۸۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ।

**सदरुल** अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना **हराम** फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से या **जूए** से या हराम तमाशों या हराम कामों या हराम चीज़ों के बदले या रिश्वत या झूटी गवाही या चुग़ुल ख़ोरी से येह सब मम्नूअ़ व **हराम** है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 63)

**गोया ख़िन्ज़ीर के ख़ून और गोश्त में हाथ डुबोया :** हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने फ़रमाया : जिस ने नर्द शेर (जूआ खेलने का सामान) से **जूआ** खेला तो गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में डुबोया। (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٢٣١ حديث٣٧٦٣)

**जूए की दा'वत देने वाला कफ़्फ़ारे में स-दक़ा करे : हुज़ूर** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : जिस शख़्स ने अपने साथी से कहा : "आओ **जूआ** खेलें।" तो उस (कहने वाले) को चाहिये कि स-दक़ा करे। (صَحيح مُسلِم ص٨٩٤ حديث١٦٤٧)

हज़रते अ़ल्लामा यहया बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस हदीस की शर्ह में लिखते हैं : उ-लमा फ़रमाते हैं कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने स-दक़ा करने का हुक्म इस लिये दिया है कि उस शख़्स ने गुनाह की दा'वत दी थी, हज़रते अ़ल्लामा ख़िताबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा कि जितने पैसों का **जूआ** खेलने का कहा था उतने पैसों का स-दक़ा करे मगर सहीह वोह है जो मुहक़्क़िक़ीन ने कहा है और येही हदीसे पाक का ज़ाहिर है कि स-दक़े की कोई मिक़्दार मुअ़य्यन नहीं, आसानी से जितना स-दक़ा कर सके कर दे। (شَرح مُسلِم لِلنَّوَوِى ج٦ ص١٠٧)

मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 19 सफ़हा 646 पर फ़रमाते हैं : सूद और चोरी और ग़स्ब और **जूए** का रुपिया **क़त्ई हराम** है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 646)

**जूआ की ता'रीफ़ : जूआ** को अ़-रबी में **क़िमार** कहते हैं इस की **ता'रीफ़** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ह़ज़रते मीर सय्यिद शरीफ़ जुरजानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی लिखते हैं : हर वोह खेल जिस में येह शर्त़ हो कि मग़्लूब (या'नी नाकाम होने वाले) की कोई चीज़ (ग़ालिब होने वाले) को दी जाएगी येह "**क़िमार**" (या'नी जूआ) है । (التّعریفات ص ۱۲۶)

**जूए की 6 सूरतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज कल दुन्या में **जूए** के नित नए त़रीक़े राइज हैं, इन में से 6 येह हैं :

**1 लॉटरी :** इस त़रीक़ए कार में लाखों करोड़ों रुपै के इन्आ़मात का लालच दे कर लाखों टिकट मा'मूली रक़म के बदले फ़रोख़्त किये जाते हैं फिर क़ुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए़ काम्याब होने वालों में चन्द लाख या चन्द करोड़ रुपै तक़्सीम कर दिये जाते हैं जब कि बक़िय्या अफ़राद की रक़म डूब जाती है, येह भी जूआ ही की एक सूरत है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

**2 प्राइज़ बॉन्ड की परची :** ह़ुकूमते पाकिस्तान 200, 750, 1500, 7,500, 15,000, 40,000 रुपै की क़ीमत के इन्आ़मी बॉन्ड्ज़ बेंक के ज़रीए़ जारी करती है और जद्वल के मुत़ाबिक़ हर माह क़ुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए़ करोड़ों रुपै के इन्आ़मात ख़रीदारों में तक़्सीम करती है, जिस का इन्आ़म नहीं निकलता उस की भी रक़म मह़फ़ूज़ रहती है वोह उसे जब चाहे भुना (या'नी केश करवा) सकता है । येह जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की सूरत है और जूए में दाख़िल नहीं । लेकिन इस के मु-तवाज़ी बा'ज़ लोग इन्आ़मी बॉन्ड्ज़ की परचियां बेचते हैं इन परचियों की ख़रीद व फ़रोख़्त, ग़ैर क़ानूनी ना जाइज़ व ह़राम है क्यूं कि बेचने वाला ह़ुकूमत की त़रफ़ से जारी कर्दा प्राइज़ बॉन्ड्ज़ अपने ही पास रखता है (बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो प्राइज़ बॉन्ड्ज़ भी बेचने वाले के पास नहीं होते) परची बेचने वाला ख़रीदार को क़लील रक़म के बदले परची पर मह़ज़ एक नम्बर लिख कर दे देता है कि अगर इस नम्बर पर इन्आ़म निकल आया तो मैं तुम्हें इतनी रक़म दूंगा । इन्आ़मी परची

का येह काम भी **जूआ** है क्यूं कि इस में इन्आ़म न निकलने की सूरत में ख़रीदार की रक़म डूब जाती है।

**3 मोबाइल मेसेजिज़ और जूआ :** मोबाइल पर मुख़्तलिफ़ सुवालात पर मब्नी मेसेजिज़ (MESSAGES) भेजे जाते हैं जिस में म-सलन कौन सी टीम मेच जीतेगी ? या पाकिस्तान किस दिन बना था ? दुरुस्त जवाब देने वालों के लिये मुख़्तलिफ़ इन्आ़मात रखे जाते हैं, शिर्कत करने वाले के "मोबाइल बेलेन्स" से क़लील रक़म म-सलन दस रुपै कट जाती है, जिन का इन्आ़म नहीं निकलता उन की रक़म ज़ाएअ़ हो जाती है, येह भी **जूआ** है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

**4 मुअ़म्मा :** इस में एक या एक से ज़ियादा सुवालात ह़ल करने के लिये दिये जाते हैं जिस का ह़ल मुन्तज़िमीन की मरज़ी के मुत़ाबिक़ निकल आए उसे इन्आ़म दिया जाता है, इन्आ़मात की ता'दाद तीन या चार या इस से ज़ाइद भी होती है। लिहाज़ा दुरुस्त ह़ल ज़ियादा ता'दाद में निकलें तो कु़रआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए फ़ैसला होता है। इस खेल में बहुत सारे अफ़राद शरीक होते हैं, उन की शिर्कत दो त़रह़ से होती है **:** (1) मुफ़्त (2) मा'मूली फ़ीस दे कर, अगर शु-रका से किसी क़िस्म की फ़ीस न ली जाए तो और कोई मानेए़ शर-ई न होने की सूरत में उस इन्आ़म का लेना जाइज़ है। जिस में शु-रका से फ़ीस ली जाती है उस में इन्आ़म मिले या न मिले रक़म डूब जाती है, येह सूरत **जूआ** की है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

**5 पैसे जम्अ़ कर के क़ुरआ़ अन्दाज़ी करना :** बा'ज़ अफ़राद या दोस्त आपस में थोड़ी थोड़ी रक़म जम्अ़ कर के क़ुरआ़ अन्दाज़ी करते हैं कि जिस का नाम निकला सारी रक़म उस को मिलेगी, येह भी **जूआ** है क्यूं कि **बक़िय्या** अफ़राद की रक़म डूब जाती है। इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात पैसे जम्अ़ कर के कोई किताब या दूसरी चीज़ ख़रीदी जाती है कि जिस का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकल आया उसे येह किताब दे दी जाएगी येह भी **जूआ** ही है। याद रहे कि बा'ज़ कम्पनियां अपनी मस्नूआ़त ख़रीदने वालों को क़ुरआ़ अन्दाज़ी कर के इन्आ़मात देती है येह जाइज़

है क्यूं कि इस में किसी की भी रक़म नहीं डूबती।

**6 मुख़्तलिफ़ खेलों में शर्त़ लगाना :** हमारे यहां मुख़्तलिफ़ खेल म-सलन घुड़दौड़, क्रिकेट, केरम, बिलयर्ड, ताश, शत़रन्ज वग़ैरा दो त़रफ़ा शर्त़ लगा कर खेले जाते हैं कि हारने वाला जीतने वाले को उतनी रक़म या फ़ुलां चीज़ देगा येह भी **जूआ** है और ना जाइज़ व ह़राम। केरम और बिलयर्ड क्लब वग़ैरा में खेलते वक़्त उ़मूमन येह शर्त़ रखी जाती है कि क्लब के मालिक की फ़ीस हारने वाला अदा करेगा, येह भी **जूआ** है। बा'ज़ ''नादान'' घरों में मुख़्तलिफ़ खेलों म-सलन ताश या लूडो पर दो त़रफ़ा शर्त़ लगा कर खेलते हैं और कम इल्मी के बाइ़स इस में कोई ह़रज नहीं समझते वोह भी संभल जाएं कि येह भी **जूआ** है और **जूआ** ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

**जूए से तौबा का त़रीक़ा : जूआ** खेलने वाला अगर नादिम हुवा तो उस को चाहिये कि बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में **सच्ची तौबा** करे मगर जो कुछ माल जीता है वोह ब दस्तूर ह़राम ही रहेगा इस ज़िम्न में रहनुमाई करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''जिस क़दर माल **जूए** में कमाया मह़्ज़ **ह़राम** है। और इस से बराअत (या'नी नजात) की येही सूरत है कि जिस जिस से जितना जितना माल **जीता** है उसे वापस दे, या जैसे बने उसे राज़ी कर के मुआ़फ़ करा ले। वोह न हो तो उस के वारिसों को वापस दे, या उन में जो आ़क़िल बालिग़ हों उन का ह़िस्सा उन की रिज़ा मन्दी से मुआ़फ़ करा ले। बाक़ियों का ह़िस्सा ज़रूर उन्हें दे कि इस की मुआ़फ़ी मुम्किन नहीं, और जिन लोगों का पता किसी त़रह़ न चले, न उन का, न उन के व-रसा का, उन से जिस क़दर **जीता** था उन की निय्यत से ख़ैरात कर दे, अगर्चे (ख़ुद) अपने (ही) मोह़ताज बहन भाइयों, भतीजों, भान्जों को दे दे।'' आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : ग़रज़ जहां जहां जिस क़दर याद हो सके कि इतना माल फ़ुलां से हार जीत में ज़ियादा पड़ा था, उतना तो उन्हें या उन के वारिसों को दे, येह न हों तो उन की निय्यत से तसद्दुक़ (या'नी स-दक़ा) करे, और ज़ियादा पड़ने के येह मा'ना कि म-सलन एक शख़्स से दस

बार जूआ खेला कभी येह जीता कभी येह, उस (या'नी सामने वाले जूआरी) के जीतने की (रक़म की) मिक्दार म-सलन सो रुपै को पहुंची, और येह (ख़ुद) सब दफ़्आ के मिला कर सवा सो जीता, तो सो सो बराबर हो गए, **पच्चीस** उस (या'नी सामने वाले जूआरी) के देने रहे। इतने ही उसे वापस दे। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर क़ियास कर लीजिये) और जहां याद न आए कि (जूआ खेलने वाले) कौन कौन लोग थे और कितना (माल जूए में जीत) लिया, वहां ज़ियादा से ज़ियादा (मिक्दार का) तख़्मीना (या'नी अन्दाज़ा) लगाए कि इस तमाम मुद्दत में किस क़दर माल **जूए** से कमाया होगा उतना मालिकों (या'नी उन ना मा'लूम जूआरियों) की निय्यत से ख़ैरात कर दे, आक़िबत यूंही पाक होगी। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 651)

**फ़ौत शुदा की बुराई करना भी ग़ीबत है : हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : माइज़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को जब रज्म किया गया था, (या'नी ज़िना की "ह़द" में इतने पथ्थर मारे गए कि वफ़ात पा चुके थे) दो शख़्स आपस में बातें करने लगे, एक ने दूसरे से कहा : उसे तो देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की पर्दा पोशी की थी मगर उस के नफ़्स ने न छोड़ा, **رُجِمَ رَجْمَ الْكَلْبِ** या'नी **कुत्ते की त़रह़ रज्म किया गया।** हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुन कर सुकूत फ़रमाया (या'नी ख़ामोश रहे)। कुछ देर तक चलते रहे, रास्ते में मरा हुवा गधा मिला जो पाउं फैलाए हुए था। **सरकारे वाला तबार,** मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों शख़्सों से फ़रमाया : जाओ उस मुर्दार गधे का गोश्त खाओ। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इसे कौन खाएगा ? इर्शाद फ़रमाया : वोह जो तुम ने अपने भाई की आबरू रेज़ी की, वोह इस गधे के खाने से भी ज़ियादा सख़्त है। क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! वोह (या'नी माइज़) इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है।

(سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص١٩٧ حديث ٤٤٢٨)

**फ़ुलां ने ख़ुदकुशी कर ली येह कहना ग़ीबत है : मा'लूम** हुवा फ़ौत शुदा लोगों की बुराई करना भी **ग़ीबत** है। बा'ज़ अवक़ात बड़ा सब्र आज़्मा मुआ-मला होता है। म-सलन डाकू, दहशत

गर्द, अपने अ़ज़ीज़ के क़ातिल वग़ैरा क़त्ल कर दिये जाएं या उन्हें फांसी लगा दी जाए तो बा'ज़ अवक़ात लोग **ग़ीबत** के गुनाह में पड़ ही जाते हैं। इसी त़रह़ **ख़ुदकुशी** करने वाले मुसल्मान के बारे में बिला इजाज़ते शर-ई येह कह देना कि "फ़ुलां ने ख़ुदकुशी की" येह **ग़ीबत** है यूं ही नाम व पहचान के साथ किसी मुसल्मान की **ख़ुदकुशी** की **अख़्बार** में ख़बर भी न लगाई जाए कि इस से मरने वाले की **ग़ीबत** भी होती और इस के साथ साथ मर्ह़ूम के अहलो अ़याल की इ़ज़्ज़त पर भी बट्टा लगता है। हां इस अन्दाज़ में तज़्किरा किया कि पढ़ने या सुनने वाले **ख़ुदकुशी** करने वाले को पहचान ही न पाए कि वोह कौन था तो ह़रज नहीं मगर येह ज़ेह्न में रहे कि नाम न लिया मगर गाउं, मह़ल्ला, बिरादरी, अवक़ात, **ख़ुदकुशी** का अन्दाज़ वग़ैरा बयान करने से **ख़ुदकुशी** करने वाले की शनाख़्त मुम्किन है लिहाज़ा पहचान हो जाए इस अन्दाज़ में तज़्किरा भी **ग़ीबत** में शुमार होगा। मस्अला येह है कि मुसल्मान **ख़ुदकुशी** करने से इस्लाम से ख़ारिज नहीं हो जाता इस की **नमाज़े जनाज़ा** भी अदा की जाएगी, इस के लिये **दुआ़ए मग़्फ़िरत** भी करेंगे, मरने वाले मुसल्मान को बुराई से याद करने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴿1﴾ अपने मुर्दों को बुरा न कहो क्यूं कि वोह अपने आगे भेजे हुए आ'माल को पहुंच चुके हैं। (بُخاری ج۱ ص ۴۷۰ حدیث ۱۳۹۳) ﴿2﴾ अपने मुर्दों की ख़ूबियां बयान करो और उन की बुराइयों से बाज़ रहो। (سُنَنِ ترمذی ج ۲ ص ۳۱۲ حدیث ۱۰۲۱) ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِی लिखते हैं : **मुर्दे** की ग़ीबत ज़िन्दे की ग़ीबत से बदतर है, क्यूं कि ज़िन्दा शख़्स से **मुआ़फ़** करवाना मुम्किन है जब कि मुर्दा से मुआ़फ़ करवाना मुम्किन नहीं। (فَیضُ القَدِیر لِلْمُناوِی ج۱ ص۵۶۲ تَحتَ الْحدیث۸۵۲)

**ग़ुस्साल मुर्दे की बुराई बयान न करे :** **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 811 पर है : (मय्यित को ग़ुस्ल देते वक़्त) जो अच्छी बात देखे म-सलन चेहरा **चमक** उठा या मय्यित के बदन से **ख़ुश्बू** आई, तो उसे लोगों के सामने बयान करे और कोई बुरी बात देखी,

म–सलन चेहरे का रंग **सियाह** हो गया या बदबू आई या सूरत व आ'ज़ा में तग़य्युर आया तो उसे किसी से न कहे और ऐसी बात कहना **जाइज़** भी नहीं कि ह़दीस में इर्शाद हुवा : "अपने मुर्दों की ख़ूबियां ज़िक्र करो और उस की बुराइयों से बाज़ रहो।" (ابوداؤد ج٤ص٣٦٠حدیث٤٩٠٠)

**मरने के बा'द बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा ! : अगर** किसी मुसल्मान ने मरते वक़्त ब ज़ाहिर कलिमा न पढ़ा और किसी ने कहा कि "इस को **कलिमा** नसीब नहीं हुवा" उस ने इस मरने वाले की **ग़ीबत** की, इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़्रोज़ **ह़िकायत** मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़य्य लखनवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मेरे बुज़ुर्गों में एक **वलिय्युल्लाह** या'नी मौलाना मुह़म्मद इज़्हारुल ह़क़ लखनवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इन्तिक़ाल किया और मरते वक़्त उन की ज़बान से **कलिमा** न निकला, लोगों ने उन पर चादर डाल दी और तज्हीज़ो तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम किया, जब सब लोग बाहर निकले तो बा'ज़ों ने बत़ौर त़ा'न के कहा कि ज़ाहिर में निहायत मुत्तक़ी थे और मरते वक़्त ज़बान से **कलिमा** भी न निकला, इस बात से तमाम ह़ाज़िरीन को रन्ज हुवा, इतने में मौलाना मर्ह़ूम ने दोनों पाउं को समेटा और ब आवाज़े बुलन्द **कलिमा** पढ़ा, जब लोगों के कानों में आवाज़ पहुंची तो त़ा'न करने वालों को लोगों ने मत़ऊन किया (या'नी बुरा भला कहा)। (ग़ीबत क्या है, स. 19)

**मरे हुए काफ़िर की ग़ीबत : शारेह़े** बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : कुफ़्फ़ार की बुराई बयान करनी जाइज़ है अगर्चे वोह मर गए हों अलबत्ता अगर मरने वाले कुफ़्फ़ार के अहलो अ़याल मुसल्मान हों और उन के काफ़िर मां बाप, उसूल (या'नी दादा वग़ैरा) की बुराई करने से उन्हें ईज़ा पहुंचे तो इस से बचना ज़रूरी है कि अब येह **ईज़ाए मुस्लिम** है और मुसल्मान को ईज़ा देना जाइज़ नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 886)

*शहा मंडला रही है मौत सर पर फिर भी मेरा नफ़्स*
*गुनाहों की त़रफ़ हर दम है माइल या रसूलल्लाह*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 336)

**6 मुर्दों की सन्सनी ख़ैज़ ह़िकायात : लोगों** की इब्रत के लिये फ़ौत शुदा मुसल्मानों की बुराई बयान करने में भी शरअ़न ह़रज नहीं है मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने मुसल्मानों को गुनाहों से डराने के लिये किताबों में मरे हुए काफ़िरों के इलावा बद मज़्हबों और मुसल्मानों के अ़ज़ाबों के भी तज़्किरे फ़रमाए हैं चुनान्चे इस ज़िम्न में छ6 मुर्दों की सन्सनी ख़ैज़ ह़िकायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

**(1) आग का कुरता : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह बक़ीअ़ में गुज़रा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उफ़ ! उफ़ ! तो मैं ने गुमान किया कि शायद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा इरादा फ़रमाते हैं । मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मुझ से कोई ग़-लती हुई ? फ़रमाया : नहीं, बल्कि इस क़ब्र वाले शख़्स को मैं ने बनू फ़ुलां के पास स-दक़ा वुसूल करने भेजा था तो इस ने एक चादर बत़ौरे **ख़ियानत** बचा ली थी । आख़िर वैसा ही आग का कुरता इस को पहनाया गया ।

(سُنَنِ نَسائی ص ۱۵۰ حدیث ۸۵۹)

**सरकार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **से कुछ छुपा हुवा नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! दर्से इब्रत देने के लिये इस ह़दीसे पाक में फ़ौत शुदा शख़्स के अ़ज़ाबे क़ब्र का ज़िक्र किया गया है । इस रिवायत से येह भी रोज़े रोशन की त़रह़ ज़ाहिर हुवा कि हमारे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से **इल्मे ग़ैब** रखते हैं जभी तो क़ब्र में होने वाले अ़ज़ाब के साथ साथ सबबे अ़ज़ाब की भी हाथों हाथ ख़बर इर्शाद फ़रमा दी । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن का कितना प्यारा अ़क़ीदा था चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **ह़दाइक़े बख़्शिश** शरीफ़ का शे'र सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये :

*सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र*

*म-लकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109)

(या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत से अ़र्श आप की गुज़र गाह है और फ़र्श ज़ेरे निगाह है। अल ग़रज़ मलाएका हों या आ़लमे अरवाह़, काएनात में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पोशीदा हो)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**(2) बे दीन की गरदन में सांप : ह़ाफ़िज़ अबू ख़ल्लाल** ने "किताब करामातुल औलिया" में अपनी सनद से रिवायत की, कि मुझ से **अ़ब्दुल्लाह** बिन हाशिम ने फ़रमाया : मैं एक मय्यित को नहलाने गया, जब मैं ने उस के जिस्म से कपड़ा खोला तो उस की **गरदन पर सांप लिपटे हुए थे !** मैं ने उन सांपों से कहा कि आप को इस पर मुसल्लत़ किया गया है और हमें इस को ग़ुस्ल देना है, अगर आप इजाज़त दें तो हम इस को ग़ुस्ल दे दें फिर आप अपनी जगह वापस आ जाइये, तो वोह **सांप** हट कर एक कोने में हो गए। जब हम ग़ुस्ले मय्यित से फ़ारिग़ हुए तो वोह अपनी जगह वापस आ गए। येह शख़्स **बे दीनी** (या'नी गुमराही) में मश्हूर था।

(شرحُ الصُّدُور ص۱۷۷، کرامات الاولیاء للخلال ص۵۵ رقم۶۳)

**(3) गरदन में सांप लिपटा हुवा था : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : मुझे एक मय्यित को ग़ुस्ल देने के लिये बुलाया गया, जब मैं ने उस के चेहरे से कपड़ा हटाया तो उस की **गरदन में सांप लिपटा हुवा था,** लोगों ने बताया कि येह सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देता था। (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) (شرحُ الصُّدُور ص۱۷۳)

**सह़ाबा के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देना गुनाह, गुनाह, बहुत सख़्त गुनाह, क़त़्ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 192 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**सवानेह़े करबला**" सफ़ह़ा 31 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो ! ! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने

इन्हें महबूब रखा मेरी महब्बत की वज्ह से महबूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़ किया वोह मुझ से बुग़्ज़ रखता है, इस लिये उस ने इन से बुग़्ज़ रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक ख़ुदाए तआला को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** तआला को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** तआला उसे गिरिफ़्तार करे। (سُنَنِ تِرمِذی ج٥ ص٤٦٣ حدیث٣٨٨٨)

**सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये : सदरुल** अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : मुसल्मान को चाहिये कि सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अक़ीदत व **महब्बत** को जगह दे। इन की **महब्बत** हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की **महब्बत** है और जो बद नसीब सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अ-दबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल (**عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) है। मुसल्मान ऐसे शख़्स के पास न बैठे। (सवानेहे करबला, स. 31) मेरे आक़ा आ'ला हज़रत (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) फ़रमाते हैं :

***अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर***
***नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की***

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 153)

(या'नी अहले सुन्नत का बेड़ा पार है क्यूं कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कश्ती की तरह हैं)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**
**تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه**
**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**(4) क़ब्र में भयानक काला सांप : हज़रते** सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ख़िदमत में कुछ लोग हाज़िर हुए और अर्ज़ की : हम सफ़रे हज पर निकले हुए हैं, मक़ामे

सिफ़ाह़ पर हमारे क़ाफ़िले का आदमी फ़ौत हो गया है। हम ने उस के लिये जब क़ब्र खोदी तो **एक बहुत बड़ा काला सांप बैठा नज़र आया, जिस ने क़ब्र को भर रखा था** उसे छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी वोही सांप नज़र आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में इस गम्भीर मस्अले के ह़ल की ख़ातिर ह़ाज़िर हुए हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : ''येह उस की **ख़ियानत** की सज़ा है जिस का वोह मुर-तकिब हुवा करता था।'' और बैहक़ी के अल्फ़ाज़ येह हैं : **ذَاكَ عَمَلُهُ الَّذِىْ كَانَ يَعْمَلُ** या'नी ''येह उस के अ़मल की सज़ा है जो वोह किया करता था।'' आप ह़ज़रात उसे उन दोनों में से किसी एक क़ब्र में दफ़्न कर दीजिये, ख़ुदा की क़सम ! अगर इस दुन्या की सारी ज़मीन भी खोद डालेंगे तब भी हर जगह येही कुछ पाएंगे।'' बिल आख़िर हम ने उस को **सांप भरी क़ब्र** में दफ़्ना दिया। वापस आ कर हम ने उस का सामान उस के घर वालों को दे दिया और उस की बेवा से उस के आ'माल के बारे में सुवाल किया तो उस ने बताया : येह खाना बेचता था और उस में से अपने घर वालों के लिये कुछ निकाल लेता था फिर कमी पूरी करने के लिये उस में उतनी ही **मिलावट** कर देता था।

(شَرحُ الصُّدُورص١٧٤،شُعَبُ الْاِیمان ج٤ ص٣٣٤ حدیث٥٣١١)

**धोकाबाज़ी जहन्नम से है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! ज़रूरतन इ़ब्रत के लिये मुर्दे की बुराई बयान करना जाइज़ था जभी तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उस मरे हुए ह़ाजी की बुराई बयान फ़रमाई, नीज़ जवाज़ ही के सबब बुलन्द पाया मुह़द्दिसीन ने इस **ह़िकायत** को अपनी अपनी कुतुब में नक़्ल किया। इस ह़िकायत से मिलावट वाला माल धोके से बेचने की तबाहकारी मा'लूम हुई। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 480 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बयानाते अ़त्तारिय्या''** ह़िस्सए अव्वल के सफ़ह़ा 218 पर है : **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो हमारे साथ धोकाबाज़ी करे वोह हम में से नहीं और मक्र और धोकाबाज़ी जहन्नम में हैं। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج١٠ ص١٣٨ حدیث١٠٢٣٤) एक और मक़ाम

पर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तीन अश्ख़ास दाख़िले जन्नत न होंगे (1) धोकाबाज़ (2) बख़ील (3) एह़सान जताने वाला। (سُنَنِ تِرمِذی ج۳ ص ۳۸۸ حدیث ۱۹۷۰)

**मिलावट वाला माल बेचने का जाइज़ त़रीक़ा : यहां** वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो **मिलावट** वाला माल **धोके से बेचते** हैं अगर मरने के बा'द पकड़ में आ गए तो क्या होगा ! अगर माल **मिलावट** वाला है और गाहक को **मिलावट** वग़ैरा की मिक़्दार बता दी या मिलावट बिल्कुल नुमायां नज़र आ रही है तो ऐसा माल बेचना जाइज़ है जब कि इस में से कुछ छुपाया न गया हो म-सलन **मिलावट** की मिक़्दार बताई मगर कम बताई जैसा कि 50 फ़ीसद **मिलावट** थी और 25 फ़ीसद कहा या जितनी **मिलावट** ऊपर से नज़र आ रही हो उस से ज़ियादा नीचे **मिलावट** कर रखी हो और वोह ज़ाहिर न करे तो ना जाइज़ है। इसी त़रह़ **धोका** देने के लिये ऊपर उ़म्दा फल और नीचे या बीच में गले सड़े फल रखने वालों और यूं ही दूसरी चीज़ों में **धोका** बाज़ी से काम लेने वालों को इन गुनाहों से बचना चाहिये।

*धोकाबाज़ी में नुहूसत है बड़ी*
*याद रख इस की सज़ा होगी कड़ी*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**(5) परिन्दे ने क़ै की तो उस में से इन्सान निकल पड़ा ! : इस्मह** अ़ब्बादानी कहते हैं : मैं किसी जंगल में घूम रहा था कि मैं ने एक गिरजा देखा, गिरजा में एक राहिब की ख़ानक़ाह थी उस के अन्दर मौजूद राहिब से मैं ने कहा कि तुम ने इस (वीरान) मक़ाम पर जो सब से अ़जीबो ग़रीब चीज़ देखी हो वोह मुझे बताओ ! तो उस ने बताया : मैं ने एक रोज़ यहां शुतर मुर्ग़ जैसा एक **देव हैकल सफ़ेद परिन्दा** देखा, उस ने उस पथ्थर पर बैठ कर क़ै की, उस में से एक **इन्सानी सर**

निकल पड़ा, वोह बराबर क़ै करता रहा और इन्सानी आ'ज़ा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअ़त (या'नी फुरती) के साथ एक दूसरे से जुड़ते रहे यहां तक कि वोह **मुकम्मल आदमी** बन गया! उस आदमी ने जूं ही उठने की कोशिश की उस **देव हैकल परिन्दे** ने उस के ठोंग मारी और उस को टुकड़े टुकड़े कर दिया, फिर निगल गया। कई रोज़ तक मैं येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखता रहा, मेरा यक़ीन **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत पर बढ़ गया कि वाक़ेई **अल्लाह** तआ़ला मार कर जिलाने पर क़ादिर है। एक दिन मैं उस **देव हैकल परिन्दे** की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और उस से दरयाफ़्त किया कि ऐ परिन्दे! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम दे कर कहता हूं जिस ने तुझ को पैदा किया कि अब की बार जब वोह इन्सान मुकम्मल हो जाए तो उस को बाक़ी रहने देना ताकि मैं उस से उस का अ़मल मा'लूम कर सकूं। तो उस परिन्दे ने फ़सीह़ अ़-रबी में कहा : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के लिये ही बादशाहत और बक़ा है हर चीज़ फ़ानी है और वोही बाक़ी है मैं उस का एक फ़िरिश्ता हूं और इस शख़्स पर मुसल्लत़ किया गया हूं ताकि इस के गुनाह की सज़ा देता रहूं।" जब क़ै में वोह इन्सान निकला तो मैं ने उस से पूछा : ऐ अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाले इन्सान! तू कौन है और तेरा क़िस्सा क्या है? उस ने जवाब दिया : "मैं ह़ज़रते मौलाए काएनात **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का क़ातिल अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने **मुल्जिम** हूं, जब मैं मर चुका तो **अल्लाह** तआ़ला के सामने मेरी रूह़ ह़ाज़िर हुई, उस ने मेरा नामए आ'माल मुझ को दिया जिस में मेरी पैदाइश से ले कर ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को शहीद करने तक की हर नेकी और बदी लिखी हुई थी। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस फ़िरिश्ते को हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक मुझे अ़ज़ाब दे।" येह कह कर वोह चुप हो गया और देव हैकल परिन्दे ने उस पर ठोंगें मारीं और उस को निगल गया और चला गया। (شَرحُ الصُّدور ص١٧٥)

**इब्ने मुल्जिम ने मौला अ़ली को क्यूं शहीद किया? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** देखा आप ने! मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के क़ातिल का जो कि ख़ारिजी बद दीन

व गुमराह था कैसा दर्दनाक अन्जाम हुवा ! वोह बद नसीब क्यूं इतना बड़ा गुनाह करने के लिये आमादा हुवा इस सिल्सिले में ह़ज़रते अ़ल्लामा **जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई** عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی ने "मुस्तदरक" के ह़वाले से लिखा है कि इब्ने मुल्जिम एक क़ित़ाम नामी ख़ारिजिया औ़रत के इश्क़े मजाज़ी में गिरिफ़्तार हो गया था, उस ने शादी के लिये मह्र में तीन हज़ार दिरहम और ह़ज़रते मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجهَهُ الکَرِیم के क़त्ल का मुत़ा–लबा रखा था। (تاریخُ الْخُلَفاء ص ۱۳۹، اَلْمُستَدرَک ج ٤ ص ۱۲۱ رقم ٤٧٤٤)
अफ़्सोस ! इश्क़े मजाज़ी में इब्ने मुल्जिम अन्धा हो गया और उस ने ह़ज़रते मौलाए काएनात, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجهَهُ الکَرِیم जैसी अ़ज़ीम हस्ती को शहीद कर दिया, इस ना बकार को वोह औ़रत तो ख़ाक मिलनी थी हाथों हाथ येह सज़ा मिली कि लोगों ने देखते ही देखते उसे पकड़ लिया, बिल आख़िर उस के बदन के टुकड़े टुकड़े कर के टोकरे में डाल कर आग लगा दी गई और वोह जल कर ख़ाकिस्तर हो गया ! और मरने के बा'द ता क़ियामत जारी रहने वाले इस के लरज़ा ख़ैज़ अ़ज़ाब का अभी आप ने तज़्किरा सुना। वोह बद बख़्त, न इधर का रहा न उधर का रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बिल्कुल सच फ़रमाया है कि "शह्वत की घड़ी भर के लिये पैरवी त़वील ग़म का बाइ़स बनती है।" **( सह़ाबी का क़ौल यहीं तक है )** क़ाबील भी तो शह्वत ही की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को शहीद कर के बरबाद हुवा और बरबाद भी कैसा हुवा कि सिर्फ़ सुन कर ही झुरझुरी आ जाए ! तो इस की भी **ह़िकायत** मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये और शह्वत की आफ़त से रब्बुल इ़ज़्ज़त की पनाह मांगिये :

**(6) हौज़ पर उलटा लटका हुवा आदमी : अ़ब्दुल्लाह** कहते हैं : हम चन्द अफ़राद समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए। इत्तिफ़ाक़न चन्द रोज़ तक अंधेरा छाया रहा, जब रोशनी हुई तो एक बस्ती आ गई। **अ़ब्दुल्लाह** कहते हैं कि मैं पीने के लिये पानी की तलाश में रवाना हुवा तो बस्ती के दरवाज़े बन्द थे, मैं ने बहुत आवाज़ें दीं, कोई जवाब न आया, इसी अस्ना में दो शह सुवार (या'नी दो घोड़े सुवार) नुमूदार हुए, उन्हों ने कहा : ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! उस गली में दाख़िल हो जाओ तो तुम्हें पानी का एक हौज़ मिलेगा उस में से पानी ले लेना और वहां के मन्ज़र को देख कर

ख़ौफ़ज़दा न होना। मैं ने उन से उन बन्द दरवाज़ों के बारे में दरयाफ़्त किया जिन में हवाएं चल रही थीं, उन्हों ने बताया : "येह वोह घर हैं जिन में **मुर्दों** की रूहें रहती हैं।" फिर मैं **हौज़** पर पहुंचा तो मैं ने देखा कि **एक शख़्स पानी पर उलटा लटका हुवा है** वोह अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है, मुझे देख कर पुकारने लगा : ऐ **अ़ब्दुल्लाह !** मुझे पानी पिलाओ। मैं ने बरतन ले कर डुबोया ताकि उसे पानी पिला सकूं लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने उस **लटके हुए आदमी** से कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! तूने देख लिया कि मैं ने अपनी त़रफ़ से कोशिश की, कि तुझे पानी पिलाऊं लेकिन मेरा हाथ पकड़ा गया, तू मुझे अपना वाक़िआ़ बता। उस ने कहा : मैं ह़ज़रते **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام का लड़का (क़ाबील) हूं, जिस ने दुन्या में सब से पहला क़त्ल किया। (كتاب مَن عاشَ بَعد المَوت مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج٦ ص٢٩٧ رقم ٤٨)

**क़ाबील के सियाह कारनामे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़ाबील शुरूअ़ में मुसल्मान था बा'द में मुरतद हो गया था, इसी ने दुन्या का सब से पहला क़त्ल किया, इसे दुन्या में येह सज़ाएं मिलीं कि क़त्ल करते ही उस का गोरा रंग सियाही में तब्दील हो गया, दिल एक दम सख़्त हो गया, अपनी बहन इक़्लीमा को अ़दन की त़रफ़ ले कर भाग गया, ह़राम औलाद हुई, जब बुढ्ढा हो गया तो उस की औलाद इस को पथ्थर मारती थी, यहां तक कि अपनी औलाद के पथ्थर ही से हलाक हो गया। हलाकत के बा'द मिलने वाली सज़ा का लरज़ा ख़ैज़ वाक़िआ़ आप सुन चुके। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **क़ाबील के सियाह कारनामे** बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म न मानना, ना जाइज़ निकाह़ का इरादा करना, हाबील के क़त्ल का इरादा करना, हाबील के क़त्ल के बा'द मुरतद हो जाना, गाना बजाना, बाजे ताशे ईजाद करना। मज़ीद फ़रमाते हैं : मुरतद व बे दीन को नबी-ज़ादा होना बिल्कुल ही बेकार है, पैग़म्बर ज़ादगी (सिर्फ़) ईमान के साथ मुफ़ीद है, देखो क़ाबील नबी-ज़ादा था मगर हलाक हो गया। (माख़ूज़ अज़ तफ़्सीरे नईमी, जि. 6, स. 403, 405)

*तेरी रह़मतों ही से ईमां मिला है* — *न हो अब येह मुझ से जुदा या इलाही*
*मुसल्मां है अ़त्तार तेरे करम से* — *हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही*

**दर्स में शिर्कत इस्लाह़ का सबब बन गई :** **ईमान** की हि़फ़ाज़त का जज़्बा पाने, **ग़ीबत** करने सुनने की ख़स्लत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुता़बिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने ज़िम्मेदार यहां को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स, इन्फ़िरादी कोशिश, माहे र-मज़ानुल मुबारक में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ की भी बड़ी ब-र-कतें हैं ! आइये ! इस ज़िम्न में एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करूं। भम्बर, कश्मीर के एक इस्लामी भाई फ़र्स्ट इयर में पढ़ते थे, कॉलेज का आज़ादाना माह़ोल था, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने का शौक़ जुनून (या'नी पागल) की ह़द तक था ह़त्ता कि उस गाड़ी में सफ़र नहीं करते थे जिस में गाने या फ़िल्म न होती ! उन की कॉलोनी में दा'वते इस्लामी के एक इस्लामी भाई तशरीफ़ लाए उन्हों ने **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स दिया और एक दुआ़ याद करवाई। इस से वोह बहुत ज़ियादा मु-तअस्सिर हुए, इस के बा'द से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत सुनना शुरूअ़ कर दिया। उन के **म-दनी माह़ोल** से बा क़ाइदा वाबस्तगी की एक बहुत बड़ी वज्ह उन के अ़लाक़े के एक मुबल्लिग़ का हुस्ने अख़्लाक़, आ'ला किरदार, जज़्बए हुस्ने अ़मल और **मह़ब्बत** भरे अन्दाज़ में इन्फ़िरादी कोशिश करना है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने माहे **र-मज़ानुल मुबारक** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ दस दिन के ए'तिकाफ़ की भी सआ़दत ह़ासिल की। इस का उन पर बड़ा गहरा असर हुवा और वोह गुनाहों से ताइब हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **कश्मीर में दा'वते इस्लामी की एक ''मजलिस''** के निगरान बने और कश्मीर के एक डिवीज़न की निगरानी से भी मुशर्रफ़ हुए।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** की ब-र-कत से

**म-दनी माह़ोल** की त़रफ़ रग़बत मिली, इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** व शफ़्क़त ने मज़ीद तक्वियत बख़्शी और सद करोड़ मरह़बा ! **म-दनी माह़ोल** के अन्दर होने वाले सुन्नतों भरे ए'तिकाफ़े र-मज़ान ने गुनाहों की गहरी खाई में गिरे हुए इन्सान को सहारा दे कर निकाला और इतनी ज़बर दस्त अ़-ज़मत बख़्शी कि **दा'वते इस्लामी** के बहुत सारे ज़िम्मेदारों का भी ज़िम्मेदार बना दिया। काश ! तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें (ब शुमूल सब के सब छोटे बड़े ज़िम्मेदारान) रोज़ाना **दो दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** देने या सुनने की तरकीब फ़रमा लिया करें।

**क़ब्र की रोशनी : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़ह़ा 195 ता 196 पर है : दर्सो बयान के सवाब का भी क्या कहना ! ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़िश्शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल करते हैं : **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई, "**भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़शत न हो।**" (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج٦ ص٥ حديث٧٦٢٢)

**क़ब्रें जगमगा रही होंगी : इस** रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सीखने सिखाने की निय्यत से सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ मह़सूस नहीं होगा। अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नेकी की दा'वत देने वालों, **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र और फ़िक्रे मदीना कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ ब निय्यते सवाब **मुबल्लिग़ीन** की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की कुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़ुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

*क़ब्र में लहराएंगे ता हश्र चश्मे नूर के*
*जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**दा'वत में ग़ीबत की ह़िकायत : ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم कहीं खाने की दा'वत पर तशरीफ़ ले गए, लोगों ने आपस में कहा कि फुलां शख़्स अभी तक नहीं आया। एक शख़्स बोला : वोह **मोटा तो बड़ा सुस्त** है। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم अपने आप को मलामत करते हुए फ़रमाने लगे : अफ़्सोस ! मेरे पेट की वज्ह से मुझ पर येह आफ़त आई है कि मैं एक ऐसी मजलिस (या'नी बैठक) में पहुंच गया जहां एक मुसल्मान की **ग़ीबत** हो रही है। येह कह कर वहां से वापस तशरीफ़ ले गए और (इस सदमे से) तीन (और ब रिवायते दीगर सात) दिन तक खाना न खाया। (تَنبِیهُ الْغافِلِین ص۸۹)

## "ग़ीबत करना गुनाहे कबीरा है" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से किसी को सुस्त वग़ैरा कहने के मु-तअ़ल्लिक़ 19 मिसालें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे मुसल्मान की आबरू रेज़ी बिल्कुल बरदाश्त नहीं करते और ऐसी बैठकों और दा'वतों को भी तर्क कर देते हैं जहां मुसल्मानों की **ग़ीबतों** का सिलसिला हो। क्या कभी हम भी किसी **ग़ीबतों भरी** दा'वत या बैठक से "वॉक आउट" हुए ? हां, वहां से उठ कर चल देने से पहले अपनी बात का वज़्न देखना होगा या'नी अगर येह ज़न्ने ग़ालिब हो कि समझाने से **ग़ीबत** करने वाले तौबा कर लेंगे तब तो उन्हें **ग़ीबत** से बाज़ रखना आप पर वाजिब हो जाएगा और अगर ऐसी सूरत नहीं तो जिस त़रह़ मुम्किन हो **ग़ीबत** सुनने से बचिये और अगर फ़ितना व फ़साद का ख़ौफ़ न हो तो वहां से उठ कर

चल दीजिये। चूंकि **ग़ीबत** की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं लिहाज़ा समझाने और उठ कर जाने वाले के पास इतना इल्म होना ज़रूरी है जिस से वोह येह तै कर सके कि वाक़ेई गुनाहों भरी **ग़ीबत** हो रही है। इस **हिकायत** से मा'लूम हुवा कि पीठ पीछे किसी को "मोटा" और "सुस्त" कहना भी **ग़ीबत** में दाखि़ल है। **मोटा** और **सुस्त** दोनों अलग अलग अल्फ़ाज़ हैं या'नी अगर किसी भारी भरकम आदमी को पीछे से बिला इजाज़ते शर-ई मोटा कहा तब भी **ग़ीबत** है इसी त़रह़ बिला इजाज़ते शर-ई पीछे से किसी को ❁ सुस्त ❁ काहिल ❁ नाकारा ❁ ढीला ❁ कामचोर ❁ निकम्मा ❁ निखट्टू ❁ गंवार ❁ जाहिल ❁ अनपढ़ ❁ कम अ़क्ल ❁ अह़मक़ ❁ बे वुक़ूफ़ ❁ नादान ❁ पगला ❁ बावला ❁ पागल ❁ देर से समझने वाला ❁ मोटी अ़क्ल वाला वग़ैरा कहना भी **ग़ीबत** है।

*मेरे सर पर इस्यां का बार आह मौला ! बढ़ा जाता है दम बदम या इलाही*
*ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है येह तेरा ही तो है करम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 110)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**दोनों जहां की ज़िल्लत : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ह़ा 347 पर फ़रमाते हैं : जो मज़्लूम की दाद रसी पर क़ादिर हो और न करे तो उस के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। ह़दीस में है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **"जिस शख़्स के सामने उस के मुसल्मान**

**भाई की ग़ीबत की जाए और येह उस की मदद पर क़ादिर हो और न करे, अल्लाह तआला उसे दुन्या व आख़िरत में पकड़ेगा।''** (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْيا ص۱۳۴ رقم۱۰۸) **मज़ीद** इसी जिल्द के सफ़्ह़ा 426 ता 427 पर लिखते हैं : **नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **''जिस शख़्स के सामने किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती की जाए और वोह त़ाक़त के बा वुजूद उस की इमदाद न करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे लोगों के सामने ज़लीलो रुस्वा करेगा।''** (مُسندِ اِمام احمد ج ٥ ص ٤١٢ حدیث ١٥٩٨٥) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ येह ह़दीसे पाक लिखने के बा'द तह़रीर फ़रमाते हैं : अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुसल्मान की (ग़ीबत वग़ैरा के ज़रीए) बे इ़ज़्ज़ती को देख कर **ख़ामोश रहना** ऐसे (या'नी क़ियामत की रुस्वाई के) अ़ज़ाब का बाइ़स है तो ख़ुद उसे (या'नी किसी मुसल्मान को ग़ीबत वग़ैरा के ज़रीए) ज़लील करने के दरपै होना और जिस (मन्सब और) मर्तबे की वज्ह से उसे मुसल्मानों के नज़्दीक **इ़ज़्ज़त** ह़ासिल हो उस में (ग़ीबतों, इल्ज़ाम तराशियों और बद गुमानियों वग़ैरा के ज़रीए) रख़्ना अन्दाज़ी (या'नी ख़लल डालने) की कोशिश करना किस क़दर अ़ज़ाब और **अल्लाह** तआला के ग़ज़ब का सबब होगा !

(फ़तावा र-ज़विय्या)

**अल्लाह की दी हुई इ़ज़्ज़त कौन छीन सकता है ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान कर्दा रिवायात और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़रमूदात (या'नी इर्शादात) से वोह ह़ज़रात इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बिला इजाज़ते शर-ई किसी सुन्नी आ़लिम, पेश्वा, सर-बराह किसी तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार या किसी भी आ़म मुसल्मान के पीछे पड़ जाते हैं। उस को ह-दफ़े तन्क़ीद बनाते हुए उस की इ़ज़्ज़त उछालने लगते हैं, यूं **ग़ीबतों**, चुग़लियों, तोह्मतों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों, दिल आज़ारियों और न जाने किन किन गुनाहों के मुर-तकिब होते हैं। जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुअ़ज़्ज़ज़ किया हो उस की **इ़ज़्ज़त** कौन छीन सकता है ! सुनो ! सुनो ! जो बद नसीब बिला वज्हे शर-ई किसी मुसल्मान की मुख़ा-लफ़त करते उन को बदनाम करते फिरते हैं ऐसों के बारे में कुरआने करीम क्या फ़रमाता है चुनान्चे पारह 18 **सू-रतुन्नूर** आयत नम्बर 19 में **अल्लाहु** रह़मान

عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

*मुझे ग़ीबतों से तू महफ़ूज़ फ़रमा पए सरवरे दो जहां या इलाही*
*जो शाहे मदीना की ना'तें सुनाए अ़ता कर दे ऐसी ज़बां या इलाही*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने ख़्वाब में फ़रमाया : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने मा'मूल बना लीजिये। आइये "मस्जिद भरो इज्तिमाअ़" की एक अनोखी म-दनी बहार सुनते हैं चुनान्चे اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 10 सितम्बर 2004 बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक तह़सील ठरी मीरवाह से मुत्तसिल "गोठ ह़ाजी इल्यास ख़ास ख़ैली" (पाकिस्तान) की **जीलानी मस्जिद** में बा'द नमाज़े इ़शा "मस्जिद भरो इज्तिमाअ़" हुवा। मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़** सितम्बर (2004) में शिर्कत और हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भरपूर तरग़ीब दिलाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 7 इस्लामी भाई 12 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** के लिये हाथों

हाथ तय्यार हो गए। उसी रात उसी गाउं के एक ख़ुश नसीब इस्लामी भाई जो कि **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सोए थे उन को **सरकारे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ख़्वाब** में ज़ियारत हुई, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सलाम** इर्शाद फ़रमाने के बा'द ख़ुद ही अपना तआरुफ़ भी करवाया कि मैं **मुहम्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हूं और जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी था ''तुम्हारे गाउं पर ख़ुसूसी करम हो गया है।'' मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''जो चेहरे पर **दाढ़ी सजाए** उस की मुझ से महब्बत है और जो **दाढ़ी मुंडाए** उस की मुझ से **महब्बत** नहीं और तू रोज़ तहज्जुद की निय्यत करता है मगर सुस्ती कर जाता है, उठ और **तहज्जुद** अदा कर।'' जब भरे मज्मअ़ में उस इस्लामी भाई ने क़सम खा कर अपना ख़्वाब सुनाया तो सुन कर कई इस्लामी भाइयों ने **चेहरे पर दाढ़ी सजाने** और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र पर जाने की निय्यतें कीं।

*गोठ में गाउं में, धूप में छाउं में — सब से कहते रहें, क़ाफ़िले में चलो*
*जंगलो कोह में, कोह की खोह में — दीं के डंके बजें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मस्जिद भरो इज्तिमाअ़ मरहबा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ''मस्जिद भरो इज्तिमाअ़'' की ब-र-कतों की भी क्या बात है! बा'ज़ अवक़ात सियासी तौर पर ''जेल भरो'' तहरीक चलाई जाती है, **दा'वते इस्लामी** चूंकि सुन्नतों भरी **ग़ैर सियासी** म-दनी तहरीक है येह **मस्जिद भरो** के अ़ज़ाइम रखती है और चाहती है कि बस किसी तरह भी उम्मत का बच्चा बच्चा **नमाज़ी** बन जाए। इस **म-दनी बहार** का अहम हिस्सा ख़्वाब में महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत और येह पैग़ामे रिसालत है : जो चेहरे पर **दाढ़ी सजाए** उस की मुझ से **महब्बत** है और जो **दाढ़ी मुंडाए** उस की मुझ से महब्बत नहीं। ख़्वाब की इस बात की ताईद इस ह़दीसे पाक से होती है जिस में येह **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फैर ले वोह मेरा नहीं।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج۳۸ص۱۲۷)

**दाढ़ी के मु-तअ़ल्लिक़ एक इब्रतनाक ख़्वाब : मैं** (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہٗ) दा'वते इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िले** के हमराह मुख़्तलिफ़ शहरों का सफ़र करता हुवा हिन्द के सूबए गुजरात के एक साहिली शह्र "वेरावल" हाज़िर हुवा, वहां एक क्लीन शेव नौ जवान से मुलाक़ात हुई जिस ने मुझ से कुछ इस त़रह़ ख़्वाब बयान किया : मैं ने देखा, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी के ज़ानू पर सरे अन्वर रख कर लैटे हुए हैं, क़रीब ही **दा'वते इस्लामी** का एक मुबल्लिग़ हाज़िर है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से फ़रमाने लगे : (अल्फ़ाज़ याद नहीं मज़मून कुछ इस त़रह़ था) **"मेरे उम्मती दाढ़ी मुंडवाते हैं इस से मेरे सीने में दर्द होता है।"** येह सुन कर उस मुबल्लिग़ ने मुझ क्लीन शेव के चेहरे पर अपने दोनों हाथ फैर दिये और मेरी आंख खुल गई। (ग़ालिबन वोह ख़्वाब ताज़ा तरीन था उस नौ जवान ने मेरे सामने दाढ़ी बढ़ाने के अ़ज़्म का इज़्हार किया)

**आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी सजा लीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जिस ने अभी तक दाढ़ी नहीं रखी उस को चाहिये कि अपने मीठे मीठे म-दनी मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी **दाढ़ी शरीफ़** अपने चेहरे पर सजा ले, अब तक मुंडाई या ठोडी के नीचे एक मुठ्ठी से घटाई इस से तौबा भी कर ले। शैत़ान लाख रोके दाढ़ी के मु-तअ़ल्लिक़ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का दिल हिला देने वाला रिसाला, **"काले बिच्छू"** (सफ़ह़ात 25) का मुत़ा-लआ़ कीजिये। नीज़ **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा "काले बिच्छू" नामी ऑडियो **केसेट** सुनिये या V.C.D देखिये।

*सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है*
*क्यूं इ़श्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 163)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**सूद से बड़ा गुनाह कौन सा है ? : हुज़ूर** सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल **आ़–लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **सूद** से बड़ा गुनाह कौन सा है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं। फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सूद से बढ़ कर गुनाह है मुसल्मान की इ़ज़्ज़त को ह़लाल समझना। फिर रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۵۸﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

(شُعَبُ الایمان لِلبَیہقی ج۵ ص۲۹۸ حدیث۶۷۱۱)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यक़ीनन मुसल्मान की **इ़ज़्ज़त पर** हाथ डालना सूद जैसे गुनाहे बद से भी बद तरीन है। इस ज़िम्न में मज़ीद **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये :

**मुसल्मान की इ़ज़्ज़त पर हाथ डालना सूद से बड़ा गुनाह है :** ﴾**1**﴿ आदमी को मिलने वाला सूद का एक **दिरहम अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक छत्तीस (36) बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है और बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है। (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنیا ص۸۰ حدیث۳۶) ﴾**2**﴿ सूद बहत्तर (72) गुनाहों का मज्मूआ़ है और इन में से अदना तरीन अपनी मां से ज़िना करने की त़रह़ है और बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की **बे इ़ज़्ज़ती** करना है। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۵ ص۲۲۷ حدیث۷۱۵۱) ﴾**3**﴿ बद तरीन सूद मुसल्मान की आबरू में नाह़क़ दस्त दराज़ी है। (سُنَنِ ابوداوٗدج ۴ ص ۳۵۳ حدیث ۴۸۷۶) ह़दीसे पाक नम्बर 3 के तह़त **मुफ़स्सिरे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी सूद-ख़्वारी बद तरीन गुनाह है जैसे मां के साथ का'बए मुअ़ज़्ज़मा में ज़िना करना, सूद-ख़्वार को **अल्लाह रसूल** से जंग करने का अल्टी मेटम दिया गया है, येह तो **माली सूद** का ह़ाल है, **मुसल्मान की आबरू** चूंकि माल से ज़ियादा अ़ज़ीज़ और क़ीमती है इसी लिये मुसल्मान की आबरू रेज़ी (ग़ीबत वग़ैरा कर के), इसे ज़लील करना **बद तरीन सूद** क़रार दिया गया।

(मिरआत, जि. 6, स. 618)

*बिल्यक़ीं ऐसे मुसल्मां हैं बड़े ही नादां — अहले इस्लाम की ग़ीबत जो किया करते हैं*
*जो हैं सुल्ताने मदीना के ह़क़ीक़ी आ़शिक़ — ग़ीबतो चुग़लियो तोहमत से बचा करते हैं*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त का सवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप के सामने जब भी कोई आदमी किसी इस्लामी भाई की ख़त़ा या उस के ऐ़ब का तज़्किरा उस की मौजू-दगी में या पसे पुश्त (या'नी पीठ पीछे) शुरूअ़ करे तो सुनने में अगर कोई मस्लह़ते शर-ई न हो तो फ़ौरन **एह़तिरामे मुस्लिम** का लिह़ाज़ करते हुए सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से अपने इस्लामी भाई की **इ़ज़्ज़त** की हि़फ़ाज़त करने की तरकीब कीजिये। ताजदारे रिसालत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, सरापा अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : जो अपने (मुसल्मान) भाई की पीठ पीछे उस की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे **जहन्नम** से आज़ाद कर दे। (مُسندِ اِمام احمد ج٦ ص٤٦١) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने दुन्या में अपने भाई की इ़ज़्ज़त की हि़फ़ाज़त की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत

के दिन एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो जहन्नम से उस की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा।

(ذَمُّ الْغِیْبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص ۱۳۱ حدیث۱۰۵)

**ग़ीबत से रोकने के चार फ़ज़ाइल : मुसल्मान** की **ग़ीबत** करने वाले को रोकने की क़ुदरत होने की सूरत में रोक देना वाजिब है, रोकना सवाबे अ़ज़ीम और न रोकना बाइ़से अ़ज़ाबे अलीम (या'नी दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइ़स) है इस ज़िम्न में **चार फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ जिस के सामने उस के मुसल्मान भाई की **ग़ीबत** की जाए और वोह उस की मदद पर क़ादिर हो और मदद करे, **अल्लाह** तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उस की मदद करेगा और अगर बा वुजूदे क़ुदरत उस की मदद नहीं की तो **अल्लाह** तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उसे पकड़ेगा।

(مُصَنَّف عَبد الرَّزّاق ج ۱۰ ص ۱۸۸ رقم ۲۰۴۲۶)

﴾2﴿ जो शख़्स अपने भाई के गोश्त से उस की **ग़ैबत** (अ़दम मौजू-दगी)में रोके (या'नी मुसल्मान की **ग़ीबत** की जा रही थी इस ने रोका) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे। (مِشْکاةُ الْمَصابِیح ج ۳ ص ۷۰ حدیث ۴۹۸۱)

﴾3﴿ जो मुसल्मान अपने भाई की आबरू से रोके (या'नी किसी मुस्लिम की आबरू रेज़ी होती थी उस ने मन्अ़ किया) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि क़ियामत के दिन उस को जहन्नम की आग से बचाए। इस के बा'द इस आयत की तिलावत फ़रमाई : وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴾**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना। (پ ۲۱ الروم: ۷)﴿

(شرحُ السنّة ج ۶ ص ۴۹۴ حدیث ۳۴۲۲)

﴾4﴿ जहां मर्दे मुस्लिम की हत्के ह़ुरमत (या'नी बे इ़ज़्ज़ती) की जाती हो और उस की आबरू रेज़ी की जाती हो ऐसी जगह जिस ने उस की मदद न की (या'नी येह ख़ामोश सुनता रहा और उन को मन्अ़ न किया) तो **अल्लाह** तआ़ला उस की मदद नहीं करेगा जहां इसे पसन्द हो कि मदद की जाए और जो शख़्स मर्दे

मुस्लिम की मदद करेगा ऐसे मौक़अ़ पर जहां उस की हत्के हुरमत (या'नी बे इ़ज़्ज़ती) और आबरू रेज़ी की जा रही हो, **अल्लाह** तआ़ला उस की मदद फ़रमाएगा ऐसे मौक़अ़ पर जहां इसे मह़बूब (या'नी पसन्द) है कि मदद की जाए। (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٥٥ حدیث ٤٨٨٤)

**ग़ीबत करने वाले के सामने ता'रीफ़ : हमारे** अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی किसी से मुसल्मान की **ग़ीबत** सुनते तो उसे फ़ौरन टोकते और उन का अन्दाज़ भी कितना ह़सीन होता ! चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजलिस में एक शख़्स ने सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की **ग़ीबत** की तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ शख़्स ! तू इमाम के ऐब क्यूं बयान करता है ! उन की शान तो येह थी कि **पेंतालीस**[45] साल तक एक वुज़ू से **पांचों वक़्त की नमाज़** अदा करते रहे। (اَلْخَیراتُ الحِسان لِلْهَیتَمِی ص١١٧، رَدُّالْمُحتار ج١ ص١٥٠)

**ग़ीबत करने वाले से पीछा छुड़ाने का त़रीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن का गुनाहों भरी **ग़ीबत** सुनने से बचने का जज़्बा मरह़बा ! काश ! सद करोड़ काश ! हमारा येह ज़ेहन बन जाए कि जूं ही किसी मुसल्मान का मन्फ़ी (NEGATIVE) तज़्किरा निकले फ़ौरन ख़बरदार हो जाइये और ग़ौर कीजिये, अगर वोह तज़्किरा **ग़ीबत** पर मब्नी या **ग़ीबत** की त़रफ़ ले जाने वाला हो तो फ़ौरन उस से बाज़ आ जाइये, अगर कोई और आदमी येह गुफ़्त-गू करने लगा हो तो उस को मुनासिब त़रीक़े पर रोक दीजिये, अगर वोह बाज़ न आए तो वहां से उठ जाइये, अगर उसे रोकना या अपना वहां से हटना मुम्किन न हो तो दिल में बुरा जानिये, तरकीब से बात बदल दीजिये उस गुफ़्त-गू में दिलचस्पी मत लीजिये, म-सलन इधर उधर देखने लग जाइये, मुंह पर बेज़ारी के आसार लाइये, बार बार घड़ी देख कर उक्ताहट का इज़्हार फ़रमाइये, मुम्किन हो तो इस्तिन्जा ख़ाने का कह कर ही उठ जाइये और फिर आप का कहा झूट न हो जाए इस लिये इस्तिन्जा भी कर लीजिये। "**ग़ीबत गाह**" में ह़ाज़िर रहने के बजाए

मजबूरन इस्तिन्जा ख़ाने में वक़्त गुज़ारना बहुत मुनासिब अ़मल है اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस पर भी सवाब मिलेगा।

*अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा*

*महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 115)

**ग़ीबत करने वाले को इशारे से नहीं ज़बान से रोकिये : हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى के फ़रमाने वाला शान का ख़ुलासा है : जहां **ग़ीबत** हो रही हो और येह (मुरव्वत में नहीं बल्कि) डर के सबब ज़बान से रोक नहीं सकता तो दिल में बुरा जाने तो अब इसे गुनाह नहीं होगा, अगर वहां से उठ कर जा सकता है या गुफ़्त–गू का रुख़ बदल सकता है मगर ऐसा नहीं करता तो **गुनहगार** है, अगर ज़बान से कह भी देता है कि "ख़ामोश हो जाओ" मगर दिल से सुनना चाहता है तो येह **मुना–फ़क़त** है और जब तक दिल से बुरा न जाने गुनाह से बाहर न होगा, फ़क़त़ हाथ या अपने अब्रू या पेशानी के इशारे से चुप कराना काफ़ी न होगा क्यूं कि येह सुस्ती है और **ग़ीबत** जैसे गुनाह को मा'मूली समझने की अ़लामत है, (अगर फ़साद का अन्देशा न हो तो) **ग़ीबत** करने वाले को सख़्ती से वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में रोके। (اِحياءُ الْعُلوم ج٣ ص١٨٠) ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के पास किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वोह त़ाक़त (रखने) के बा वुजूद उस की मदद न करे **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन लोगों के सामने उसे रुस्वा करेगा। (مُسندِ اِمام احمدبن حنبل ج٥ ص٤١٢ حديث١٥٩٨٥)

**उ़–लमा को अ़वाम न टोकें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ीबत से रोकने वाले के लिये इतनी मा'लूमात होना ज़रूरी है कि वोह गुनाहों भरी **ग़ीबत** की पहचान रखता हो नीज़ रोकते वक़्त अपनी बात का वज़्न देखना भी बहुत ज़रूरी है कहीं ऐसा न हो कि आप किसी को मन्अ़ करें और कोई फ़ितना खड़ा हो जाए येह बात भी ज़ेह्न में रखिये कि बा'ज़ अवक़ात बिल ख़ुसूस अहले इ़ल्म

ह़ज़रात की कोई बात सरसरी त़ौर पर सुनने वाले को **ग़ीबत** लगती है मगर दर ह़क़ीक़त वोह गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं होती क्यूं कि **ग़ीबत** की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं, मुह़ा-वरा है : خَطائے بُزُرگان گرِفتَن خطا اَست या'नी "बुज़ुर्गों पर ए'तिराज़ करना, उन की ख़त़ा पकड़ना, ख़ुद ख़त़ा है।" लिहाज़ा उ़-लमाए किराम को अ़वाम हरगिज़ न टोकें और उन के लिये दिल में मैल भी न लाएं। हां अगर आप को **ग़ीबत** के बारे में मा'लूमात हों और वोह आ़लिम साहि़ब वाक़ेई़ सरीह़ **ग़ीबत** कर रहे हों तो वहां से उठ जाइये, मुम्किन हो तो बात का रुख़ बदल दीजिये अगर हटना या बात बदलना और किसी त़रह़ से **ग़ीबत** सुनने से बचना मुम्किन न हो तो दिल में बुरा जानते हुए ह़त्तल मक्दूर बे तवज्जोही बरतिये। अगर "हां" में सर हिलाएंगे या दिलचस्पी और तअ़ज्जुब का इज़्हार करेंगे, ताईद में "अच्छा", "जी", "ओहो" वग़ैरा आवाज़ें निकालेंगे तो गुनहगार होंगे।

**आ़लिम को टोकने के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 708 पर लिखते हैं : उ़-लमा पर अ़वाम को (ह़क़्क़े) ए'तिराज़ नहीं पहुंचता और जो मश्हूर ब मा'रिफ़त हो उस का मुआ़-मला ज़ियादा नाज़ुक है हर आ़मी मुसल्मान के लिये हुक्म है कि उस के (या'नी उस आ़म मुसल्मान के भी) हर क़ौल व फ़े'ल के लिये सत्तर (70) मह़मले ह़सन (या'नी अच्छे एह़तिमालात और जाइज़ तावीलात) तलाश करो, (उन अ़वाम पर भी बद गुमानी मत करो) न कि उ़-लमा व मशाइख़ जिन पर **ए'तिराज़** का अ़वाम को कोई ह़क़ (ही ह़ासिल) नहीं ! यहां तक कि कुतुबे दीनिया में तसरीह़ (या'नी साफ़ लिखा) है अगर सरा-ह़तन नमाज़ का वक़्त जा रहा है और आ़लिम नहीं उठता तो जाहिल का येह कहना गुस्ताख़ी है कि "नमाज़ को चलिये", वोह (या'नी आ़लिम) इस (या'नी ग़ैरे आ़लिम) के लिये हादी (या'नी रहनुमा) बनाया गया है न कि येह (जाहिल)

उस (आ़लिम) के लिये। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 708)

*सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबतो चुग़ली तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब*
*करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़त़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**जिस को सलामती की दुआ़ दी उसी की ग़ीबत !!! :** किसी को **सलाम** कर के जान व माल और इ़ज़्ज़तो आबरू वग़ैरा की सलामती की दुआ़ दी और फिर जूं ही वहां से हटे مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उसी की इ़ज़्ज़त उछालनी या'नी **ग़ीबत** करनी शुरूअ़ कर दी येह कैसा अ़जीब मुआ़-मला है ! जी हां, "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم" के मा'ना हैं : "तुम पर सलामती हो।" लगे हाथों **सलाम की निय्यत** भी मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 102 पर लिखे हुए जुज़्इये का ख़ुलासा है : "**सलाम** करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को **सलाम** करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।" (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۸۲) **आ़रिफ़ बिल्लाह,** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे मुलाक़ात के वक़्त **सलाम** करते तो इस से येह मुराद लेते कि तू मेरी त़रफ़ से सलामत रहा, मैं तेरी **ग़ीबत** और मज़म्मत नहीं करूंगा। (قوتُ القُلوب ج۱ ص۳۴۸)

*करूं किसी की भी ग़ीबत न मैं कभी या रब ख़ुदाए पाक करम ! अज़ पए नबी या रब*
*मुआ़फ़ कर दे गुनाह तू मेरे सभी या रब तुफ़ैले ह़ज़रते शेरे ख़ुदा अ़ली या रब*

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ**

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**ख़ौफ़नाक ह़ादिसा होते होते रह गया : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की त-रबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी दीजिये न जाने कब दिल चोट खा जाए और दोनों जहां में भलाइयां इनायत हो जाएं। आप की तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं **:** 1425 सि.हि. में होने वाले बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया, मुलतान शरीफ़) के चन्द रोज़ बा'द (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) से मिलने एक साह़िब पंजाब से बाबुल मदीना कराची आए, उन के बयान का ख़ुलासा कुछ इस त़रह़ है, ''मैं **A.C.** कोच का ड्राइवर हूं, परेशानियों ने तबाह ह़ाल कर दिया था, शैत़ान मुझे बावला बना कर मेरा येह ज़ेह्न बना चुका था कि दुन्या वाले मत़्लबी और बे वफ़ा हैं मुझे **ख़ुदकुशी** कर लेनी है मगर तन्हा नहीं औरों को भी साथ ले कर मरना है। बहर ह़ाल उन्हों ने येह तै़ किया हुवा था कि खचाखच भरी हुई कोच को पूरी रफ़्तार के साथ गहरी खाई में गिरा कर सब सुवारियों समेत अपने आप को ख़त्म कर दूंगा। ऐसे में सुवारियां ले कर इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना, मुलतान शरीफ़) में आने की सआ़दत मिल गई। गोया उन के ही लिये **ख़ुदकुशी का इलाज** नामी बयान हुवा, सुन कर वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठा, उन्हों ने अच्छी त़रह़ समझ लिया कि **ख़ुदकुशी** से जान छूटती नहीं मज़ीद फंस जाती है। उन्हों ने सच्चे दिल से तौबा की, उन का कहना था कि बयान करने वाले का नाम व पता लोगों से ले कर अब आप के पास दुआ़एं लेने आया हूं।'' उन के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर की गई, नमाज़ की पाबन्दी, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र वग़ैरा की **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर के रोते हुए पलट गए।

**क्या ख़ुदकुशी से जान छूट जाती है ? : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बयानाते अ़त़्त़ारिय्या"** हिस्सए दुवुम के सफ़ह़ा 404 ता 406 पर है : **ख़ुदकुशी** करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! ह़ालां कि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की सूरत में निहायत बुरी त़रफ़ फंस जाती है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **ख़ुदकुशी** का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

**आग में अ़ज़ाब : ह़दीसे** पाक में है : जो शख़्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा।

(صَحیح بُخاری ج ٤ص ٢٨٩ حدیث ٦٦٥٢)

**उसी हथियार से अ़ज़ाब : ह़ज़रते** सय्यिदुना साबित बिन ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से **ख़ुदकुशी** की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से **अ़ज़ाब** दिया जाएगा।

(صَحیح بُخاری ج١ص ٤٥٩ حدیث ١٣٦٣)

**गला घोंटने का अ़ज़ाब : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की **आग में अपना गला घोंटता रहेगा** और जिस ने ख़ुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में ख़ुद को नेज़ा मारता रहेगा।

(صَحیح بُخاری حدیث ١٣٦٥ ج١ص ٤٦٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदकुशी का इलाज** नामी बयान की केसिट **मक-त-बतुल मदीना** से ह़ासिल कीजिये और सब घर वालों को सुनाइये और ख़ुसूसन परेशान ह़ालों को सुनने के लिये पेश कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इसी बयान को ह़स्बे ज़रूरत तरमीम के साथ

बनाम **ख़ुदकुशी का इलाज** रिसाले की सूरत में भी शाएअ़ किया गया है । अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से ज़ियादा से ज़ियादा ख़रीद कर ग़म के मारों, दुखियारों और बीमारों बल्कि आ़म मुसल्मानों में तक़्सीम कीजिये । अगर पढ़ कर कोई एक भी मुसल्मान **ख़ुदकुशी** के इरादे से बाज़ आ गया तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार होगा ।

*क़ब्र में शक्ल तेरी बिगड़ जाएगी पीप में लाश तेरी लिथड़ जाएगी*
*बाल झड़ जाएंगे खाल उधड़ जाएगी कीड़े पड़ जाएंगे ना'श सड़ जाएगी*
*मत गुनाहों पे हो भाई बेबाक तू भूल मत येह ह़क़ीक़त कि है ख़ाक तू*
*थाम ले दामने शाहे लौलाक तू सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 656)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**घर जा कर नेकी की दा'वत देते :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दरैनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को जब मा'लूम होता कि किसी शख़्स ने उन की **ग़ीबत** की है तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़हमाइश (या'नी समझाने) के लिये उस के घर तशरीफ़ ले जाते और फ़रमाते : ऐ भाई ! आप को क्या हो गया कि आप ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के गुनाह उठा लिये ! (تَنبِیہُ الْمُغتَرِّین ص۱۹۲)

**''गुनाह उठा लिये'' की वज़ाह़त : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस **ह़िकायत** से पता चला कि हमारे अस्लाफ़ अपनी **ग़ीबत** का सुन कर धूआं फूआं हो कर आस्तीनें चढ़ा कर **ग़ीबत** करने वाले पर चढ़ दौड़ने के बजाए, अगर जाना पड़ता तो उस के घर जा कर भी उस को नेकी की दा'वत पहुंचाते और उस के दिल को चोट लगाने वाले कलिमात इर्शाद फ़रमाते । इस **ह़िकायत** में ''गुनाह उठा लिये'' जो कहा गया है इस से मुराद येह है कि अगर बिग़ैर तौबा और मुआ़ताब या'नी

जिस की **ग़ीबत** की उस से बे मुआफ़ करवाए मरा तो जिस की **ग़ीबत** की है उस को अपनी नेकियां देनी पड़ेंगी, अगर नेकियां न हुईं या कम पड़ गईं तो उस के गुनाह अपने सर उठाने पड़ेंगे ! आह ! **ग़ीबत** का मुआ-मला बेहद नाज़ुक है, तौबा तौबा हमारी करोड़ों बार तौबा। अ़हद कीजिये **: न ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा।**

***है ग़ीबत से बचने की निय्यत इलाही***

***मैं क़ाइम रहूं कर इआनत[1] इलाही***

**रहमत पलट जाती है : हज़रते** सय्यिदुना हातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं **:** जब किसी मजलिस में येह तीन बातें हों तो उन लोगों से रहमत पलट जाती है **:** (1) दुन्या का ज़िक्र (2) ज़ियादा हंसना और (3) लोगों की **ग़ीबत** करना। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٤)

**अ़ज़ाबे क़ब्र के तीन हिस्से : हज़रते** सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं **:** हमें बताया गया है कि **अ़ज़ाबे क़ब्र** को तीन हिस्सों में तक़्सीम किया गया है **:** एक तिहाई अ़ज़ाब **ग़ीबत** से, एक तिहाई **चुग़ली** से, और एक तिहाई **पेशाब** (के छींटों से ख़ुद को न बचाने) से होता है।

(ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْيا ص٩٢ رقم٥٢)

**कुत्तों की शक्ल में उठेंगे :** सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **: ग़ीबत** करने वालों, **चुग़ुल** ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों के **ऐ़ब** तलाश करने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक्ल में उठाएगा।

(التّوبيخ والتّنبيه لابی الشيخ الاصبهانی ص٩٧ رقم٢٢٠، اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ص٣٢٥ حديث ١٠)

**मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं **:** ख़याल रहे कि तमाम इन्सान क़ब्रों से ब शक्ले इन्सानी उठेंगे फिर महशर में पहुंच कर बा'ज़ की सूरतें मस्ख़ हो जाएंगी। (या'नी बिगड़ जाएंगी म-सलन मुख़्तलिफ़ जानवरों जैसी हो जाएंगी)

(मिरआत, जि. 6, स. 660)

**1.** या'नी इमदाद

**गोश्त की छोटी सी बोटी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़बान अगर्चे ब ज़ाहिर **गोश्त की एक छोटी सी बोटी** है मगर येह **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीमुश्शान ने'मत है। इस ने'मत की क़द्र तो शायद **गूंगा** ही जान सकता है। **ज़बान** का दुरुस्त इस्ति'माल **जन्नत** में दाख़िल और ग़लत़ इस्ति'माल **जहन्नम** से वासिल कर सकता है। इस ज़बान से तिलावते क़ुरआन करने वाला और दुरूदो सलाम पढ़ने वाला रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़नायत से जन्नत में जाता है। इस ज़बान से किसी मुसल्मान को गाली निकालने वाला नीज़ **ग़ीबत**, चुग़ली व तोहमत का मुर-तकिब अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पाता है। अगर कोई बद तरीन काफ़िर भी दिल की तस्दीक़ के साथ ज़बान से **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰه** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ ले तो कुफ़्रो शिर्क की सारी गन्दगी से पाक हो जाता है उस की **ज़बान** से निकला हुवा येह **कलिमए त़य्यिबा** उस के गुज़श्ता तमाम गुनाहों के मैल कुचैल को धो डालता है। **ज़बान** से अदा किये हुए इस कलिमए पाक के बाइ़स वोह गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाता है जैसा कि उस रोज़ था जिस रोज़ उस की मां ने उसे जना था। येह अ़ज़ीम **म-दनी इन्क़िलाब** दिल की ताईद के साथ **ज़बान** से अदा किये हुए कलिमे शरीफ़ की बदौलत आया।

**हर बात पर साल भर की इ़बादत का सवाब : ऐ** काश ! हम भी अपनी **ज़बान** का सह़ीह़ इस्ति'माल करना सीख लें। **ग़ीबतों**, चुग़्लियों और तोह्मतों भरी बातों से पीछा छुड़ा लें, बेशक **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी के मुत़ाबिक़ अगर **ज़बान** को चलाया जाए तो **जन्नत** में घर तय्यार हो जाएगा। इस ज़बान से हम तिलावते क़ुरआने पाक करें, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करें, दुरूदो सलाम का विर्द करें, ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे वारे ही न्यारे हो जाएंगे। **मुका-श-फ़तुल क़ुलूब** में है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की **:** ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए और उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस शख़्स का बदला क्या होगा ?

फ़रमाया : ''मैं उस के हर कलिमे के बदले **एक साल की इ़बादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।'' (مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص۴۸)

**आ़शिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नेकी की बात बताने, गुनाह से नफ़रत दिलाने और इन कामों के लिये किसी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** का सवाब कमाने के लिये येह ज़रूरी नहीं कि जिस को समझाया वोह मान जाए तो ही सवाब मिलेगा बल्कि अगर वोह न माने तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब ही सवाब है और अगर आप की **इन्फ़िरादी कोशिश** से किसी ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरूअ़ कर दी फिर तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। आइये इस ज़िम्न में **इन्फ़िरादी कोशिश** की एक **म-दनी बहार** सुनते चलें चुनान्चे शह्र क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई मेट्रिक के त़ालिबे इ़ल्म थे, बुरी सोह़बत के बाइ़स ज़िन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिज़ाज बेह़द ग़ुसीला था, बद तमीज़ी की आ़दते बद इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद साह़िब कुजा दादाजान और दादीजान के सामने भी क़ैंची की त़रह़ ज़बान चलाते। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का एक ''म-दनी क़ाफ़िला'' उन के मह़ल्ले की मस्जिद में आ पहुंचा, ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि वोह **आ़शिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गए। एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन के **मीठे बोल** ने उन पर ऐसा असर किया कि वोह उन के साथ ही **दर्स** में बैठ गए। उन्हों ने दर्स के बा'द इन्तिहाई मीठे अन्दाज़ में उन्हें बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में **दा'वते इस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। उन के दर्स ने इन पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा वोह इन्कार न कर सके। यहां तक कि वोह सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया, मुलतान) में ह़ाज़िर हो गए। वहां की रोनकें और ब-र-कतें देख कर वोह

हैरान रह गए, इज्तिमाअ़ में होने वाले आख़िरी बयान **''गाने बाजे की होल नाकियां''** सुन कर थर्रा उठे और आंखों से आंसू जारी हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह गुनाहों से तौबा कर के उठे और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो गए। उन की **म-दनी माहोल** से वाबस्तगी से उन के घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से इन जैसे नौ जवान की इस्लाह़ से मु-तअस्सिर हो कर उन के बड़े भाई ने भी दाढ़ी मुबारक रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। उन की एक ही बहन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने भी **म-दनी बुरक़अ़** पहन लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का मुरीद हो गया। और उस **इन्फ़िरादी कोशिश** करने वाले इस्लामी भाई के **मीठे बोल** की ब-र-कत से उन पर **अल्लाहु** आ'ज़म عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि उन्हों ने **क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़** करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और **दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादार** भी बने।

*दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो     दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो*
*ऐसा फ़ैज़ान हो, ह़िफ़्ज़ क़ुरआन हो     ख़ूब ख़ुशियां मिलें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 672)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!     صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**क़ब्र का भयानक तसव्वुर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ौर कीजिये ! सोचिये !! हो सकता है आज ही मौत आ जाए, दुन्या की सारी ने'मतें छूट जाएं, सब अरमान ख़ाक में मिल जाएं और देखते ही देखते जनाज़ा क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो जाए, आह ! आह ! आह ! तसव्वुर कीजिये उस वक़्त क्या गुज़र रही होगी जब क़ब्र में तन्हा रख कर, ऊपर से मनों मिट्टी डाल कर नाज़ उठाने वाले रुख़्सत हो रहे होंगे, हाए ! घुप अंधेरा, आह ! वह़शत का बसेरा, ऐसे में अगर **ग़ीबतों,**

चुग़्लियों, ऐ़ब दरियों, तोह्मतों और बद गुमानियों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों के सबब अंधेरी क़ब्र में ख़ौफ़नाक मारपीट शुरूअ़ हो गई, भयानक आग सुलगा दी गई, त़रह़ त़रह़ के ज़हरीले सांप बिच्छू कफ़न फाड़ कर नाज़ुक बदन से लिपट गए तो क्या बनेगा ! अ़क़्ल भी सलामत होगी, बेहोशी भी त़ारी न होगी, चीख़ो पुकार भी बेकार साबित होगी, न किसी को पास बुला सकेंगे, न ख़ुद किसी के पास जा सकेंगे ! हाए मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

*घुप अंधेरे का भी वह़शत का बसेरा होगा — क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !*

*गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा — हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !*

*डंक मच्छर का सहा जाता नहीं कैसे मैं फिर — क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !*

*गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी — हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !*

*अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा*
*गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 84, 85)

**भाभी ने जादू करवा दिया है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** घर में बीमारी, परेशानी या बे रोज़गारी हो तो आज कल अक्सर **वस्वसा** आता है कि शायद किसी ने **जादू** करवा दिया है, लिहाज़ा "बाबा जी" (ता'वीज़ धागा देने वाले) से राबित़ा किया जाता है, बिलफ़र्ज़ "बाबा जी" बता दें कि तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदार ने **जादू** करवाया है तो उ़मूमन **बहू** या **भाभी** की शामत आ जाती है। बा'ज़ अवक़ात "बाबा जी" **जादू** करने वाले या वाली के नाम का पहला ह़र्फ़ बल्कि नाम ही बता देते हैं ! कभी कभी तो सूइयों वाला माश के आटे का पुतला और ता'वीज़ वग़ैरा भी घर से बरआमद हो जाता है। और फिर लोग ऐसे "बाबा जी" पर अन्धा भरोसा कर लेते हैं और ख़ानदान भर में **ग़ीबत** व बोहतान तराशी का बद तरीन सिल्सिला चल निकलता और **नतीजतन** हरा भरा लहलहाता ख़ानदान ता-ख़्तो ताराज हो कर रह जाता है। **याद रखिये !** बिला सुबूते

शर-ई सिर्फ़ आ़मिलों और बाबाओं के कहने पर अगर आप ने किसी से कहा : म-सलन : "**हमारी भाभी जादू करवाती है**" तो येह **बोहतान**, गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम हुवा और अगर किसी ने छुप कर वाक़ेई **जादू** करवा भी दिया हो और आप को यक़ीनी तौ़र पर पता चल गया हो तब भी उस मख़्सूस फ़र्द का **जादू** के ह़वाले से बिला मस्लह़ते शर-ई किसी से तज़्किरा करना **ग़ीबत** है। ख़याल रहे ! आ़मिलों या बाबाओं का बताना **शर-ई सुबूत** नहीं कहलाता।

**अगर घर से सूइयों वाला पुतला बरआमद हो जाए तो ! : वस्वसा :** "बाबा जी" ने नाम और सूइयों वाले पुतले की निशान देही कर दी फिर भी येह शर-ई सुबूत क्यूं नहीं ? क्या "बाबा जी" झूटे हैं ?

**वस्वसे का इलाज :** देखिये ! किसी बात को दलीले शर-ई न मानना और है और जिस की दलील न मानी गई उसे झूटा समझना और है। म-सलन किसी बात में दो गवाहों की ह़ाजत हो और गवाह सिर्फ़ एक हो वोह अगर्चे कोई सालेह़, नेक बल्कि वली ही हो, क़ाज़ी उस की गवाही रद कर देता है तो इस का येह मत़लब हरगिज़ नहीं कि क़ाज़ी उस को **झूटा** समझ रहा है बल्कि शरीअ़त ने गवाही का जो निसाब मुक़र्रर किया है क़ाज़ी उस निसाब के हुक्म पर अ़मल कर रहा है। यूंही हम बाबा जी को **झूटा** नहीं कह रहे बल्कि हुक्मे शर-ई पर अ़मल करते हुए बाबा जी के बता देने को दलील बना कर किसी शख़्स पर **जादू** का इल्ज़ाम नहीं साबित कर रहे बहर ह़ाल हुक्मे शरीअ़त येही है कि किसी बाबा जी का पुतले वग़ैरा के बारे में बता देना और उस पुतले का बरआमद हो जाना इस बात की दलीले शर-ई नहीं है कि वाक़ेई फ़ुलां रिश्तेदार ही ने येह **जादू** करवाया है।

**जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे ग़लत़ हो सकते हैं ? : वस्वसा :** जो बाबा जी ता'वीज़ात वग़ैरा के पैसे नहीं मांगते वोह किस त़रह़ ग़लत़ हो सकते हैं ?

**वस्वसे का इलाज :** अ़-मलिय्यात की लाइन ऐसी है कि जो पैसे नहीं मांगता बा'ज़ अवक़ात उस

की आमदनी मांगने वालों की निस्बत ज़ियादा होती है क्यूं कि बार बार पैसे मांगने वालों से लोग दूर भागते हैं। ह़ज़रते मौलाए काएनात, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : बछड़ा जब थनों को बहुत ज़ियादा चूसने लगता है तो उस की मां उस को सींग मारती है। (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٢٢٠) बहर ह़ाल "बाबा" अगर्चे पैसे न मांगता हो तब भी लोग चूंकि ह़क़ीक़त से ना वाक़िफ़ होते हैं इस लिये उ़मूमन ऐसों के ज़ियादा अ़क़ीदत मन्द हो जाते हैं और फिर दा'वतों और नज़रानों की तरकीब के साथ साथ शोहरत व इ़ज़्ज़त भी ह़ासिल होती है। **हुब्बे जाह** या'नी इ़ज़्ज़त व शोहरत की मह़ब्बत का मरज़ जिन को लग जाता है वोह लोग मश्हूरी के लिये करोड़ों रुपै अपने पल्ले से ख़र्च करने से भी नहीं चूकते ! आ़म इन्तिख़ाबात के मवाक़ेअ़ पर जुम्हूरी ममालिक में इस के नज़्ज़ारे आ़म होते हैं। यक़ीनन शरीअ़त के किसी भी मुआ़-मले में क़त्अ़न झोल नहीं। याद रखिये ! इस्तिख़ारात, मुवक्कलात और जिन्नात के ज़रीए़ नहीं बल्कि कुरआनो सुन्नत के अह़कामात के तवस्सुत़ से इस्लामी अ़दालतों के मुआ़-मलात तै़ किये जाते हैं।

**अगर तकिये के नीचे से ता'वीज़ निकल आए तो ? : वस्वसा :** अगर भाभी या बहू की जेब या उस के तकिये के नीचे से **ता'वीज़** बरआमद हुवा हो तो क्या येह भी शर-ई सुबूत नहीं ?

**वस्वसे का इलाज :** येह भी शर-ई दलील नहीं। जो **ता'वीज़** बरआमद हुवा उसे **"जादू"** क़रार देने के लिये भी तो कोई मा'कूल दलील होनी चाहिये ! अपने इलाज या किसी निजी मक़्सद के लिये भी तो वोह **ता'वीज़** इस्ति'माल कर सकती हैं। बिलफ़र्ज़ वोह **जादू** ही का ता'वीज़ साबित हो जाए तब भी इस का क्या सुबूत है कि आप को नुक़्सान पहुंचाने ही के लिये वोह लाई थीं। येह शैतानी ह़-र-कत भी हो सकती है कि कोई शरीर जिन्न घर में फ़साद करवाने के लिये तकिये के नीचे या जेब में **ता'वीज़** डाल दे !

**मुंह की बदबू के बा वुजूद शराबी न कहा जाए : हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के फ़रमान का ख़ुलासा है : किसी शख़्स के मुंह से शराब की बू आती हो इस बिना पर उस पर ह़द लगानी जाइज़ नहीं क्यूं कि हो सकता है इस ने शराब से कुल्ली की हो, ख़ुद न पी हो किसी ने ज़बर दस्ती पीने पर मजबूर कर दिया हो । लिहाज़ा इस मुसल्मान पर (सिर्फ़ मुंह की बदबू के सबब) **बद गुमानी** न की जाए (या'नी इस को शराबी क़रार न दिया जाए) (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۱۸۶)

**शर-ई सुबूत किसे कहते हैं : शर-ई** सुबूत की यहां सूरत येह है कि या तो जिस पर **इल्ज़ाम** है वोह ख़ुद ब होशो ह़वास इक़रार करे कि मैं ने **जादू** करवाया है, अगर वोह इन्कार करे तो दो मर्द मुसल्मान या एक मुसल्मान मर्द और दो मुसल्मान औ़रतें गवाही दें कि हम ने इस को **जादू** करते हुए अपनी आंखों से देखा है । अगर मज़्कूरा शर-ई गवाह नहीं ला सकते तो जिस पर **इल्ज़ाम** है अगर वोह **क़सम** खा ले कि मैं ने **जादू** नहीं करवाया तो उस को सच्चा मानना ज़रूरी है ।

**तूने चोरी की : देखिये !** शैत़ान के उक्साने पर बहू वग़ैरा पर **जादू** का इल्ज़ाम लगाने और पूछगछ के दौरान उस के इन्कार पर हरगिज़ येह बात ज़बान पर न लाइये कि येह फंस गई तो अब इस ने इन्कार करना ही है और आदमी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये तो झूटी क़सम भी खा लेता है इस लिये येह भी झूटी क़सम खा रही है । ख़ुदारा एक मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की अहम्मिय्यत को समझने की कोशिश कीजिये । आप की इ़ब्रत के लिये एक ईमान अफ़रोज़ ह़दीस शरीफ़ अ़र्ज़ करता हूं : चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ह़ज़रते **ईसा** इब्ने मरयम ने एक शख़्स को चोरी करते देखा तो उस से फ़रमाया : "तूने चोरी की ।" वोह बोला : "हरगिज़ नहीं उस की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।" तो ह़ज़रते ईसा ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और मैं ने अपने को आप झुटलाया । (صَحیح مُسلِم ص۱۲۸۸ حدیث۲۳۶۸)

**...... कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लत़ी की : अल्लाहु अक्बर !** देखा आप ने ! ह़ज़रते

सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़सम खा लेने वाले के साथ कितना अ़ज़ीम बरताव किया। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان उस क़सम खाने वाले को छोड़ देने के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जज़्बात की अ़क्कासी करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी इस क़सम की वज्ह से तुझे सच्चा समझता हूं कि मोमिन बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की झूटी क़सम नहीं खा सकता, (क्यूं कि) उस के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की ता'ज़ीम होती है, अपने मु-तअ़ल्लिक़ ग़लत़ फ़हमी का ख़याल कर लेता हूं कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लत़ी की। (मिरआत, जि. 6, स. 623)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالی علیہ والہ وسلَّم

**तौबा और मुआ़फ़ी का त़रीक़ा :** **उम्मीद** है मस्अला समझ में आ गया होगा, ऐसे मवाक़ेअ़ पर सब्र करना चाहिये वरना **बद गुमानियों, ग़ीबतों** और **तोह्मतों** वग़ैरा गुनाहों से बचना दुश्वार हो जाता है। अब अगर किसी ने इस त़रह़ की ख़त़ा की है कि बिग़ैर सुबूते शर-ई **जादू** का इल्ज़ाम लगा बैठा है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में गिड़गिड़ा कर **तौबा** करे और तौबा के तक़ाज़े भी पूरे करे नीज़ जिस पर **इल्ज़ाम** लगाया म-सलन भाभी या बहू वग़ैरा तो उन से मुआ़फ़ भी करवाए। रस्मी त़ौर पर सिर्फ़ SORRY कह देना काफ़ी नहीं बल्कि जिस धड़ल्ले (या'नी बेबाकी और धूम धड़क्के) से उस की बदनामी और दिल आज़ारी की है उसी की मुना-सबत से ख़ूब आ़जिज़ी कर के, गिड़गिड़ा कर और हाथ जोड़ कर उस से इस क़दर मुआ़फ़ी मांगे कि उस का दिल मुत़्मइन हो जाए और वोह मुआ़फ़ कर दे नीज़ जिन जिन को येह बात बताई हो उन के सामने भी कहना पड़ेगा कि मैं ने झूटा **इल्ज़ाम** लगाया था। वाक़ेई यहां नफ़्स मुआ़फ़ी मांगने से इन्कार ही करेगा। अब बन्दे पर है कि मुआ़फ़ी मांग कर दुन्यवी त़ौर पर अपने नफ़्स की मा'मूली सी ज़िल्लत इख़्तियार करे या आख़िरत की दर्दनाक रुस्वाई और होलनाक सज़ा। देखिये !

शैतान त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने सुझाएगा, वस्वसे दिलाएगा कि म-सलन यूं तो येह सर चढ़ जाएगी, इस का दिल खुल जाएगा, हम पर क़ब्ज़ा जमा लेगी, हमारी बदनामी हो जाएगी वग़ैरा। आप इन शैत़ानी ख़यालों की त़रफ़ न जाइये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत ख़ुद ही देख लेंगे। यहां तक कि ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह वाक़ेई मुजरिमा हुई तब भी आप की ख़ुश अख़्लाक़ी और आ़जिज़ी की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की ख़ैर ख़्वाह बन जाएगी।

**ड्राइवर की जान बच गई : बाबुल मदीना** (कराची) के अ़लाक़ा नयाआबाद की एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िय्या बयान का ख़ुलासा है कि मेरे एक भाई जो कि अ़रब शरीफ़ के शहर "रियाज़" में ब हैसिय्यते ड्राइवर मुला-ज़मत कर रहे हैं। एक दिन ड्राइविंग के दौरान ख़त़रनाक ह़ादिसा हुवा और वोह बेहोश हो गए। **दिमाग़ी चोटें** इतनी ज़ियादा थीं कि बचने की उम्मीद न रही। हम लोग मजबूर थे उन को देखने भी न जा सकते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत किया करती थी। मैं ने भाईजान वाली परेशानी अपने अ़लाक़े की एक इस्लामी बहन को बताई। उन्हों ने मुझे दिलासा दिया और मश्वरा दिया कि इसी त़रह़ पाबन्दी से इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर के ख़ूब दुआ़ किया करो। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में की जाने वाली **दुआ़ओं** की ब-र-कत से तीन माह के अन्दर अन्दर भाईजान ने बातचीत शुरूअ़ कर दी। डॉक्टर भी ह़ैरान रह गए क्यूं कि **दिमाग़ी चोटें** बहुत ज़ियादा थीं और ब ज़ाहिर बचने की उम्मीद बहुत कम थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाआ़त की ब-रकात पर मेरी अ़क़ीदत और ज़ियादा मज़बूत़ हुई।

*ऐ इस्लामी बहनो कभी छोड़ना मत मसाइब को देगा भगा म-दनी माह़ोल*
*तू पर्दे के साथ इज्तिमाआ़त में आ तेरी देगा बिगड़ी बना म-दनी माह़ोल*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रह़मतों का नुज़ूल होता है :** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़एं ज़रूर रंग लाती हैं, क्यूं कि वहां **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र होता है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम **सुफ़्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ** या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मते इलाही उतरती है। (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج ۷ ص ۳۳۵ رقم ۱۰۷۵۰) जब नेक बन्दों के तज़्किरों पर रह़मतों का नुज़ूल होता है तो जहां **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होगा वहां रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी और जहां छमाछम रह़मतें बरस रही हों वहां दुआ़एं क्यूं क़बूल न होंगी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि हम दोनों मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, साह़िबे जूदो नवाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्त़ाने शीरीं मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो क़ौम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये बैठती है फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और रह़मत उन्हें ढांप लेती है और उन पर सकीना नाज़िल होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों के सामने उन का ज़िक्र फ़रमाता है। (صَحِيح مُسلِم ص۱۴۴۸ حديث ۲۷۰۰) मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 305 पर है : सकीना से मुराद या तो ख़ास मलाएका हैं या दिल का नूर या दिली चैन व सुकून है।

**ज़िक्र किसे कहते हैं ? :** ''**अल्लाह** हू और ह़क़ हू'' की ज़र्बें लगाना बेशक ज़िक्र है। ताहम तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ़, दुरूदो सलाम, ना'त व मन्क़बत, ख़ुत़्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा भी ''**ज़िक्रुल्लाह**'' में शामिल हैं। यक़ीनन **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी ज़िक्र के ह़ल्क़े हैं।

*सारे आ़लम को है तेरी ही जुस्त-जू जिन्नो इन्सो मलक को तेरी आरज़ू*
*याद में तेरी हर एक है सू बसू बन में वह़शी लगाते हैं ज़र्बाते हू*
*अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू*

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**पूरी क़ौम की ग़ीबत का मस्अला :** **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 312 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' हिस्सा 16 सफ़हा 173 पर है : किसी बस्ती या शहर वालों की बुराई की, म-सलन येह कहा कि वहां के लोग ऐसे हैं, येह **ग़ीबत** नहीं क्यूं कि ऐसे कलाम का येह मक़्सद नहीं होता कि वहां के सब ही लोग ऐसे हैं बल्कि बा'ज़ लोग मुराद होते हैं और जिन बा'ज़ को कहा गया वोह मा'लूम (या'नी PARTICULAR) नहीं, **ग़ीबत** इस सूरत में होती है जब मुअ़य्यन व मा'लूम (या'नी जो पहचाने जा सकें ऐसे) अश्ख़ास की बुराई ज़िक्र की जाए और अगर इस का मक़्सूद वहां के तमाम लोगों की बुराई करना है तो येह **ग़ीबत** है। (دُرِّمُختار ج۹ ص ۶۷۴)

**लंगड़े की नक़्क़ाली :** किसी लंगड़े की नक़्क़ाली में लंगड़ा कर चलना नीज़ किसी मख़्सूस मुसल्मान की किसी भी ख़ामी की नक़्ल उतारना **ग़ीबत** है बल्कि येह ज़बान से **ग़ीबत** करने से भी ज़ियादा बुरा है। क्यूं कि नक़्ल करने में पूरी तस्वीर कशी और बात को समझाना पाया जाता है जब कि कहने में वोह बात नहीं होती।

**नाम लिये बिग़ैर ग़ीबत करना :** नाम लिये बिग़ैर **ग़ीबत** करना गुनाह नहीं, हां अगर नाम तो न लिया मगर जिस को कह रहा है वोह समझ रहा है कि किस के बारे में बात हो रही है तो अब **ग़ीबत** है।

**मुंह पर भी कह सकता हूं ! :** **ग़ीबत** करने वाले का येह समझना या कहना कि मैं उस के मुंह पर भी कह सकता हूं, इस को **ग़ीबत** के गुनाह से नहीं बचा सकता क्यूं कि **ग़ीबत** के ह़राम होने की अस्ल वज्ह **ईज़ाए मुस्लिम** है और मुंह पर कहने से उस का दिल ज़ियादा दुखेगा तो येह और भी बड़ा गुनाह हुवा। जिस की बुराई की गई वोह हंसने लगा इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि वोह अपनी बुराई सुन कर झूम उठा है, फ़ित़्रतन आ़म आदमी अपनी ता'रीफ़ सुन कर ही ख़ुश होता है अपनी मज़म्मत सुन कर कोई ख़ुश नहीं होता लिहाज़ा अपनी मज़म्मत सुन कर हंसना येह ''खिस्यानी हंसी'' होती है कि आदमी मुरव्वत में या अपनी **झेंप** मिटाने के लिये ऐसे मौक़अ़ पर

हंसता है हालां कि अन्दरूनी तौर पर उस का दिल जल रहा होता है।

**बन्द अल्फ़ाज़ में ग़ीबत : ता'रीज़** या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में भी **ग़ीबत** हो सकती है म-सलन किसी की बुराई का तज़्किरा हुवा तो कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं "ऐसा" नहीं हूं, येह **ग़ीबत** है क्यूं कि येह भी बुराई करने का ही एक अन्दाज़ है इस का साफ़ मतलब येही हुवा कि वोह "ऐसा" है।

**कुछ कहूंगा तो ग़ीबत हो जाएगी : किसी** मुसल्मान के बारे में बात चली तो कहा : "छोड़ो यार ! मैं उस को जानता हूं, अगर कुछ कहूंगा तो **ग़ीबत** हो जाएगी।" ऐसा कहने वाला **ग़ीबत** कर चुका कि उस ने इस अन्दाज़ में उस की बुराई कर डाली !

इसी तरह की ग़ीबत पर मब्नी मज़ीद 14 जुम्ले ❁ बस जी **अल्लाह** मुआफ़ करे, उस के बारे में आप को क्या बताऊं ❁ बस भाई क्या कहूं उस के लिये तो दुआ ही की जा सकती है ❁ यार ! उस को समझाना अपने बस की बात नहीं, जब उस की सूई अटक्ती है तो फिर किसी की नहीं सुनता ❁ आज कल उस की घूमी हुई है ❁ भई ! मैं तो इस से बाज़ आया मेरी सुनता ही कब है ❁ जब मतलब होता है तो "हां जी हां जी" करता है इस के बा'द लिफ़्ट भी नहीं कराता ❁ अच्छा ! अच्छा ! दरवाज़े पर फ़ुलां खड़ा हुवा है इस का कोई मतलब पड़ा होगा ❁ उस से जान छुड़ाने की बड़ी कोशिश की मगर वोह तो बिल्कुल ही "चिपक" गया था ❁ मैं ने तो उसे टालने की बहुत कोशिश की मगर टस से मस नहीं हुवा ❁ यार ! वोह कहां किसी को घास डालता है ❁ उफ़ ! वोह मन्हूस कहां आ गया ! ❁ वोह तो नादान दोस्त निकला ❁ उस का काम नहीं वोह तो "सीधा आदमी" है (उ़मूमन "सीधा आदमी" कह कर बे वुक़ूफ़ या नादान या कम अ़क़्ल मुराद लेते हैं) ❁ कैसा मीठा मीठा बन रहा था !

**ऐब पोशी के लिये झूट जाइज़ होने की एक सूरत : ग़ीबत** में एक बहुत बड़ी आफ़त येह भी है कि जब "एक फ़र्द" की **ग़ीबत** दूसरे के सामने की जाती है तो बा'ज़ अवक़ात वोह "एक फ़र्द" दूसरे की नज़र से गिर जाता है और शरीअ़त को येह क़त्अ़न ना गवार है कि एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार (DEGRADE) हो ह़त्ता कि मुसल्मान की

**इ़ज़्ज़त** बचाने की निय्यत से बा'ज़ सूरत में **झूट** बोलने की भी इजाज़त है क्यूं कि मुसल्मान की जान, माल और इ़ज़्ज़तो आबरू की हि़फ़ाज़त की शरीअ़त में निहायत ही अहम्मिय्यत है। इस की एक मिसाल मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हि़स्सा 16 सफ़ह़ा 161 पर है : "किसी ने छुप कर बे ह़याई का काम किया है, उस से दरयाफ़्त किया गया कि तूने येह काम किया ? वोह इन्कार कर सकता है क्यूं कि ऐसे काम को लोगों के सामने ज़ाहिर कर देना येह दूसरा गुनाह होगा। इसी त़रह़ अगर अपने मुस्लिम भाई के भेद पर मुत्तलअ़ हो तो उस के बयान करने से भी इन्कार कर सकता है।" (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۷۰۵)

*मेरा काश ! सूए ह़रम या इलाही शरफ़ ह़ज का दे दे चले क़ाफ़िला फिर*
*दिखा दे नबी का ह़रम या इलाही दिखा दे मदीने की गलियां दिखा दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 100)

**ख़ुद को ज़िल्लत पर पेश करना जाइज़ नहीं : मुसल्मान** की इ़ज़्ज़त की बहुत अहम्मिय्यत है। ख़ुद अपने हाथों अपनी इ़ज़्ज़त ख़राब करने की भी शरअ़न मुमा-न-अ़त है, लिहाज़ा ऐसे मुल्की क़वानीन पर अ़मल करना शरअ़न ज़रूरी है जो कि क़ुरआनो सुन्नत से न टकराते हों और उन पर अ़मल न करने में ज़िल्लत व मा'सियत का ख़त़रा हो। म-सलन ड्राइविंग लाइसन्स के बिग़ैर स्कूटर, कार वग़ैरा चलाने की इजाज़त नहीं क्यूं कि चलाई और पकड़ा गया तो बे इ़ज़्ज़ती के साथ साथ झूट, रिश्वत और वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा गुनाहों में पड़ने का क़वी इम्कान मौजूद है लिहाज़ा कई गुनाहों और जहन्नम में ले जाने वाले कामों से बचने के लिये ड्राइविंग लाइसन्स ही बनवा लिया जाए और गाड़ी चलाते वक़्त लाज़िमन अपने साथ रखा जाए। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 183 पर फ़रमाते हैं : मह़ज़ बिला वज्हे शर-ई बल्कि बर ख़िलाफ़े वज्हे शर-ई एक गुनाह पर इसरार के लिये अपने नफ़्स को सज़ा व ज़िल्लत पर पेश किया और

येह भी ब हुक्मे ह़दीस **ह़राम** है। जिल्द 29 सफ़ह़ा 93, 94 पर फ़रमाते हैं : ह़दीस में है : जो शख़्स बिग़ैर किसी मजबूरी के अपने आप को बख़ुशी ज़िल्लत पर पेश करे वोह हम में से नहीं है। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۱ ص۱۴۷ حدیث ۴۷۱) बहर ह़ाल अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त ज़रूरी है।

*मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है — हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही*
*सदा के लिये हो जा राज़ी ख़ुदाया — हमेशा हो लुत़्फ़ो करम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 110)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**दुआ़ के लिये दर-ख़्वास्त देने का त़रीक़ा :** बा'ज़ लोग जब किसी को दुआ़ के लिये मक्तूबात या रुक़्आ़त भिजवाते हैं, तो उन में مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ! अपनी गन्दी ह़-रकात के इन्किशाफ़ात करते बल्कि अपनी मां बहनों तक के लिये ह़या सोज़ बातें लिखने से बाज़ नहीं रहते ! म-सलन मेरी मां या बहन या बेटी या बहू या बीवी के पराए आदमी से ना जाइज़ तअ़ल्लुक़ात हैं। ह़द तो येह है कि इस्लामी बहनें भी एह़तियात़ नहीं करतीं, उन को इस अम्र का क़त़्अ़न एह़सास ही नहीं होता कि हमारी तह़रीर न जाने कौन कौन पढ़ता होगा और उस पढ़ने वाले को कैसे कैसे वसाविस आते होंगे। कोई लिखती है : मेरा शोहर या बाप कमाता नहीं बस सारा दिन घर में पड़ा रहता है और घर में झगड़े करता रहता है, सास या नन्द ज़ुल्म करती है, मेरा भाई जूआरी है, मेरी बहन किसी के साथ भाग गई है, मेरा भाई किसी लड़की के चक्कर में है, मेरा बेटा शराब पीता है, मेरी बेटी फ़ेशन कर के बे पर्दा घूमती है वग़ैरा। दुआ़ का कहने के लिये येह तफ़्सीलात बयान करने के बजाए मुब्हम (या'नी बन्द) अल्फ़ाज़ में बात करनी मुनासिब है म-सलन बेटा या भाई या शोहर शराब या **जूए** की बुराई में मुब्तला है तो इन बुराई और बुराई करने वाले की निशान देही किये बिग़ैर इन अल्फ़ाज़ में दुआ़ करवा सकते हैं : "मेरे एक क़रीबी अ़ज़ीज़ बा'ज़ बुरी आ़दतों में

गिरिफ़्तार हैं उन की इस्लाह़ के लिये दुआ़ कर दीजिये'' यूंही बहन या बेटी भाग गई या किसी लड़के के चक्कर में पड़ गई तो इन अल्फ़ाज़ में दुआ़ की दर-ख़्वास्त की जा सकती है : ''मेरी एक रिश्तेदार किसी ना क़ाबिले बयान बुराई में पड़ गई है उस के लिये दुआ़ कर दीजिये।'' इन अल्फ़ाज़ से दुआ़ करवाने में फ़ाएदा येह है कि चूंकि फ़र्द, मुअ़य्यन (या'नी PARTICULAR) न हुवा लिहाज़ा **ग़ीबत** का इम्कान अस्लन (या'नी बिल्कुल ही) ख़त्म हो गया। दूसरी बात येह कि मख़्सूस बुराई और ख़िलाफ़े ह़या अल्फ़ाज़ के बयान से भी बचत हो गई। हां अगर किसी ने दुआ़ करवाने की निय्यत से अपनी या किसी मख़्सूस फ़र्द की ख़ामी या ऐब किसी के आगे बयान कर दिया तो येह **गुनाह भरी ग़ीबत नहीं**, गुनाह भरी ग़ीबत उसी सूरत में होगी जब कि किसी मुअ़य्यन व मा'लूम फ़र्द की ख़ामी मह़ज़ उस की बुराई करने की निय्यत से बयान की जाए।

**त़बीब को उ़यूब बयान करने का त़रीक़ा : त़बीब** या आ़मिल को ब निय्यते हुसूले इलाज उ़यूब बताने में ह़रज नहीं। अलबत्ता फ़र्दे मुअ़य्यन का तज़्किरा किये बिग़ैर काम चल जाता हो तो चला लीजिये म-सलन ''मेरा बेटा शराब पीता है'' कहने के बजाए यूं कह दीजिये कि ''मेरा एक रिश्तेदार शराब पीता है'' अगर नाम वग़ैरा बताना ज़रूरी हो या ख़ुद अपनी ही ख़ामियां बयान किये बिग़ैर चारा न हो तो येह एह़तियात ज़रूरी है कि उस त़बीब या आ़मिल ही को बताया जाए बिला ह़ाजत कोई भी दूसरा फ़र्द वोह बातें सुनने या जानने न पाए। बड़े डॉक्टर उ़मूमन अपने कमरे में अलग बुला कर मरीज़ से अह़वाल सुनते हैं मगर न जाने क्यूं इन की अक्सरिय्यत उस मौक़अ़ पर तआ़वुन के लिये बे पर्दा औ़रत साथ रखने का गुनाह करती है ! चन्द बार मुझे जब ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा है तो राज़दारी की गुफ़्त-गू न होने के बा वुजूद निगाहों की ह़िफ़ाज़त की ख़ात़िर दर-ख़्वास्त कर के औ़रत को कमरे से बाहर भिजवा दिया है। हर एक को हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल करना चाहिये।

## रूह़ानी इलाज के बस्ते पर राज़दारी का त़रीक़ा

**सुवाल :** दा'वते इस्लामी की ''मजलिस'' की त़रफ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क रूह़ानी इलाज के बे शुमार बस्ते लगाए जाते हैं, दुखियारे लोग क़ित़ार लगा कर, अपने मसाइल बता कर फ़ी सबीलिल्लाह इलाज ह़ासिल करते हैं, इन में यक़ीनन राज़ की बातें भी होती हैं, हर

एक को अलग से वक़्त देना हमारे बस का रोग नहीं कोई ह़ल बता दीजिये।

**जवाब :** रूह़ानी इलाज के ज़रीए शहन्शाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुखियारी उम्मत की ख़िदमत बेशक बहुत बड़ी सआ़दत है मगर इस म-दनी काम और हर हर अ़मल को गुनाहों से पाक साफ़ रखना ज़रूरी है। हरगिज़ येह नहीं होना चाहिये कि एक मुस्तह़ब काम के लिये مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों भरे ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम होते रहें। लोगों तक आवाज़ न पहुंचे इस के लिये कोई ह़िक्मते अ़-मली इख़्तियार करना ज़रूरी है म-सलन बस्ते के सामने इतने फ़ासिले पर कोई रुकावट रख दी जाए जहां तक आवाज़ न जा सके, जिस की बारी हो उसी को क़रीब बुलाया जाए, परेशानियां सुनने के लिये सिर्फ़ एक फ़र्द हो जो कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ह़ामिल और मुसल्मानों के राज़ों का अमीन हो, बिला इजाज़ते शर-ई उस का कोई मुआ़विन हरगिज़ क़रीब न रहे। नीज़ दर्जे ज़ैल मज़्मून का बेनर या बोर्ड बनवा कर ह़त्तल इम्कान बस्ते के ऐन ऊपर की जानिब इस त़रह़ लगा दिया जाए कि क़ित़ार में मौजूद हर फ़र्द ब आसानी पढ़ सके नीज़ वक़्तन फ़-वक़्तन उस मज़्मून का ए'लान भी किया जाता रहे। मज़्मून येह है :

**कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा : लोगों** को ब ग़-रज़े इलाज मजबूरन राज़ भी बताने पड़ते हैं लिहाज़ा बस्ते पर होने वाली गुफ़्त-गू को सुनने से दूसरा आदमी अपने आप को बचाए, **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो शख़्स किसी क़ौम की बातें कान लगा कर सुने ह़ालां कि वोह इस बात को ना पसन्द करते हों या उस बात को छुपाना चाहते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा।

(صَحیح بُخاری ج٤ ص ٤٢٣ حدیث ٧٠٤٢)

**मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जो दूसरों की ख़ुफ़्या बात छुप कर सुने उस के कान में क़ियामत के दिन सीसा गर्म कर के उंडेला जाएगा। ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिर पर है, इस में किसी तावील की ज़रूरत नहीं, वाक़ेई उसे क़ियामत में येह अ़ज़ाब होगा कि येह भी राज़ो नियाज़ का चोर

है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 203) (ह़दीसे पाक की शर्ह़ बोर्ड या बेनर में न डलवाएं कि मज़्मून काफ़ी त़वील हो जाएगा, हां हेन्ड बिल वग़ैरा में शामिल करने में मुज़ा-यक़ा नहीं)

## डॉक्टरों और आ़मिलों वग़ैरा के लिये

**सुवाल :** दूसरों की मौजू-दगी में डॉक्टरों, ह़कीमों, आ़मिलों, समाजी कारकुनों और सियासी रहनुमाओं को भी ज़रूरतन अपने राज़ बताने पड़ते हैं, इस सिल्सिले में भी कुछ **म-दनी फूल** दे दीजिये।

**जवाब :** हर मुसल्मान को चाहिये कि ख़ुद भी गुनाहों और उन के अस्बाब से बचे और अपनी मक्दूर भर दूसरों को भी बचाए लिहाज़ा इन साह़िबान को भी ऐसी ह़िक्मते अ़-मली इख़्तियार करनी होगी कि एक का ऐ़ब दूसरा न सुन पाए। येह ह़ज़रात भी अगर मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो अपने यहां मज़्कूरा बोर्ड या बेनर लगवा लें और उस में लफ़्ज़ ''बस्ते पर'' की जगह अपनी ज़रूरत के अल्फ़ाज़ म-सलन ''पीर साह़िब से'' ''बाबा जी से'' ''डॉक्टर साह़िब से'' ''ह़कीम साह़िब से'' वग़ैरा की तरकीब फ़रमा लें।

*ग़ीबतों से बचूं, चुग़लियों से बचूं हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम*
*बद कलामी न हो, यावह गोई न हो बोलूं मैं कम से कम, ताजदारे ह़रम*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**ग़ीबत की 12 जाइज़ सूरतें :** ﴾1﴿ बद मज़्हब की बद अ़क़ीदगी का बयान ﴾2﴿ जिस की बुराई से नुक़्सान पहुंचने का ख़दशा हो तो दूसरों को उस से बचाने के लिये ब क़-दरे ज़रूरत सिर्फ़ उसी बुराई का तज़्किरा म-सलन जो ताजिर धोके से मिलावट वाला माल बेचता हो उस से मुसल्मानों को बचाने के लिये उस के उस नाक़िस माल की निशान देही करना। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है **:** क्या फ़ाजिर के ज़िक्र से बचते हो उस को लोग कब पहचानेंगे ! फ़ाजिर का ज़िक्र उस चीज़ के साथ करो जो उस में है ताकि लोग उस से बचें। (اَلسُّنَنُ الکُبریٰ للبیهقی ج ۱۰ ص ۳۵۴ حدیث ۲۰۹۱۴)
﴾3﴿ म-सलन कारोबारी, शिराकत दारी या शादी वग़ैरा के लिये मश्वरा मांगने पर जिस के बारे

में मश्वरा मांगा गया है उस के अगर ऐसे ऊ़यूब मा'लूम हैं जिस से नुक़्सान पहुंच सकता है तो ज़रूरतन सिर्फ़ वोही ऊ़यूब बताना ﴾4﴿ क़ाज़ी (या पोलीस) से इन्साफ़ के हुसूल के लिये फ़रियाद करते वक़्त कि फ़ुलां ने चोरी की, ज़ुल्म किया वग़ैरा ﴾5﴿ जो इस्लाह़ कर सकता हो उस से सिर्फ़ इस्लाह़ की निय्यत से शिकायत की जा सकती है म-सलन मुरीद की पीर से, बेटे की बाप से, बीवी की शोहर से, रिआ़या की बादशाह से, शागिर्द की उस्ताज़ से शिकायत की जा सकती है ﴾6﴿ फ़तवा लेने के लिये नाम ले कर बुराई बयान कर सकता है मगर बेहतर येह है कि मुफ़्ती से भी इशारतन या'नी ज़ैद बक्र में दरयाफ़्त करे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 177, 178, मुलख़्ख़सन)

﴾7﴿ **पहचान के लिये ज़रूरतन गूंगा बहरा वग़ैरा कहना : किसी** के जिस्मानी ऐ़ब म-सलन **अन्धा, मोटा** वग़ैरा सिर्फ़ पहचान के लिये कहना जब कि वोह इस अ़लामत से मा'रूफ़ (या'नी पहचाना जाता) हो अगर बिग़ैर ऐ़ब ज़ाहिर किये भी पहचान हो सकती है तो बेहतर येह है कि नाम के साथ ऐ़ब का तज़्किरा न करे। म-सलन ज़ैद **मोटा** है मगर नाम मअ़ वल्दिय्यत बताने या किसी और अ़लामत से तरकीब बन सकती है तो अब मोटा कहने से बचे। चुनान्चे "**रियाज़ुस्सालिह़ीन**" में है : म-सलन कोई शख़्स आ'रज (लंगड़े) असम (बहरे), आ'मा (अन्धे), अह़्वल (भेंगे) के लक़ब से मश्हूर है तो उस की मा'रिफ़त व शनाख़्त (या'नी पहचान) के लिये इन औसाफ़ व अ़लामात के साथ ज़िक्र करना जाइज़ है मगर तन्क़ीस (या'नी ख़ामी बयान करने) के इरादे से इन औसाफ़ के साथ तज़्किरा जाइज़ नहीं। अगर (ख़ामी भरे) लक़ब के बिग़ैर पहचान हो सकती हो तो बेहतर येह है कि लक़ब बयान न करे। (رِیاضُ الصّالِحین لِلنَّوَوی ص ٤٠٤) **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 178 पर है : बा'ज़ मर्तबा मह़्ज़ पहचानने के लिये किसी को अन्धा या काना या ठिगना या लम्बा कहा जाता है, येह **ग़ीबत** में दाख़िल नहीं।

**जो खुल्लम खुल्ला बुराई करता हो उस की ग़ीबत :** ﴾8﴿ खुल्लम खुल्ला लोगों से माल छीन लेने, अ़लल ए'लान शराब पीने, दाढ़ी मुंडाने या एक मुठ्ठी से घटाने वग़ैरा वग़ैरा

अ़लानिया गुनाह करने वाले कि जिन को इन गुनाहों के मुआ़–मले में लोगों से ह़या न रही हो उन की सिर्फ़ उन बातों का तज़्किरा करना ﴾9﴿ ज़ालिम ह़ाकिम के उन मज़ालिम का बयान करना भी जाइज़ है जो खुल्लम खुल्ला करता हो, हां ज़ालिम भी जो बुरा अ़मल छुप कर करता हो उस का बयान **ग़ीबत** है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक–त–बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 177 पर है : जो शख़्स अ़लानिया बुरा काम करता है और उस को इस की कोई परवा नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे, उस की उस बुरी ह़–र–कत का बयान करना **ग़ीबत** नहीं, मगर उस की दूसरी बातें जो ज़ाहिर नहीं हैं उन को ज़िक्र करना **ग़ीबत** में दाख़िल है। ह़दीस में है कि जिस ने ह़या का ह़िजाब अपने चेहरे से हटा दिया, उस की **ग़ीबत** नहीं। (बहारे शरीअ़त) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़बैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : याद रहे ! इस से (या'नी अ़लल ए'लान जुर्म करने वाले के उस जुर्म के तज़्किरे से) सिर्फ़ लोगों की ख़ैर ख़्वाही मक़्सूद हो, हां जिस शख़्स ने अपना ग़ुस्सा (या भड़ास) निकालने या अपने नफ़्स का इन्तिक़ाम लेने के लिये फ़ासिक़े मो'लिन की मज़्मूम सिफ़ात को बयान किया वोह गुनाहगार है। (اِتحافُ السّادَة للزّبیدی ج ۹ ص ۳۳۲)

**﴾10﴿ बत़ौरे अफ़्सोस किसी की बुराई बयान करना : किसी** ने अपने मुसल्मान भाई की बुराई अफ़्सोस के त़ौर पर (बयान) की, कि मुझे निहायत अफ़्सोस है कि वोह ऐसे काम करता है येह **ग़ीबत** नहीं, क्यूं कि जिस की बुराई की अगर उसे ख़बर भी हो गई तो इस सूरत में वोह बुरा न मानेगा, बुरा उस वक़्त मानेगा जब उसे मा'लूम हो कि इस कहने वाले का मक़्सूद ही बुराई करना है, मगर येह ज़रूर है कि उस चीज़ का इज़्हार इस ने ह़सरत व अफ़्सोस ही की वज्ह से किया हो वरना येह **ग़ीबत** है बल्कि एक क़िस्म का **निफ़ाक़** और **रिया** और अपनी **मद्ह़ सराई** (या'नी अपने मुंह अपनी ता'रीफ़) है, क्यूं कि इस ने मुसल्मान भाई की बुराई बयान की और ज़ाहिर येह किया कि बुराई मक़्सूद नहीं येह निफ़ाक़ हुवा और लोगों पर येह ज़ाहिर किया कि येह काम मैं अपने लिये और दूसरों के लिये बुरा जानता हूं येह **रिया** है और चूंकि ग़ीबत को **ग़ीबत** के

त़ौर पर नहीं किया, लिहाज़ा अपने को सु-लहा (नेक बन्दों) में से होना बताया येह तज़्कियए नफ़्स और ख़ुद सिताई (अपने मुंह अपनी ता'रीफ़) हुई। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 176, دُرِّمُختار،رَدُّالمُحتار ج ۹ ص ۶۷۳) इस जुज़्इये का येह **म-दनी फूल** क़ाबिले ग़ौर है कि बयान करने में इज़्हारे अफ़्सोस का अन्दाज़ ऐसा हो कि जिस की **ग़ीबत** की गई उस को पता चल भी जाए तो वोह येह समझे कि येह बेचारा मेरी कोताही की वज्ह से ग़मज़दा हुवा, इस लिये इस ने मह्ज़ अफ़्सोस के त़ौर पर येह बात की है मेरी बुराई करना मक़्सूद नहीं। बहुत सोच समझ कर ज़बान खोलने की ज़रूरत है, मह्ज़ ज़बर दस्ती के अफ़्सोस की कैफ़िय्यत पैदा कर लेना काफ़ी नहीं। आह ! **ग़ीबत** का अ़ज़ाब सहा न जा सकेगा !

**बत़ौरे अफ़्सोस ग़ीबत करने से बचने ही में आफ़िय्यत है :** ह़क़ीक़त येही है कि **ग़ीबत** जाइज़ होने की अफ़्सोस वाली सूरत में **ग़ीबत** के गुनाह में जा पड़ने का ख़त़रा बहुत ज़ियादा है कि आ़म आदमी के लिये "ह़क़ीक़ी अफ़्सोस" और "अस्ल ग़ीबत" में फ़र्क़ करना बेह़द मुश्किल है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ मु-तकल्लिमीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن (या'नी इल्मे कलाम के माहिरीन उ़-लमा) फ़रमाते हैं कि किसी ऐसी चीज़ का ज़िक्र करना जिस से सामने वाले की तख़्फ़ीफ़ (या'नी तह़्क़ीर व तज़्लील) होती हो येह उस वक़्त **ग़ीबत** होगी जब कि इस से (उस की इ़ज़्ज़त को) नुक़्सान पहुंचाने और बुराई बयान करने का इरादा करे और (हां) इस का उस (के ऐ़ब) को अफ़्सोस के त़ौर पर ज़िक्र करना **ग़ीबत** नहीं कहलाएगा। येह लिखने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मज़ीद फ़रमाते हैं कि (इस ज़िम्न में) **इमाम समर क़न्दी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपनी "तफ़्सीर" में फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं जो उन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने बयान फ़रमाया है इस में अ़ज़ीम ख़त़रा है क्यूं कि इस में (या'नी मैं तो बत़ौरे अफ़्सोस ग़ीबत कर रहा हूं में) इस बात का गुमान है कि लोगों का इस त़रह़ करना (या'नी अपने ख़याल में अफ़्सोस के लिये ग़ीबत करता हूं समझना बे एह़तियात़ी की सूरत में) उन को उस बात की त़रफ़ ले जाएगा जो मह्ज़ (गुनाह भरी) **ग़ीबत** है लिहाज़ा इस का बिल्कुल तर्क कर देना (या'नी बत़ौरे अफ़्सोस किसी की ग़ीबत न करना) तक़्वा के ज़ियादा क़रीब और ज़ियादा एह़तियात़ पर

मब्नी है । (تفسیر روحُ البیان ج۹ص۸۹) ﴾11﴿ ह़दीस के रावियों, मुक़द्दमे के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जरह़ (या'नी इन के उ़यूब को ज़ाहिर) करना (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ۶۷۵) ﴾12﴿ **मुरतद** और काफ़िरे ह़र्बी की बुराई बयान करना (अब दुन्या में तमाम काफ़िर ह़र्बी हैं) । येह बयान कर्दा तमाम सूरतें ब ज़ाहिर **ग़ीबत** हैं और ह़क़ीक़त में गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं और इन उ़यूब का बयान करना जाइज़ है बल्कि बा'ज़ सूरतों में **वाजिब** है ।

*सुब्ह़ होती है शाम होती है उ़म्र यूं ही तमाम होती है*
*ख़ूब इन्सां को करती है रुस्वा जब ज़बां बे लगाम होती है*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 495)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**काफ़िर और मुरतद की ग़ीबत के अह़काम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** "ज़िम्मी काफ़िर" की **ग़ीबत** ना जाइज़ और "ह़र्बी काफ़िर" और **मुरतद** की जाइज़ है, आज कल दुन्या के तमाम यहूदी, क्रिस्चेन और हर काफ़िर "ह़र्बी" है । मगर पुराने दौर में जब कि मुसल्मानों का ग़-लबा था उस वक़्त "ज़िम्मी काफ़िर" भी पाए जाते थे । उन को तक्लीफ़ देना और उन की **ग़ीबत** करना ना जाइज़ था जैसा कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जिस ने किसी यहूदी या नसरानी को तक्लीफ़ देह बात कही उस का ठिकाना जहन्नम है ।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حِبّان حدیث۴۸۶۰ ج۷ ص۱۹۳) ज़िम्मी काफ़िर उस मख़्सूस काफ़िर को कहते हैं जो इस्लामी हुकूमत को अपने तह़फ़्फ़ुज़ के लिये जिज़्या (TAX) अदा करे । चुनान्चे "**तफ़्सीरे नईमी**" में है : **जिज़्या** या'नी वोह शर-ई मह़सूल (TAX) जो हुकूमत अहले किताब (यहूद व नसारा) से उन के जान व माल की ह़िफ़ाज़त के बदले वुसूल करे ।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 10, स. 254, मुलख़्ख़सन)

*दे ग़ीबत से तोहमत से नफ़रत ख़ुदाया  कि बेशक है इन में हलाकत ख़ुदाया*
*मेरी ज़ात से दिल दुखे न किसी का  मिले मुझ से सब को मसर्रत ख़ुदाया*

**बद मज़्हबों से ह़दीस व आयत न सुनी : ह़ज़रते** अ़ल्लामा इमाम अबू बक्र मुह़म्मद **इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن की ख़िदमत में दो **बद अ़क़ीदा** आदमी ह़ाज़िर हुए और कहने लगे : ऐ अबू बक्र ! हम आप को एक ह़दीस सुनाते हैं। फ़रमाया : मैं नहीं सुनूंगा। दोनों ने कहा : अच्छा चलिये क़ुरआने करीम की एक आयत ही सुन लीजिये। फ़रमाया : नहीं सुनूंगा, तुम दोनों मेरे पास से चले जाओ वरना मैं उठ कर चला जाता हूं। आख़िर वोह चले गए तो बा'ज़ लोगों ने (ह़ैरत से) अ़र्ज़ की : ऐ अबू बक्र ! आप अगर उन से ह़दीसे पाक या आयते क़ुरआनी सुन लेते तो इस में आख़िर क्या ह़रज था ? फ़रमाया : मुझे येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि येह लोग क़ुरआनो ह़दीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं और वोह मेरे दिल में रह जाए (तो हलाक हो जाऊं इस लिये मैं ने उन से क़ुरआनो ह़दीस सुनना गवारा न किया)।

(سُنَنِ دارمی ج۱ ص۱۲۰ رقم۳۹۷, फ़ताव र-ज़विय्या, जि. 15, स. 106)

**बद अ़क़ीदा शख़्स की ग़ीबत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत में मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग इमामुल मुअ़ब्बिरीन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र मुह़म्मद **इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن ने दो शख़्सों के बारे में येह जो फ़रमाया है कि "मुझे येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि येह लोग क़ुरआनो ह़दीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं" येह ब ज़ाहिर बद गुमानी व **ग़ीबत** है मगर येह जाइज़ बद गुमानी व ग़ीबत है बल्कि ऐसी **ग़ीबत** बाइसे सवाबे आख़िरत होती है क्यूं कि वोह दोनों **बद अ़क़ीदा** थे लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन की बद अ़क़ीदगी का लोगों पर इज़्हार फ़रमा दिया। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 175 ता 176 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **बद अ़क़ीदा** लोगों का ज़रर (या'नी नुक़्सान) **फ़ासिक़** के ज़रर से बहुत ज़ाइद है,

फ़ासिक़ से जो ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचेगा वोह उस से बहुत कम है जो बद अ़क़ीदा लोगों से पहुंचता है। **फ़ासिक़** से अक्सर दुन्या का ज़रर (नुक़्सान) होता है और **बद मज़्हब** से तो दीनो ईमान की बरबादी का ज़रर (नुक़्सान) है और बद मज़्हब अपनी बद मज़्हबी फैलाने के लिये नमाज़ व रोज़ा की ब ज़ाहिर ख़ूब पाबन्दी करते हैं, ताकि इन का वक़ार लोगों में क़ाइम हो फिर जो गुमराही की बात करेंगे उन का पूरा असर होगा, लिहाज़ा ऐसों की बद मज़्हबी का इज़्हार फ़ासिक़ के फ़िस्क़ के इज़्हार से ज़ियादा अहम है इस के बयान करने में हरगिज़ दरेग़ न करें। (बहारे शरीअ़त)

**मन्हूस बद मज़्हबों की बात सुननी ही नहीं है :** मज़्कूरा ह़िकायत से उन लोगों को भी दर्स ह़ासिल करना चाहिये कि जो येह समझते हैं कि जो कोई भी क़ुरआनो ह़दीस बयान करे आंखें बन्द कर के उस से सुन लेना चाहिये अगर ऐसा होता तो मुसल्मानों के जलीलुल क़द्र इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र **मुह़म्मद इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن जैसे अ़ज़ीम आ़लिमे दीन ने उन बद अ़क़ीदा आदमियों से क़ुरआनो ह़दीस को क्यूं नहीं सुना ! बस यूं समझो कि उन्हों ने न सुन कर गोया हम जैसों को समझाया है कि मैं भी नहीं सुनता तुम भी मत सुनो ! ह़ालां कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अ़-रबी दान और जलीलुल क़द्र आ़लिम व मुज्तहिद थे, अगर वोह बद अ़क़ीदा लोग तावील करते तो पकड़े भी जाते मगर इन मन्हूस बद मज़्हबों से सुनना ही नहीं है कि शैत़ान को बहकाते देर नहीं लगती। अगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सुन लेते तो दूसरों के लिये दलील हो जाती और वोह सुन कर गुमराह होते। और हां आप ने उन को जो चले जाने का हुक्म फ़रमाया वोह कोई बद अख़्लाक़ी नहीं थी बल्कि ऐसा करना ऐ़न ह़ुस्ने अख़्लाक़ है। **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم के दुश्मनों की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ नहीं की जा सकती।

***जो हैं गुस्ताख़े मुस्तफ़ा उस को — मैं ने दिल से निकाल रख्खा है***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 445)

**बद मज़्हबी की बू :** **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" (मुकम्मल) सफ़्ह़ा 302 पर

है : **हज़रते** उ़मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े मग़रिब पढ़ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाए थे कि एक शख़्स ने आवाज़ दी : कौन है कि मुसाफ़िर को खाना दे ? **अमीरुल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने ख़ादिम से इर्शाद फ़रमाया : इसे हमराह ले आओ। वोह आया (तो) उसे खाना मंगा कर दिया। मुसाफ़िर ने खाना शुरूअ़ ही किया था कि एक लफ़्ज़ उस की ज़बान से ऐसा निकला जिस से "बद मज़्हबी की बू" आती थी, फ़ौरन खाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया। (کَنْزُ الْعُمّال ج ۱۰ ص ۱۱۷ رقم ۲۹۳۸٤)

***फ़ारिक़े हक़्क़ो बातिल इमामुल हुदा तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम***

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 312)

**बद मज़्हबों के पास बैठना कैसा ? : "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** (मुकम्मल) सफ़्ह़ा 277 से **अ़र्ज़, इर्शाद** का इक़्तिबास मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और अपनी आख़िरत की बेहतरी की सूरत बनाइये।

**अ़र्ज़ :** अक्सर लोग बद मज़्हबों के पास जान बूझ कर बैठते हैं। उन के लिये क्या हुक्म है ?

**इर्शाद :** (बद मज़्हबों के पास बैठना) ह़राम है और बद मज़्हब हो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिये ज़हरे क़ातिल। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِیَّاکُمْ وَاِیَّاھُمْ لَا یُضِلُّوْنَکُمْ وَلَا یَفْتِنُوْنَکُمْ या'नी उन्हें अपने से दूर करो और उन से दूर भागो वोह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डालें। (مقدّمہ صَحِیح مُسلِم حدیث۷ ص ۹) और अपने नफ़्स पर ए'तिमाद करने वाला बड़े कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बड़े झूटे) पर ए'तिमाद करता है, اِنَّھَا اَکْذَبُ شَیْءٍ اِذَا حَلَفَتْ فَکَیْفَ اِذَا وَعَدَتْ (नफ़्स अगर कोई बात क़सम खा कर कहे तो सब से बढ़ कर झूटा है न कि जब ख़ाली वा'दा करे) सहीह़ ह़दीस में फ़रमाया : जब दज्जाल निकलेगा, कुछ (अफ़राद) उसे तमाशे के तौ़र पर देखने जाएंगे कि हम तो अपने दीन पर मुस्तक़ीम (या'नी क़ाइम) हैं, हमें उस से क्या नुक़्सान होगा ? वहां जा कर वैसे ही हो जाएंगे। (سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ۱۵۷ حدیث ٤۳۱۹) ह़दीस में है नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उस का ह़श्र

उसी के साथ होगा। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرانی ج٥ص١٩حدیث ٦٤٥٠)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ (پ٦، المائدہ:٥١)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है।

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : (اَلْاَعْدَاءُ ثَلٰثَةٌ عَدُوُّكَ وَعَدُوُّصَدِيْقِكَ وَصَدِيْقُ عَدُوِّكَ) (दुश्मन तीन हैं : एक तेरा दुश्मन, एक तेरे दोस्त का दुश्मन और एक तेरे दुश्मन का दोस्त)।

(المختصر المحتاج اليه للذهبى ص١٢٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। ख़ूब हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत कीजिये और **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ **म-दनी चेनल** के सिल्सिले देखिये। आप की तरग़ीब के लिये **म-दनी चेनल** की एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे अ़लाक़े में एक वर्कशोप थी, उस में एक T.V. भी रखा हुवा था जिस पर कारीगर मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ देखा करते थे। **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि.हि. (2008) में जब दा'वते इस्लामी का **म-दनी चेनल** शुरूअ़ हुवा तो उन्हें कुछ ऐसा भाया कि दीगर तमाम चेनल्ज़ के बजाए अब वोह फ़क़त् **म-दनी चेनल** देखने लगे। उन कारीगरों में एक ग़ैर मुस्लिम नौ जवान भी शामिल था वोह भी ''म-दनी चेनल'' के पुरसोज़ सिल्सिलों

(प्रोग्राम्ज़) में दिलचस्पी लेने लगा । म–दनी चेनल में इस्लाम का ह़क़ीक़ी नक़्शा देख कर वोह बेह़द मु–तअस्सिर हुवा और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तीन दिन के बा'द वोह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया ।

***कुफ़्र के ऐवां में मौला डाल दे येह ज़ल्ज़ला***
***या इलाही ! ता अबद जारी रहे येह सिलिसिला***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 634)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**25 ग़ैर मुस्लिम क़ैदियों का क़बूले इस्लाम :** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन की मसाइये जमीला से वक़्तन फ़ वक़्तन कुफ़्फ़ार की इस्लाम आ–वरी की ख़बरें मिलती रहती हैं । चुनान्चे एक और ईमान अफ़्रोज़ बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं : बर्रे आ'ज़म अफ़्रीक़ा के एक मुल्क ज़म्बिया (zambia) के दारुल ख़िलाफ़ा लुसाका (Lusaka) की कम्वाला (Kamwala) जेल में 2004 सि.ई. में दो भाई किसी ग़ैर क़ानूनी काम के इल्ज़ाम में क़ैद हो गए । वहां पर मुक़ीम चन्द इस्लामी भाई हर दूसरे दिन मुलाक़ात के लिये जाते । खाने के सामान के साथ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक–त–बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा म–दनी रसाइल भी तोह़फ़तन दे आते । ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मम्लू तह़रीरें पढ़ कर दोनों भाइयों के दिलो दिमाग़ में **म–दनी इन्क़िलाब** बरपा होना शुरूअ़ हो गया । पन्ज वक़्ता **नमाज़** के साथ साथ उन्हों ने **तहज्जुद** की पाबन्दी भी शुरूअ़ कर दी, **म–दनी इन्आ़मात** को अपने ऊपर नाफ़िज़ करने का इरादा कर लिया और **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देना शुरूअ़ कर दिया ।

**दर्स** की इब्तिदा में बताए जाने वाले **दुरूदे पाक** के फ़ज़ाइल सुन सुन कर दीगर मुसल्मान क़ैदी भी कसरत के साथ दुरूदो सलाम पढ़ने लगे । इस की उन्हें कुछ ऐसी **ब–र–कतें** नसीब हुईं कि बहुत से क़ैदियों को जल्द रिहाई मिल गई । कुफ़्फ़ार क़ैदी **दुरूदे पाक** की ब–र–कतें जागती आंखों से देख कर बहुत मु–तअस्सिर होते । यूं आहिस्ता आहिस्ता वोह **दीने इस्लाम** के क़रीब होते चले गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तीन से चार माह के क़लील अ़र्से में **25 ग़ैर मुस्लिम क़ैदी** दौलते

इस्लाम से मुशर्रफ़ हो गए। उन में एक पचास सालह **पादरी** भी शामिल था। उस का क़िस्सा यूं हूवा कि उस ने क़ैद के दौरान इस्लामी कुतुब का मुता–लआ़ शुरूअ़ किया तो एक रात ख़्वाब में इन्तिहाई ख़ूब सूरत **मस्जिद** देखी लेकिन जब उस में दाख़िल होने की कोशिश की तो दरवाज़ा बन्द हो गया। सुब्ह़ किसी इस्लामी भाई के पास **मस्जिदुन्–बविय्यिशशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का तुग़रा देख कर बे साख़्ता पुकार उठा कि **येह तो वोही मस्जिद है जो मैं ने ख़्वाब में देखी थी।** दीने इस्लाम के बारे में मा'लूमात ह़ासिल कर के और इस्लामी भाइयों का सह़ीह़ इस्लामी नक़्शा अपनी आंखों से देख कर वोह पादरी भी **मुसल्मान** हो गया और निय्यत की, कि क़ैद से आज़ाद हो कर अपने सारे ख़ानदान को मुसल्मान होने की दा'वत पेश करूंगा।

*मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी*     *सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 108)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## "ग़ीबत की तबाह कारियां" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ग़ीबत पर उभारने वाली 16 चीज़ों का बयान

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बहुत सारे अस्बाब ऐसे हैं जिन की वज्ह से आदमी **ग़ीबत** की आफ़त में मुब्तला हो जाता है इन में से 16 येह भी हैं :

﴾1﴿ ग़ुस्सा ﴾2﴿ बुग़्ज़ो कीना ﴾3﴿ ह़सद ﴾4﴿ गहरे दोस्त या घर के किसी अहम फ़र्द की ह़िमायत का जज़्बए बे जा ﴾5﴿ ज़ियादा बोलने की आ़दत ﴾6﴿ त़न्ज़ करने की ख़स्लत ﴾7﴿ हंसी मज़ाक़ की लत (ऐसा शख़्स दूसरों को हंसाने के लिये लोगों की नक़्लें उतार कर भी बसा अवक़ात **ग़ीबत** में मुब्तला हो जाता है) ﴾8﴿ घरेलू ना चाक़ियां (इन ह़ालात में **ग़ीबत** से बचना क़रीब ब ना मुम्किन है, सुल्ह़ कर लेने ही में दोनों जहां की आ़फ़िय्यत है) ﴾9﴿ रिश्तेदारों या दोस्तों से नाराज़ियां ﴾10﴿ गिला शिक्वा करने की आ़दत (जहां किसी के बारे में दूसरे से शिक्वा शुरूअ़ किया कि शैत़ान ने बद गुमानियों, ऐब दरियों, **ग़ीबतों,** तोहमतों और चुग़लियों का ढेर लगवा दिया !) ﴾11﴿ तकब्बुर ﴾12﴿

वहमी त़बीअ़त ﴾13﴿ बे जा तन्क़ीदी ज़ेह्न (तन्क़ीदे बे जा का मरीज़ किसी की बराहे रास्त इस्लाह़ करने के बजाए उ़मूमन दूसरों के आगे **ग़ीबतें** करता फिरता है कि वोह यूं कर रहा है फ़ुलां ऊं कर रहा है फ़ुलां को यूं नहीं बल्कि यूं करना चाहिये था) ﴾14﴿ ग़ीबत की हलाकत सामानियों और इस के दीनी व दुन्यवी नुक़्सानों से ना वाक़िफ़िय्यत ﴾15﴿ बे जा जज़्बातिय्यत और "भड़ास" निकाले बिग़ैर सुकून न मिलना ﴾16﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कमी और अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से अपने आप को डराते रहने की आ़दत न होना वग़ैरा। बहर ह़ाल जो **ग़ीबत** की आफ़ात से ख़ुद को बचाने और क़ब्र व जहन्नम के अ़ज़ाबात से नजात पाने का आरज़ू मन्द हो उसे बयान कर्दा जुम्ला अस्बाब और इस के इलावा भी **ग़ीबत** पर उभारने वाली तमाम अश्या का **इलाज** करना और **ग़ीबत** से बचने के त़रीक़े जानना निहायत ज़रूरी है।

*मिटा मेरे रन्जो अलम या इलाही — अ़ता कर मुझे अपना ग़म या इलाही*
*शराबे मह़ब्बत कुछ ऐसी पिला दे — कभी भी नशा हो न कम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 109)

**ग़ीबत से बचने का आसान तरीन विर्द : ह़ज़रते** अ़ल्लामा मज्दुद्दीन **फ़ीरोज़आबादी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص٢٧٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत का इज्माली ( या'नी मुख़्तसर ) इलाज : ग़ीबत** का इज्माली या'नी मुख़्तसर इलाज येह है कि इस के अस्बाब का ख़ातिमा किया जाए। म-सलन **ग़ुस्सा** भी इस का एक सबब है तो जब किसी पर **ग़ुस्सा** आ जाए और उस की **ग़ीबत** करने और **ऐ़ब** खोलने का जज़्बा पैदा

हो तो फ़ौरन ग़ौर कीजिये कि अगर मेरे इस अ़मल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब नाक हो गया और उस ने मेरे **उ़यूब** खोल दिये तो मैं क्या करूंगा ! नीज़ अपने आप को यूं भी डराइये कि अगर मैं **ग़ुस्से** में आ कर **ग़ीबत** करूंगा तो गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार क़रार पाऊंगा कि येह गुनाह के ज़रीए ग़ुस्सा ठन्डा करना हुवा और फ़रमाने **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जहन्नम में एक दरवाज़ा है उस से वोही दाख़िल होंगे जिन का **ग़ुस्सा** किसी गुनाह के बा'द ही ठन्डा होता है।" (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج١ ص٢٠٥ حديث٧٨٤) **बुग़्ज़ो कीना** भी "ग़ीबत" का एक बहुत बड़ा सबब है लिहाज़ा इस की तबाह कारियां ज़ेह्न में ला कर इन के इ़लाज की भी तरकीब कीजिये, और ख़ुद को इस वई़द से डराइये जैसा कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "शा'बान की पन्दरहवीं शब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को रह़मत की नज़र से देखता और सब को बख़्श देता है लेकिन मुशरिक और कीना परवर को नहीं बख़्शा जाता।" (الاحسان بترتيب صَحِيح ابنِ حِبّان ج ٧ ص ٤٧٠ حديث ٥٦٣٦)

**ह़सद** भी "ग़ीबत" का एक सबब है इस का भी इ़लाज कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जो मौत को कसरत के साथ याद करे उस के ह़सद और ख़ुशी में कमी आ जाएगी। (مُصَنَّف ابن اَبی شَيبه ج٨ ص١٦٧ رقم ٤) **घरेलू ना चाक़ियां** ख़त्म कीजिये कि इस से **ग़ीबत** का बहुत बड़ा दरवाज़ा खुलता है, घर के नाराज़ अफ़राद म-सलन मां बाप, भाई बहन नीज़ दीगर रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये और आयिन्दा भी हरगिज़ इन से न बिगाड़िये, वोह लाख बिगाड़ें मगर आप उन के साथ ह़ुस्ने सुलूक ही करते रहिये। इन **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए अपना ख़ूब ज़ेह्न बनाइये : **(1)** "सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा वोह है जो कीना परवर रिश्तेदार को दिया जाए।" (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج ٢ ص ٢٧ حديث١٥١٥) इस की वज्ह येह है कि कीना रखने वाले रिश्तेदार को स-दक़ा देने में स-दक़ा भी है और क़त़ए रेह़मी करने (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने) वाले के साथ सिलए रेह़मी (या'नी ह़ुस्ने सुलूक) भी। **(2)** "रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।" (صَحيح مُسلِم ص ١٣٨٣ حديث٢٥٥٦) **मज़ाक़ मस्ख़री** की आ़दत पर ख़ुद पर पाबन्दी लगा दीजिये, ख़ामोशी और सन्जीदगी की आ़दत बनाइये। जब **ग़ीबत** करने को जी चाहे तो उस के दुन्यवी व

उख़रवी नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये, इस के अ़ज़ाबात जैसा कि मुर्दार का गोश्त खाना, तांबे के नाख़ुनों से अपना चेहरा और सीना छीलना, पहलूओं से काट काट कर गोश्त खिलाया जाना वग़ैरा ज़ेहन में दोहराइये, नीज़ **ग़ीबत** के सबब होने वाली नेकियों की कमी, गुनाहों की ज़ियादती और **बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़** से ख़ुद को ठीकठाक डरा दीजिये। **ग़ीबत** के इज्माली (मुख़्तसर) इलाज की इन चन्द सुतूर को काफ़ी मत समझिये, आगे आने वाला **ग़ीबत का तफ़्सीली इलाज** भी ज़रूर पढ़िये। हां इस से शैतान आप को बहुत रोकेगा और ख़ूब सुस्ती दिलाएगा मगर आप इसे मुकम्मल पढ़ कर इस मरदूद को ना मुराद कीजिये। **ग़ीबत** की तबाह कारियों और इस पर मिलने वाले अ़ज़ाबों का वक़्तन फ़ वक़्तन मुत़ा-लआ़ करते रहिये वरना तवज्जोह हट जाने की सूरत में **ग़ीबत** पर दोबारा दिलेर हो जाने का ख़त़रा रहेगा।

*अ़फ़्व फ़रमा ख़त़ाएं मेरी ऐ अ़फ़ू　　शौक़ो तौफ़ीक़, नेकी का दे मुझ को तू*
*जारी दिल कर कि हर दम रहे ज़िक्रे हू　　आ़दते बद बदल और कर नेक ख़ू*
*अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू*

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه!　　اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मियां बीवी के क़बूले इस्लाम की ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहार :** **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां

के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों में भरपूर हि़स्सा लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जहां इस्लामी भाई म-दनी कामों में मसरूफ़ हैं वहां इस्लामी बहनें भी किसी त़रह़ म-दनी कामों में पीछे नहीं, आइये पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये फिर एक **म-दनी बहार** सुनते हैं चुनान्चे **सेन्ट्रल** जेल (सख्खर **2** बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक ग़ैर मुस्लिम क़ैदी औ़रत की **''बेरिक''** में एक बा पर्दा इस्लामी बहन, मुसल्मान क़ैदी औ़रतों को **क़ुरआने पाक** की ता'लीम देने और सुन्नतें सिखाने के लिये आती थीं। उन का इस्लाम के सांचे में ढला किरदार और चेहरे से तक़द्दुस के झलक्ते अन्वार देख कर उन्हें उन में अ़जीब कशिश मह़सूस हुई, उन्हें देख कर उन्हें **ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا याद आ जातीं। उन्हों ने जब उन से मुलाक़ात की तो उन्हों ने अपना तआ़रुफ़ कुछ यूं करवाया : मेरा तअ़ल्लुक़ **दा'वते इस्लामी** से है, **दा'वते इस्लामी** तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक है, दा'वते इस्लामी ने हमें येह म-दनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया है कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَاللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ'' इस अ़ज़ीम मक़्सद को पूरा करने की कोशिश के लिये **दा'वते इस्लामी** में मुख़्तलिफ़ शो'बों में म-दनी काम के लिये जहां दीगर मजालिस क़ाइम की हैं वहीं एक मजलिस ''फ़ैज़ाने क़ुरआन'' के नाम से भी बनाई है जो दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुल्कों के जेलख़ानों में **दा'वते इस्लामी** का ''म-दनी काम'' करने की सअ़्य में मसरूफ़ है, मैं इसी मजलिस की इजाज़त से यहां क़ैदी औ़रतों में नेकी की दा'वत का जज़्बा ले कर आती हूं।

***मेरी काश ! सारी बहनें, रहें म-दनी बुरक़ओ़ में***
***हो करम शहे ज़माना म-दनी मदीने वाले***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 429)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**दा'वते इस्लामी** की मुबल्लिग़ा के अन्दाज़े गुफ़्त-गू ने उन्हें अपना ऐसा **गिरवीदा** कर लिया कि वोह रोज़ाना उन की मुन्तज़िर रहने लगी, जब वोह तशरीफ़ ले आतीं तो वोह अपना ज़ियादा वक़्त उन के साथ ही गुज़ारने की कोशिश करती। उन का पाकीज़ा किरदार देख कर सोचा करती कि **इस्लाम** अपने मानने वालों को **इफ़्फ़त व पारसाई** का कैसा प्यारा दर्स देता है ! उन की सोह़बत और **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से उन के दिल में इस्लाम की मह़ब्बत की **शम्अ़** रोशन होने लगी, बिल आख़िर एक रोज़ उन्हों ने **मुसल्मान** होने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर ही लिया। दूसरे दिन जब वोह **मुबल्लिग़ा** तशरीफ़ लाईं तो उन्हों ने मुसल्मान होने की ख़्वाहिश का इज़्हार किया तो मुबाल्लिग़ा ने ख़ुश हो कर फ़ौरन उन्हें तौबा करवा कर कलिमा पढ़ा दिया : **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**

येह देख कर वहां मौजूद दीगर इस्लामी बहनें **अश्कबार** हो गईं और गले लग कर उन्हें मुसल्मान होने की **मुबारक बाद** देने लगीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के पाकीज़ा म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर इस्लामी अह़कामात पर अ़मल की कोशिश शुरूअ़ कर दी और सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم की मुरीदनी बन गईं। इस्लाम क़बूल करने के बा'द उन्हों ने अपने शोहर पर **इन्फ़िरादी कोशिश** शुरूअ़ कर दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दो माह बा'द वोह भी जुमादिल आख़िरह 1427 सि.हि. में **सायए इस्लाम** में आ गए।

*ऐ इस्लामी बहनो तुम्हारे लिये भी — सुनो है बहुत काम का म-दनी माह़ोल*
*तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम — येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माह़ोल*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 648)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से आए दिन बुत परस्तों

की इस्लाम आ–वरी की तरकीबें बनती रहती हैं, उन के लिये ज़ैल के दो सुवाल जवाब निहायत कारआमद हैं :

## मुश्रिका का शोहर मुसल्मान हो गया निकाह़ का क्या बना ?

**सुवाल :** अगर शोहर मुसल्मान हो गया और बीवी बुत परस्त है तो बीवी के साथ **निकाह़** बर क़रार रहा या टूट गया ?

**जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह,** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : औ़रत अगर मुश्रिका है तो मुसल्मान की ज़ौजिय्यत में नहीं रह सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ **तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** न येह उन्हें ह़लाल न वोह इन्हें ह़लाल। (پ ۲۸ مُمتَحِنہ ۱۰) शोहर के मुसल्मान होने के बा'द क़ाज़ी औ़रत पर इस्लाम पेश करेगा अगर इस्लाम से इन्कार करे **निकाह़** जाता रहेगा। और जहां क़ाज़ी न हों जैसे आज कल हिन्दुस्तान, यहां औ़रत को तीन ह़ैज़ आने पर निकाह़ टूट जाएगा। येह ह़ुक्म **निकाह़** टूटने का है। या'नी अगर तीन ह़ैज़ गुज़रने के बा'द औ़रत भी मुसल्मान हो गई और उसी शोहर के पास रहना चाहती है तो **जदीद निकाह़** की ज़रूरत होगी कि अब वोह पहला **निकाह़** जाता रहा। रहा औ़रत से जिमाअ़ करना तो मर्द के इस्लाम लाते ही (उस काफ़िरा बीवी से) **ह़राम** हो गया। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 416)

**सुवाल :** औ़रत मुसल्मान हो गई मगर शोहर अभी तक काफ़िर है, निकाह़ का क्या बना ?

**जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह,** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो औ़रत या मर्द मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो तफ़रीक़ (या'नी दोनों को अलग करने) के लिये येह शर्त़ है कि अ़र्ज़े इस्लाम दूसरे पर किया जाए वोह इन्कार कर दे तो फ़ुरक़त (या'नी जुदाई, अ़ला–ह़–दगी) हो जाएगी और अ़र्ज़े इस्लाम क़ाज़ी का काम है यहां येह चीज़ ना मुम्किन सी है ऐसी जगह के लिये ह़ुक्म येह है कि औ़रत मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो तो जब तक तीन ह़ैज़ न गुज़ार ले फ़ुरक़त नहीं होगी तीन

हैज़ या ग़ैरे हाइज़ (या'नी जिस को हैज़ न आता हो उस) के लिये तीन माह गुज़रने से पहले निकाह़ की इजाज़त नहीं। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 2, स. 42)

*ऐ इस्लामी बहनो तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का म-दनी माह़ोल*
*तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माह़ोल*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**बे अ़मल मुसल्मानों का किरदार क़बूले इस्लाम में रुकावट : नाबीना** इस्लामी भाइयों के म-दनी क़ाफ़िले से मु-तअस्सिर हो कर एक ग़ैर मुस्लिम ने पहले क्या कहा फिर कैसे मुसल्मान हुवा येह जानने के लिये इस **म-दनी बहार** को ग़ौर से सुनिये और झूमिये चुनान्चे **बाबुल मदीना** कराची ( 2007 सि.ई.) में **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **नाबीना इस्लामी भाइयों** का एक **म-दनी क़ाफ़िला** मत़्लूबा मस्जिद तक पहुंचने के लिये बस में सुवार हुवा। उस म-दनी क़ाफ़िले में चन्द उ़मूमी (या'नी ग़ैर मा'ज़ूर) इस्लामी भाई भी शरीक थे। अमीरे क़ाफ़िला ने बराबर बैठे हुए शख़्स पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उस का नाम वग़ैरा मा'लूम किया तो वोह कुछ यूं कहने लगा कि "मैं **ग़ैर मुस्लिम** हूं, मैं ने **मज़्हबे इस्लाम** का मुत़ा-लआ़ किया है और इस से मु-तअस्सिर भी हूं मगर फ़ी ज़माना मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार मेरे इस्लाम क़बूल करने में रुकावट है। अलबत्ता मैं देख रहा हूं कि आप लोग एक जैसे लिबास में मल्बूस हैं, जब बस में चढ़े तो बुलन्द आवाज़ से अपने इस्लामी त़रीक़े पर सलाम किया[1] और ह़ैरत तो इस बात की है कि आप ह़ज़रात के साथ शामिल **नाबीना** अफ़राद ने भी सफ़ेद लिबास पहना और सर पर **सब्ज़ इमामा** बांधा हुवा है, इन सब के चेहरों पर दाढ़ी भी है।"

**1.** कुफ़्फ़ार के अक्सरिय्यती ममालिक कि जहां भारी ता'दाद में ग़ैर मुस्लिम होते हैं वहां अगर बस वग़ैरा में सलाम करे तो मुसल्मानों की निय्यत करे, इस्लामी ममालिक जैसे पाकिस्तान वग़ैरा में बसों के अन्दर सलाम करने में मुसल्मानों की निय्यत की ह़ाजत नहीं, अलबत्ता अगर मा'लूम है कि बस में कुफ़्फ़ार भी सुवार हैं तो अब सलाम करने में मुसल्मानों की निय्यत करे।

उस की इस्लाम की त़रफ़ झुकाव वाली गुफ़्त-गू सुनने के बा'द **अमीरे क़ाफ़िला** ने बड़े प्यार से उसे मुख़्तसर त़ौर पर दा'वते इस्लामी और इस की मजलिस "**मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई**" का तआ़रुफ़ करवाया और बताया कि येह मजलिस किस त़रह़ गूंगे बहरों और नाबीनाओं में म-दनी काम करती है। फिर उस से कहा कि "येह **नाबीना इस्लामी भाई** उन्ही बे अ़मल मुसल्मानों की इस्लाह़ के लिये निकले हैं जिन्हें देख कर आप इस्लाम क़ुबूल करने से कतरा रहे हैं।" **येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।**

*आओ ऐ आ़शिक़ीं, मिल के तब्लीग़े दीं — काफ़िरों को करें, क़ाफ़िले में चलो*
*कुफ़्र का सर झुके, दीं का डंका बजे — اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ चलें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 676)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللہ! اَسْتَغْفِرُاللہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

# ग़ीबत के तफ़्सीली 10 इ़लाज

## इ़लाज नम्बर 1

**तन्हा रहे या अच्छी सोह़बत इख़्तियार करे : दीनी** मश्ग़लों और दुन्या के ज़रूरी कामों से फ़रागत के बा'द ख़ल्वत या'नी तन्हाई इख़्तियार कीजिये या सिर्फ़ ऐसे सन्जीदा और सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाइयों की सोह़बत ह़ासिल कीजिये जिन की बातें ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में इज़ाफ़े का बाइ़स बनें और वोह वक़्तन फ़ वक़्तन ज़ाहिरी बुराइयों और बात़िनी बीमारियों की निशान देही करते और इन का इ़लाज तजवीज़ फ़रमाते हों। अच्छी सोह़बत के मु-तअ़ल्लिक़ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं : **(1)** अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि जब तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए। (اَلْاِخوان لِابْنِ اَبِی الدُّنیا رقم۴۲) **(2)** अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि उस के देखने से तुम्हें ख़ुदा

عَزَّوَجَلَّ याद आए और उस की गुफ़्त–गू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए। (شُعَبُ الْاِیمان ج۷ ص۵۷ حدیث۹۴۴۶)

**नेक बन्दे की दुआ़ पर "आमीन" कहने की ब–र–कत : ऐसे** नेक बन्दों की ख़िदमत में ह़ाज़िरी की सआ़दत बसा अवक़ात बाइ़से मग़्फ़िरत हो जाती है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی **शर्हुस्सुदूर** में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ **मुह़म्मद** बिन यज़ीद वासिती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی को ख़्वाब में देखा तो पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़–मला किया ? तो उन्हों ने फ़रमाया : मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैं ने पूछा : मग़्फ़िरत का क्या सबब बना ? फ़रमाया : एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू अ़म्र बसरी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی जुमुआ़ के दिन हमारे पास तशरीफ़ फ़रमा हुए और दुआ़ की तो हम ने **आमीन** कही, बस इसी लिये **मग़्फ़िरत** हो गई। (شَرحُ الصُّدُور ص۲۸۲،کتابُ المَنامات مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج۳ ص ۱۵۶رقم ۳۳۷)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि नेक बन्दों के साथ दुआ़ में शिर्कत बहुत बड़ी सआ़दत है। लिहाज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ वग़ैरा में "दुआ़" में दिल जम्ई के साथ शिर्कत कीजिये न जाने किस की क़ुरबत और किस की सोह़बत और किस की रिक़्क़त आमेज़ **आमीन** की ब–र–कत से अपना बेड़ा पार हो जाए।

***मुझे बे ह़िसाब बख़्श दे मेरे मौला***
***तुझे वासिता़ नेक बन्दों का या रब***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 2

**ज़ाती दोस्तियों में ग़ीबतों से बचना दुश्वार है :** ज़ाती दोस्तियों से क़त़अ़न इज्तिनाब (या'नी परहेज़) किया जाए क्यूं कि अब अक्सर माहोल ऐसा हो गया है कि जब दो मिल कर तीसरे का मन्फ़ी (NEGATIVE) तज़्किरा शुरूअ़ करें तो क़रीब क़रीब ना मुम्किन है कि **ग़ीबत**, चुग़ली,

बद गुमानी व इल्ज़ाम तराशी वग़ैरा से बच निकलें। इन फ़ालतू सोहबतों में सुन्नतों भरी गुफ़्त-गू कम और मुल्की व सियासी ह़ालात पर तब्सिरा ज़ियादा होता है, गोया सारे मुल्क का निज़ाम येही चला रहे हों ! लिहाज़ा कभी किसी **वज़ीर** पर तन्क़ीद करेंगे तो कभी किसी **लीडर** पर और येह दोस्त जब अपने अपने घरों की त़रफ़ पलटेंगे तो "बद गुमानियों, **ग़ीबतों** और तोहमतों के गुनाहों का टोकरा" भी हर एक के साथ जाएगा ! ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : तुम पर **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लाज़िम है कि बेशक इस में शिफ़ा है और लोगों के तज़्किरों (म-सलन ग़ीबत) से बचो कि येह बीमारी है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص١٧٧)

**फ़ालतू बैठकों से दूर रहिये :** **ग़ीबत** समेत मु-तअ़द्दिद गुनाहों से ह़िफ़ाज़त का **बेहतरीन नुस्ख़ा** लोगों से अलग थलग रहना है चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के फ़रमाने आ़ली का ख़ुलासा है : आ़म लोगों की उ़मूमन आ़दत होती है कि जहां कहीं मिल के बैठे कि किसी न किसी की "इ़ज़्ज़त" के पीछे पड़े या'नी **ग़ीबतों** और **चुग़्लियों** का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया क्यूं कि उन की ग़िज़ा येही है ! ऐसे लोगों का चूंकि अकेले में दिल उक्ताता है लिहाज़ा मिलजुल कर गपशप और "तेरी मेरी" कर के "टाइम पास" करते हैं अगर आप ऐसों के साथ बैठेंगे तो गुनाहों भरी बातों में भी हां में हां मिलानी पड़ेगी और यूं गुनहगार और अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार होते रहेंगे, अगर "हां, ना" किये बिग़ैर ख़ामोश बैठे रहेंगे तब भी नहीं बच सकते क्यूं कि बिग़ैर शर-ई मजबूरी के **ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने वाले ही की त़रह़ गुनहगार होता है !** अगर आप उन की गुनाहों भरी बातों पर ए'तिराज़ करेंगे तो येह आप के ख़िलाफ़ हो जाएंगे, नतीजतन वोह आप की भी **ग़ीबतों** और दिल आज़ारियों पर उतर आएंगे। (ماخوذ از: اِحیاءُ الْعُلوم ج٢ ص٢٨٦)

*मुझे अपना आ़शिक़ बना कर बना दे तू सर ता पा तस्वीरे ग़म या इलाही*
*जो इ़श्क़े मुह़म्मद में आंसू बहाए अ़ता कर दे वोह चश्मे नम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 109)

**"टाइम पास" करने की बैठक का नक़्शा पेश करने वाली ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ (मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا) में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का एक दोस्त आया, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : कैसे आना हुवा ? जवाब दिया : ऐ अबू अ़ली ! बस यूं ही ज़रा दिल बहलाने के लिये आ गया हूं । फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम ! येह तो बड़ी वह्शत दिलाने वाली बात है ! क्या आप येह चाहते हैं कि मैं आप के लिये ज़ीनत इख़्तियार करूं और आप मेरे लिये इख़्तियार करें, आप मुझ से झूट बोलें और मैं आप से झूट बोलूं ! या तो आप यहां से तशरीफ़ ले जाइये या मैं चला जाता हूं । (سُبْحٰنَ اللہ सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दिल बहलाने और वक़्त गुज़ारने के लिये मिल बैठने वालों का नक़्शा ही खींच कर दिखा दिया कि जो लोग "टाइम पास" करने के लिये बैठते हैं वोह उ़मूमन एक दूसरे के लिये ज़ीनतें और बनावटें करते और ख़ूब झूटी गप्पें हांकते हैं !) बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उसे **गुमनाम** कर देता है । (ماخوذ از: اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۲۸۷)

*त़लब गारे जाहो ह़शम या इलाही फ़क़त़ तेरा त़ालिब हूं हरगिज़ नहीं हूं*
*बना दे गदाए ह़रम या इलाही न दे ताजे शाही न दे बादशाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 109)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मेलजोल का अह्ल कौन ? : लोगों** से मेलजोल के अह्ल की मिसाल देते हुए **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ाऊस** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقُدُّوس ख़लीफ़ए वक़्त **हश्शाम** के पास तशरीफ़ ले गए और पूछा : हश्शाम ! कैसे हो ? उस ने ग़ुस्से से कहा : आप ने मुझे "**अमीरुल मुअमिनीन**" कह कर मुख़ात़ब क्यूं नहीं किया ? **फ़रमाया :** इस लिये कि तमाम मुसल्मान तुम्हारी ख़िलाफ़त से मुत्तफ़िक़ नहीं हैं, लिहाज़ा मैं डरा कि तुम्हें अमीरुल मुअमिनीन कहना कहीं **झूट** न ठहरे । **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی इस **ह़िकायत** को नक़्ल

करने के बा'द फ़रमाते हैं : लिहाज़ा जो आदमी इस क़दर खरा और साफ़ गो हो और इस क़िस्म की बातों (म-सलन **ग़ीबतों**, चुग़लियों, रियाकारियों, ख़ुद पसन्दियों, ख़ुशामदों वग़ैरा वग़ैरा) से बच सकता हो वोह बेशक लोगों में मिलजुल कर रहे वरना अपना नाम **मुनाफ़िक़ों** की फ़ेहरिस्त में लिखवाने पर राज़ी हो जाए। (ماخوذ از: اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۲۸۷)

**ज़ाहिरी अच्छी सोहबतों में भी ग़ीबतों का मरज़ ! : ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मुझे याद नहीं कि मैं ने इस ज़माने के मशाइख़ में से किसी से मुलाक़ात की हो और मेरा उस के साथ बैठना **ग़ीबत** से मह़फ़ूज़ रहा हो, ऐसा बहुत कम हुवा इसी लिये मैं ने अपने दीन की और उन के भी दीन की ह़िफ़ाज़त की ख़ातिर उन से मुलाक़ात कम कर दी मगर उन के ह़ुक़ूक़ में सुस्ती नहीं की। जब बुज़ुर्गों की मजलिसों का येह ह़ाल है तो दूसरो की बैठकों का क्या आ़लम होगा ! तो ऐ भाई ! इस ज़माने में जब किसी शख़्स से मुलाक़ात करे तो अपने नफ़्स की मुकम्मल ह़िफ़ाज़त कर और इस मुआ़-मले में हरगिज़ सुस्ती न कर।

(تَنبِیهُ المُغتَرِّین ص۲۲٤)

**हर आने वाला वक़्त पिछले वक़्त से बुरा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی (मु-तवफ़्फ़ा 973 हि.) दसवीं सदी हिजरी के बुज़ुर्ग थे जब उन के दौर में येह ह़ाल था तो अब तो पन्दरहवीं सदी हिजरी है हम उन के दौर से तक़रीबन 450 साल मज़ीद दूर हो चुके हैं और हर आने वाला वक़्त दीनी ए'तिबार से पिछले वक़्त से बुरा है। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़दी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिकायत की तो फ़रमाया : "सब्र करो ! क्यूं कि तुम पर कोई ज़माना नहीं आएगा मगर इस के बा'द में आने वाला ज़माना उस से बदतर होगा यहां तक कि तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मिलो, येह मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है।" (صَحیح بُخاری ج٤ ص٤٣٣ حدیث۷۰٦۸)

**मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : ज़माना जिस क़दर ह़ुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दूर होता जाएगा ज़ुल्म व

फ़साद भी बढ़ता जाएगा, हर ज़माना पहले ज़माने से दीन के लिहाज़ से बदतर है, कभी कोई गुनाह ज़ियादा कभी कोई गुनाह ! (मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 202 मुलख़्ख़सन)

**हर हर फ़र्द ग़ीबत गो नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर ज़ी शुऊर अन्दाज़ा लगा सकता है कि आज कल जब तमाम ही बुराइयां उ़रूजे बाम पर हैं तो फिर "**ग़ीबत**" क्यूं पीछे रहेगी ! ख़ैर इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि हर हर फ़र्द लाज़िमी त़ौर पर **ग़ीबत** में लगा हुवा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से हरगिज़ दुन्या ख़ाली नहीं। तो जो वाक़ेई नेक बन्दे हों उन की सोह़बते बा ब-र-कत से ज़रूर फ़ैज़ ह़ासिल करना चाहिये और जो ब ज़ाहिर मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ रखते हों और देखने में "नेक सूरत" हों मगर **ग़ीबतों**, चुग़लियों, बद गुमानियों, तोह्मतों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों की गन्दगियों और ग़लाज़तों में लिथड़े रहते हों उन की मजलिसों (बैठकों) से दूर रहने ही में सलामती बल्कि ऐसों से दूर रहना शरअ़न भी ज़रूरी है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़्ह़ा 164 पर है : इमरान बिन हित़्त़ान से रिवायत की, कहते हैं : मैं (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू ज़र (ग़िफ़ारी) رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गया, उन्हें काली कमली ओढ़े हुए मस्जिद में तन्हा बैठा हुवा देखा। मैं ने कहा : अबू ज़र ! येह तन्हाई कैसी ? उन्हों ने कहा : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : तन्हाई अच्छी है बुरे हम-नशीन से और हम-नशीने सालेह़ (या'नी नेक रफ़ीक़) तन्हाई से बेहतर है और अच्छी बात बोलना ख़ामोशी से बेहतर है और बुरी बात बोलने से चुप रहना बेहतर है। (شُعَبُ الْاِیمان ج ٤ ص ٢٥٦ حدیث ٤٩٩٣)

*ह़ाल हमारा कैसा ज़बूं है और वोह कैसा और वोह क्यूं है*

*सब है तुम पर रोशन शाहा* صَلَّى اللّٰهُ عليكَ وَسلَّم

(सामाने बख़्शिश)

**50 सिद्दीक़ीन का सवाब : अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : अ़न्क़रीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा

कि उन की बादशाही (हुकूमत) क़त्ल और ज़ुल्म के बिग़ैर नहीं होगी। और मालदारी तकब्बुर और **बुख़्ल** से ख़ाली न होगी और लोगों के साथ मजलिस (बैठक) ख़्वाहिशे नफ़्सानी के बिग़ैर न होगी। पस जो शख़्स वोह ज़माना पाए और **सब्र** करे और अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **पचास सिद्दीक़ीन** जैसा सवाब अ़ता करेगा। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٢٥)

**ग़ीबत ख़ोर से तो कुत्ता ही भला : हज़रते** सय्यिदुना हम्माद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं एक बार हज़रते सय्यिदुना **मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, उन के सामने **एक कुत्ता** देख कर मैं ने उसे भगाना चाहा तो फ़रमाया : **ऐ हम्माद !** इसे छोड़ दो यक़ीनन येह उस बुरे साथी से बेहतर है जो मेरे पास बैठ कर लोगों की **ग़ीबत** करता है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٢٧)

**तो कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों से अच्छा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! हमारे बुजुर्गों की भी क्या ख़ूब म–दनी सोच हुवा करती थी ! वोह **ग़ीबत ख़ोर** जो बिग़ैर तौबा के मर जाए और **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में वासिले जहन्नम हो जाए **वल्लाह बिल्लाह तल्लाह** ऐसे आदमी से तो **कुत्ता** ही करोड़ों द–रजे बेहतर है कि उस के लिये दोज़ख़ का अ़ज़ाब नहीं। **तज़्कि–रतुल औलिया** में है : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की ख़िदमते बा अ़–ज़मत में किसी ने सुवाल किया : आप बेहतर हैं या **कुत्ता** ? फ़रमाया : अगर अ़ज़ाब से बच गया तो मैं वरना **कुत्ता** मुझ जैसे सेंकड़ों से अफ़ज़ल है।

(تذكِرةُ الاولياء حصّه اوّل ص٤٣)

*आप की गलियों के कुत्ते मुझ से तो अच्छे रहे*

*है सुकूं उन को मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 230)

**हसन बसरी और एक गोशा नशीन : हज़रते** सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : एक शख़्स को लोगों से अलग थलग रहने वाला पा कर मैं ने इस का सबब पूछा : तो उस ने कहा : मैं बहुत अहम काम में मश्ग़ूल रहता हूं। मैं ने पूछा वोह क्या है ? कहने लगा :

मैं हर सुब्ह़ अपने आप को ने'मत और गुनाह के दरमियान पाता हूं लिहाज़ा मैं ने'मतों के शुक्र और गुनाहों से तौबा में मश्गूल रहता हूं। मैं ने उस से कहा : ऐ भाई ! तू ह़सन बसरी से अफ़्क़ह या'नी ज़ियादा फ़क़ीह (बहुत बड़ा आ़लिम) है, अकेला ही बैठा कर। (تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص۲۲۷)

**तन्हाई में भलाई ही भलाई है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! वाक़ेई तन्हाई में भलाई ही भलाई है मगर जो ऐसा आ़लिम हो जिस की मुसल्मानों को ह़ाजत हो और उस से लोगों को नफ़्अ़ पहुंचता हो वोह मेलजोल तर्क कर के ख़ल्वत (या'नी गोशा नशीनी) इख़्तियार न करे। बाक़ी लोग अगर मां बाप, अहलो अ़याल और दीगर हुक़ूक़ुल इबाद का ख़याल रखने के साथ साथ अपनी अहम दीनी व दुन्यवी ज़रूरतों से फ़ारिग़ हो कर बक़िय्या वक़्त उ़ज़्लत नशीनी (या'नी तन्हाई) में गुज़ारें (जब कि तन्हाई में रहने के आदाब से भी वाक़िफ़ हों[1]) तो उन के लिये नूरुन अ़ला नूर। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **नजात** क्या है ? फ़रमाया : **﴾1﴿ अपनी ज़बान** को रोक रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक़्सान न हो) और **﴾2﴿** तुम्हारा **घर** तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और **﴾3﴿ गुनाहों** पर रोना इख़्तियार करो।

(سُنَنِ تِرمذی ج ٤ ص ١٨٢ حدیث ٢٤١٤)

*दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो*

(ज़ौक़े ना'त, स. 141)

**ग़ीबत से बचने का अनोखा त़रीक़ा : जब** भी किसी के बारे में कुछ कहने की नौबत आए तो काश ! हमारा तसव्वुर येह बंध जाए कि वोह हमारे सामने मौजूद है कहीं ऐसा न हो कि कोई लफ़्ज़ ऐसा ज़बान से अदा हो जाए जिसे सुन कर येह नाराज़ हो जाए चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : किसी बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का



**1.** लुबाबुल एह़्या सफ़्ह़ा 163 ता 165 पर गोशा नशीनी का बयान मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। इस का ख़ूब तफ़्सीली बयान एह़याउल उ़लूम जिल्द 2 में है।

फ़रमान है कि जब भी किसी आदमी का मेरे सामने ज़िक्र किया गया तो मैं ने गोया उसे अपने सामने बैठा हुवा पाया और उस के बारे में वोही कलाम किया जिसे वोह पसन्द करे। (قُوتُ القُلُوب ج ۱ ص ۳۴۹) इसी त़रह़ एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे सामने जब किसी का तज़्किरा छिड़ता है, अपने दिल में उस का तसव्वुर जमा लेता हूं और जो अपने लिये पसन्द करता हूं, उस के बारे में भी वोही कहता हूं। (ایضاً)

*शरफ़ दे ह़ज का मुझे मेरे किब्रिया या रब रवाना सूए मदीना हो क़ाफ़िला या रब*
*दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की बस उन के जल्वे में आ जाए फिर क़ज़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ैर मुस्लिम मुसल्मान हो गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के जारी कर्दा रसाइल और विडियो केसिटें तोहफ़े में बांटते रहिये न जाने कब किस का दिल चोट खा जाए, वोह राहे रास्त पर आ जाए और आप का भी बेड़ा पार हो जाए। आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे U.K. (इंग्लेंड) के एक इस्लामी भाई का इस त़रह़ बयान है कि मैं बहुत अ़र्से से एक ग़ैर मुस्लिम पर **इन्फ़िरादी**

**कोशिश** कर रहा था कि वोह मुसल्मान हो जाए मगर मुझे काम्याबी नहीं मिल रही थी। एक बार दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा एक V.C.D. उन को तोह़फ़े में दी गई उस V.C.D. का नाम है **: बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए'तिकाफ़।** उस ने V.C.D. को अपने घर वालों को साथ बिठा कर चला दी, वोह V.C.D. देखता गया और उर्दू न समझने के बा वुजूद मह़ज़ **बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ और इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के रूह़ परवर मनाज़िर देख कर उस के दिल में इस्लाम की **मह़ब्बत** उतरती चली गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरे कार वोह कलिमा पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गया और **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाअ़ में भी शिर्कत करने लगा, म-दनी माहोल की ब-र-कत से **सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़** से उस का सर ''सर सब्ज़'' हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह आ़शिक़ाने रसूल के साथ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर भी बना।

***अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में — ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 3

**ग़ीबत** का येह इलाज भी फ़ाएदे मन्द है कि आप अपने ज़ेह्न में येह बात एक दम जमा लीजिये कि जब कोई मेरी **ग़ीबत** करता है तो मुझे तक्लीफ़ होती है इसी त़रह़ मैं जिस की **ग़ीबत** करूंगा उसे भी तो अज़िय्यत होगी, तो जो काम मुझे अपने लिये ना पसन्द है वोह दूसरे मुसल्मान भाई के लिये क्यूं करूं!

**चूहे भगाने के लिये बिल्ली न रखने का ईमान अफ़्रोज़ सबब : ग़ीबत** से तो बचना ही चाहिये, पुराने ज़माने के लोगों की तो ऐसी **म-दनी सोच** होती थी कि ख़ुद तक्लीफ़ गवारा कर लेते मगर दूसरे को तक्लीफ़ न होने देते चुनान्चे ''**मुका-श-फ़तुल क़ुलूब**'' में है **:** एक साहि़ब के घर में **चूहे** बहुत हो गए थे, किसी ने मश्वरा दिया **बिल्ली** रख लीजिये। उन साहि़ब ने जवाब

दिया : **बिल्ली** की ''मियाउं'' सुन कर **चूहे** भाग तो जाएंगे मगर मुझे डर लग रहा है कि कहीं पड़ोसियों के घरों में न घुस जाएं ! अगर यूं हुवा तो मैं ऐसा आदमी बना कि जो अपने लिये जिस तक्लीफ़ को ना पसन्द करता है वोही तक्लीफ़ उस ने दूसरे के लिये गवारा कर ली। (مُكاشَفةُ الْقُلوب ص۲۸۲)

*ख़ैर ख़्वाह हम भी पड़ोसी के बनें यह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये*
*ने'मते अख़्लाक़ कर दीजे अ़त़ा यह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये*
*ग़ीबतो चुग़ली की आफ़त से बचें*
*यह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 4

**''भड़ास'' निकालना ग़ीबत में डाल सकता है : किसी** ने दिल दुखा दिया, सख़्त **ग़ुस्सा** आ गया और सब्र का दामन हाथ से छूट गया इस सबब से दिल दुखाने वाले के बारे में अगर किसी के आगे ''भड़ास'' निकलने लगी तो समझो कि **जहन्नम की आग** इकठ्ठी होनी शुरूअ़ हो गई कि अब **ग़ीबत व बोहतान तराशी** जैसे कबीरा गुनाह, ह़राम और दोज़ख़ में ले जाने वाले काम से आप को शायद कोई न बचा पाए क्यूं कि जब कोई ग़ुस्से और जज़्बात के आ़लम में **भड़ास** निकाल रहा होता है उस वक़्त उ़मूमन सुनने वाला भी सहम जाता है और उस की इस्लाह़ नहीं कर पाता। उस दिले सियाह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह जो हिदायत की बात सुनने के लिये तय्यार न हो। आह ! **ग़ीबत** की तबाहकारी ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं **ग़ीबत** दिल को हिदायत और भलाई से मह़रूम कर देती है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص۱۹۱) **ग़ुस्से का इलाज** कीजिये, दूसरों के आगे **भड़ास** निकालने के बजाए **मुआ़फ़ी** और दर गुज़र से काम लेते हुए **जन्नत** में बे ह़िसाब दाख़िले की तड़प वाला ज़ेह्न बनाइये।

**मुआ़फ़ करने वालों का बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िला : मुआ़फ़** कर देने की फ़ज़ीलत भी ऐसी है कि मुंह में पानी आ जाता है चुनान्चे सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा क़रीना है : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और **जन्नत** में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : **"उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं।"** तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और **बिला ह़िसाब जन्नत** में दाख़िल हो जाएंगे। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج١ ص٥٤٢ حديث ١٩٩٨) काश ! हमें भी **मुआ़फ़** कर देने का जज़्बा नसीब हो जाए। और काश ! काश ! काश ! हम भी बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िले की सआ़दत पा लें।

***तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे ह़िसाब जुर्म***
***देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का***

(ज़ौक़े ना'त, स. 11)

**बुरा कहने से बचने वाले का ख़ुश अन्जाम : ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **बोस्ताने सा'दी** में नक़्ल करते हैं : एक नेक सीरत शख़्स अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्र भी बुराई से न करता था। जब भी किसी की बात छिड़ती, उस की ज़बान से नेक अल्फ़ाज़ ही अदा होते। उस के मरने के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : **مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुलबुल की त़रह़ शीरीं (या'नी मीठी) आवाज़ में बोला : दुन्या में मेरी येही कोशिश होती थी कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई बुरी बात न निकले, नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) ने भी मुझ से कोई सख़्त सुवाल न किया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ यूं मेरा मुआ़-मला बहुत अच्छा रहा। (بوستان سعدی ص ١٤٤) (दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़बूआ़ रिसाला,

**"ग़ुस्से का इलाज"** का मुत़ा-लआ ग़ुस्से की आ़दत निकालने के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन मुआ़विन साबित होगा)

*सुन लो नुक़्सान ही होता है बिल आख़िर उन को*

*नफ़्स के वासित़े ग़ुस्सा जो किया करते हैं*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 294)

## इलाज नम्बर 5

**ग़ीबत के अ़ज़ाबात याद कीजिये :** जब किसी की पीठ पीछे बुराई करने को जी चाहे तो **ग़ीबत** के अ़ज़ाबात को याद कीजिये, म-सलन **तांबे के नाख़ुनों** से अपने चेहरे और सीने को नोचने वाला अ़ज़ाब, अपने ही पहलूओं (या'नी करवटों) का गोश्त काट काट कर खिलाए जाने का अ़ज़ाब नीज़ तसव्वुर कीजिये कि बरोज़े क़ियामत अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पड़ेगा और **ग़ीबत** करने वाला मुंह बिगाड़े **चिल्लाता** हुवा उसे खाएगा। अब सोचिये कि ह़लाल जानवर का ताज़ा गोश्त भी कच्चा नहीं खाया जाता तो मरे हुए इन्सान का गोश्त किस त़रह़ खाया जा सकेगा ?

**ग़ीबत का ताइब आख़िर में जन्नत में जाएगा : मन्क़ूल** है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि जो **ग़ीबत** से तौबा कर के मरा वोह आख़िरी शख़्स होगा जो जन्नत में जाएगा और जो **ग़ीबत** पर इसरार करते हुए (या'नी **ग़ीबत** पर क़ाइम रहते हुए) मरा वोह पहला शख़्स होगा जो **जहन्नम में** दाख़िल होगा। (رسالہ قُشیریہ ص ۱۹٤)

**ग़ुल मचाएगा, दोज़ख़ में जाएगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जो शख़्स **ग़ीबत** करता है उस को सिवाए अपने नुक़्सान के कुछ हाथ नहीं आता ह़त्ता कि अगर तौबा कर के मरा है तो अगर्चे क़ियामत में उस को **ग़ीबत** पर अ़ज़ाब न होगा ताहम जन्नत में सब लोगों के बा'द जाएगा। और इस सबब से बहुत सख़्त पछताएगा और नदामत उठाएगा। और अगर बिग़ैर तौबा के मरा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब नाक हुवा तो बरोज़े क़ियामत सब से क़ब्ल जहन्नम में जाएगा, अगर्चे ग़ुल

बहुत मचाएगा, चीखे़गा, चिल्लाएगा मगर रोना धोना वहां काम न आएगा।

*देखिये क्या ह़श्र को हो मेरा ह़ाल मुझ को रहता है येही हर दम मलाल*

*हो करम मुझ पर ख़ुदाए ज़ुल जलाल मुझ को जन्नत दे जहन्नम में न डाल*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 6

**सोने का पहाड़ स-दक़ा करने से भी पसन्दीदा : अपने** नफ़्स पर बार (बोझ) डाले म-सलन अगर **ग़ीबत** की तो 5 रुपै ख़ैरात करूंगा। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! पांच रुपै तो कुछ भी नहीं हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक **ग़ीबत** को तर्क करना सोने का पहाड़ स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्दीदा है।

(تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص۱۹۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत हो जाती तो ख़ैरात करते : ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن की आ़दत थी कि अगर कभी उन से किसी की **ग़ीबत** सरज़द हो जाती तो ख़ैरात करते थे।

(تفسیر رُوحُ البیان ج۹ ص۸۹)

**दो दिरहम की ह़िकायत : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबुल्लैस बुख़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی जब **ह़ज** के लिये निकले तो **दो[2] दिरहम** इस निय्यत से जेब में डाले कि अगर घर पलटने तक कहीं भी **ग़ीबत** सादिर हुई तो येह **दो दिरहम** ख़ैरात कर दूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सारा सफ़र **ग़ीबत** से बचे रहे और वोह **दो दिरहम** जेब में मह़फ़ूज़ रहे। इन्हीं का फ़रमान है : मैं एक मर्तबा की **ग़ीबत** को सो मर्तबा के ज़िना से बदतर समझता हूं।

(مُکاشَفَةُ الْقُلُوب ص۷۱)

**मज़्कूरा ह़िकायत की वज़ाह़त : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल्लैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बड़े मुत्तक़ी और परहेज़ गार बुज़ुर्ग थे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की म-दनी सोच मरह़बा ! **ग़ीबत** का दरवाज़ा मज़्बूती से बन्द करने के लिये आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दो दिरहम ख़ैरात करने की निय्यत की ज़बर दस्त तरकीब फ़रमाई । यक़ीनन ह़ज के दौरान **ग़ीबत** करना आ़म ह़ालात के मुक़ाबले में ज़ियादा बड़ा गुनाह है और जो **ग़ीबतों ,** चुग़्लियों, दिल आज़ारियों, गन्दी गालियों और जुम्ला बे ह़याइयों से ख़ुद को बचाने में काम्याबी ह़ासिल कर ले वोह गुनाहों से पाक साफ़ हो जाए चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1031 पर **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''जिस ने ह़ज किया और रफ़स (या'नी फ़ोह़श कलाम) न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा ।'' (بُخاری ج ۱ ص ۵۱۲ حدیث ۱۵۲۱) अफ़्सोस ! आज कल जो लोग **ह़ज** के वासित़े जाते हैं उन में से बे शुमार हुज्जाज वत़न में जिस त़रह़ गुनाह करते रहे हैं इसी त़रह़ बेबाकी से राहे मदीना में भी लगे रहते हैं, यहां तक कि एह़राम की ह़ालत में भी लोगों की ख़ूब **ग़ीबतें** की जाती हैं, **ह़-रमैने शरीफ़ैन** زَادَھُمَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में आ़म अ़-रबों बल्कि अहले मक्का और अहले मदीना की ख़ूब ख़ूब बुराइयां और **ग़ीबतें** करते हैं और सब के ऐ़बों को ढूंडा करते हैं ۞ कभी किसी बस या टेक्सी ड्राइवर को बद अख़्लाक़ ۞ बद मिज़ाज वग़ैरा कह कर उस की **ग़ीबत** करते हैं तो कभी किसी दुकानदार की यूं **ग़ीबत** करते हैं कि ۞ येह माल बहुत महंगा बेचता है ۞ ह़ाजियों को लूटता है ۞ कभी किसी होटल वाले को बुरा भला कहते हुए यूं **ग़ीबत** करते हैं कि ۞ इस ने खाना बहुत महंगा कर दिया है ۞ लूटमार मचा रखी है ۞ **अल्लाह** के मेहमानों पर ज़ुल्म करता है ۞ पैसे पहले वुसूल कर लिये और थोड़ा सा खाना पकड़ा दिया ۞ इस का खाना ग़ैर मे'यारी है वग़ैरा वग़ैरा । نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا. (या'नी हम अपने नफ़्स की शरारतों और बुरे आ'माल से **अल्लाह** की पनाह चाहते हैं)

*रवाना सूए मदीना हो क़ाफ़िला या रब*
*शरफ़ दे ह़ज का मुझे मेरे किब्रिया या रब*
*बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रब*
*दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 7

**एक चुप सो100 सुख : सब** से ज़ियादा **ग़ीबत** ज़बान से की जाती है लिहाज़ा इस को क़ाबू करना बहुत ज़रूरी है। ज़बान की हिफ़ाज़त के तअल्लुक़ से 7 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला–ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ बन्दा कभी बिला इरादा **अल्लाह** तआला की ख़ुशनूदी की बात कह देता है जिस से **अल्लाह** तआला उस के द–रजे बुलन्द करता है और बन्दा कभी बे सोचे समझे **अल्लाह** तआला की नाराज़ी की बात कह देता है जिस से जहन्नम में गिर जाता है। (بُخاری ج ٤ ص ٢٤١ حديث ٦٤٧٨) ﴾2﴿ एक और रिवायत में है कि **जहन्नम** की इतनी गहराई में गिरता है जो मशरिक़ व मग़रिब के फ़ासिले से भी ज़ियादा है। (صَحيح مُسلِم ص١٥٩٥ حديث ٢٩٨٨) ﴾3﴿ जो चीज़ इन्सान को सब से ज़ियादा **जन्नत** में दाख़िल करने वाली है वोह तक़्वा और ह़ुस्ने ख़ुल्क़ (या'नी अच्छा अख़्लाक़) हैं, और जो चीज़ इन्सान को सब से ज़ियादा **जहन्नम** में ले जाने वाली है वोह दो जौफ़दार चीज़ें हैं मुंह और शर्मगाह। (ايضاً حديث ٢٠٠١ ص ١٩٠٣) ﴾4﴿ जो चुप रहा, उसे नजात है। (سُنَن تِرمِذی حديث ٢٥٠٨ ص ١٨٥٢) ﴾5﴿ सुकूत (या'नी ख़ामोशी) पर क़ाइम रहना साठ बरस की इबादत से अफ़्ज़ल है। (شُعَبُ الْاِیمان ج٤ص٢٤٥ حديث ٤٩٥٣) ﴾6﴿ ज़ियादतिये ख़ामोशी को लाज़िम कर लो कि इस से शैत़ान दफ़्अ होगा और तुम्हें दीन के कामों में मदद देगी। (اَیضاً ص ٢٤٣ حديث٤٩٤٢) ﴾7﴿ मेरे लिये छ चीज़ों के ज़ामिन हो जाओ मैं तुम्हारे लिये **जन्नत** का ज़िम्मेदार होता हूं (1) जब बात करो सच बोलो और (2) जब वा'दा करो उसे पूरा करो और (3) जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए उसे अदा करो और (4)

अपनी शर्मगाहों की हि़फ़ाज़त करो और (5) **अपनी निगाहें नीची रखो** और (6) अपने हाथों को रोको (या'नी हाथ से किसी को ईज़ा न पहुंचाओ) (مُسندِ اِمام احمد ج٨ ص٤١٢ حدیث ٢٢٨٢١)

***मेरी ज़बान पे "क़ुफ़्ले मदीना" लग जाए फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब***
***उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब अ़ता करम से हो ऐसी मुझे ह़या या रब***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**परिन्दे की नेकी की दा'वत : क़त़ा** (जो कि कबूतर से मिलता जुलता परिन्दा है) जब बोलता है तो कहता है : مَنْ سَكَتَ سَلِمَ या'नी जो ख़ामोश रहा सलामत रहा। (تفسیرِ قُرطُبی ج ٧ ص ١٢٧) ज़बान पर **क़ुफ़्ले मदीना** लगाना या'नी ज़रूरत की बात भी कम से कम अल्फ़ाज़ में करना, जहां जहां मुम्किन हो वहां ज़बान से बोलने के बजाए ख़ामोश रह कर लिख कर या इशारे से काम चलाना भी **ग़ीबत** से बचने के अस्बाब मुहय्या कर सकता है। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि **ग़ीबत** लिख कर बल्कि इशारे से भी हो सकती है और जहां किसी मुसल्मान की गुनाहों भरी **ग़ीबत** हो रही हो वहां शर-ई रुख़्सत के बिग़ैर चुप रहने की इजाज़त नहीं, **ग़ीबत** करने वाले को **ग़ीबत** से बाज़ रख कर अपने मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त की हि़फ़ाज़त करे।

***न ग़ीबत करेंगे न ग़ीबत सुनेंगे ब औ़ने ख़ुदा लब पे क़ाबू रखेंगे***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**सुवारी के जानवर पर ला'नत मत करो : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** हि़स्सा 16 सफ़ह़ा 166 पर है : एक शख़्स ने अपनी सुवारी के जानवर पर ला'नत की,

**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस से उतर जाओ हमारे साथ में मल्ऊन चीज़ को ले कर न चलो, अपने ऊपर और अपनी औलाद व अम्वाल पर बद दुआ न करो कहीं ऐसा न हो कि येह **बद दुआ** उस साअ़त में हो जिस में जो दुआ **ख़ुदा** (عَزَّوَجَلَّ) से की जाए क़बूल होती है।

(صَحیح مُسلِم ص۱۰۶۴ حدیث ۳۰۰۹)

**जानवर को बुरा कहना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़बान पर क़ाबू पाने की सख़्त ज़रूरत है। जानवरों पर भी ला'नत करने की मुमा-न-अ़त है, बिला ज़रूरत इन की बुराई भी ज़बान से क्यूं निकले ! अब ज़ाहिर है जो जानवरों को भी बुरा कहने से बचेगा वोह मुसल्मानों की **ग़ीबत** से ब द-र-जए औला इज्तिनाब (या'नी परहेज़) करेगा। अलबत्ता जानवर का ऐ़ब बयान करने को मुसल्मान की **ग़ीबत** की त़रह़ का जुर्म नहीं क़रार देंगे हां अगर वोह जानवर किसी मुसल्मान का हुवा तो उस मुसल्मान की **ग़ीबत व दिल आज़ारी** की सूरत बन सकती है, म-सलन ❁ फ़ुलां का घोड़ा मर्यल है ❁ इस की कुरबानी की गाय की हड्डियां पस्लियां नज़र आ रही हैं ❁ उस का बकरा तो हड्डियों का ढांचा है ❁ उस के मुर्ग़े की बांग की आवाज़ बे सुरी है वग़ैरा वग़ैरा जुम्लों में इन जानवरों के मालिकान की **ईज़ा** का पहलू मौजूद है लिहाज़ा येह **ग़ीबत** है।

**मरे हुए कुत्ते की बुराई से भी बचो : ह़ज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक मरे हुए कुत्ते के पास से गुज़रे, ह़वारियों ने अ़र्ज़ की : येह कुत्ता किस क़दर **बदबूदार** है ! ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : इस के **दांत कितने सफ़ेद** हैं ! गोया आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन को मुर्दार कुत्ते की **ग़ीबत** से भी मन्अ़ फ़रमाया और उन को ख़बरदार किया कि बे ज़बान जानवरों की भी **ख़ूबी** का ही ज़िक्र करना चाहिये।

(ماخوذاز اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص ۱۷۷)

**अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**ख़िन्ज़ीर के लिये उ़म्दा फ़िक़रा इस्ति'माल फ़रमाया :** سُبْحٰنَ الله ! ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हु़स्ने अख़्लाक़ के भी क्या कहने ! वाक़ेई येह आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ही हिस्सा था कि **मुर्दार कुत्ते** की भी ख़ूबी ही की त़रफ़ नज़र फ़रमाई। "तारीख़े दिमश्क़" जिल्द 47 सफ़ह़ा 437 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने से एक ख़िन्ज़ीर गुज़रा, फ़रमाया : **"مُرّ بِسَلَامٍ"** या'नी **सलामती से गुज़र जाओ।** लोगों ने **तअ़ज्जुब** के साथ अ़र्ज़ की : **या रूह़ल्लाह !** क्या वज्ह है कि आप ने सुवर के लिये इतना उ़म्दा जुम्ला इर्शाद फ़रमाया ? फ़रमाया : मैं अपनी ज़बान पर बुरी बात लाना नहीं चाहता। (تاریخ دمشق ج٤٧ص٤٣٧) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم

**ख़िचड़े को ह़लीम कहना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुबारक सोच सद करोड़ मरह़बा ! काश ! हमें भी ऐसी समझ नसीब हो जाए कि कहां कौन से अल्फ़ाज़ बोलने चाहिएं। बा'ज़ अवक़ात किसी दुन्यवी शै पर मु-तबर्रिक अल्फ़ाज़ न बोलना भी अदब होता है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक सिफ़ाती नाम **ह़लीम** عَزَّوَجَلَّ भी है लिहाज़ा खाने की चीज़ के लिये "ह़लीम" का लफ़्ज़ कहना जाइज़ होने के बा वुजूद बा'ज़ बन्दगाने ख़ुदा को अच्छा नहीं लगता। इस ग़िज़ा को उर्दू में **ख़िचड़ा** भी कहते हैं लिहाज़ा वोह येही लफ़्ज़ इस्ति'माल करते हैं। **तज़्कि-रतुल औलिया** में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **बा यज़ीद बिस्त़ामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی ने एक बार सुर्ख़ रंग का सेब हाथ में ले कर फ़रमाया : "येह बहुत **लत़ीफ़** है।" ग़ैब से आवाज़ आई : "हमारा नाम **सेब** के लिये इस्ति'माल करते हुए ह़या नहीं आई !" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चालीस दिन के लिये अपनी याद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़ल्ब से निकाल दी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी क़सम खाई कि अब कभी (अपने वत़न) **बिस्त़ाम** (शह्र का नाम) का फल नहीं खाऊंगा। (تذکرۃ الاولیاء ص١٣٤) देखा आप ने ! "**लत़ीफ़**" का एक लफ़्ज़ी मा'ना "उ़म्दा" भी है मगर चूंकि "**लत़ीफ़**" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है इस लिये सय्यिदुना बा यज़ीद

बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی को तम्बीह की गई। **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

*इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास हुस्ने अख़्लाक़ मिले भीक में इख़्लास मिले*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 236)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**ज़बान का तीर ख़ता नहीं होता :** हर सूरत में ज़बान की हिफ़ाज़त करनी चाहिये कि जब येह चलती है तो क्या का क्या कर डालती है ! मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : लोगों का तीर फेंकना **ज़बान** के ज़रीए अज़िय्यत पहुंचाने से ज़ियादा आसान है क्यूं कि **कमान का तीर ख़ता हो सकता है लेकिन ज़बान का तीर कभी ख़ता नहीं होता।** (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٨٩)

**ज़बान का ज़ख़्म तलवार के ज़ख़्म से सख़्त होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने कितने अछूते अन्दाज़ में "ज़बान की ईज़ा" की हलाकत ख़ैज़ियों की निशान देही फ़रमाई है ! वाक़ेई लोहे के नोकीले तीर के मुक़ाबले में ज़बान का ज़ख़्म सख़्त तर होता है। तीर का ज़ख़्म जल्दी भर जाता है मगर ज़बान से की हुई **ग़ीबत** या दिल आज़ारी का ज़ख़्म आसानी से नहीं भरता अ़-रबी मक़ूला है : **جَرْحُ الْكَلَامِ اَصْعَبُ مِنْ جَرْحِ الْحُسَامِ** या'नी ज़बान का ज़ख़्म तलवार के ज़ख़्म से ज़ियादा सख़्त होता है। (اَلْمُستَطْرَف ج١ص٤٧)

*मेरी फ़ुज़ूल गोई की आदत निकाल दो ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 305)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 8

**ग़ीबत की आदत निकालने का बेहतरीन नुस्ख़ा :** किसी भी मरज़ से बचने का जज़्बा पाने के लिये उस के **मोहलिकात** या'नी तबाह कारियां जानना मुफ़ीद होता है। लिहाज़ा **दा'वते**

**इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 169 ता 182 और **एह़याउल उ़लूम** जिल्द 3 से **ग़ीबत का बयान** ज़रूर पढ़ लीजिये। जिस का "नफ़्से अम्मारा" **ग़ीबत** का आ़दी हो उस को क़ाबू करना आसान नहीं, वोह बोदी दलीलें दे कर, ज़बर दस्ती की ज़रूरतें बावर करवा कर **ग़ीबत** पर उभारता रहेगा लिहाज़ा इस पर बार बार इ़ब्रत के ताज़ियाने (या'नी कोड़े) बरसाने होंगे, एकआध बार वई़दात व नुक़्सानात पढ़ लेने से काम चलना बहुत मुश्किल है अव्वल तो ह़ाफ़िज़ा ही अक्सर कमज़ोर और फिर शैत़ान भी ऐसी बातें फ़ौरन भुला देता है। चुनान्चे मश्वरा है कि शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द 2 का येह बाब **ग़ीबत की तबाह कारियां** मुकम्मल पढ़ लेने के बा'द भी वक़्तन फ़ वक़्तन मुत़ा-लए़ में रखिये, ख़ास कर इस का **दर्स** घर के अन्दर ज़रूर जारी कीजिये कि आज कल अक्सर घर "ग़ीबत कदे" बने हुए हैं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर घर दर्स की ब-र-कतें सामने आ जाएंगी। देखिये हिम्मत कर के पढ़ते (या सुनते) रहियेगा, क्यूं कि शैत़ान कभी भी नहीं चाहेगा कि आप येह पढ़ें (या सुनें) और **ग़ीबत की तबाह कारियों** से डरें।

*उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब — अ़त़ा करम से हो ऐसी मुझे ह़या या रब*

*किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और — सुनें न कान भी ऐ़बों का तज़्किरा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 83)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 9

### ग़ीबत नेकियों की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का सबब बन गई तो ! :

जब किसी की **ग़ीबत** करने को जी चाहे तो ख़ुद को यूं डराइये कि बरोज़े क़ियामत किस क़दर ह़सरत का मक़ाम होगा अगर **ग़ीबत** करने के सबब मेरी नेकियां दूसरों के नामए आ'माल में और उन के गुनाहों का बोझ मेरे सर पर आ पड़ा और **ग़ीबत** के गुनाह के बाइ़स फ़िरिश्ते मुझे सूए जहन्नम ले चले तो मेरा क्या बनेगा !

**माल देने में बख़ील मगर नेकियां लुटाने में सख़ी ! : हज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **ग़ीबत** करने वाले की सर-ज़निश करते (या'नी डांट पिलाते) हुए फ़रमाते हैं : ऐ झूटे इन्सान ! तू अपने दोस्तों को तो दुन्या का हक़ीर माल देने से **बुख़्ल** करता रहा मगर आख़िरत का माल (या'नी नेकियों का ख़ज़ाना) तूने अपने दुश्मनों पर लुटा दिया ! न तेरा दुन्यवी **बुख़्ल** क़ाबिले क़ुबूल न **ग़ीबतें** कर कर के नेकियां लुटाने वाली सख़ावत मक़्बूल।

(تَنبِیهُ الْغافِلِین ص۸۷)

*हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा    मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही*
*ग़ुसीले मिज़ाज और तमस्ख़ुर की ख़स्लत    से अ़त्तार को तू बचा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 104)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !    صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه !    اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !    صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**अम्मीजान की बीमारी दूर हो गई : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है, ज़रूरतन जुम्लों की नोक पलक सवांरी गई है, चुनान्चे **कोटरी** (कोट अ़त्तारी बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई की अम्मीजान अचानक काफ़ी बीमार हो गईं, दवा ली मगर बीमारी में फ़र्क़ न आया, उन्हों ने सुन रखा था कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में दुआ़एं

क़बूल होतीं और बीमारों को सिह़ह़त मिलती है, चुनान्चे वोह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो गए कि अपनी अम्मीजान की सिह़ह़त याबी के लिये दुआ़ करेंगे, **म-दनी क़ाफ़िले** में उन्हों ने रो रो कर दुआ़ की, जब वापस घर पहुंचे तो उन की ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि वालिदा जो सख़्त बीमार थीं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सिह़ह़त याब हो चुकी थीं। **अल्लाह** तआ़ला की दा'वते इस्लामी पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों।

*दर्द गर्चे तुम्हारे मसाने में है — र्दस फ़ारूक़ दें, क़ाफ़िले में चलो*
*फ़ाएदा आख़िरत के बनाने में है — सब मुबल्लिग़ कहें क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 677)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी : इस** ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** सफ़ह़ा 533 पर है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सलातो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़-शरे में मसाजिद के अन्दर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** का सिल्सिला होता है जिस में **मो'तकिफ़ीन** की सुन्नतों भरी तरबियत की जाती है। मुआ़-शरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद दौराने ए'तिकाफ़ गुनाहों से ताइब हो कर ज़िन्दगी के नए दौर का आग़ाज़ करते हैं। बा'ज़ अवक़ात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से ईमान अफ़रोज़ करिश्मात का भी ज़ुहूर होता है चुनान्चे **र-मज़ानुल मुबारक** 1425 सि.हि. के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में **दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची** में जहां कमोबेश **2000 मो'तकिफ़ीन** थे, उन में ज़िलअ़ चक्वाल (पंजाब, पाकिस्तान) के **77** सालह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अशरफ़ साहिब भी **मो'तकिफ़** हो गए। **क़िब्ला ह़ाफ़िज़ साहिब का हाथ और ज़बान मफ़्लूज थे और क़ुव्वते समाअ़त भी जवाब दे चुकी थी।** वोह बड़े ख़ुश अ़क़ीदा थे। उन्हों ने एक बार **इफ़्तार** के खाने में बसद हुस्ने ज़न **एक**

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

**मुबल्लिग़ से जूठा खाना ले कर खाया,** उसी से दम भी करवाया, बस उन के **हुस्ने ज़न** ने काम कर दिखाया, रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ को जोश आया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को शिफ़ायाब फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन का फ़ालिज का मरज़ जाता रहा। उन्हों ने हज़ारों इस्लामी भाइयों की मौजू-दगी में **फ़ैज़ाने मदीना** के मन्च पर चढ़ कर बसद अ़क़ीदत अपने रू ब सिह़्ह़त होने की **बिशारत** सुनाई, येह नवीदे जां फ़िज़ा सुन कर फ़ज़ा **"अल्लाह अल्लाह, अल्लाह अल्लाह"** की पुरकैफ़ सदाओं से गूंज उठी। उन दिनों कई मक़ामी अख़्बारात ने इस ख़बरे फ़रह़त असर को शाएअ़ किया।

*दा'वते इस्लामी की क़य्यूम इक इक घर में मच जाए धूम*

*इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 123)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इलाज नम्बर 10

**सिर्फ़ अपने ऐ़बों को देखिये : जब** कभी दूसरे के **ऐ़ब** बयान करने को जी चाहे उस वक़्त **अपने उ़यूब** की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर उन को दूर करने में लग जाना चाहिये, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! येह बहुत बड़ी सआ़दत मन्दी है। **सरकारे** दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे उस के **उ़यूब ( पर नज़र ) ने दूसरों की ऐ़बजूई से फैर दिया।** (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج٢ ص٤٤٧ حديث٣٩٢٩)

**अपने ऐ़बों को याद करो : ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का फ़रमान है : जब तू किसी के **उ़यूब** बयान करने का इरादा करे तो अपने **ऐ़बों** को याद कर लिया कर। (ذَمُّ الْغِيبَة لِابْنِ اَبِى الدُّنيا ص٩٥ رقم٥٦)

**अपने ऐ़बों को जानने के बा वुजूद...... : ह़ज़रते** सय्यिदुना ज़ैद कुम्मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

फ़रमाते हैं : वोह शख़्स कैसा अ़जीब है जिसे मा'लूम है कि मुझ में फ़ुलां **ऐ़ब** है फिर भी अपने आप को अच्छा इन्सान समझता है जब कि अपने मुसल्मान भाई को सिर्फ़ शक (या सुनी सुनाई बात) की बुन्याद पर बुरा आदमी तसव्वुर करता है। पस अ़क़्ल कहां है ? (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٧)

**जो अपने ऐ़बों को जान लेता है : हज़रते** सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़-दविय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا फ़रमाती थीं : बन्दा जब **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का मज़ा चख लेता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ख़ुद उस के अपने **ऐ़बों** पर मुत्तलअ़ फ़रमा देता है पस इस वज्ह से वोह दूसरों के ऐ़बों में मश्ग़ूल नहीं होता। (बल्कि अपने **ऐ़बों** की इस्लाह़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहता है)

(تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩٧)

**छुपी हुई बातों की टटोल मत करो ! :** रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ऐ वोह लोगो जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसल्मानों की **ग़ीबत** न करो और इन की छुपी हुई बातों की टटोल न करो, इस लिये कि जो शख़्स अपने मुसल्मान भाई की छुपी हुई चीज़ की **टटोल** करेगा, **अल्लाह** तआ़ला उस के ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देगा और जिस के **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ऐ़ब ज़ाहिर करेगा। उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो।

(سُنَنِ ابوداؤد ج٤ص٣٥٤ حديث ٤٨٨٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** किसी मुसल्मान के ऐ़बों की टोह में नहीं पड़ना चाहिये, रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 **सू-रतुल हुजुरात** आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाता है : وَلَا تَجَسَّسُوْا **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंडो। **सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : या'नी मुसल्मानों की **ऐ़बजूई** न करो और उन के छुपे हुए ह़ाल की **जुस्त-जू** में न रहो जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी सत्तारी से छुपाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 823)

**अल्लाह ऐ़ब पोशी फ़रमाएगा : ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से

रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, मह़बूबे रब्बुल आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यारो मददगार छोड़ता है और जो अपने भाई की ह़ाजत पूरी करे **अल्लाह** तआ़ला उस की ह़ाजत पूरी करता है और जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की **ऐ़बपोशी** करे तो ख़ुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस की ऐ़ब पोशी फ़रमाए। (صَحیح مُسلِم حدیث ۶۵۸۰ ص۱۳۹۴)

**ऐ़ब छुपाओ जन्नत पाओ : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जो शख़्स अपने भाई का ऐ़ब देख कर उस की **पर्दा पोशी** कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (مُسند عَبد بن حُمَید ص۲۷۹ حدیث۸۸۵)

**जहन्नम में चीख़ रहे होंगे ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللّٰه ! ऐ़ब पोशी की फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत के भी क्या कहने ! जो चीज़ आख़िरत के लिये जिस क़दर अहम होगी शैत़ान उसी क़दर उस के पीछे लगेगा। लिहाज़ा मुसल्मान को मुसल्मान की ऐ़ब पोशी से रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगा देता है और नौबत यहां तक आ पहुंची है कि आज मुसल्मानों की अक्सरिय्यत मुसल्मानों की ऐ़ब दरियों और **ग़ीबतों** में मश्ग़ूल है। और अक्सर कोई किसी की ख़ामी ढकने के लिये तय्यार ही नहीं बिला तकल्लुफ़ बल्कि बसा अवक़ात तो फ़ख़्रिया दूसरों के आगे बयान कर देता है, उन में से अगर किसी ने किसी का **ऐ़ब** कभी छुपा भी लिया तो बस आ़रिज़ी त़ौर पर, जूं ही कुछ नाराज़ी हुई कि जितने भी ऐ़ब छुपा कर रखे थे सब पर से एक दम पर्दा उठा देता है ! आह ! ख़ौफ़े आख़िरत ही जाता रहा ! यक़ीनन जहन्नम की सज़ा सही नहीं जा सकेगी। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं **:** कितने ही सिह़्ह़त मन्द बदन, ख़ूब सूरत चेहरे और मीठा बोलने वाली ज़बानें कल जहन्नम के त़-बक़ात में चीख़ रहे होंगे ! (مُکاشَفَةُ القُلوب ص۱۵۲)

*औरों के ऐब छोड़ नज़र ख़ूबियों पे रख*

*ऐबों की अपने भाई मगर ख़ूब रख परख*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है :** **हज़रते** सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "**ग़ीबत** बन्दए मोमिन के ईमान में इस से भी जल्दी फ़साद पैदा करती है जितनी जल्दी **आकिला** की बीमारी उस के जिस्म को ख़राब करती है।" (आकिला पहलू में होने वाले उस फोड़े को कहते हैं जिस से गोश्त पोस्त (खाल) सड़ जाते हैं और गोश्त झड़ने लगता है) मज़ीद फ़रमाया करते : ऐ इब्ने आदम ! तुम उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकते जब तक लोगों के **उ़यूब** तलाश करना तर्क न कर दो, जो **उ़यूब** तुम्हारे अपने अन्दर पाए जाते हैं तुम उन की इस्लाह़ शुरूअ़ कर दो और उन **ऐबों** को अपनी ज़ात से दूर कर लो। पस जब तुम ऐसा करोगे तो येह चीज़ तुम्हें अपनी ही ज़ात में मशग़ूल कर देगी। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक इस त़रह़ का बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा है। (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنیا ص٩٣،٩٧ رقم٥٤،٦٠)

**एक नौ मुस्लिम की दर्दनाक आपबीती : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** अहले ह़क़ की सुन्नतों भरी तह़रीक है, इस के अ़क़ाइद ऐन क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ हैं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से **ईमान** की ह़िफ़ाज़त का जज़्बा, **नेकियों** की त़रफ़ रग़बत और **ग़ीबतों** वग़ैरा गुनाहों से नफ़रत की सआ़दत ह़ासिल होगी। हर ह़ालत में **ईमान की ह़िफ़ाज़त** ज़रूरी है। अगर **ईमान** पर ख़ातिमा न हुवा तो इबादत कुछ भी काम न आएगी, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم** या'नी आ'माल

का दारो मदार ख़ातिमे पर है। (بُخاری ج ٤ حدیث٦٦٠٧) चाहे कैसी ही आफ़त आन पड़े **ईमान** हरगिज़ मु-तज़ल्ज़िल नहीं होना चाहिये। इस ज़िम्न में **"एक नौ मुस्लिम की दर्दनाक आपबीती"** सुनने से तअ़ल्लुक़ रखती है चुनान्चे **देहली** (हिन्द) के अ़लाक़े सीलम पूर के मुक़ीम **22** सालह नौ जवान के क़बूले इस्लाम का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ कुछ यूं है : वोह एक ग़ैर मुस्लिम ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते थे, उन के बाप की ख़्वाहिश थी कि वोह डॉक्टर बनें, इस सिल्सिले में उस ने उन्हें **1994** सि.ई. में अपने डॉक्टर दोस्त के अस्पताल भेज दिया। वोह ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर मुसल्मानों से इस क़दर नफ़रत करता था कि उन के हाथों की छूई हुई चीज़ तक खाना या पीना गवारा न करता। उन की भी येही आ़दत बन गई कि सारा दिन प्यासा रहना मन्ज़ूर मगर मुसल्मानों के हाथ से पानी पीना ना मन्ज़ूर। कई साल यूंही गुज़र गए। एक रोज़ सब्ज़ इमामे में मल्बूस एक इस्लामी भाई आंखों के ऑपरेशन के लिये वहां आए। उन की ज़बान व निगाह की हिफ़ाज़त का अन्दाज़ और हुस्ने अख़्लाक़ देख कर रफ़्ता रफ़्ता वोह उन के क़रीब हो गए। वोह उन पर वक़्तन फ़ वक़्तन **इन्फ़िरादी कोशिश** करते रहते। कुछ दिनों बा'द वोह अस्पताल से चले गए मगर इन का उन से राबिता रहा और वोह उन के पास आते जाते रहे।

**उन** इस्लामी भाई के पास एक ज़ख़ीम किताब थी जिस का नाम **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** था, जब वोह चोक वग़ैरा पर उस का दर्स देते तो इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें भी दर्स में शिर्कत की दा'वत पेश करते, वोह सुनने बैठ जाते। **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की ब-र-कत से कुछ ही दिनों में उन का दिल मज़्हबे इस्लाम के लिये नफ़रत के बजाए महब्बत महसूस करने लगा। अब वोह मुसल्मानों के साथ खा पी भी लेते और मसाजिद व अज़ान का एहतिराम करते। **2004** सि.ई. में एक रोज़ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला **"ग़ुस्ल का त़रीक़ा"** उन्हों ने पढ़ा मगर सहीह त़रीक़े से समझ न सके। उन इस्लामी भाई से पूछा तो उन्हों ने उन को रिसाले की मदद से तफ़्सीलन त़हारत के मसाइल समझाए और फ़रमाया कि

**हक़ीक़ी पाकी बिग़ैर मुसल्मान हुए ह़ासिल नहीं की जा सकती ।** वोह वक़्त उन की सआ़दतों की मे'राज का था, उन के अल्फ़ाज़ ने उन की ज़िन्दगी का रुख़ तब्दील कर दिया, उन्हों ने कुछ देर सोचा और फिर **"कलिमए त़य्यिबा" पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए ।** कुफ़्र के अंधेरे छट गए और उन का दिल नूरे इस्लाम से जग-मगाने लगा ।

वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करने लगे और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के मुरीद बन गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बा जमाअ़त नमाज़ें पढ़ने लगे, कभी कभी शैत़ान उन्हें मज़्हबे इस्लाम के बारे में वस्वसे डालता था । एक रोज़ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला **"बुड्ढा पुजारी"** पढ़ा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के वस्वसों की जड़ कट गई । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **18** जूलाई **2005** सि.ई. को आ़शिक़ाने रसूल के हमराह **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत मिली । इस से पहले वोह ज़रा ज़रा सी बात पर घर वालों से नाराज़ हो जाते, खाना मिज़ाज के ख़िलाफ़ मिलता तो ख़ूब शोर मचाते थे, **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत से येह आ़दत भी निकल गई । घर वाले उन की इस तब्दीली पर ह़ैरान थे और मज़्हबे इस्लाम से मु-तअस्सिर हो रहे थे । वोह **दाढ़ी शरीफ़** की सुन्नत अपनाने के साथ साथ सर पर सब्ज़ **इमामा** भी बांधने लगे मगर घर जाते वक़्त उतार लेते ।

**चन्द** दिनों बा'द बा'ज़ लोगों ने उन के ख़िलाफ़ घर वालों का मन्फ़ी ज़ेह्न बनाया जिस पर घर में सख़्ती शुरूअ़ हो गई, अब उन्हें बात बात पर टोका जाता बल्कि मारने से भी दरेग़ न किया जाता । उन्हों ने तंग आ कर घर छोड़ दिया मगर कुछ ही रोज़ बा'द भाई वग़ैरा ने बहाने से बुलवाया और ज़बर दस्ती नाई (ह़जाम) के पास पकड़ कर ले गए । जब उन्हों ने उस नाई को बताया कि मैं मुसल्मान हो चुका हूं तो वोह डर गया और उस ने दाढ़ी मूंडने से इन्कार कर दिया । उन के घर वाले भी दाढ़ी काटने से डर रहे थे मगर अफ़्सोस कि इ़ल्मे दीन से बे बहरा एक मुसल्मान

ने घर वालों से कहा : "दाढ़ी रखना ज़रूरी नहीं है, हमें देखो ! लाखों मुसल्मान कहां दाढ़ी रखते हैं ?" येह सुन कर कुफ़्र की तारीकियों में घिरे हुए घर वालों का दिल एक दम खुल गया और उन्हों ने सोते में ब्लेड से उन की दाढ़ी मूंडना शुरूअ़ कर दी। उन की आंख खुल गई, दाढ़ी बचाने की जिद्दो जह्द में उन की चेहरा लहू लुहान हो गया, वोह रो रो कर उन्हें इस काम से बाज़ रहने की इल्तिजाएं करते रहे मगर उन्हों ने उन की एक न सुनी और दाढ़ी मूंड कर ही दम लिया। चेहरे से बहने वाला लहू उन के आंसूओं में शामिल हो गया। उन्हों ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि उन्हें एक कमरे में क़ैद कर दिया। तन के कपड़ों के इलावा उन के पास और कुछ न था, उन की निगरानी की जाती मगर वोह किसी न किसी त़रह़ छुप कर **नमाज़ें** अदा कर लेते। नींद की कुरबानी दे कर भी अपना **वुज़ू** क़ाइम रखते ताकि मौक़अ़ मिलने पर नमाज़ अदा कर सकें। उन का कोई पुरसाने ह़ाल था न हमदर्द कि जो हमदर्दी के दो मीठे बोल सुना कर उन की ढारस बंधाता। तक़रीबन 2 माह इसी त़रह़ गुज़र गए यहां तक कि र-मज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना तशरीफ़ ले आया। आह ! उन्हें कौन स-ह़री फ़राहम करता ! र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा छोड़ना उन्हें गवारा न था चुनान्चे उन्हों ने बिग़ैर स-ह़री ही **रोज़ा** रख लिया। शाम तक जब उन्हों ने खाना नहीं खाया तो घर वालों को तश्वीश हुई। वोह जम्अ़ हो कर आए और खाना खाने के लिये ज़ोर देने लगे। उन्हों ने कहा : "रख दो मैं खा लूंगा।" उन के जाने के बा'द उन्हों ने मज़ीद इसरार से बचने के लिये सालन इधर उधर कर दिया और रोटियां जेब में डाल लीं मगर घर वालों को किसी त़रह़ शक हो गया और उन्हों ने दिन के वक़्त ज़बर दस्ती उन्हें खाना खिलाया, वोह दिल ही दिल में कुढ़ते रहे मगर मजबूर थे, यूं वोह पांच रोज़े न रख सके।

आख़िरे कार किसी सबब से घर वालों की त़रफ़ से कुछ ढील मिली और वोह दोबारा अस्पताल जाने लगे। वोह बिग़ैर स-ह़री रोज़े की निय्यत कर लेते और ब ज़ाहिर दो पहर का खाना साथ ले जाते मगर शाम के वक़्त उस से इफ़्तारी करते। इसी दौरान उन्हों ने इस्लाम क़बूल करने के मु-तअ़ल्लिक़ क़ानूनी काग़ज़ात भी मुकम्मल करवा लिये मगर घर वालों को पता नहीं चलने

दिया। वोह घर वालों से छुप कर जिस मस्जिद में नमाज़ अदा करने जाते थे वहां की इन्तिज़ामिया ने ख़ौफ़ज़दा हो कर उन्हें मन्अ़ कर दिया कि आप यहां न आया करें, कहीं फ़साद न हो जाए। उन का दिल तो बहुत दुखा कि मैं मुसल्मान होते हुए भी ह़ालात की सितम ज़रीफ़ी की वज्ह से मस्जिद में दाख़िले से रोक दिया गया हूं मगर बे बसी थी, बेचारे क्या कर सकते थे! **दा'वते इस्लामी** का म-दनी मर्कज़ वहां से बहुत दूर था और ह़ालात के पेशे नज़र उन्हों ने ख़ुद ही उन्हें राबित़ा करने से मन्अ़ कर रखा था।

परेशानियों के तसल्सुल ने उन के आ'साब शल कर दिये थे, उन्हें कोई ऐसा हमदर्द व ग़म गुसार भी नहीं मिलता था कि जिस के कन्धे पर सर रख कर चन्द अश्क बहा कर अपने दिल का बोझ हलका कर सकें, आह! वोह बिल्कुल तन्हा थे, ऐसे वक़्त में उन्हें नमाज़ पढ़ने में बड़ा सुकून और ह़ौसला मिलता था, उन की ज़बान पर **दुरूद शरीफ़** जारी रहता। अब उन्हों ने हिम्मत कर के 3 किलो मीटर दूर "जनता कॉलोनी" की मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने के लिये जाना शुरूअ़ कर दिया। घर वाले एक बार फिर नर्म पड़ चुके थे। एक रोज़ मह़ल्ले के किसी नाम निहाद मुसल्मान ने घर वालों को अच्छा लगाने के लिये उन का कुछ इस त़रह़ ज़ेह्न ख़राब करने की कोशिश की, कि "हम भी आख़िर मुसल्मान हैं, कौन सा रोज़ रोज़ नमाज़ पढ़ते हैं। बस जुमुआ़ या ईद की नमाज़ पढ़ लिया करते हैं! लगता है तुम्हारा बेटा किसी जिन्न को क़ाबू करने का अ़मल कर रहा है, येह पागल हो जाएगा तो तुम्हें पता चलेगा।" उस की बातें सुन कर घर वाले घबरा गए और फिर से सख़्ती शुरूअ़ कर दी ह़त्ता कि दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ने के लिये उन के होंट हिलाने पर भी पाबन्दी लगा दी गई। घर वाले उन्हें पकड़ कर एक आ़मिल के पास ले गए। उस ने भी कह दिया कि इस पर "अ-सरात" हैं!

इन ह़ालात से वोह बहुत दिल बरदाश्ता हुए और शायद वोह दोबारा कुफ़्र के अंधेरों में खो जाते मगर रब्बुल अकरम عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल रहा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल में आ़शिक़ाने रसूल की ज़बानी मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर होने वाले **मज़ालिम की दास्तानें** सुन रखी थीं, उन मज़ालिम के सामने इन की तकालीफ़ कुछ भी नहीं थीं, अपने मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कड़ी आज़्माइशों और उन आज़्माइशों पर किये जाने वाले बे मिसाल सब्र को याद कर के उन का ईमान और मज़बूत़ हो जाता।

**एक** रोज़ वोह छुप कर **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में जा पहोंचे। इत्तिलाअ़ पा कर घर वाले आ धमके और उन्हें वहां से उठा कर ले गए। न उन्हों ने कोई मुज़ा-ह़मत की और न किसी को करने दी कि फ़साद होगा। घर ले जा कर उन्हें इतना मारा गया कि वोह **नीम बेहोश** हो गए। होश आने पर उन्हों ने घर छोड़ने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया ह़ालां कि 3 दिन पहले ही उन की सरकारी नोकरी की तक़र्रुरी का ऑर्डर मौसूल हुवा था जिस के लिये उन्हों ने सालों मेह़नत और कोशिशें की थीं। अब एक त़रफ़ ज़ाती मकान, मां बाप और रोशन मुस्तक़्बिल और दूसरी त़रफ़ **ईमान** जैसी अ़ज़ीम दौलत ! मगर उन्हों ने रब्बुल अकरम عَزَّوَجَلَّ के करम से **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की ख़ात़िर **21** मार्च **2007** सि.ई. को अपनी मरज़ी से **हिजरत** की और अपना घर छोड़ दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आज वोह हिन्द के मुख़्तलिफ़ शहरों में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र कर रहे हैं और घर वालों की सख़्ती के बाइ़स रह जाने वाली तमाम नमाज़ें भी क़ज़ा कर चुके हैं। उन की ख़्वाहिश थी कि मैं भी कभी नमाज़ में **इमामत** की सआ़दत ह़ासिल कर सकूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से चन्द सूरतों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ याद करने और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल सीखने में काम्याब हो चुके थे। लिहाज़ा **13** एप्रिल **2007** सि.ई. को उन की मुराद बर आई और उन्हें हिन्द के "झांसी" नामी शह्र में फ़ज्र की जमाअ़त में **इमामत** की सआ़दत ह़ासिल हो गई। उन का कहना है कि **दा'वते इस्लामी** पर मेरी जान क़ुरबान कि इस ने **कुफ़्र** की आग़ोश में पलने वाले को न सिर्फ़ दौलते ईमान से नवाज़ा बल्कि इमामत के मुसल्ले पर ला खड़ा किया। **येह** सब मेरे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत, और

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायत है।

वोह नौ मुस्लिम इस्लामी भाई दौराने सफ़र "क़न्नोज" शह्र के मुसल्मानों के मह़ल्ले "काग़ज़ियानी" पहुंचे वहां की "पुरानी मस्जिद" के सामने वाला मैदान लोगों से भरा हुवा था, कोई **ताश** खेलने में तो कोई **जूए** में मसरूफ़ था। नमाज़े अ़स्र के बा'द वोह उन लोगों के पास **नेकी की दा'वत** देने के लिये ह़ाज़िर हुए यकायक एक शख़्स इन्तिहाई ग़ुस्से की ह़ालत में खड़ा हो गया और उन्हें गन्दी गन्दी गालियां देते हुए डांटने लगा कि किसी और को जा कर समझाओ हमें समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है। इतने में एक बूढ़े शख़्स ने उस से कहा : "इस की बात तो सुनो कि येह क्या कहना चाहता है ?" चुनान्चे उन्हों ने **नेकी की दा'वत** पेश की और **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माह़ोल में सीखे हुए नमाज़ पढ़ने के **फ़ज़ाइल** और न पढ़ने से मु–तअ़ल्लिक़ **वईदें** सुनाईं, जब मह़सूस हुवा कि लोहा गर्म हो चुका है तो उन्हों ने कहा "जो बातें मैं आप को बता रहा हूं येह तो आप ह़ज़रात को मुझे बतानी चाहिएं क्यूं कि मैं ने अभी कुछ अ़र्सा क़ब्ल ही इस्लाम क़बूल किया है। फिर उन्हों ने मुख़्तसरन अपने इस्लाम क़बूल करने और इस दौरान आने वाले इम्तिह़ानात के वाक़िआत सुनाने शुरूअ़ किये तो वहां मौजूद ह़ज़रात शिद्दते जज़्बात से रोने लगे ह़त्ता कि उन्हें गालियां बकने वाला शख़्स रोते हुए कहने लगा : बस करो वरना मेरा दम निकल जाएगा। अब येह तमाम लोग इन के साथ मस्जिद में चलने के लिये तय्यार थे। **नमाज़े अ़स्र** में दो नमाज़ी थे मगर ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर नमाज़े मग़रिब में 3 सफ़ें बन गईं। एक बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे : "मैं इन लोगों को देखते देखते बूढ़ा हो गया हूं आज पहली बार इन्हें मस्जिद में देख रहा हूं।"

***काफ़िरों को चलें, मुश्रिकों को चलें दा'वते दीन दें, क़ाफ़िले में चलो***
***काफ़िर आ जाएंगे, राहे ह़क़ पाएंगे اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ, चलें क़ाफ़िले में चलो***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 676)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**ग़ीबत से तौबा का त़रीक़ा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नदामत के साथ तौबा व इस्तिग़्फ़ार कीजिये। जिस जिस की **ग़ीबत** की है उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत कीजिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ग़ीबत के कफ़्फ़ारे में येह है कि जिस की **ग़ीबत** की है, उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे, येह कहे : **اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَلَهٗ** या'नी इलाही ! हमें और उसे बख़्श दे। (الدَّعواتُ الْكَبِير لِلْبَيْهَقِى ج ٢ ص ٢٩٤ حديث ٥٠٧) अगर नाम याद न रहे हों तो मश्व-रतन अ़र्ज़ है कि हो सके तो रोज़ाना वक़्तन फ़ वक़्तन यूं कहिये : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने आज तक जितनी भी **ग़ीबतें** की हैं उन से तौबा करता हूं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी और आज तक मैं ने जिन जिन मुसल्मानों की **ग़ीबत** की है उन सब की अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े मग़्फ़िरत फ़रमा। (याद रहे ! क़बूलिय्यते तौबा के लिये येह भी शर्त़ है कि उस गुनाह से दिल में बेज़ारी और आयिन्दा न करने का अ़ज़्म हो।)

***मेरी और जिन जिन की मैं ने की है ग़ीबत या ख़ुदा***
***मग़्फ़िरत फ़रमा दे, फ़रमा सब पे रह़मत या ख़ुदा***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**बन्दे से भी मुआ़फ़ी मांगे : जिस** की "ग़ीबत" की उस को पता नहीं चला तो उस से मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी नहीं। **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में तौबा व इस्तिग़्फ़ार कीजिये और दिल में पक्का अ़ह्द कीजिये कि आयिन्दा कभी किसी की **ग़ीबत** नहीं करूंगा। अगर उस को मा'लूम हो गया है तो उस के पास जा कर **ग़ीबत** के मुक़ाबिल उस की जाइज़ ता'रीफ़, और उस से मह़ब्बत का इज़्हार कीजिये, ताकि उस का दिल ख़ुश हो और आ़जिज़ी के साथ अ़र्ज़ कीजिये कि मैं ने जो आप की **ग़ीबत** की है उस पर नादिम हूं मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। अब बिलफ़र्ज़ वोह मुआ़फ़ न भी करे तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में मुवा-ख़ज़ा न होगा। हां अगर **रस्मी त़ौर** पर (SORRY कह दिया) बिला इख़्लास मुआ़फ़ी मांगी और उस ने मुआ़फ़ कर भी दिया तब भी आख़िरत में मुवा-ख़ज़े (या'नी पूछगछ) का ख़ौफ़ बाक़ी है। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 181)

*सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब*

*बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 172)

**तौबा के बा'द जिस की ग़ीबत की थी उस को पता चल गया तो ? : ग़ीबत** से तौबा कर लेने के बा'द मुग़ताब या'नी जिस की **ग़ीबत** की थी उस को पता चला तो अब क्या करना चाहिये ! इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 411 पर नक़्ल करते हैं **: रौ-ज़तुल उ़-लमा** में है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू मुह़म्मद** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा कि अगर **ग़ीबत** उस शख़्स तक नहीं पहुंची जिस की **ग़ीबत** की गई थी तो **ग़ीबत** करने वाले के लिये **तौबा** फ़ाएदा मन्द होगी या नहीं ? उन्हों ने फ़रमाया : हां। (फ़ाएदा मन्द होगी) क्यूं कि उस ने बन्दे के ह़क़ के मु-तअ़ल्लिक़ होने से पहले **तौबा** कर ली है, **ग़ीबत** बन्दे का ह़क़ (या'नी हुक़ूक़ुल इबाद में शामिल) उस वक़्त होगी जब उस तक पहुंच जाएगी। मैं ने कहा कि अगर **तौबा** के बा'द उस शख़्स तक **ग़ीबत** पहुंच जाए ? फ़रमाया कि उस की **तौबा** बात़िल नहीं होगी बल्कि **अल्लाह** तआ़ला दोनों को बख़्श देगा। **ग़ीबत** करने वाले को **तौबा** की वज्ह से और जिस की **ग़ीबत** की गई उसे उस तक्लीफ़ की वज्ह से जो उसे **ग़ीबत** सुन कर हुई है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला करीम है उस के मु-तअ़ल्लिक़ येह नहीं कहा जा सकता कि वोह किसी की तौबा क़बूल फ़रमा कर रद फ़रमा दे बल्कि **दोनों को बख़्श** देगा। (مِنحُ الرّوض لِلقاری ص ٤٤٠)

*डर था कि इस्यां की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा*

*दी उन की रह़मत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 110)

**जिस की ग़ीबत की उस को पता चल गया...... फिर मर गया : हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : जिस की **ग़ीबत**

की (उस को पता चल गया और अब) वोह मर गया या ग़ाइब हो गया उस से किस त़रह़ मुआ़फ़ी मांगे ? येह मुआ़-मला बहुत दुश्वार हो गया ! लिहाज़ा अब चाहिये कि ख़ूब नेकियां करे ताकि क़ियामत में अगर इस की नेकियां **ग़ीबत** के बदले दे दी जाएं जब भी उस के पास नेकियां बाक़ी रह जाएं। (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٦٧٧) **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : मेरे भाई अफ़्ज़लुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : नेक आ'माल ज़ियादा करता हूं ताकि क़ियामत के दिन मेरे पास आ'माल में से कुछ न कुछ हो, जो कि उन को दिया जा सके जिन का मेरे ज़िम्मे (हुक़ूक़ुल इबाद के तअ़ल्लुक़ से) माल या इ़ज़्ज़त का कुछ मुता़-लबा हो। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص١٩١)

*बाज़ारे अ़मल में तो सौदा न बना अपना*

*सरकार ! करम तुझ में ऐबी की समाई है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 192)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**हाए शामते नफ़्स ! : आह !** आह ! आह ! वोह मज्मूअ़ए ग़फ़्लत व सरापा मा'सियत कहां जाए जो कि नफ़्स की शामत के सबब ला ता'दाद अफ़्राद की **ग़ीबत** कर चुका हो, मरने या ग़ाइब होने वालों की बात तो दूर रही, जानने पहचानने के बा वुजूद मुरव्वत की मनों वज़्नी बेड़ियों में जकड़े होने के बाइस मुआ़फ़ी मांगने से शरमाता हो ! हाए ! हाए ! हाए ! अगर बरोज़े क़ियामत ढेर सारे अहले हुक़ूक़ नेकियां लेने और अपने अपने गुनाह सर लदवाने पर तुल गए तो क्या बनेगा। आह ! आह ! आह ! सदक़े **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

*तुझे हरगिज़ गवारा हो नहीं सकता कि मह़शर में*

*जहन्नम की त़रफ़ रोता हुवा तेरा गदा निकले*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 431)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**दुन्या ही में मुआ़फ़ करवा लेने में आ़फ़िय्यत है :** सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस के ज़िम्मे अपने भाई का आबरू वग़ैरा किसी बात का मज़्लिमा (या'नी ज़ुल्म) हो, उसे लाज़िम है कि यहीं उस से मुआ़फ़ी चाह ले क़ब्ल उस वक़्त के आने के कि वहां न दीनार होंगे और न दिरहम अगर इस के पास कुछ नेकियां होंगी तो ब क़दर उस के ह़क़ के इस से ले कर उसे दी जाएंगी वरना उस के गुनाह इस पर रखे जाएंगे। (صَحیح بُخاری ج۲ ص۱۲۸ حدیث ۲۴۴۹)

*सब ने सफ़े मह़शर में ललकार दिया हम को*
*ऐ बे कसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 192)

**बोहतान की ता'रीफ़ : किसी** शख़्स की मौजू-दगी या ग़ैर मौजू-दगी में उस पर झूट बांधना **बोहतान** कहलाता है। (اَلْحَدِيقَةُ النَّدِيَّة ج۲ ص۲۰۰) इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि **बुराई** न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रू बरू वोह बुराई उस की त़रफ़ मन्सूब कर दी तो येह **बोहतान** हुवा म-सलन पीछे या मुंह के सामने रियाकार कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई सुबूत न हो क्यूं कि **रियाकारी** का तअ़ल्लुक़ बात़िनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस त़रह़ किसी को **रियाकार** कहना **बोहतान** हुवा।

**बोहतान से तौबा का त़रीक़ा : बोहतान** से तौबा करे, इस तौबा में तीन बातों का पाया जाना ज़रूरी है : ﴾1﴿ आयिन्दा बोहतान को तर्क करने का पक्का इरादा करना ﴾2﴿ **जिस का ह़क़ ज़ाएअ़ किया, मुम्किन हो** तो उस से मुआ़फ़ी चाहना म-सलन साहिबे ह़क़ ज़िन्दा और मौजूद है नीज़ मुआ़फ़ी मांगने से कोई झगड़ा या अ़दावत पैदा नहीं होगी ﴾3﴿ (जिन) लोगों (के सामने बोहतान लगाया उन) के सामने अपने **झूट** (या'नी बोहतान) का इक़्रार करना या'नी येह कहना कि जो मैं ने **बोहतान** लगाया था उस की कोई ह़क़ीक़त नहीं। (اَلْحَدِيقَةُ النَّدِيَّة وَ الطَّرِيقَةُ الْمُحَمَّدِيَّة ج ۲ ص ۲۰۹)

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर

मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़्हा 181 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **बोहतान** की सूरत में तौबा करना और मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने **बोहतान** बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूरी है कि मैं ने झूट कहा था जो फ़ुलां पर मैं ने **बोहतान** बांधा था। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 181) नफ़्स के लिये यक़ीनन येह सख़्त गिरां है मगर दुन्या की थोड़ी सी ज़िल्लत उठानी आसान मगर आख़िरत का मुआ़-मला इन्तिहाई संगीन है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दोज़ख़ का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। लिहाज़ा पढ़िये और लरज़िये :

**बोहतान का अ़ज़ाब :** नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक दोज़ख़ियों के कीचड़, पीप और ख़ून में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए। (سُنَنِ ابوداوٗد ج۳ ص۴۲۷ حديث ۳۵۹۷)

**गुनाह के इल्ज़ाम का अ़ज़ाब :** लोगों पर गुनाहों की **तोहमत** लगाने वालों के अ़ज़ाब की एक दिल हिला देने वाली रिवायत मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुए कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को **ज़बानों** से लटकाया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर झूटी तोहमत लगाने वाले हैं। (شَرحُ الصُّدُور ص۱۸۲)

**शक्की मिज़ाजों को तम्बीह : जो** शक्की मिज़ाज औ़रतें अपने मर्दों पर **तोह्मतें** धरतीं और इस त़रह़ की बातें करती हैं कि ❁ किसी औ़रत के चक्कर में है ❁ सब पैसे उसी को दे आता है वग़ैरा यूं ही जो वहमी मर्द अपनी औ़रतों पर इस त़रह़ गुनाह की **तोह्मतें** लगाते हैं कि ❁ इस की किसी के साथ "आशनाई" है ❁ अपने आशना को फ़ोन करती है ❁ उस से मिलती है ❁ गन्दे काम करवाती है वग़ैरा। उन को बयान कर्दा **इल्ज़ामे गुनाह** के अ़ज़ाब की रिवायत से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये। इस ज़िम्न में एक **इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत** मुला-हज़ा हो चुनान्चे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

**औ़रत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत : ह़ज़रते** अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی **शर्हुस्सुदूर** में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स ने ख़्वाब में **जरीर ख़-त़फ़ी** को देखा तो पूछा : **مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़-मला किया ? तो उन्हों ने कहा : मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैं ने पूछा : मग़्फ़िरत का क्या सबब बना ? कहा : उस **तक्बीर** कहने पर जो मैं ने एक जंगल में कही थी। मैं ने पूछा : फ़रज़्दक़ का क्या हुवा ? तो उन्हों ने कहा : अफ़्सोस पाक दामन औ़रतों पर **तोहमत** लगाने के बाइ़स वोह हलाकत में गिरिफ़्तार हुवा।

(شَرحُ الصُّدُور ص٢٨٥،البداية والنّهاية ج٦ ص٤٠٩)

**हाए !** हाए ! हाए ! हम ने न जाने ज़िन्दगी में कितनों पर **बोहतान** बांधे होंगे ! आह !

***जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में***
***सरकार मगर दिल की क़सावत[1] नहीं जाती***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 382)

**एक दूसरे को ग़ीबत से बचाने का त़रीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन** जिन खुश नसीबों का येह ज़ेहन बन रहा हो कि हमें **ग़ीबत** के मूज़ी मरज़ से छुटकारा पाने के लिये कोशिशें तेज़ तर कर देनी हैं वोह आपस में तै कर लें कि हम में से अगर مَعَاذَ الله कोई **ग़ीबत** शुरूअ़ कर दे तो जो मौजूद हो वोह अपनी कुव्वत के मुत़ाबिक़ ज़बान से टोक कर रोक दे और तौबा करने का कहे नीज़ अव्वल आख़िर صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب कह कर दुरूद शरीफ़ पढ़ाने के साथ कहे : "تُوبُوا اِلَى الله!" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तौबा करो !) येह सुन कर **ग़ीबत** करने वाला कहे : اَسْتَغْفِرُ الله (या'नी मैं **अल्लाह** तआ़ला से बख़्शिश चाहता हूं) اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ हाथों हाथ तौबा की सआ़दत मिल जाएगी। जिन्हों ने **ग़ीबत** करते न सुना हो उन से एह़तियात़ लाज़िमी है, आवाज़ व अन्दाज़ ऐसे न हों कि जिन को पता न था उन को भी मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां ने مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ **ग़ीबत** की।

मदीना

1. सख़्ती

**किसी को काला कहना भी ग़ीबत है :** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين तौबा के मुआ़-मले में बिल्कुल नहीं शरमाते थे चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِين ने एक शख़्स का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : वोह आदमी सियाह फ़ाम (या'नी काला) है फिर फ़रमाया : "**اَسْتَغْفِرُ اللّٰه**" या'नी "मैं **अल्लाह** तआ़ला से बख़्शिश त़लब करता हूं" मैं समझता हूं कि मैं ने उस की **ग़ीबत** की है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص۱۷۸)

**बिग़ैर शरमाए फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين का ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा ! इतने ज़बर दस्त बुज़ुर्ग ने फ़ौरन सब के सामने तौबा कर ली इस में येह भी दर्स मिला कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी लोगों के सामने **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाह सरज़द हो जाए तो एह़सास होते ही बिग़ैर शरमाए सब के सामने तौबा कर ली जाए। अगर बा'द में एह़सास हो गया और तौबा कर ली तो जिन जिन के सामने **ग़ीबत** का गुनाह किया उन को अपनी तौबा पर मुत्त़लअ़ कर दिया जाए। तौबा का येह क़ाइदा ज़ेह्न में रखिये जैसा कि ह़दीसे पाक में है : **सुल्त़ाने दो जहान,** मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब तुम कोई गुनाह करो तो तौबा कर लो, **اَلسِّرُّ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَةُ بِالْعَلَانِيَةِ** या'नी पोशीदा गुनाह की तौबा पोशीदा और अ़लानिया गुनाह की तौबा अ़लानिया। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۲۰ ص۱۵۹ حدیث ۳۳۱)

**इस** हि़कायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बिला इजाज़ते शर-ई पीठ पीछे किसी मुसल्मान के जिस्मानी ऐ़ब बयान करना म-सलन ❁ काला ❁ भूरा ❁ बद सूरत ❁ कोढ़ी ❁ गन्जा ❁ मोटा ❁ लम्बा ❁ ठिगना ❁ काना ❁ अन्धा ❁ बहरा ❁ गूंगा ❁ बांडा ❁ भेंगा ❁ लूला ❁ लंगड़ा ❁ कुबड़ा कहना **ग़ीबत** है। बा'ज़ इस्लामी भाई काली रंगत वाले इस्लामी भाई को **बिलाली** कहते हैं, बिला ज़रूरत येह भी न कहा जाए कि पीठ पीछे से कहना **ग़ीबत** में शुमार होगा क्यूं कि जिस को "बिलाली" के मुरादी मा'ना मा'लूम होंगे या'नी जो समझता होगा कि मैं

**काला** हूं इस लिये मुझे "बिलाली" कह रहे हैं तो उस को बुरा लग सकता है । हां अगर किसी मख़्सूस इस्लामी भाई की पहचान ही बिलाली है तो इस निय्यत से बिलाली कहने में ह़रज नहीं ।

**गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करना वाजिब है :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मन्कूल है : **जूं ही गुनाह सादिर हो फ़ौरन तौबा कर लेना वाजिब है ख़्वाह सग़ीरा गुनाह ही क्यूं न हो ।** (شرحُ النّووی علی صَحِیح مُسلِم الجزء السّابع عشر ص٥٩)

**किसी की बात ग़ीबत न थी मगर आप ने ग़ीबत कह दी तो ? : किसी** बात को गुनाह भरी **ग़ीबत** क़रार देने के लिये मा'लूमात होना ज़रूरी है अगर आप ने बे सोचे समझे किसी की बात को **ग़ीबत** ठहराया और उस के मुर-तकिब को गुनहगार क़रार दिया और वोह गुनहगार नहीं था तो इस सूरत में आप गुनहगार होंगे **तौबा उस पर नहीं आप पर वाजिब हो जाएगी !** बहर ह़ाल आपस में येह ज़रूर तै़ कर लीजिये कि **ग़ीबत** न हो रही हो फिर भी अगर किसी ने ग़लत़ फ़हमी के सबब ! تُوبُوا اِلَی اللہ कह दिया तब भी हम "झगडे़" की कैफ़िय्यत पैदा न होने देंगे वरना शैत़ान को दूसरे ज़ाविये से या'नी लड़वाने और दिलों में बुग़्ज़ व कीना डलवाने के ज़रीए़ गुनाह करवाने का मौक़अ़ हाथ आ सकता है ।

**झगडे़ से बचने की फ़ज़ीलत : ख़ुदा न ख़्वास्ता** कभी दो इस्लामी भाई लड़ पडे़ं तो मौक़अ़ पा कर तीसरा बुलन्द आवाज़ से صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب कह दे, दोनों दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए सुल्ह़ कर लें । जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद नहीं झगड़ता उस का तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा ही पार है । चुनान्चे **मदीने के सुल्त़ान**, रह़मते दो जहान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद **झगड़ा** नहीं करता मैं उस के लिये **जन्नत** के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं । (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص ٣٣٢ حدیث ٤٨٠٠)

**اَسْتَغْفِرُ اللہ कहने की फ़ज़ीलत : लोगों** की मौजू-दगी में हर त़रह़ की मा'सियत, बल्कि ना पसन्दीदा ह़-र-कत म-सलन फ़ुज़ूल गोई सादिर होने पर बल्कि मौक़अ़ की मुना-सबत से बिला उ़न्वान भी बुलन्द आवाज़ से अव्वल आख़िर صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب के साथ ! تُوبُوا اِلَی اللہ कह देना

चाहिये कि हर वक़्त तौबा व इस्तिग़्फ़ार करते रहना कारे सवाब है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : مَنِ اسْتَغْفَرَ اللّٰهَ غَفَرَلَهٗ या'नी जो कोई **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार (या'नी मग़्फ़िरत त़लब) करेगा **अल्लाह** तआ़ला उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा। (اَسْتَغْفِرُاللّٰه कहना भी इस्तिग़्फ़ार या'नी मग़्फ़िरत त़लब करना है) (سُنَنِ تِرمِذی ج٥ ص٢٨٨ حديث ٣٤٨١)

**तौबा के तीन अरकान हैं : अलबत्ता** गुनाह सरज़द हुवा हो तो उस की मह़ज़ रस्मी तौबा काफ़ी नहीं **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 480 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बयानाते अ़त्तारिय्या''** हिस्सए अव्वल के सफ़ह़ा 79 पर है : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : तौबा की अस्ल **रुजूअ़ इलल्लाह** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करना) है इस के तीन रुक्न हैं : ﴾1﴿ ए'तिराफ़े जुर्म ﴾2﴿ नदामत ﴾3﴿ अ़ज़्मे तर्क (या'नी इस गुनाह को तर्क कर देने का पक्का इरादा) अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो इस की तलाफ़ी (या'नी नुक़्सान का बदला) भी लाज़िम म-सलन तारिकुस्सलाह (या'नी बे नमाज़ी) के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 16)

**सभी ग़ीबत से बचने की तरकीब करें : तमाम मुसल्मान, जुम्ला आ़शिक़ाने रसूल ब शुमूल दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस के अराकीन व मुबल्लिग़ीन, मुदर्रिसीन व त़-ल-बए इल्मे दीन, मुअ़ल्लिमीन व मु-तअ़ल्लिमीन नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िरीन वग़ैरा **ग़ीबत** से बचने के मज़्कूरा त़रीक़ों पर अ़मल करेंगे तो इन के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रह़मतें ही रह़मतें और मग़्फ़िरतें ही मग़्फ़िरतें होंगी। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुसल्मानों को बद गुमानियों, **ग़ीबतों, तोह्मतों, चुग़्लियों, दिल आज़ारियों** वग़ैरा गुनाहों से मह़फ़ूज़ फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

**दुआए अ़त्तार :** या रब्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो भी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन अपने यहां ''एक दूसरे को **ग़ीबत** से बचाने का त़रीक़ा'' राइज करे उस की और जो जो साथ दें उन सब की गै़ब से मदद फ़रमा, उन सब की **ग़ीबत** बल्कि हर मा'सियत से ह़िफ़ाज़त फ़रमा कर उन के दिलों में अपनी और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत भर दे । उन सब को जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िल फ़रमा कर प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ोस में बसा दे और येह तमाम दुआएं मुझ गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में भी क़बूल फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

*ख़ुदाया अजल आ के सर पर खड़ी है — दिखा जल्वए मुस्त़फ़ा या इलाही*
*मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से — हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105,106)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللہ! اَسْتَغْفِرُ اللہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

**दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुहूतशम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शु-हदा** के साथ रखेगा ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط للطّبَرانی ج۵ص۲۵۲حدیث۲۷۳۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

# "ग़ीबत ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है" के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से 40 हिकायात

## ﴾1﴿ दो ग़ीबत करने वालियों की ह़िकायत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन **रोज़ा** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्तार न करे । लोगों ने **रोज़ा** रखा । जब शाम हुई तो तमाम सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के ह़ाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हो कर अ़र्ज़ करते रहे : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं **रोज़ा** खोल दूं । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते । एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दो औरतों ने **रोज़ा** रखा और वोह आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में आने से ह़या मह़सूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी **रोज़ा** खोल

लें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर येही बात दोहराई आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया, वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फैर लिया, फिर **ग़ैबदान** रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''उन दोनों ने **रोज़ा** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें।'' वोह सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें **फ़रमाने शाही** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनाया। उन दोनों ने क़ै की, तो क़ै से जमा हुवा ख़ून निकला। उन सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में वापस ह़ाज़िर हो कर सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की। **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों को **आग** खाती। (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी)

(ذَمُّ الْغِيْبَةِ لِابْنِ اَبِى الدُّنْيا ص ٧٢ رقم ٣١)

**एक** और रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुंह फैरा तो वोह सामने आए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह दोनों प्यास की शिद्दत से मरने के क़रीब हैं। **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : उन दोनों को मेरे पास लाओ। वोह दोनों ह़ाज़िर हुईं। **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया : इस में क़ै करो ! उस ने ख़ून, पीप और गोश्त की क़ै की, ह़त्ता कि आधा पियाला भर गया। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरी को हुक्म दिया कि तुम भी इस में क़ै करो ! उस ने भी इसी त़रह़ की क़ै की, यहां तक कि पियाला भर गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह

आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **इन दोनों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़लाल कर्दा चीज़ों** (या'नी खाने, पीने वग़ैरा) **से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने** (इलावा रोज़े के भी) **ह़राम रखा है उन** (ह़राम चीज़ों) **से रोज़ा इफ़्त़ार कर डाला !** हुवा यूं कि एक लड़की दूसरी लड़की के पास बैठ गई और दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं । (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۹ ص۱۶۵ حدیث۲۳۷۱۴)

**इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **इ़ल्मे ग़ैब** ह़ासिल है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़-मलात मा'लूम हो जाते हैं। जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे **ग़ैब की ख़बर** इर्शाद फ़रमा दी । इस ह़िकायत से येह भी पता चला कि **ग़ीबत** और दूसरे गुनाहों का इरतिकाब करने से बराहे रास्त इस का असर रोज़े पर भी पड़ सकता है जिस की वज्ह से **रोज़े** की तक्लीफ़ ना क़ाबिले बरदाश्त हो सकती है। बहर ह़ाल **रोज़ा** हो या न हो, **ज़बान** क़ाबू ही में रखनी चाहिये वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा !

***सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर***
***नफ़्सो शैत़ा सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे***

ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 157)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴿2﴾ ग़ीबत से बाज़ रखने का ह़सीन अन्दाज़

**ह़ज़रते** सय्यिदुना सुफ़्यान बिन हु़सैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बिन मुआ़विया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास बैठा हुवा था, इतने में एक शख़्स क़रीब से गुज़रा, मैं ने उस की **बुराई** बयान करना शुरूअ़ कर दी, उन्हों ने कहा : ख़ामोश ! फिर फ़रमाने लगे : सुफ़्यान ! क्या

तुम ने **रूमियों** और **तुर्कों** के ख़िलाफ़ जंग की है ? जवाब दिया : नहीं। वोह बोले : तुर्क और रूमी तो तुम से बच गए लेकिन एक **मुसल्मान** भाई महफ़ूज़ न रह सका (या'नी देखते ही तुम ने उस की **ग़ीबत** शुरूअ़ कर दी !) ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : (मेरा दिल चोट खा गया और) इस के बा'द मैं ने कभी किसी की **ग़ीबत** और आबरू रेज़ी नहीं की। (تَنبِیہُ الغافِلین ص۸۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब भी हमारे सामने कोई **ग़ीबत** वग़ैरा का इरतिकाब करे तो मुम्किना सूरत में उसे समझाना चाहिये कि समझाना राएगां नहीं जाता। रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ पारह 27 **सू-रतुज़्ज़ारियात** आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

*अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही*
*गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 102)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾3﴿ रूई वाले ने ख़ियानत की !

**एक** नेक शख़्स ने अपनी रफ़ीक़ए ह़यात (या'नी बीवी) के लिये रूई ख़रीदी। जब घर पहुंचा तो वोह कहने लगी कि **रूई बेचने वालों** ने आप के साथ **ख़ियानत** (ठगबाज़ी) की है। उस शख़्स ने औ़रत को फ़ौरन त़लाक़ दे दी ! उस आदमी से जब इस का सबब पूछा गया तो कहा : मैं एक ग़ैरत मन्द इन्सान हूं, मुझे ख़दशा लाह़िक़ हुवा कि बरोज़े क़ियामत अगर **रूई बेचने वाले** इस **ग़ीबत** (व तोहमत) की वज्ह से इस से अपने ह़क़ के त़लब गार हुए तो कहीं अहले मह़शर

येह न कहें कि देखो ! फुलां की बीवी से **रूई बेचने वाले** अपना ह़क़ मांग रहे हैं ! इस लिये मैं ने उसे त़लाक़ दे दी ! (تَنبِیهُ الْغافِلین ص۸۹)

**ताजिरों की ग़ीबत की 17 मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** किसी क़ौम या मह़कमे की **ग़ीबत** करना म-सलन कहना : "पोलीस वाले रिश्वत ख़ोर होते हैं।" येह गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं क्यूं कि मह़कमए पोलीस या क़ौम या ग्रूप के अन्दर अच्छे बुरे दोनों त़रह़ के लोग होते हैं अलबत्ता किसी क़ौम या मह़कमए पोलीस के हर हर फ़र्द की बुराई मक़्सूद हो तो ज़रूर **ग़ीबत** है। मज़्कूरा हिकायत में किसी मख़्सूस रूई वाले का नहीं मुत़्लक़न "रूई वालों" का ज़िक्र है। इस लिहाज़ से तो येह **ग़ीबत** न हुई मगर हो सकता है कि उस गाउं में रूई की दो या तीन ही दुकानें हों और उस औ़रत ने जो **ग़ीबत** भरी गुफ़्त-गू की इस के सियाक़ो सबाक़ से उस नेक आदमी ने येही मुराद समझी हो कि वोह हमारे यहां के हर हर रूई वाले को ख़ाइन व ठग कह रही है लिहाज़ा ख़ौफ़े क़ियामत के सबब फ़ौरन त़लाक़ दे दी हो। وَ اللّٰـهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहर ह़ाल इस हिकायत से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बिला किसी मस्लह़ते शर-ई बात बात पर ताजिरों की **ग़ीबत व तोहमत** के मु-तअ़ल्लिक़ बिला तकल्लुफ़ इस त़रह़ के जुम्ले कहते रहते हैं : ✿ इस ने ठग लिया ✿ ठगी है ✿ ठगिया है ✿ गाहकों को लूटता है ✿ नफ़्अ़ ज़ियादा लेता है ✿ इस का माल सब से महंगा होता है ✿ धोकेबाज़ है ✿ मिलावट करता है ✿ तोल में डन्डी मारता है ✿ चिकनी चुपड़ी बातें कर के गाहक को फांस लेता है ✿ बहुत लालची है सब से आख़िर में दुकान बन्द करता है ✿ कपड़ा खींच कर नापता है ✿ उधार माल ले कर लौटाने का नाम नहीं लेता ✿ इस से क़र्ज़ की वुसूली आसान नहीं, धक्के बहुत खिलाता है ✿ सूदख़ोर है ✿ न जाने कितनों के पैसे खा के बैठा है ✿ झूटी क़स्में खाता है।

*दे रिज़्क़े ह़लाल अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म — ह़राम माल से तू बचा या इलाही*
*हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा — मुझे मुत्तक़ी दे बना या इलाही*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मुलाज़िमीन की ग़ीबतों की 18 मिसालें :** मुलाज़िमीन के बारे में बिला मस्लहते शर-ई बोले जाने वाले गुनाहों भरे कलिमात व फ़िक्रात की मिसालें ❁ कामचोर है ❁ सुस्त है ❁ ढीला है ❁ जब देखो छुट्टियां करता है ❁ ह़राम ख़ोर है ❁ दुकान में चोरियां करता है ❁ काम पर भेजो तो बहुत टाइम पास कर के आता है ❁ जब देखो बस फ़ोन पर लगा रहता है ❁ बहुत मुंह चढ़ा है ❁ बात बात पर नाराज़ हो जाता है ❁ गाहक को बराबर "डील" नहीं कर सकता ❁ बावला ❁ अह़मक़ ❁ बुध्धू है ❁ इस के नख़्रे बढ़ गए हैं ❁ एक तो देर से आता है और ❁ जल्दी भागने की करता है ❁ दुकान में चोरी हो गई है मुझे फ़ुलां नोकर पर शक है।

**दुकानदारों की आपसी ग़ीबत की 10 मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कारोबार में ऊंच नीच होती रहती है, अह़ादीसे मुबा-रका से मुस्तफ़ाद होता है कि गुनाहों के बाइस भी बे ब-र-कती होती है। मुसल्मान को चाहिये कि अगर कभी बे ब-र-कती हो या बिकरी में कमी आए तो अपने आ'माल का मुह़ा-सबा करे मगर बा'ज़ लोग ऐसे मौक़अ़ पर शैत़ान के बहकावे में आ कर बद गुमानियों, **ग़ीबतों** और तोह्मतों पर उतर आते हैं और कुछ यूं कहते सुनाई देते हैं : ❁ लगता है फ़ुलां मेरे कारोबार की तरक़्क़ी देख नहीं सकता ❁ मेरे गाहक तोड़ता है ❁ जान बूझ कर दाम कम बता कर मेरे गाहक ख़राब कर देता है ❁ ख़ुद मिलावट वाला माल बेचता है मगर ❁ मेरे गाहक को बदज़न करने के लिये मेरी चीज़ों को मिलावट वाली कहता है ❁ बद मआ़शी कर के मेरी दुकान के आगे पथारा लगवा दिया है ❁ येह चाहता है कि बस किसी त़रह़ मैं येह दुकान छोड़ दूं ❁ उस ने ऐसी नज़र लगा दी है कि गाहक क़रीब नहीं फटक्ता ❁ वोह सामने वाला दुकानदार जब देखो हाथ में तस्बीह़ ले कर पढ़ पढ़ कर हमारी दुकान की त़रफ़ फूंकता रहता है ❁ उस दिन तो बा क़ाइदा मुसल्ला बिछा कर नमाज़ें पढ़े जा रहा था और दो एक बार तो हमारी दुकान की त़रफ़ देखा भी था हो न हो इसी ने **जादू** के ज़ोर से कारोबार की बन्दिश कर दी है ! **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह बात गिरह में बांध लीजिये कि ज़िक्रो अज़्कार,

नमाज़ों और पाक कलामों के ज़रीए़ जादू हो ही नहीं सकता लिहाज़ा किसी मुसल्मान के बारे में बद गुमानियों, **ग़ीबतों** और तोहमतों के गुनाहों में मत पड़िये, अपनी नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर रखिये।

*हुक़ूक़ुल इबाद ! आह ! होगा मेरा क्या !* *करम मुझ पे कर दे करम या इलाही*
*बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की* *रहे आह ! नाकाम हम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 110)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**﴾4﴿ गन पोइन्ट पर मोबाइल छीनने वाला नौ जवान :** **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा 'वते इस्लामी** के म–दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म–दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म–दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ म–दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म–दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। सुन्नतों की तरबियत के **म–दनी क़ाफ़िलों** में ख़ूब सफ़र कीजिये, आप की तरग़ीब के लिये **म–दनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है, ज़रूरतन जुम्लों की नोक पलक संवारी गई है, चुनान्चे, लियारी (बाबुल मादीना कराची) के एक इस्लामी भीई दा'वते इस्लामी के म–दनी मह़ोल में वाबस्ता होने से पहले शराबी थे, बे नमाज़ थे, चोरियां किया करते और गन पोइन्ट पर मोबाइल छीना करते थे, मज़ीद भी कई बुरी आ़दतों में मुब्तला थे, उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी के चार साल इन्ही कामों में गुज़ार दिये, फिर उन्हें एक इस्लामी भाई ने म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाई और वोह एक माह के म–दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए म–दनी क़ाफ़िले में उन्हें बहुत राह़त मिली उन्हों ने अपने गुनाहों से पक्की तौबा कर ली, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से उन को फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में तरबियती कोर्स करने की भी सआ़दत मिली।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*

*ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! म-दनी क़ाफ़िलों की भी कैसी प्यारी प्यारी म-दनी बहारें हैं ! जहां म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से नेक बनने की सआ़दत मुयस्सर आती है वहां इस में नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा भी मिलता है और नेकी की दा'वत आ़म करने में सवाब ही सवाब है। इस ज़िम्न में चार अहादीसे मुबा-रका पेश की जाती हैं :

**चार[4] फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ﴿1﴾ नेकी की राह दिखाने वाला **नेकी** करने वाले की त़रह़ है।[1] ﴿2﴾ अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों।[2] ﴿3﴾ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक़ यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां (पानी में) लोगों को **नेकी सिखाने वाले** पर "सलात" भेजते हैं।[3] **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं **: अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की "सलात" से उस की **ख़ास रह़मत** और मख़्लूक़ की "सलात" से ख़ुसूसी दुआ़ए रह़मत मुराद है।[4] ﴿4﴾ बेहतरीन स-दक़ा येह है कि मुसल्मान आदमी इ़ल्म ह़ासिल करे फिर अपने मुसल्मान भाई को सिखाए।[5]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٣٠٥ حدیث ٢٦٧٩ (2) صَحیح مُسلِم ص١٣١١ حدیث ٢٤٠٦ (3) سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٣١٤ حدیث ٢٦٩٤

(4) मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 200 (5) سُنَنِ اِبن ماجه ج١ ص١٥٨ حديث ٢٤٣

## ﴿5﴾ इमामे आ'ज़म का अपने गुस्ताख़ के साथ हुस्ने सुलूक

**इमामुल अइम्मह,** सिराजुल उम्मह **हज़रते** सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ **मिना शरीफ़** की मस्जिदुल ख़ैफ़ में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स ने आ कर मस्अला पूछा आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस का जवाब दिया फिर किसी ने कहा कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی के जवाब के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इर्शाद फ़रमाया : इस मस्अले में ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی ने इज्तिहादी ख़त़ा की। फिर एक और शख़्स आया उस ने अपना चेहरा छुपाया हुवा था, उस ने आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को गाली निकाली और कहा : तुम ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی को ख़त़ाकार कहते हो। मगर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की क़ुव्वते बरदाश्त का येह आ़लम कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के चेहरे पर कोई गुस्सा नज़र न आया। ह़ाज़िरीन तैश में आ कर उस गुस्ताख़ को मारने के लिये उठे, सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم ने लोगों को ठन्डा किया और उस शख़्स से फ़रमाया : "ह़सन बसरी (عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی) से इज्तिहादी ग़-लत़ी हुई और **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इस बाब में जो रिवायत की वोह सह़ीह़ है।" (المناقب للموفق ج ٢ ص ٩) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

**गुस्से पर क़ाबू के भी क्या ख़ूब फ़ज़ाइल हैं ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म फ़क़ीहे अफ़्ख़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का **सब्रो तह़म्मुल !** ह़ालां कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ चाहते तो लोग मार मार कर उस का भुरकस निकाल देते मगर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ऐसा न होने दिया। जब कोई अपनी बे इ़ज़्ज़ती करे तो उ़मूमन गुस्सा आ जाता है मगर ऐसे मौक़अ़ पर गुस्से को रोक कर उस के फ़ज़ाइल का ह़क़दार बनना चाहिये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 188 ता 189 पर है : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जो शख़्स अपनी

ज़बान को महफ़ूज़ रखेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जो अपने **गुस्से** को रोकेगा, क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला अपना अ़ज़ाब उस से रोक देगा और जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से उ़ज़्र करेगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस के उ़ज़्र को क़बूल फ़रमाएगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص ٣١٥ حدیث ٨٣١١)

**क्या इमामे आ'ज़म ने ह़सन बसरी की ग़ीबत की ? : मज़्कूरा हिकायत** में सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की येह कह कर **ग़ीबत** की कि ''उन्हों ने इज्तिहादी ख़त़ा की'' मगर येह **जाइज़ ग़ीबत** थी क्यूं कि एक मुफ़्ती शर-ई मस्अले पर ख़त़ा करे तो दूसरा मुफ़्ती उस का रद कर सकता है। चुनान्चे **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा 16 सफ़ह़ा 178 ता 179 पर है : ह़दीस के रावियों और मुक़द्दमे (CASE) के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जर्ह़ करना और उन के उ़यूब बयान करना जाइज़ है अगर रावियों की ख़राबियां बयान न की जाएं तो ह़दीसे सह़ीह़ और ग़ैरे सह़ीह़ में इम्तियाज़ न हो सकेगा। इसी त़रह़ मुसन्निफ़ीन के ह़ालात न बयान किये जाएं तो कुतुबे मोअ़्-त-मदा व ग़ैरे मोअ़्-त-मदा (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद व ना क़ाबिले ए'तिमाद किताबों) में फ़र्क़ न रहेगा। गवाहों पर जर्ह़ न की जाए तो ह़ुक़ूक़े मुस्लिमीन की निगह दाश्त (देखभाल) न हो सकेगी।

*शहा मुसल्मान हों मुनज़्ज़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा*
*ह़सद की बीमारी बढ़ चली है, लड़ाई आपस में ठन गई है*
*दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा*
*फ़ुज़ूल गोई की निकले आ़दत, हो दूर बे जा हंसी की ख़स्लत*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 573, 574)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## (6) इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने कभी दुश्मन की भी ग़ीबत नहीं की

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَالِك ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से कहा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه ''इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه

**ग़ीबत** से इतना ज़ियादा बचते हैं कि मैं ने कभी उन को दुश्मन की **ग़ीबत** करते भी नहीं सुना !''

(مِرقاۃُ المَفاتِیح ج ۱ ص۷۷)

**आधे अहले ज़मीन से भी इमामे आ'ज़म की अ़क़्ल ज़ियादा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की अ़क़्ल मन्दी के क्या कहने ! यक़ीनन अ़क़्ल मन्द वोही है जो अपने आप को **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में लगाए रखे वरना तो वोह बे वुक़ूफ़ ही क्या बे वुक़ूफ़ों का भी सरदार है जो मुसल्मानों की **ग़ीबतों** में पड़ कर अपनी नेकियां बरबाद कर के जहन्नम का ह़क़दार बनता रहे। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**हिकायतें और नसीह़तें**'' सफ़ह़ा 332 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन आ़सिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर निस्फ़ (या'नी आधे) अहले ज़मीन की अ़क़्लों से इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़क़्ल का मुवा-ज़ना किया जाए तो भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़क़्ल ज़ियादा होगी।

(تبیض الصّحیفۃ فی مناقب الامام ابی حنیفۃ للسّیوطی ص۱۲۸)

*ग़ीबतें मत कीजिये पछताएंगे घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएंगे*
*सांप बिच्छू देख कर चिल्लाएंगे बे बसी होगी न कुछ कर पाएंगे*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾7﴿ क़ब्र वाले ग़ीबत नहीं किया करते

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**हिकायतें और नसीह़तें**'' सफ़ह़ा 477 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक बार मुझे क़ब्रिस्तान जाना हुवा। वहां मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बहलूल दाना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखा कि एक क़ब्र के क़रीब बैठे मिट्टी में लोट पोट हो रहे हैं ! मैं ने यहां तशरीफ़ फ़रमा होने का सबब पूछा तो जवाब दिया : ''मैं ऐसी क़ौम के पास हूं जो मुझे अज़िय्यत नहीं देती और अगर मैं यहां से ग़ाइब हो जाऊं तो मेरी **ग़ीबत** नहीं करती।''

(الرَّوضُ الفائِق(عربی) ص۲۴۶) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ**! अल्लाह** वालों की भी क्या ख़ूब म-दनी सोच हुवा करती है, वाक़ेई क़ब्रिस्तान में वक़्त गुज़ारने वाले को अपनी मौत याद आने के साथ साथ **ग़ीबत** से बचत की भी सआ़दत नसीब होती है, न वोह किसी की **ग़ीबत** करते न क़ब्र वाले उस की **ग़ीबत** करते हैं ।

***मौत को मत भूलना पछताओगे — क़ब्र में ऐ आ़सियो ! जब जाओगे***

***सांप बिच्छू देख कर घबराओगे — भाग न हरगिज़ वहां से पाओगे***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی مُحَمَّد

## ﴾8﴿ मैं नमाज़ से भागता था

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । आप की तरग़ीब के लिये **म-दनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है, ज़रूरतन जुम्लों की नोक पलक संवारी गई है, चुनान्चे **मेलसी** ज़िलअ़ विहाड़ी (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई बुरे दोस्तों की दोस्ती का शिकार थे, वोह दोस्त उन्हें चर्स और शराब पिलाते थे, रात को बड़े भाई के साथ दुकान पर काम करते और दिन में नशा कर के आवारा गर्दी करते या **सारा दिन** घर में सोते रहते । रात जब वोह नशे की ह़ालत में होते तो वालिदा रो रो कर समझातीं कि नशा करना छोड़ दो और उन के सुधरने की दुआ़एं किया करतीं, वालिद साह़िब भी उन के नशा करने की वज्ह से गुस्से में रहते । एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की दुकान उन की दुकान के साथ ही थी, वोह उन्हें नमाज़ की दा'वत देते और मस्जिद में नमाज़ के लिये साथ ले जाने की कोशिश करते लेकिन वोह रास्ते से भाग कर वापस आ जाते । एक मर्तबा

उसी मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन्हें तीन दिन के म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र का ज़ेह्न दिया, वोह तय्यार हो गए, मुबल्लिग़ ने उन्हें वेगन में बिठा कर **फ़ैज़ाने मदीन** (मुलतान शरीफ़) रवाना कर दिया, वहां उन्हों ने दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तो दिल पर अच्छा असर हुवा, वहीं से तीन दिन के म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया, दाढ़ी सजाने की निय्यत की, सर पर इमामा शरीफ़ बांध लिया और आयिन्दा के लिये सच्चे दिल से बुरे कामों से तौबा कर ली। जब वोह म–दनी क़ाफ़िले से घर वापस लौटे तो घर वाले बहुत ख़ुश हुए। (तौबा से) पहले उन्हों ने मोबाइल में गाने और फ़िल्में रेकॉर्ड करवा रखी थीं वोह तमाम ख़ुराफ़ात ख़त्म (Delete) करवा कर ना'तें रेकॉर्ड करवा लीं। बुरे दोस्तों की दोस्ती भी छोड़ दी। पहले रिक्शे पर दोस्तों के लिये शराब लेने जाते थे अब उसी रिक्शे पर इस्लामी भाइयों को सुवार कर के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **फ़ैज़ाने मदीना** (मेलसी) ले जाने लगे। नशा छोड़ने से पहले लोग उन्हें "न–श–ई" कहते थे अब दा'वते इस्लामी वाला कहते हैं, अब घर वाले भी उन से ख़ुश हैं। (اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ) दा'वते इस्लामी के म–दनी माहोल में आ कर उन्हें गुनाहों से बचने की सआ़दत मिली, हर महीने तीन दिन म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले बने, एक साल में नाज़िरा क़ुरआने करीम भी पढ़ लिया और एक ज़ैली ह़ल्क़े की मुशा–वरत का निगरान बनने की सआ़दत भी नसीब हुई।

**नमाज़ बुराइयों से बचाती है :** देखी आप ने ! **म–दनी क़ाफ़िले** की ब–र–कत ! रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इबादत से दूर रहने वाले की **ज़िन्दगी में नेकियों की बहार आ गई !** पहले वोह नमाज़ों से भागा करते थे, अब नमाज़ों की दा'वत देने वाले बन गए हैं, हर मुसल्मान को नमाज़ पढ़नी चाहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ की ब–र–कत से बुराइयां भी छूट जाएंगी चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 21 **सू–रतुल अन्कबूत** आयत नम्बर 45 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِؕ

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे हयाई और बुरी बात से।

**इत्तिबाए़ न-बवी में ख़ुश्क टहनी हिलाई :** नमाज़ की फ़ज़ीलत के क्या कहने ! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा 76 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ा और उसे हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया : ऐ अबू उ़स्मान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने पूछा कि आप ने ऐसा क्यूं किया ? तो फ़रमाया : एक मरतबा मैं रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया और उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ कर हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया : ऐ सलमान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने येह अ़मल क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : आप ने ऐसा क्यूं किया ? इर्शाद फ़रमाया : बेशक जब मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करता है और पांच नमाज़ें अदा करता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ येह पत्ते झड़ जाते हैं। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّیْلِؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ﴿۱۱۴﴾

(پ ۱۲ ھود ۱۱۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج ۹ ص ۱۷۸ حدیث ۲۳۷۶۸)

*आह ! रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब ! आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब*
*गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब ! अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه!   اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾9﴿ ग़ीबत के सबब बरज़ख़ में क़ैद

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 300 सफ़ह़ात की किताब, "**आंसूओं का दरिया**" में है **:** फ़क़ीह अबुल ह़सन अ़ली बिन फ़रहून क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى अपनी किताब "**अज़्ज़ाहिर**" में फ़रमाते हैं **:** मैं ने 555 सिने हिजरी में "शहरे फ़ास" में इन्तिक़ाल करने वाले अपने चचा को ख़्वाब में देखा कि घर के अन्दर तशरीफ़ लाए और दीवार से टेक लगा कर बैठ गए, मैं भी उन के सामने बैठ गया, मैं ने उन का बदला हुवा रंग देखा तो पूछा **:** "चचाजान ! आप को आप के रब عَزَّوَجَلَّ से क्या मिला ?" फ़रमाया **:** "बेटा ! मेह्रबान से मेह्रबानी के सिवा और क्या मिलता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **ग़ीबत** के इ़लावा हर चीज़ में मुझ पर नरमी फ़रमाई, मैं मरने के बा'द से ले कर अब तक **ग़ीबत** की वज्ह से ह़िरासत (या'नी क़ैद) में हूं, अब तक मेरा येह गुनाह मुआ़फ़ नहीं हुवा, बेटा ! मैं तुम्हें नसीह़त करता हूं कि **ग़ीबत** व **चुग़ली** से बचते रहना क्यूं कि मैं ने आख़िरत में **ग़ीबत** से बढ़ कर किसी और चीज़ पर पकड़ नहीं देखी।" येह कह कर वोह मुझ से रुख़्सत हो गए। (بَحرُالدُّموع ص١٨٥)

*क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !   घुप अंधेरे का भी वह्शत का बसेरा होगा*
*हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !   गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा*
*क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !   डंक मच्छर का सहा जाता नहीं, कैसे मैं फिर*
*हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !   गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी*
*अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा*
*गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 84, 85)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾10﴿ हिजड़े की महब्बत में फंसने की वज्ह

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **ग़ीबत** ने फ़ौतगी के बा'द फंसा कर रख दिया ! **ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी** वग़ैरा ऐसी ना मुराद आफ़ात हैं कि बसा अवक़ात इन्सान को ह़ीने ह़यात या'नी जीते जी भी इ़बादात से दूर कर के मज़ीद गुनाहों के तन्दूर में झोंक देती हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि **सय्यिदुना** शैख़ अबू जा'फ़र बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हमारे हां बल्ख़ में एक नौ जवान था। यूं तो वोह ख़ूब इ़बादत व रियाज़त किया करता मगर **ग़ीबत** की आफ़त में मुब्तला था अक्सर कहता : फ़ुलां ऐसा है, फ़ुलां वैसा है। एक रोज़ मैं ने उसे लोगों के कपड़े धोने वाले हीजड़ों के पास से निकलता देखा, मैं ने उस से इस का सबब पूछा, कहने लगा : येह लोगों को बुरा भला कहने या'नी **ग़ीबतें** करने की सज़ा है कि मुझे इस ह़ाल में डाल दिया गया है, अफ़्सोस ! मैं इन में से एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़े) की मह़ब्बत में मुब्तला हो गया हूं, उसी मुख़न्नस के इ़श्क़ की वज्ह से मैं इन धोबी हीजड़ों की ख़िदमत करता हूं और रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से पहले मुझे जो बात़िनी अह़वाल ह़ासिल थे सब जाते रहे। लिहाज़ा आप **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि मुझ पर रह़्म फ़रमाए। (رسالہ قشیریہ ص ۱۹۶)

**कहीं ग़ीबत तो नहीं ले डूबी ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **ग़ीबत की तबाहकारी** ने एक इ़बादत व रियाज़त करने वाले नौ जवान को हिजड़े के इ़श्क़ में फंसा डाला ! **ग़ीबतों** की नुह़ूसतों के सबब वोह इ़बादतों की लज़्ज़तों से भी मह़रूम हो गया। यहां वोह इस्लामी भाई ग़ौर फ़रमाएं जिन्हें पहले सुन्नतों भरे बयानों, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'तों, **ज़िक्रुल्लाह** और दुआ़ओं में बहुत दिल जम्ई ह़ासिल होती थी मगर अब ऐसा नहीं बल्कि दिल हर दम गुनाहों की त़रफ़ माइल रहता है, उन्हें कहीं "**ग़ीबत**" की आफ़त तो नहीं ले डूबी ! सच्ची तौबा करें कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है।

*गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही !*

*येह दिल नेकियों में नहीं लग रहा है इबादत का दे दे मज़ा या इलाही !*

*मुझे बख़्श दे बे सबब या इलाही*

*न करना कभी भी ग़ज़ब या इलाही*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾11﴿ नमाज़ दोहराओ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन सबीह़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّمِيْع फ़रमाते हैं : दो आदमी मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के एक दरवाज़े के क़रीब बैठे थे कि इतने में एक आदमी गुज़रा जो कि मुख़न्नस मा'लूम हो रहा था, उसे देख कर ना गवारी मह़सूस करते हुए दोनों वहां से उठ गए। जब नमाज़ का वक़्त हुवा तो दोनों ने बा जमाअ़त नमाज़ अदा की। फिर उन्हें एह़सास हुवा कि हम कहीं **दिल की ग़ीबत** में तो मुब्तला नहीं हो गए ! चुनान्चे फ़ौरन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़त़ा** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर मस्अला पूछा, फ़रमाया : वुज़ू कर के अपनी **नमाज़ दोहराओ,** जब उन्हों ने बताया कि हमारा रोज़ा भी है तो फ़रमाया : अपने रोज़े की भी क़ज़ा करो ! (ذَمُّ الْغِیبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص٨٥ رقم٤٢)

**क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा किसी मुसल्मान के लिये जज़्बए ह़क़ारत व नफ़रत और बद गुमानी दिल में जमाना **दिल की ग़ीबत** है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 984 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एह़तिलाम हुवा या **ग़ीबत** की तो रोज़ा न गया (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٢١، ٤٢٨) अगर्चे **ग़ीबत बहुत सख़्त कबीरा** (गुनाह) है। क़ुरआने मजीद में **ग़ीबत** करने की निस्बत फ़रमाया : "जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।" और ह़दीस में फ़रमाया :

"**ग़ीबत** ज़िना से भी सख़्त तर है।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۵ص۶۳حدیث ۶۵۹۰) अगर्चे **ग़ीबत** की वज्ह से रोज़े की नूरानिय्यत जाती रहती है। सफ़्हा 996 पर फ़रमाते हैं : झूट, चुग़ली, **ग़ीबत**, गाली देना, बेहूदा (या'नी बे ह़याई की) बात, किसी को तक्लीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व ह़राम हैं रोज़े में और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से रोज़े में **कराहत** आती है। (बहारे शरीअ़त)

***हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की***
***हो इलाही ! मग़्फ़िरत हर बे कसो मजबूर की***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 96)

## ﴾12﴿ एक हीजड़े की मग़्फ़िरत की ह़िकायत

जो लोग **हीजड़े** (मुख़न्नस, ज़न्ख़े, ख़ुन्सा) से नफ़रत करते और उसे ह़क़ारत से देखते हैं, उन को ऐसा नहीं करना चाहिये कि येह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा है और उसी عَزَّوَجَلَّ ने इसे पैदा फ़रमाया है और हीजड़े को भी चाहिये कि गुनाहों और नाच गानों जैसे ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम से परहेज़ करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहते हुए सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारे। जो फ़ित्रतन मुख़न्नस या'नी हीजड़ा हो उसे ख़ुद को सताए जाने के सबब दिल थोड़ा करने के बजाए **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखनी चाहिये। आइये एक **ख़ुश नसीब हीजड़े की ह़िकायत** मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये, शायद हर हीजड़े को उस पर रश्क आए कि काश ! मेरे साथ भी ऐसा ही हो। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद स–क़फ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने एक जनाज़ा देखा जिसे तीन मर्द और एक ख़ातून ने उठा रखा था, ख़ातून की जगह मैं ने उठा लिया, नमाज़े जनाज़ा की अदाएगी और तदफ़ीन के बा'द मैं ने उस ख़ातून से मा'लूम किया : मर्ह़ूम से आप का क्या रिश्ता था ? बोली : मेरा बेटा था। पूछा : पड़ोसी वग़ैरा जनाज़े में क्यूं नहीं आए ? कहा : दर अस्ल मेरा फ़रज़न्द मुख़न्नस (या'नी ख़ुन्सा, हीजड़ा) था। इस लिये लोगों ने इस के जनाज़े में शिर्कत को अहम्मिय्यत नहीं दी। सय्यिदुना

शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَمِيْد** फ़रमाते हैं : मुझे उस ग़मज़दा मां पर बड़ा रह़म आया, मैं ने उसे कुछ रक़म और ग़ल्ला वग़ैरा पेश किया। उसी रात सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आदमी चौदहवीं के चांद की त़रह़ चेहरा चमकाता हुवा मेरे ख़्वाब में आया और शुक्रिय्या अदा करने लगा, मैं ने पूछा : **مَنْ اَنْتَ ؟** या'नी आप कौन हैं ? बोला : मैं वोही मुख़न्नस हूं जिसे आज आप ने दफ़्न किया है, लोगों के मुझे ह़क़ीर समझने की वज्ह से **अल्लाहु क़दीर** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर रह़म फ़रमाया। (رِسالہ قُشیریہ ص١٧٣ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

*तुम्हें मा'लूम क्या भाई ! ख़ुदा का कौन है मक़्बूल*

*किसी मोमिन को मत देखो कभी भी तुम ह़क़ारत से*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 403)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾13﴿ राना बद मआ़श

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और चोक दर्स, मस्जिद दर्स, बाज़ार दर्स वग़ैरा में शिर्कत कीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ दे तो आप ख़ुद भी रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** से कम अज़ कम दो दर्स दीजिये। **चोक दर्स** की एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : सूबा उतरांचल (हिन्द) के एक 20 सालह नौ जवान इस्लामी भाई बुरी सोह़बत के बाइ़स कमो बेश 14 साल की उ़म्र ही से जराइम के दलदल में फंस चुके थे। **शराब** पीना और औ़रतों का पीछा करना उन का मह़बूब मश्ग़ला था। फिर उन्हों ने **बद मआ़शी** शुरूअ़ कर दी। लोगों से बे वज्ह लड़ना, मारपीट करना, उन की आ़दत में शामिल हो गया यहां तक कि

वोह **राना बद मआश** के नाम से पहचाने जाने लगे। वोह उम्र में छोटे ज़रूर थे मगर मैं किसी से डरे बिग़ैर सामने वाले पर पै दर पै वार करना शुरूअ़ कर देते थे। हर त़रफ़ उन की धाक बैठ गई, लोग उन के नाम से डरने लगे। वालिदैन उन से बेज़ार हो चुके थे मगर बेबस थे। उन के काले करतूत दिन ब दिन बढ़ते जा रहे थे। एक दिन गली के नुक्कड़ पर एक सब्ज़ इमामे वाले इस्लामी भाई को **चोक दर्स** देता देख कर वोह क़रीब जा खड़े हुए, जो कुछ सुना वोह उन्हें बहुत अच्छा लगा। उन्हों ने किताब पर नज़र डाली तो उस पर **फ़ैज़ाने सुन्नत** लिखा था। दर्स देने वाले इस्लामी भाई ने उन से बड़ी महब्बत के साथ मुलाक़ात की और **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत पेश की, **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स ने उन के अन्दर हलचल मचा रखी थी, उन्हों ने हामी भर ली और **आशिक़ाने रसूल** के हमराह तीन दिन के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करते हुए "जनक पूर" पहुंचे और मज़ीद तीन दिन के लिये राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में "जगन्नाथ पूर" जाने वाले **म-दनी क़ाफ़िले** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **चोक दर्स** और **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआदत हासिल करने की ब-र-कत से उन के दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और दाढ़ी शरीफ़ सजाने की भी निय्यत कर ली। रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ उन्हें इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। घर वाले उन में आने वाले इस तब्दीली से बे इन्तिहा खुश हैं। वालिदए मोह-त-रमा दा'वते इस्लामी के लिये खूब दुआएं करती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने और उन के घर वालों ने सिल्सिलए आलिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे बग़दाद **हुज़ूरे ग़ौसे पाक** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया है।

*जज़्बा गो सर्द हो, क़ाफ़िले में चलो तुम जवां मर्द हो, क़ाफ़िले में चलो*
*बख़्त खुल जाएंगे, क़ाफ़िले में चलो जुर्म धुल जाएंगे, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**चाहे गुनाह आस्मान तक पहुंच गए हों : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, बिलफ़र्ज़ किसी से बड़े से बड़े गुनाह भी सरज़द हो गए हों, वोह मायूस न हो, बेशक **तौबा** का दरवाज़ा खुला हुवा है। बन्दा सिदक़े दिल से उस के दरबारे करम बार में झुक जाए तो उस का फ़ज़्लो करम अपनी आग़ोश में ले ही लेता है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **لَوْ أَخْطَأْتُمْ حَتّٰى تَبْلُغَ خَطَايَاكُمُ السَّمَاءَ ثُمَّ تُبْتُمْ لَتَابَ عَلَيْكُمْ** **तरजमा :** अगर तुम इतने गुनाह करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से तौबा करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाएगा। (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص ٤٩٠ حديث ٤٢٤٨) बल्कि **तौबा** करने वाले से **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इस क़दर राज़ी होता है कि हम इस का अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकते ! इस ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 132 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''तौबा की रिवायात व ह़िकायात''** सफ़ह़ा 12 पर मरक़ूम है : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मसर्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे की तौबा से उस शख़्स से ज़ियादा ख़ुश होता है जो किसी हलाकत ख़ेज़ ज़मीन पर पड़ाव करे उस के साथ उस की सुवारी भी हो जिस पर उस के खाने पीने का सामान लदा हुवा हो फिर वोह सर रख कर सो जाए और जब बेदार हो तो उस की सुवारी जा चुकी हो, वोह उसे तलाश करे यहां तक कि उस पर धूप और प्यास या जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा ग़ालिब आ गई और वोह परेशान हो कर कहे कि मैं उसी जगह लौट जाता हूं जहां सो रहा था फिर सो जाता हूं यहां तक कि मर जाऊं फिर वोह अपनी कलाई पर सर रख कर मरने के लिये सो जाए फिर जब बेदार हो तो उस के पास उस की सुवारी मौजूद हो और उस पर उस का तोशा भी मौजूद हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स के अपनी सुवारी के लौटने पर ख़ुश होने से भी ज़ियादा राज़ी होता है। (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है और उस पर इन्आ़मो इक्राम करता है)

(صَحيح مُسلِم ص١٤٦٨ حديث ٢٧٤٤)

*न हो मायूस आती है सदा गोरे ग़रीबां से*

*नबी उम्मत का ह़ामी है ख़ुदा बन्दों का वाली है*

## ﴾14﴿ ग़ीबत में लज़्ज़त की वज्ह

**ह़ज़रते** सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे, इस्नाए राह शैत़ान को देखा कि एक हाथ में **शह्द** और दूसरे में **राख** उठाए चला जा रहा था, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पूछा : ऐ दुश्मने ख़ुदा ! येह **शह्द** और **राख** तेरे किस काम आती है ? बोला : शह्द **ग़ीबत** करने वालों के होंटों पर लगाता हूं ताकि इस गुनाह में वोह और आगे बढ़ें और राख **यतीमों** के चेहरों पर मलता हूं ताकि लोग इन से नफ़रत करें ।

(مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص٦٦)

**नाम निहाद भयानक सुकून : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई **ग़ीबत** की भी अ़जीब लज़्ज़त है कि जिस को इस मोहलिक मरज़ की चाट लग जाती है वोह जब तक किसी की **बुराई** न बयान कर ले उस को एक गूना बेचैनी सी रहती है और जब **ग़ीबत** कर के ''भड़ास'' निकाल लेता है तो सुकून मिल जाता है मगर येह वोह सुकून है जो कि बहुत सारी बे सुकूनियों का बाइ़स है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस ''नाम निहाद भयानक सुकून'' से हमें मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमाए और हमें अपनी और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत की बे क़रारी नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

*मेरे दिल को दर्दे उल्फ़त वोह सुकून दे इलाही !*

*मेरी बे क़रारियों को न कभी क़रार आए*

(ज़ौक़े ना'त, स. 168)

## ﴾15﴿ मरा हुवा ख़च्चर

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक **मुर्दा ख़च्चर** के क़रीब से गुज़रे तो

बा'ज़ अह़बाब से इर्शाद फ़रमाया : इसे पेट भर कर खाना मुसल्मान का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) से बेहतर है। (التوبیخ والتنبیہ لابی الشیخ الاصبھانی ص۹۷رقم ۲۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴿16﴾ इन्सान नुमा कुत्तों का सालन

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْمُبِیْن ने किसी शख़्स को **ग़ीबत** करते हुए सुना तो फ़रमाया : **ग़ीबत** से बचो, क्यूं कि येह **इन्सान नुमा कुत्तों का सालन** है। (ذَمُّ الْغِیْبَۃِ لِابْنِ اَبِی الدُّنیا ص۱۸۱رقم۱۶۱)

**कुत्तों से तश्बीह देने की वज्ह : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मज़्लूमे करबला ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْمُبِیْن ने **ग़ीबत** करने वालों को इन्सान नुमा **कुत्तों** के साथ इस लिये तश्बीह दी है कि कुरआने मजीद और अह़ादीसे मुबा-रका में **ग़ीबत** को मुर्दार का गोश्त खाने की मिस्ल बताया गया है और मुर्दार का गोश्त चबाना और खाना **कुत्तों** का काम है लिहाज़ा **ग़ीबत** करने वाले गोया **कुत्तों** की मिस्ल हो कर आदमियों की अक़्साम से ख़ारिज हुए क्यूं कि अगर आदमी होते तो इन में आदमी की सिफ़त होती और इन्सान की ख़स्लत इन में पाई जाती, किसी की **ग़ीबत** न करते, किसी का गोश्त **कुत्तों** की त़रह़ न चबाते।

*नबी का सदक़ा सदा के लिये तू राज़ी हो कभी भी होना न नाराज़ या ख़ुदा या रब !*
*तेरे ह़बीब अगर मुस्कुराते आ जाएं तो बिल यक़ीन उठे क़ब्र जगमगा या रब !*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴿17﴾ अनोखी छींक

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के

लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, आप की तरग़ीब व तह्रीस के लिये एक म-दनी बहार पेशे ख़िदमत है चुनान्चे एक इस्लामी की रीढ़ की हड्डी का मोहरा अपनी जगह से हिल गया था । बहुत इलाज कराया मगर इफ़ाक़ा न हुवा । एक इस्लामी भाई की तरग़ीब पर आशिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया । रात के खाने के वक़्त अचानक उन्हें ज़ोरदार छींक आई जिस से उन का सारा जिस्म लरज़ उठा । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **उस अनोखी छींक की ब-र-कत से उन की रीढ़ का मोहरा अपनी जगह पर दुरुस्त हो गया ।**

*रीढ़ की हड्डियों, की भी बीमारियों — से मिलेगी शिफ़ा, क़ाफ़िले में चलो*
*ताजदारे ह़रम, का जो होगा करम — पाएगा दिल जिला, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**छींक की ब-र-कतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! म-दनी क़ाफ़िले की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! कि इस की ब-र-कत से ज़ोरदार छींक आई और पीठ का मोहरा दुरुस्त हो गया ! छींक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है और इस की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं ! **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ 32 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, "**101 म-दनी फूल**" सफ़्ह़ा 13 ता 14 पर है **:** ﴾1﴿ जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 396) ﴾2﴿ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं **:** जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा । (مِرقَاةُ الْمَفَاتِيح ج٨ ص٤٩٩ تحت الحديث ٤٧٣٩) ﴾3﴿ छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना चाहिये बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن या اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे । ﴾4﴿ सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन "يَرْحَمُكَ الله" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे ।

और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला खुद सुन ले। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 119) ﴿5﴾ जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : "يَغْفِرُاللهُ لَنَاوَلَكُمْ" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे "يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे)।

(عالمگیری ج٥ص٣٢٦)

## ﴿18﴾ अम्रद के साथ मज़ाक़ करने वाले की ग़ीबत

**हज़रते** सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِی फ़रमाते हैं : एक आ़बिद (या'नी इबादत गुज़ार आदमी) ने किसी "लड़के" से खुश तब्ई (मज़ाक़ मस्ख़री) की। जब दूसरे आ़बिदों को मा'लूम हुवा तो वोह **बद गुमानियों** और **ग़ीबतों** में पड़ गए कि ओहो! ऐसा परहेज़ गार आदमी हो कर भी **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) के चक्कर में फंस गया वग़ैरा। रफ़्ता रफ़्ता येह ख़बर उस आ़बिद तक पहुंच गई तो उस ने कहा : ऐ लोगो! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने "लड़के" के साथ साफ़ निय्यत वालों के लिये तफ़्रीहन हंसने बोलने को **हराम** नहीं किया, अलबत्ता **बद गुमानी** और **ग़ीबत** को ज़रूर हराम किया है। तुम्हें किस ने कह दिया कि **बद गुमानी** और **ग़ीबत** हलाल है!

(ماخوذ از: بوستانِ سعدی ص١٨٩)

**किसी को "अम्रद परस्त" कहना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** वाक़ेई क़ाबिले तवज्जोह **हिकायत** है। इस में कोई शक नहीं कि बड़े इस्लामी भाइयों को अम्रदों (बे रीश लड़कों) से दूर ही रहना चाहिये, ताहम किसी को **अम्रद** के साथ देख कर उस के बारे में **बद गुमानियां** करने की शरअ़न हरगिज़ इजाज़त नहीं। याद रखिये! मुसल्मान पर बद गुमानी **हराम** है। ऐसे मौक़अ़ पर कहे जाने वाले मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबतों** और **गुनाहों** भरे जुम्लों की 5 मिसालें मुला-हज़ा हों : ﴿1﴾ वोह "अम्रद परस्त है" ﴿2﴾ उस ने अम्रद से जोड़ी बनाई है ﴿3﴾ ख़ूब सूरत लड़कों से तरकीबें बनाता है ﴿4﴾ निय्यत ख़राब मा'लूम होती है ﴿5﴾ कुछ किया तो जूते खाएगा वग़ैरा वग़ैरा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

**हुस्ने ज़न का जाम पीजिये : बिलफ़र्ज़** ज़ेहनी तौर पर वोह शख़्स वाक़ेई ऐसा हो तब भी आप के पास इस का कौन सा **वाज़ेह़ क़रीना** है ? अगर आप के पास यक़ीनी मा'लूमात हैं तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के बेशक उस को तन्हाई में समझाइये, आख़िर दूसरों के सामने **ग़ीबत** करने में क्या मस्लहत है ? बहर ह़ाल तौबा तौबा और तौबए ताम्म कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लीजिये, करने का काम कीजिये और अगर दिल के अन्दर **बद गुमानी** पैदा हो रही है तो **हुस्ने ज़न** का जाम पीजिये कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَۃِ** या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इबादत है। (مُسندِ اِمام احمد ج ٣ ص ٥٤٧ حدیث ١٠٣٦٨) **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 523 पर है मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : ख़बीस गुमान ख़बीस दिल ही से पैदा होता है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 400) बेशक दिल का ह़ाल रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ही जानता है लिहाज़ा जो लोग वाक़ेई "अम्रद परस्त" हैं और बा वुजूद शह्वत के इन से दोस्तियां करते हैं। उन को ख़ुदा का ख़ौफ़ करना चाहिये। और इस **लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत** पर ग़ौर कर के अपनी आ़क़िबत की फ़िक्र करनी चाहिये चुनान्चे

## ﴾19﴿ दो अमरद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बयानाते अ़त्तारिय्या**" ह़िस्सए दुमुव सफ़ह़ा 123 ता 127 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तक्रार कर रहा था : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना।" मैं ने उस से पूछा : इस के इलावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे **दो भाई** थे, बड़ा भाई **चालीस**

**साल** तक मस्जिद में बिला मुआ़-वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने कुरआने पाक मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से ब-र-कतें ह़ासिल करे, मगर **क़ुरआन शरीफ़** हाथ में ले कर वोह कहने लगा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं कुरआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और **नसरानी** (क्रिस्चेन) मज़्हब इख़्तियार करता हूं।" फिर वोह मर गया। इस के बा'द **दूसरे भाई** ने **तीस बरस** तक मस्जिद में **फ़ी सबीलिल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) होने का इक़रार किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त **ख़ातिमा बिलख़ैर** की दुआ़ मांगता रहता हूं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तुम्हारे **दोनों भाई** आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : **"वोह ग़ैर औ़रतों में दिल चस्पी लेते थे और अम्रदों** (या'नी बे रीश लड़कों) **को** (शह्वत से) **देखते थे।"** (الرَّوضُ الفائق ص١٤)

**रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औ़रतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औ़रतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह सब भी शरअ़न ग़ैर औ़रतें ही हैं इन) से अपनी निगाहें नहीं बचाएंगे ? इसी त़रह़ चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है। **ना मह़रम पीर और मुरी-दनी** का भी पर्दा है। मुरी-दनी अपने ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती।

**अम्रद को शह्वत से देखना ह़राम है : ख़बरदार ! अम्रद तो आग है आग ! अम्रद का क़ुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचातानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अम्रद** से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, **अम्रद** होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये, मगर उस

से अपने आप को बचाना बेहद ज़रूरी है। हरगिज़ **अम्रद** को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की तपश हर सूरत में पहुंचेगी। शह्वत न हो जब भी **अम्रद** से गले मिलना महल्ले फ़ितना (या'नी फ़ितने की जगह) है, और शहवत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **अम्रद की त़रफ़ शह्वत के साथ देखना भी ह़राम है।** (دُرِّمُختار ج ٢ ص٩٨،تفسيراتِ احمديه ص٥٥٩) उस के बदन के हर हिस्से ह़त्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। उस के तसव्वुर से अगर शह्वत आती हो तो इस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शह्वत भड़क्ती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की हिफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शह्वत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये।

**अम्रद के साथ 70 शैत़ान : अम्रद** के ज़रीए किये जाने वाले शैत़ाने अ़य्यार व मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : **औ़रत के साथ दो[2] शैत़ान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर[70]।**

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 721)

बहर ह़ाल अज्नबिय्या औ़रत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और अम्रद से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन दो भाइयों की अम्वात के तश्वीश नाक मुआ़-मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे। मेह्रबानी फ़रमा कर **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला **क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां** का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये।

*नफ़्से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है*
*तौबा तौबा करने की भी आ़दत होनी चाहिये*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾20﴿ शैख़ सा'दी के उस्ताज़ ने क्या ख़ूब टोका

**ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللهِ الهَادِی फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार अपने उस्तादे मोह़तरम **ह़ज़रते** अ़ल्लामा अबुल फ़रज **अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी** عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللهِ القَوِی से अ़र्ज़ की : मैं लोगों में दर्से ह़दीस पेश करता हूं तो **फ़ुलां शख़्स ह़सद करता और जलता है !** उस्तादे मोह़तरम ने फ़रमाया : ऐ सा'दी ! तअ़ज्जुब है कि तुम ह़सद को तो बुरी चीज़ तस्लीम करते हो मगर मेरे सामने किसी को ''ह़ासिद'' कह कर उस की बिला तकल्लुफ़ **ग़ीबत** कर रहे हो ! आख़िर तुम्हें येह किस ने कह दिया कि सिर्फ़ ह़सद ही ह़राम है क्या **ग़ीबत** ह़राम नहीं ? याद रखो ! अगर **ह़ासिद** जहन्नम का ह़क़दार है तो **ग़ीबत** करने वाला भी अ़ज़ाबे नार का सज़ावार है।

(بوستانِ سعدی ص١٨٨ مُلَخَّصاً)

**ग़ीबत से रोकना कब वाजिब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ الله !** असातिज़ा हों तो ऐसे ! सिर्फ़ मख़्सूस अस्बाक़ पढ़ाने ही से ग़रज़ न हो, बल्कि त़-लबा की अख़्लाक़ी तरबियत का भी ध्यान रखें, एक उस्ताज़ ही क्या हर मुसल्मान अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझे और **नेकी की दा'वत** और गुनाह से मुमा-न-अ़त की तरकीब व सूरत बनाता रहे। येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये कि जब कोई शख़्स गुनाह म-सलन **ग़ीबत** कर रहा हो उस वक़्त मौजूद शख़्स का ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं मन्अ़ करूंगा तो येह बाज़ आ जाएगा तो उस के लिये **वाजिब** है कि उस को **ग़ीबत** से रोके, अगर नहीं रोकेगा तो गुनहगार होगा। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा 16 सफ़ह़ा 255 पर है : सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! या तो अच्छी बात का हुक्म करोगे और बुरी बात से मन्अ़ करोगे या **अल्लाह** तआ़ला तुम पर जल्द अपना अ़ज़ाब भेजेगा, फिर दुआ़ करोगे और तुम्हारी दुआ़ क़बूल न होगी।''

(سُنَنِ تِرمِذی ج ٤ ص٦٩ حديث ٢١٧٦)

**ह़सद के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की सात मिसालें :** "बोस्ताने सा'दी" की **ह़िकायत** से येह भी सीखने को मिला कि "फ़ुलां मुझ से ह़सद करता है" कहना **ग़ीबत** है, बल्कि येह जुम्ला **ग़ीबत** से भी सख़्त गुनाह **तोहमत** की त़रफ़ जा रहा है क्यूं कि "ह़सद" बात़िनी अमराज़ में से है और इस का तअ़ल्लुक़ दिल से है अगर्चे कभी कभार वाज़ेह़ क़राइन (या'नी बिल्कुल साफ़ अ़लामतों) से भी ह़सद का इज़्हार हो जाता है मगर अक्सर लोग क़ियास ही से किसी को **ह़ासिद** कह दिया करते हैं। ह़सद के मु-तअ़ल्लिक़ **ग़ीबत के मज़ीद सात फ़िक़रात मुला-ह़ज़ा हों :** ✿ जल कुक्कड़ है ✿ मुझ से जलता है ✿ मेरी तरक़्क़ी देख नहीं सकता ✿ मेरी ख़ुशी से ख़ुश नहीं हुवा ✿ मेरा नुक़्सान चाहता है ✿ मेरी भलाई में राज़ी नहीं ✿ मुझे देख कर उस के तन बदन में आग लग गई।

*वासित़ा सिब्त़ैन का मेरा गुनाहों का मरज़ — दूर कर दीजे ख़ुदारा ऐ त़बीबे ज़ी वक़ार*
*फ़िक्रे नज़्ए रूह़ो क़ब्रो ह़श्र से बच जाता गर — काश ! होता आप की गलियों का मैं गर्दो ग़ुबार*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 217)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾21﴿ मिनी सिनेमा घर बन्द कर दिया

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की

तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि सूबए पंजाब के ज़िलअ़ बहावल पूर की तह़सील टैलवाला में एक साहिब (उ़म्र तक़रीबन 37 साल) का **मिनी सिनेमा घर** था, वोह रोज़ाना कई शो चलाते जिस में सेंकड़ों अफ़राद फ़िल्में देखते और अपनी आंखों में जहन्नम की आग भरने का सामान किया करते। इलावा अज़ीं वोह किराए पर फ़िल्मों की वीसीडीज़ भी दिया करते। एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **म-दनी चेनल** चलाने की तरग़ीब दी, ख़ुश क़िस्मती से उन साहिब ने कभी कभार **म-दनी चेनल** चलाना शुरूअ़ किया, जिसे वोह ख़ुद भी देखा करते। चन्द हफ़्तों के बा'द या'नी 9 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1430 हि. को ''यज़मान'' शह्र में होने वाले ''इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त'' में सेंकड़ों इस्लामी भाइयों के सामने उन्हों ने बताया कि **म-दनी चेनल** की ब-र-कत से मेरे अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पैदा हुवा है मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली है और अपना **मिनी सिनेमा** बन्द कर दिया है, नीज़ उन्हों ने नमाज़ों की पाबन्दी करने, दाढ़ी शरीफ़ सजाने और **र-मज़ानुल मुबारक** में दा'वते इस्लामी के 10 दिन के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की अच्छी अच्छी निय्यतें कीं। क़ादिरिय्या र-ज़विय्या सिल्सिले में बैअ़त हो कर हु़ज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के मुरीद बन गए। उन्हों ने फ़िल्मों वग़ैरा की तक़रीबन 40 हज़ार रुपै मालियत की वीडियो सीडीज़ ज़ाएअ़ कर दीं। **मिनी सिनेमा** की जगह पर मक्तबा क़ाइम किया जिस में **मक-त-बतुल मदीना** का सामान या'नी किताबें, वीसीडीज़ वग़ैरा रखीं और रिज़्के़ ह़लाल कमाने में मसरूफ़ हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें और हमें इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

*गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही* *बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 100)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾22﴿ दोनों में से कौन बेहतर ?

**हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से किसी ने सुवाल किया **:** जो शख़्स (नफ़्ली) इबादत भी ज़ियादा करता है और गुनाह भी ज़ियादा करता है वोह बेहतर है या वोह जो कि (नफ़्ली) इबादत भी कम करता है और गुनाह भी कम करता है ? हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने जवाब दिया जो शख़्स (नफ़्ली) इबादत कम करता है और गुनाह भी कम करता है वोह बेहतर है और सलामती उसी के लिये है। (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبه ج۸ص۱۹۶،تَنبِیهُ الغافِلین ص۲۰۲) क्यूं कि (नफ़्ली) इबादत करने के मुक़ाबले में गुनाह छोड़ने में ज़ियादा सवाब है।

**ह़क़ीक़ी मुत्तक़ी कौन ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** फ़ी ज़माना मुत्तक़ी व परहेज़ गार होने का दारो मदार ज़ाहिरी नफ़्ली इबादतों म-सलन नफ़्ली नमाज़ों और नफ़्ली रोज़ों पर ही रह गया है, जो शख़्स ब कसरत नवाफ़िल पढ़ता या बहुत नफ़्ली रोज़े रखता है या अक्सर तस्बीह़ हाथ में रखता और ख़ूब ज़िक्रो अज़्कार करता और गिड़गिड़ा कर दुआ़एं किया करता है या स-दक़ा ख़ैरात बहुत करता है, उसी को लोग मुत्तक़ी और परहेज़ गार कहा करते हैं, अगर्चे इन इबादतों के साथ साथ दिन भर लोगों की **ग़ीबतें** करता फिरता हो, बिला वज्ह मुसल्मानों को झाड़ता और उन के दिल दुखाता हो तब भी उस के तक़्वे को आंच नहीं आती ! अगर कोई आदमी ज़ाहिर में नफ़्ली इबादत कम करता हो मगर **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों से बचता हो उस को फ़ी ज़माना मुत्तक़ी नहीं कहा जाता। इस की वज्ह कहीं येह तो नहीं कि लोगों की नज़र में **ग़ीबत** करने न करने की कुछ अहम्मिय्यत ही नहीं। याद रखिये ! जो फ़राइज़, वाजिबात और मुअक्कदा सुन्नतों की पाबन्दियों के साथ साथ **ग़ीबतों** वग़ैरा गुनाहों से भी बचता हो, वोह बहुत बड़ा मुत्तक़ी है। बाक़ी चाहे कोई सारा ही साल नफ़्ली रोज़े रखे, सारी सारी रात नफ़्ली इबादात बजा लाए, हर साल ह़ज को जाए, हर बरस **र-मज़ानुल मुबारक** में उ़म्रे की सआ़दत पाए, दाढ़ी रखाए, ज़ुल्फ़ें बढ़ाए, इमामा शरीफ़ सजाए ब ज़ाहिर कैसा ही नेक सूरत हो मगर **ग़ीबतें** करता हो, मुसल्मानों के ऐ़ब खोलता उन के दिल दुखाता हो वोह मुत्तक़ी व परहेज़ गार तो ख़ाक होगा, "नेक बन्दा" भी नहीं, फ़ासिक़ व

गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है।

*उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब    अ़ता करम से हो ऐसी मुझे ह़या या रब*
*किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और    सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!    صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾23﴿ एक बार की हुई ग़ीबत के सबब बेहोश हो गए

**ह़ज़रते** सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मक़ाम से गुज़रे तो बेहोश हो गए। होश आया तो लोगों ने बेहोशी का सबब पूछा : फ़रमाया : यहां पहुंचते ही एक दम याद आया कि इस मक़ाम पर मैं ने एक शख़्स की **ग़ीबत** की थी लिहाज़ा मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पकड़ और आख़िरत के ह़िसाब का ख़याल आ गया इस ख़ौफ़ से मैं बेहोश हो गया। (نُزهَةُ المجالِس ج ۱ ص ۱۹۹)

**बरोज़े ह़श्र ईंट और धागे का मुत़ा-लबा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारे बुज़ुर्गों का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ भी मरह़बा ! किसी गुनाह से लाख तौबा करें मगर ख़ौफ़ ख़त्म नहीं होता, नदामत नहीं जाती, एक हम हैं कि गुनाह करने के बा'द हंसते हंसते अपने गालों पर बारी बारी हाथ लगा कर दिल को मना लेते हैं कि हम गुनाहों से साफ़ सुथरे हो चुके और फिर उस गुनाह को अपने पर्दए ख़याल से ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ मिटा देते और अपनी मस्तियों में बद मस्त हो जाते हैं ! आह ! क़ियामत का ह़िसाब ! ख़ुदा की क़सम ! बिल ख़ुसूस हुक़ूक़ुल इ़बाद का मुआ़-मला इन्तिहाई तश्वीश नाक है जैसा कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़ियामत में अपना ह़क़ वुसूल करने के लिये एक शख़्स दूसरे का हाथ पकड़ लेगा वोह दूसरा शख़्स कहेगा : मैं तुझे नहीं पहचानता, तू कौन है ? पहला शख़्स कहेगा : तूने मेरी दीवार से एक ईंट निकाली थी और तूने मेरे कपड़े से धागा निकाला था। (इस सबब से मैं तुझ पर अपने ह़क़ की वुसूली के लिये दा'वा करता हूं) (اِحیاءُ العُلوم ج ۵ ص ۹۹)

**चालीस बरस से रो रहा हूं : इसी** लिये हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن लोगों के ब ज़ाहिर

इन्तिहाई मा'मूली नज़र आने वाले हुक़ूक़ से भी बहुत डरते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना **कहमस** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक गुनाह की नदामत के सबब चालीस बरस से रो रहा हूं। किसी ने पूछा : या सय्यिदी ! वोह कौन सा गुनाह है ? फ़रमाया : एक मरतबा मेहमान के लिये मछली ली थी फिर उस के खाने के बा'द हाथ धोने के लिये मैं ने अपने पड़ोसी की दीवार से बिला इजाज़त मिट्टी का टुकड़ा ले लिया था। (رِسالہ قُشیریہ ص۱۴۹)

***बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की — रहे आह ! नाकाम हम या इलाही***
***ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है — येह तेरा ही तो है करम या इलाही***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 110)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ﴾24﴿ ग़ीबत करने वाले का वक़ार जाता रहता है

**एक** दाना (अ़क़्ल मन्द) के सामने किसी शनासा ने एक मुसल्मान की **ग़ीबत** की, उस **दाना** ने कहा : ऐ शख़्स ! पहले मेरा दिल फ़ारिग़ था, अब तूने **ग़ीबत** के ज़रीए मेरा दिल उस मुसल्मान के **ऐ़बों** के मु-तअ़ल्लिक़ वस्वसों और नफ़रतों में मश्ग़ूल कर दिया और उस मुसल्मान को मेरी नज़र में ह़क़ीर बनाने की सअ्य की और इस त़रह़ से तू भी मेरे नज़्दीक "गन्दा" हुवा, क्यूं कि मैं समझता था कि तू अमीन (या'नी अमानत दार) है और बात को ख़ूब छुपाता है, अब जब कि तूने उस का **ऐ़ब** खोला तो मा'लूम हो गया कि तू **अमीन** नहीं है तेरे दिल में कोई बात रुकती नहीं। (ماخوذ از تَنبِیہُ الغافِلین ص۹۲)

## ﴾25﴿ माज़ी की याद...... दो नाबीना

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई **ग़ीबत** करने वाला ख़ुद ही गन्दा **बनता** और ज़लील होता है। लोग **ग़ीबत** के आ़दियों से कतराते, घिन खाते और ख़ुद को बचाते हैं। अपने लड़क-पन की धुंदली यादों में से **दो नाबीनाओं** का तज़्किरा करता हूं। **एक नाबीना** मुकम्मल दाढ़ी वाला, क़ुरआने पाक का बहुत पक्का ह़ाफ़िज़ और मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ का शख़्स था मगर

बातें और **ग़ीबतें** बहुत ज़ियादा किया करता था, किसी को नहीं छोड़ता था, मैं (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) उस से कतराता था। **दूसरा नाबीना** दाढ़ी मुन्डा या ख़श्ख़शी दाढ़ी वाला आ़म सा आदमी था, उस की ख़ूबी येह थी कि एक दम ख़ामोश त़बीअ़त था उस का नाम तक मुझे मा'लूम नहीं, कभी भी उस के मुंह से मैं ने किसी की **ग़ीबत** नहीं सुनी, मुझे नमाज़ के बा'द बारहा लाठी पकड़ कर उसे उस के घर तक ले जाने का मौक़अ़ मिला है। लगे हाथों **नाबीना** को चलाने की फ़ज़ीलत भी मुला-ह़ज़ा कीजिये।

**नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 244 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बिहिश्त की कुन्जियां"** सफ़ह़ा 226 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **जो किसी नाबीना को चालीस क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।**

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکِر ج ٤٨ ص٣)

**नाबीना को चलाने का त़रीक़ा : एक** और रिवायत भी मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने किसी नाबीना को एक मील तक चलाया तो उसे मील के हर ज़िराअ़ (या'नी गज़) के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। जब तुम नाबीना को चलाओ तो उस का उलटा हाथ अपने सीधे हाथ से थाम लो कि येह भी स-दक़ा है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج٥ص٣٥٠ حدیث٨٣٩٧)

**ग़ुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों पर क़ुरबान कि उस ने हमारे लिये सवाब कमाना किस क़दर आसान रखा है। ग़ुलाम आज़ाद करने पर क्या सवाब मिलता है इस बारे में ब कसरत रिवायात हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो अपने फ़ज़्लो करम से नाबीना का हाथ पकड़ कर चलाने पर वोह सब सवाब अ़त़ा फ़रमा दे। तरग़ीब के लिये एक ह़दीसे मुबारक बयान की जाती है चुनान्चे सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के

सुल्तान, रहमते आ–लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है **:** जो शख़्स मुसल्मान ग़ुलाम को आज़ाद करेगा इस (ग़ुलाम) के हर उ़ज़्व के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (आज़ाद करने वाले) के हर उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा । सईद बिन मरजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं **:** मैं ने जब सय्यिदुना ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते आ़ली में येह ह़दीसे पाक सुनाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना एक ऐसा ग़ुलाम आज़ाद कर दिया जिस की ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **दस हज़ार दिरहम** क़ीमत लगा चुके थे ! (صَحیح بُخاری ج ۲ ص ۱۵۰ حدیث ۲۵۱۷)

*कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दिगार आंखों में　　हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में*
*न कैसे येह गुलो ग़ुन्चे हों ख़्वार आंखों में　　बसे हुए हैं मदीने के ख़ार आंखों में*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 129)

## ﴾26﴿ म–दनी चेनल की ब–र–कत से ग़ीबत से परहेज़

**हैदरआबाद** (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे घर वालों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सो फ़ी सदी इस्लामी चेनल या'नी सुन्नतों भरे **म–दनी चेनल** पर ''ग़ीबत की तबाह कारियों'' के मौज़ूअ़ पर एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान सुना । जिस में उन्हों ने मुआ़–शरे में बोले जाने वाले **ग़ीबत** के अल्फ़ाज़ की त़रफ़ भी तवज्जोह दिलाई । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस बयान को सुन कर **ग़ीबत** से बचने का बहुत ज़ेह्न बना । एक मर्तबा मैं ने घर के अन्दर कहा कि ''छोटा भाई फ़ुलां चीज़ ले कर अभी तक वापस नहीं आया, **बहुत सुस्त** है ।'' तो मेरी वालिदए मोह़–त–रमा ने फ़ौरन मेरी गिरिफ़्त फ़रमाई कि येह तो तुम ने उस की **ग़ीबत** कर डाली क्यूं कि तुम ने उस को **''बहुत सुस्त''** कह कर उस की बुराई की ! चुनान्चे मैं ने फ़ौरन **तौबा** की । अब घर के अफ़राद की येह ह़ालत है कि बात बात पर एक दूसरे की तवज्जोह दिलाते हैं कि अभी जो बात हुई या फ़ुलां लफ़्ज़ बोला कहीं येह **ग़ीबत** तो नहीं !

*गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही*

*बुरी आदतें भी छुड़ा बना या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾27﴿ "वोह मुर्दे की त़रह़ सोया है" कहना

**ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मैं बहुत छोटी ही उ़म्र से रातों को जाग कर इबादत किया करता था। एक बार वालिदे मोह़तरम के साथ सारी रात इबादत में गुज़ारी और तिलावते क़ुरआन करता रहा। चन्द अफ़राद हमारे क़रीब मज़े से सो रहे थे। मैं ने वालिदे मोह़तरम से कहा : इन में से कोई एक भी ऐसा नहीं जो उठ कर (तहज्जुद के) दो नफ़्ल ही पढ़ ले, येह तो **मुर्दों** की त़रह़ सोए पड़े हैं ! वालिदे गिरामी ने फ़रमाया : बेटा ! तुम इबादत करने के बजाए सारी रात सोए रहते येही बेहतर था क्यूं कि तुम बेदार रह कर **ग़ीबत** की आफ़त में गिरिफ़्तार हो गए। (تفسیر رُوحُ الْبیان ج۹ ص۸۹)

## "ग़ीबत करना गुनाह है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली कामों के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 14 मिसालें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि तहज्जुद वग़ैरा नफ़्ली इबादात से ग़ाफ़िल हो कर सारी रात सोया रहना उस के ह़क़ में बेहतर है जो कि रात भर इबादत तो करे मगर **ग़ीबत** की आफ़त में भी जा पड़े। तहज्जुद व नवाफ़िल अदा करना बेशक कारे सवाब है मगर **ग़ीबत** करने वाला ह़क़दारे अ़ज़ाब है। इस **ह़िकायत** में उन लोगों के लिये इ़ब्रत के कसीर म-दनी फूल हैं जो बिला ह़ाजते शर-ई इस त़रह़ से **ग़ीबतें** करते हैं म-सलन ❁ फ़ुलां इशराक़ चाश्त नहीं पढ़ता ❁ उस को बहुत जगाया मगर फ़ज्र (या) तहज्जुद के लिये नहीं उठा, बस ❁

मुर्दे की त़रह़ सोया पड़ा रहा ❁ बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी नहीं करता ❁ पीर शरीफ़ का रोज़ा नहीं रखता ❁ जब भी इज्तिमाअ़ की दा'वत देता हूं "आंटी मार देता है" ❁ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने में सुस्त है ❁ इज्तिमाअ़ में देर से आता या ❁ बाहर बस्तों पर घूमता या ❁ होटल में बैठा या ❁ दोस्तों के साथ बातें करता रहता है ❁ म-दनी मश्वरे में हमेशा ताख़ीर से आता है ❁ कभी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र नहीं करता और ❁ समझाओ तो झूटे बहाने कर देता है।

## ﴾28﴿ बुराई करने वाले के साथ भलाई की अनोखी ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ानुल मशाइख़ ख़्वाजा महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक आदमी ख़ूब **ग़ीबतें** करता और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर त़रह़ त़रह़ की तोह्मतें बांधता फिरता था। इस के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के घर ख़र्च के लिये रोज़ाना कुछ न कुछ भिजवा दिया करते थे, त़वील मुद्दत तक येह सिल्सिला चलता रहा। एक दिन उस की ज़ौजा ने ग़ैरत दिलाते हुए कहा : दस्तूर तो येह है कि जिस का खाना उस का गाना, मगर येह कहां का इन्साफ़ है कि जिस का खाना उसी पर ग़ुर्राना! आप भी अ़जीब शख़्स हैं कि एक ऐसे बुज़ुर्ग के पीछे लगे हुए हैं जो बिग़ैर सुवाल आप के बच्चों को पाल रहा है! बीवी की बातें सुन कर उस को नदामत हुई, **ग़ीबतों** और तोह्मतों से बाज़ आ गया। उसी रोज़ से **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी अख़्राजात भिजवाने बन्द कर दिये। वोह ह़ाज़िरे दरबार हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : **सरकार !** इस में क्या ह़िक्मत है कि जब तक आप के बारे में ख़ुराफ़ात बकता रहा मुझ पर इन्आ़मात व इक्रामात की बरसात रही मगर जूं ही मुज़ख़्रफ़ात (या'नी वाहियात बक्वासात) से बाज़ आया इनायात व नवाज़िशात बन्द हो गईं! इर्शाद फ़रमाया : जब तक तुम मेरी आबरू रेज़ी करते रहे मुझे तुम्हारी त़रफ़ से नेकियां मिलती रहीं और ख़त़ाएं मिटती रहीं, उन दिनों तुम गोया मेरे **अजीर** या'नी मज़दूर थे लिहाज़ा मैं तुम्हें **नेकियां** भेजने और **गुनाह** मैटने की उजरत (मज़दूरी) पेश करता रहा, अब जब कि तुम ने येह काम तर्क कर दिया है तो फिर मैं **उजरत** किस

बात की दूं ! (سبع سنابل ص ٥٩ مُلَخّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

*गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं* *करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब*
*बुराइयों पे पशेमां हूं रह़म फ़रमा दे* *है तेरे क़ह्‌र पे ह़ावी तेरी अ़त़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

**ईंट का जवाब नायाब गोहर से : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ानुल मशाइख़ ख़्वाजा मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मज़्कूरा ह़िकायत में येह **म-दनी फूल** भी इन्तिहाई ख़ुशबूदार है कि **अहलुल्लाह** ईंट का जवाब पथ्थर से नहीं "नायाब गोहर" से दिया करते हैं! **अल्लाह** वाले बुराई को बुराई से नहीं भलाई से टाला करते हैं और वोह ऐसा क्यूं न करें कि पारह 24 सूरए **حٰمٓ السَّجْدَہ** की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

**ह़ुस्ने सुलूक का नतीजा : सय्यिदुना सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान शरीफ़" में बुराई को भलाई से टालने का त़रीक़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : म-सलन ग़ुस्से को सब्र से, जह्‌ल को ह़िल्म से, बद सुलूकी को अ़फ़्व (व दर गुज़र) से कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तू मुआ़फ़ कर। इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की त़रह़ मह़ब्बत करने लगेंगे।

**शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के ह़क़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अ़दावत के **नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साहिब ज़ादी को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह सादिक़ुल मह़ब्बत जां निसार हो गए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 884)

## ﴾29﴿ ह़म्ला आवर के साथ ह़ैरत अंगेज़ ह़ुस्ने सुलूक

**बुराई** को भलाई से टालने के ज़िम्न में एक अ़जीबो ग़रीब **ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नसीरुद्दीन मह़मूद बिन यूसुफ़ रशीद अवधी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के आस्तानए आ़लिया (देहली) में दाख़िल हो कर छुरी से 15 या 17 वार कर के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को शदीद ज़ख़्मी कर दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कमाले सब्र का मुज़ा-हरा करते हुए ह़म्ला आवर से फ़रमाया **:** फ़ौरन अन्दर वाले कमरे में छुप जाओ वरना लोग पहुंच गए तो शायद तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे, वोह छुप गया। लोगों ने बहुत तलाशा मगर ह़म्ला आवर का सुराग़ न मिला, आधी रात के वक़्त मौक़अ़ पा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़म्ला आवर को वहां से रुख़्सत कर दिया। (سبع سنابل ص ٦٤ مُلَخصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ **औलियाउल्लाह** की भी कैसी बुलन्द शानें होती हैं! वोह अपनी बुराइयां करने वालों बल्कि जान के दर पै रहने वालों के साथ भी ह़ुस्ने सुलूक किया करते हैं, किसी ने सच ही तो कहा है

بدی را بدی سہل باشد جزا
اگر مردی اَحسِن اِلٰی مَن اَسا

(या'नी बदी का बदला बदी से देना तो आसान है अगर तू मर्द है तो बुराई करने वाले के साथ भी भलाई कर)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾30﴿ दो गुदड़ियों वाला

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"उ़यूनुल ह़िकायात"** ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 18 पर है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं **:** सर्दियों के दिन थे मैं मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा हुवा था कि क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिस ने **दो गुदड़ियां** ओढ़ रखी थीं। मेरे दिल में बात

आई कि शायद येह भिकारी है, क्या ही अच्छा होता कि येह अपने हाथ से कमा कर खाता। जब मैं सोया तो ख़्वाब में दो फ़िरिश्ते आए मुझे बाज़ू से पकड़ा और उसी मस्जिद में ले गए। वहां एक शख़्स दो **गुदड़ियां** ओढ़े सो रहा है जब उस के चेहरे से गुदड़ी हटाई गई तो येह देख कर मैं हैरान रह गया कि येह तो वोही शख़्स है जो मेरे क़रीब से गुज़रा था ! फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : "इस का गोश्त खाओ।" मैं ने कहा : मैं ने इस की कोई **ग़ीबत** तो नहीं की। कहा : "क्यूं नहीं ! तूने दिल में इस की **ग़ीबत** की, इस को ह़क़ीर जाना और इस से नाख़ुश हुवा।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَدِیْر फ़रमाते हैं : फिर मेरी आंख खुल गई, ख़ौफ़ की वज्ह से मुझ पर लरज़ा त़ारी था, मैं मुसल्सल तीस (30) दिन उसी मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा रहा, सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ के लिये वहां से उठता। मैं दुआ करता रहा कि दोबारा वोह शख़्स मुझे नज़र आ जाए ताकि उस से मुआफ़ी मांगूं। एक माह बा'द वोह पुर असरार **शख़्स** मुझे नज़र आ गया, पहले की त़रह़ उस के जिस्म पर दो **गुदड़ियां** थीं। मैं फ़ौरन उस की त़रफ़ लपका, मुझे देख कर वोह तेज़ तेज़ चलने लगा, मैं भी पीछे हो लिया। आख़िरे कार मैं ने उस को पुकार कर कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूं।" उस ने कहा : ऐ इब्राहीम ! क्या तुम भी उन लोगों में से हो जो दिल के अन्दर मुअमिनीन की **ग़ीबत** करते हैं ? उस के मुंह से अपने बारे में ग़ैब की ख़बर सुन कर मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब होश आया तो वोह शख़्स मेरे सिरहाने खड़ा था। उस ने कहा : क्या दोबारा ऐसा करोगे ? मैं ने कहा : "नहीं, अब कभी भी ऐसा नहीं करूंगा।" फिर वोह **पुर असरार शख़्स** मेरी नज़रों से ओझल हो गया और दोबारा कभी नज़र न आया। (عُیونُ الحِکایات (عربی) ص ٢١٢) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

**बद गुमानी भी ग़ीबत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत से हमें इ़ब्रत के बे शुमार **म-दनी फूल** चुनने को मिलते हैं, इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किसी के बारे में **बद गुमानी** भी **ग़ीबत** है। या'नी किसी वाज़ेह़ क़रीने के बिग़ैर किसी के बारे में बुराई को दिल में

जमा लेना कि वोह ऐसा ही है **बद गुमानी** कहलाता है जो कि **ग़ीबतुल क़ल्ब** या'नी दिल की **ग़ीबत** है। किसी के सादा लिबास वग़ैरा को देख कर उसे ह़क़ीर और भीक मांगने वाला फ़क़ीर जानना बड़ी भूल है। क्या मा'लूम हम जिसे ह़क़ीर तसव्वुर कर रहे हैं वोह कोई **गुदड़ी का ला'ल** या'नी पहुंची हुई हस्ती हो। जैसा कि मज़्कूरा **ह़िकायत** से ज़ाहिर हुवा कि वोह गुदड़ी पोश शख़्स कोई आ़म आदमी नहीं ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे !

***न पूछ इन ख़िर्क़ा पोशों को अ़क़ीदत हो तो देख इन को***
***यदे बैज़ा लिये फिरते हैं अपनी आस्तीनों में***

## ﴾31﴿ पुर असरार ह़बशी

**मज़्कूरा** ह़िकायत से मिलती जुलती एक और **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बे इन्तिहा मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। हर शख़्स को अपने से बेहतर तसव्वुर किया करते। एक दिन **दरियाए दिजला** के कनारे किसी **ह़बशी को शराब की बोतल** के साथ एक औ़रत के हमराह देखा, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दिल में कहा : क्या येह **शराबी ह़बशी** भी मुझ से बेहतर हो सकता है ! इसी दौरान एक **कश्ती** गुज़री जिस पर सात अफ़राद सुवार थे, यकायक वोह ग़रक़ाब हो गई और सातों आदमी डूब गए। येह देख कर **ह़बशी** दरिया में कूद गया और उस ने एक एक कर के **छ[6] अफ़राद** को बाहर निकाला, फिर मुझ से बोला : **सातवां** आप निकालिये, मैं तो आप का इम्तिह़ान ले रहा था कि आप साह़िबे बात़िन भी हैं या नहीं ! येह भी सुन लीजिये ! **येह औ़रत और कोई नहीं बल्कि मेरी अम्मीजान हैं और बोतल में शराब नहीं सादा पानी है।** आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ समझ गए कि येह ह़बशी कोई आ़म आदमी नहीं बल्कि मेरी इस्लाह़ के लिये आई हुई ग़ैबी हस्ती है। लिहाज़ा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस का एह़तिराम किया और दुआ़ की दर-ख़्वास्त की, उस ने दुआ़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को **नूरे बसीरत** (या'नी दिल की नज़र के नूर) से नवाज़े। इस के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कभी भी ख़ुद को किसी से बेहतर नहीं समझा यहां तक कि एक बार किसी

ने इस्तिफ़्सार किया कि **कुत्ता** बेहतर है या आप ? फ़रमाया : अगर अ़ज़ाब से नजात पा गया तो मैं बेहतर वरना कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों गुनहगारों से बेहतर है। (ماخوذ از:تذكرة الاولياء حصه١ ص ٤٣)

**अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلّم

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि किसी मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ झटपट ग़लत़ राय नहीं क़ाइम कर लेनी चाहिये हमें क्या मा'लूम कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस का क्या मक़ाम है !

*नज़रे करम ख़ुदारा मेरे सियाह दिल पर*
*बन जाएगा येह दम भर में बे बहा नगीना*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 190)

## ﴾32﴿ ह़बशी ने जूं ही दुआ़ मांगी......

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा वोह **ह़बशी** कोई पहुंचे हुए बुज़ुर्ग थे। लिहाज़ा किसी की ज़ाहिरी शक्लो सूरत और लिबास वग़ैरा को देख कर उस की हरगिज़ तह़क़ीर नहीं करनी चाहिये। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : एक साल मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में क़ह़त़ हुवा लोगों को अज़ ह़द ग़म हुवा, एक रोज़ अहले मदीना **नमाज़े इस्तिस्क़ा** (या'नी बारिश मांगने की नमाज़) के वासित़े निकले और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी साथ थे, सब लोग रो रो कर दुआ़ मांगने लगे किसी की दुआ़ क़बूल नहीं होती थी, इतने में दो चादरों में मल्बूस एक **ह़बशी** आया और बारगाहे ख़ुदा वन्दी में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "**इलाही** ! हम गुनहगार हैं तूने हम लोगों को अदब सिखाने के लिये पानी रोक लिया है, **या अल्लाह** ! अपनी रह़मत से इसी वक़्त पानी बरसा, इसी वक़्त पानी बरसा, इसी वक़्त पानी बरसा।" फ़िलफ़ौर घन्घोर घटा उमंड आई, और मूसलाधार बारिश बरसने लगी। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां

से ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल** बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आए, उन्हों ने फ़रमाया : क्या बात है कि आप उदास नज़र आ रहे हैं ? उन्हों ने **ह़बशी** की दुआ़ और बारिश वाला वाक़िआ़ सुनाया, येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल** बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चीख़ मारी और बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए । (ماخوذاز: إحياءُ العُلوم ج ١ ص ٤٠٨) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

*मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही*
*तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾33﴿ औलादे नरीना हो गई

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर केर हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत की भी क्या ख़ूब म-दनी बहार है एक इस्लामी भाई की भाभी "उम्मीद" से थीं । अल्ट्रा साउन्ड के ज़रीए बताया गया कि बेटी है, भाईजान ने निय्यत की अगर **बेटा** हुवा तो दा'वते इस्लामी के **आ़शिक़ाने रसूल** के सुन्नतों की तरबियत के 3 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के भाई के घर **बेटा** पैदा हुवा ।

*नेक औलाद की, दाद फ़रियाद की ख़ात़िर आओ चलें, क़ाफ़िले में चलो*
*क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**जितनी निय्यतें ज़ियादा सवाब भी ज़ियादा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अच्छी निय्यत** और वोह भी **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र करने की, سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस की भी क्या ख़ूब ब-र-कत है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ औलादे नरीना से गोद हरी हो गई ! येह ज़ेह्न में रहे कि जितनी **अच्छी निय्यतें** ज़ियादा होगी उतना ही सवाब में इज़ाफ़ा होगा लिहाज़ा किसी जाइज़ मक़्सद पाने की **निय्यत** के साथ **सवाबे आख़िरत की निय्यत** को नहीं भूलना चाहिये। म-सलन अगर सिर्फ़ औलाद की निय्यत से **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया तो म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का सवाब नहीं मिलेगा। अगर सवाब की निय्यत भी की होगी तो औलाद न भी मिले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब ज़रूर मिल जाएगा। जैसा कि पारह 13 **सूरए यूसुफ़** आयत 56 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी है :

وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾
(پ۱۳ یوسف:۵۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हम नेकों का नेग ज़ाएअ़ नहीं करते।

## ﴾34﴿ ग़ीबत करने वाले को तोह़फ़ा

**ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को किसी ने कहा कि फुलां ने आप की **ग़ीबत** की है तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ग़ीबत** करने वाले आदमी को खजूरों का एक थाल भर कर रवाना किया और साथ ही कहला भेजा कि सुना है आप ने मुझे अपनी नेकियां हदिय्या की हैं तो मैं ने उन का बदला देना बेहतर जाना इस लिये खजूरें ह़ाज़िर की हैं। (منہاج العابدین ص۶۵)

**अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

**ग़ीबत करने वाले को दुआ़ए ख़ैर से नवाज़िये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का **नेकी की दा'वत** का अन्दाज़ भी कितना अनोखा

हुवा करता था, जब ज़माने के वली की त़रफ़ से **ग़ीबत** करने वाले को बदले में **खजूरों का थाल** पहुंचा होगा वोह किस क़दर मु-तअस्सिर हुवा होगा ! और येह भी ह़क़ीक़त है कि जिस की **ग़ीबत** की जाए वोह फ़ाएदे में रहता है क्यूं कि जिस ने **ग़ीबत** की उस की नेकियां इस (या'नी जिस की **ग़ीबत** की गई उस) के आ'माल नामे में मुन्तक़िल की जाती हैं और जो नेकियां गोया तोह़फ़े में दे वोह एक त़रह़ से हमारा ख़ैर ख़्वाह या'नी भलाई चाहने वाला ही हुवा। लिहाज़ा उस से उलझने के बजाए उस के ह़क़ में दुआए ख़ैर करनी चाहिये।

***जो ग़ीबत से चुग़ली से रहता है बच कर***
***मैं देता हूं उस को दुआए मदीना***

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾35﴿ इत्र की शीशी का तोह़फ़ा

एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का कुछ इस त़रह़ बयान है : मुझे पता चला कि फ़ुलां साह़िब ने मेरे ख़िलाफ़ लोगों में **ग़ीबत** की है, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ह़िकायत मा'लूम थी (जो अभी गुज़री) लिहाज़ा इन की पैरवी की निय्यत से उन साह़िब को तोह़फ़तन "**इत्र की शीशी**" भिजवाई और जिन के ज़रीए भिजवाई उन को दर-ख़्वास्त कर दी कि सौग़ात भिजवाने का सबब बयान कर के आप उन की तफ़्हीम कीजिये या'नी समझाने की तरकीब बनाइये, बात आई गई हो गई। एक बार हम चन्द इस्लामी भाई इत्तिफ़ाक़ से उन **ग़ीबत** व मुख़ा-लफ़त करने वाले साह़िब की दुकान के क़रीब से गुज़रे, देखते ही वोह अपनी दुकान से बाहर आ गए, पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात की, फल के रस या किसी मशरूब से हमारी ख़ातिर तवाज़ोअ़ की और अपनी दुकान के अन्दर मुझ से हाथ उठवा कर दुआए ब-र-कत करवाई। لِلّٰهِ الْحَمْد

*ईंटों के तू पथ्थर से जवाबात न देना*

*शैत़ान के हर वार को नाकाम बना दे*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ﴾36﴿ म-दनी मुन्ने की जान बच गई

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। **ह़ैदरआबाद** (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई का पांच माह का म-दनी मुन्ना मुसल्सल बीमार रहता था। ज़मज़म नगर के ह़ैदरआबाद के तक़रीबन तमाम बड़े बड़े अस्पतालों में इलाज करवाया, जब "जाम शोरू अस्पताल" से लीवर स्केन करवाया तो पता चला कि बच्चे का एक कनेक्शन नहीं है जो जिगर से आंतों को पहुंचता है। बड़े डोक्टर ने बताया कि इस का ओपरेशन होगा मगर उस के काम्याब होने के इम्कानात कम हैं। र-मज़ानुल मुबारक में वोह बाबुल मदीना (कराची) पहुंच गए और **ओपरेशन** के लिये म-दनी मुन्ने को N.I.C.H अस्पताल में दाख़िल करवा दिया। हफ़्ते वाले रोज़ म-दनी मुन्ने का **ओपरेशन** हुवा तो डोक्टरों ने बताया कि इस का तो **कनेक्शन** भी नहीं, **पित्ता** भी नहीं और **जिगर** भी बहुत कमज़ोर है जो कि सिर्फ़ 25 फ़ीसद काम कर रहा है। इस बच्चे के बचने का इम्कान बहुत ही कम है। दूसरे हफ़्ते म-दनी मुन्ने का **दूसरा ओपरेशन** त़ै हुवा, वोह इस्लामी भाई ओपरेशन के एक दिन पहले या'नी जुमुआ़ के रोज़

**म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** से वापसी पर पता चला कि उन के म-दनी मुन्ने का **ऑपरेशन कामयाब** हो गया है मगर उस को दूध नहीं दे सकते थे और पेशाब में ख़ून आ रहा था। वोह दूसरे हफ़्ते फिर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के दौरान ही घर वालों ने फ़ोन पर इत्तिलाअ़ दी कि पेशाब में ख़ून आना भी बन्द हो गया है और इस ने दूध पीना भी शुरूअ़ कर दिया है। वोह **म-दनी क़ाफ़िले** से इतवार को वापस आए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दूसरे दिन या'नी पीर शरीफ़ को अस्पताल से छुट्टी भी मिल गई और वोह म-दनी मुन्ने को घर ले आए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से उन का म-दनी मुन्ना बिल्कुल ठीक हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल को सलामत रखे।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

*बच्चा बीमार है, बाप बेज़ार है ग़म के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो*
*ग़म चले जाएंगे, दिन भले आएंगे सब्र से काम लें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## (37) 15 सालह मरीज़ा की ईमान अफ़रोज़ सिह्हत याबी

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से नाक़िस बच्चा न सिर्फ़ ज़िन्दा बच गया बल्कि सिह्हत मन्द भी हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के येह सब करिश्मे हैं, यक़ीनन **दा'वते इस्लामी** वालों पर रब्बुल अकरम عَزَّوَجَلَّ का बे इन्तिहा करम है। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो कैसा ही गम्भीर मस्अला हो चुटकी में ह़ल हो जाता है। इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ **हिकायत** सुनिये और झूमिये चुनान्चे **बग़दाद** शरीफ़ में एक अ़-लवी लड़की रहती थी, वोह पन्दरह साल तक अपाहज (या'नी मा'ज़ूर) रही, एक रात वोह सो कर उठी

तो तन्दुरुस्त थी, अब वोह उठ कर बैठ भी सकती थी और खड़ी भी हो सकती थी, उस से इस सिलिसले में पूछा गया तो उस ने कहा : एक रात मैं सख़्त दिल बरदाश्ता हुई, मैं ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगी कि या तो इस मुसीबत से नजात अ़त़ा फ़रमा दे या फिर मौत दे दे और बहुत रोई। ख़्वाब में देखा कि एक बुज़ुर्ग मेरे पास तशरीफ़ लाए हैं, मैं कांप गई, और मैं ने कहा : क्या आप का इस त़रह़ मेरे पास आना जाइज़ है ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं तुम्हारा वालिद हूं, मैं ने गुमान किया कि शायद मेरे जद्दे आ'ला ह़ज़रते **अमीरुल मुअमिनीन अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप मेरी ह़ालत नहीं देखते ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं तेरा वालिद **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं। मैं ने रोते हुए अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तआ़ला से मेरे लिये सिह़्ह़त की दुआ़ फ़रमा दीजिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों होंटों को ह़-र-कत दी। फिर फ़रमाया : अपना हाथ लाओ, मैं ने अपना हाथ पेश कर दिया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पकड़ कर खींचा और मुझे बिठा दिया। फिर फ़रमाया : **अल्लाह** का नाम ले कर खड़ी हो जाओ। मैं ने अ़र्ज़ की : मैं कैसे खड़ी हो जाऊं मैं तो मा'ज़ूर हूं ! फ़रमाया : अपने दोनों हाथ लाओ, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें पकड़ कर खींचा तो मैं खड़ी हो गई, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन दफ़्आ़ इसी त़रह़ किया, फिर फ़रमाया : खड़ी हो जाओ, **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा दी है, तुम उस की ह़म्द करो और उस से डरो, फिर मुझे छोड़ा और तशरीफ़ ले गए। जब मैं बेदार हुई तो तन्दुरुस्त थी, उन का वाक़िआ़ **बग़दाद शरीफ़** में ख़ूब मश्हूर हुवा। (مِصباحُ الظَّلام فِی الْمُستغیثین بخیر الا نام ص۱۵۳)

*सरे बालीं इन्हें रह़मत की अदा लाई है*
*ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है*

## ﴾38﴿ लम्बा सियाह आदमी

**हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद** र-ब-ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं जामेअ़ मस्जिद में बैठा था कि कुछ लोग एक शख़्स की **ग़ीबत** करने लगे, मैं ने उन्हें इस से मन्अ़ किया तो **ग़ीबत** से बाज़ आ कर किसी और मौज़ूअ़ पर आ गए, कुछ देर बा'द फिर उसी शख़्स के ख़िलाफ़ बोलने लगे, अब की बार मैं भी कुछ देर के लिये गुफ़्त-गू में शरीक हो गया। रात को ख़्वाब देखा कि एक **लम्बा सियाह आदमी** थाल में **ख़िन्ज़ीर** के गोश्त का लोथड़ा लिये आया और कहने लगा : खाओ ! मैं ने कहा : मैं...... मैं...... मैं क्यूं "ख़िन्ज़ीर का गोश्त" खाऊं ? **अल्लाह** की क़सम ! मैं नहीं खाऊंगा। उस ने मुझे सख़्ती से झन्झोड़ा और कहा : तुम ने तो इस से भी गन्दी चीज़ खाई (या'नी **ग़ीबत** की) है। येह कह कर उस ने मुझे गुद्दी से पकड़ा और ख़िन्ज़ीर का गोश्त जिस से ख़ून बह रहा था मेरे मुंह में ठूंसने लगा हत्ता कि मैं नींद से बेदार हो गया। ख़ुदा की क़सम ! तीस दिन तक मुझे उस की बदबू आती रही और मैं जब भी खाना खाता तो उस से ख़िन्ज़ीर के गोश्त का ज़ायक़ा अपने मुंह में महसूस करता। (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص۸۰ رقم۴۳)

## ﴾39﴿ अम्रद बीनी वग़ैरा की हाथों हाथ ग़ैबी सज़ाएं

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह बुज़ुर्ग नसीब दार थे कि इन को दुन्याए ना पाएदार ही में ख़्वाब के ज़रीए ख़बरदार कर दिया गया। आह ! हमारा क्या बनेगा ! अफ़्सोस ! हम ने तो न जाने कितनों की **ग़ीबतें** की और सुनी होंगी। **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत से बचाए। बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि गुनाह करते ही हाथों हाथ सज़ाएं मिलती और ख़ूब ख़ूब रुस्वाई होती है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 853 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़हा 646 पर है : बा'ज़ लोगों ने अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) को शहवत के साथ या **औ़रत**

को देखा तो उन की आंखें बह कर रुख़्सारों (या'नी गालों) पर आ गईं ! बा'ज़ ने जूं ही अपना हाथ किसी **औ़रत** के हाथ पर रखा तो दोनों के हाथ आपस में **चिमट** गए और ख़ूब रुस्वाई हुई, लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गए, यहां तक कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने उन की रहनुमाई फ़रमाई कि सच्चे दिल से तौबा करें और अ़हद करें कि आइन्दा ऐसी गन्दी ह़-र-कत कभी नहीं करेंगे। जब उन्हों ने ऐसा किया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें छुटकारा अ़ता फ़रमाया। इस किताब के मुसन्निफ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر फ़रमाते हैं : इसी त़रह़ मेरे एक जानने वाले के साथ हुवा जो कि ख़ुश शक्ल व ख़ुश अन्दाम था, उस ने गुनाह किया भी तो कैसी मुक़द्दस जगह पर ! मस्जिदुल ह़राम के अन्दर और वोह भी **ह़-जरे अस्वद** के पास उस पर शैत़ान सुवार हुवा और उस ने एक औ़रत को चूम लिया ! क़ह्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बिजली गिरी और उस का चेहरा पूरे का पूरा मस्ख़ हो गया, (या'नी बिगड़ गया) तन बदन बे ढब हुवा, अ़क़्ल कुन्द हुई और आवाज़ भी ख़राब हो गई अल ग़रज़ सरापा इब्रत का नुमूना बन गया। हम भटक्ने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इल्तिजा करते हैं कि हमें मरते दम तक आज़माइशों से बचाए, बेशक वोह सब से ज़ियादा करीम व रह़ीम है।

***गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा***
***करम हम पर ह़बीबे किब्रिया हो***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 316)

## ﴿40﴾ लिफ़्ट का पंखा

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यक़ीनन अपनी चीज़ की बुराई सुनना किसी को भी अच्छा नहीं लगता, इस ज़िम्न में अपना एक वाक़िआ़ तसर्रुफ़ के साथ अ़र्ज़ करता हूं चुनान्चे सख़्त गर्मियों के दिन थे, हम चन्द इस्लामी भाई किसी के घर से खाना खा कर निकले और लिफ़्ट में सुवार हुए, गर्म हवा का एह़सास हुवा, एक ने कहा : पंखा लगा हुवा है, दूसरा बोला : फ़ुलां किराएदार

इस्लामी भाई की इ़मारत की लिफ़्ट तो एयर कन्डीशन्ड है, इस पर हमारा मेज़बान जो कि उस इ़मारत के एक फ़्लेट का किराएदार था वोह बोल उठा : ''येह इ़मारत काफ़ी पुरानी है ।'' सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने तीसरे से अ़र्ज़ की : येह बताइये कि आप की बात कि ''येह इ़मारत काफ़ी पुरानी है'' सुन कर मकान मालिक खु़शी से झूम उठेगा या दिल बरदाश्ता होगा ? इस पर वोह पशेमान हुए कि वाक़ेई़ पता लगने की सूरत में उसे ईज़ा पहुंचेगी । फिर मेरी बात की तौसीक़ करते हुए उन्हों ने अपना एक वाक़िआ़ सुनाया कि मेरे पास एक पुरानी कार थी एक बार मेरे बे तकल्लुफ़ दोस्त ने कहा : यार ! इस ''खटारे'' को छुट्टी भी करवाओ ! मुझे इस जुम्ले से सख़्त सदमा पहुंचा और मैं ने वोह कार इस्ति'माल करना छोड़ दी और एक दोस्त के गेराज में डलवा दी । अ़र्सा हुवा यूं ही पड़ी है, बेचने को भी दिल नहीं करता क्यूं कि उस के साथ मेरी बा'ज़ मु-तबर्रिक यादें वाबस्ता हैं । जो जो इस्लामी भाई गुफ़्त-गू में शरीक थे اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब ने **ग़ीबतें** करने सुनने से तौबा की ।

**ऐ़ब बयान करना ग़ीबत है भी और नहीं भी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान कर्दा हिकायत से बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू किस क़दर ख़त़रनाक होती है कि **ग़ीबत** हो जाती है और कानों कान ख़बर भी नहीं होती ! इस हिकायत में एक नहीं कम अज़ कम **दो ग़ीबतें** हैं एक तो वोही ''इ़मारत बहुत पुरानी है'' और इस से पहले की जाने वाली बात कि इस की लिफ़्ट में तो सिर्फ़ पंखा है जब कि फ़ुलां की लिफ़्ट में A.C. है । अगर येह बात भी मकान मालिक सुने तो उस को ना गवार गुज़रे लिहाज़ा येह भी **ग़ीबत** है । यहां येह वज़ाह़त करता चलूं कि अगर बुराई बयान करने का कोई सह़ीह़ मक़्सद हो म-सलन इ़मारत में फ़्लेट किराए पर लेना था और इस ज़िम्न में येह गुफ़्त-गू हुई कि येह इ़मारत भी पुरानी है और लिफ़्ट में भी सिर्फ़ पंखा लगा हुवा है, फ़ुलां इ़मारत बेहतर है कि उस की लिफ़्ट में भी A.C. है, चलो वहीं फ़्लेट बुक करवाते हैं । तो येह गुनाह भरी **ग़ीबत** नहीं । अगर किसी सह़ीह़ मक़्सद की निय्यत नहीं बस यूं

ही किसी का ऐ़ब या उस की किसी चीज़ की ख़राबी को पीठ पीछे बयान कर दिया जैसा कि आज कल हमारी अक्सरिय्यत की आ़दत है तो येह गुनाह भरी **ग़ीबत** है और मज़्कूरा ह़िकायत में भी मह़ज़ फ़ुज़ूल बक बक के त़ौर पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ इमारत के ऐ़ब बयान किये गए लिहाज़ा वोह दोनों बातें गुनाहों भरी **ग़ीबतें** शुमार होंगी।

**दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें **ग़ीबतों** चुग़्लियों, तोह्मतों, बद गुमानियों, दिल आज़ारियों और हर त़रह़ के गुनाहों से बचा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें पक्का नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी, म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

*ख़ुदाया अजल आ के सर पर खड़ी है — दिखा जल्वए मुस्त़फ़ा या इलाही*

*मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से — हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105, 106)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

**दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : हज़रते** उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की, कि (सारे विर्द, वज़ीफ़े, छोड़ दूंगा और) मैं अपना सारा वक़्त **दुरूद ख़्वानी** में सर्फ़ करूंगा। तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी **फ़िक्रों** को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे **गुनाह** मुआफ़ कर दिये जाएंगे।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٠٧ حديث٢٤٦٥)

**एह़याउल उ़लूम से ग़ीबत की ता'रीफ़ और मिसालें : हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی एह़याउल उ़लूम जिल्द 3 सफ़ह़ा 177 पर फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** येह है कि तुम अपने (मुसल्मान) भाई का ज़िक्र उन अल्फ़ाज़ के साथ करो कि अगर उस तक येह बात पहुंचे तो वोह उसे ना पसन्द करे। चाहे उस के **ब-दनी या न-सबी** (या'नी ख़ानदानी) ऐ़ब का तज़्किरा करो या अख़्लाक़ और अ़मल के ए'तिबार से कोताही बयान करो, उस की दुन्यवी ख़राबी का ज़िक्र करो या उख़्रवी का, ह़त्ता कि उस के कपड़े, मकान और जानवर के ह़वाले से नक़्स (ख़ामी) बयान करना भी **ग़ीबत** है।

**बदन** में नक़्स (ख़ामी) की सूरत येह है कि म-सलन ❁ चुन्धा (या'नी कमज़ोर नज़र वाला या तेज़ रोशनी बरदाश्त न करने के सबब आंखें झपकाने वाला) है ❁ भेंगा (जिस को एक के दो नज़र आएं या आंखें दबा कर देखने वाला) है ❁ गन्जा है ❁ उस का क़द छोटा या ❁ लम्बा है ❁ उस का रंग सियाह (काला) या ❁ ज़र्द (पीला) है वग़ैरा वग़ैरा या'नी हर वोह बात जिसे वोह ना पसन्द करता है वोह **ग़ीबत** है, बात फिर जिस त़रह़ की भी हो।

**नसब** (ख़ानदान) के ह़वाले से **ग़ीबत** येह है कि म-सलन वोह यूं कहे कि उस का बाप ❁ मोची है या ❁ ख़ाकरूब (झाड़ू देने वाला) है। **अख़्लाक़** के ह़वाले से **ग़ीबत** इस त़रह़ है कि ❁ वोह बद अख़्लाक़ है ❁ बख़ील (कन्जूस) ❁ मु-तकब्बिर (मग़रूर) ❁ रियाकार ❁ बहुत गुस्से

वाला ❁ बुज़दिल ❁ आ़जिज़ ❁ कमज़ोर दिल और ❁ ला परवाह। **अफ़्आ़ल में ग़ीबत** येह है कि ऐसे कामों का ज़िक्र किया जाए जिन का दीन से तअ़ल्लुक़ है जैसे तुम कहो कि ❁ वोह चोर है ❁ झूटा है ❁ शराब ख़ोर है ❁ ख़ियानत करने वाला या ❁ ज़ालिम है ❁ नमाज़ या ❁ ज़कात में सुस्ती करने वाला है या येह कि ❁ रुकूअ़ और ❁ सज्दा भी अच्छी त़रह़ नहीं करता ❁ नजासतों (या'नी नापाकियों) से नहीं बचता ❁ मां बाप के साथ ह़ुस्ने सुलूक नहीं करता ❁ ज़कात सह़ीह़ मक़ाम पर अदा नहीं करता या ❁ इस (या'नी ज़कात) की तक़्सीम सह़ीह़ त़रीक़े पर नहीं करता या कि ❁ अपने रोज़े को गुनाहों ❁ **ग़ीबतों** और ❁ लोगों की इ़ज़्ज़तों में दख़्ल अन्दाज़ी से नहीं बचाता। और **दुन्या** से मु-तअ़ल्लिक़ अफ़्आ़ल में **ग़ीबत** की सूरत येह है कि ❁ वोह ज़ियादा बा अदब नहीं है ❁ लोगों के साथ तौहीन आमेज़ सुलूक करता है ❁ अपने आप पर किसी दूसरे का ह़क़ नहीं जानता या येह कि ❁ वोह दूसरों पर सिर्फ़ अपना ह़क़ समझता है या येह कि ❁ वोह बहुत ज़ियादा बातें करता है ❁ बहुत खाता है ❁ बहुत सोता है ❁ बे वक़्त सोता है ❁ हर जगह बैठ जाता है। **कपड़ों** के मु-तअ़ल्लिक़ **ग़ीबत** की सूरत येह है कि म-सलन ❁ उस की आस्तीन बहुत खुली है ❁ दामन लम्बा है और कपड़े मैले हैं। (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۱۷۷)

**आह ! हमारी ज़बान की बे एह़तियात़ियां !!! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आह ! हमारी ज़बान की बे एह़तियात़ियां !!! आज कल अक्सर लोग मुसल्मानों के बारे में न जाने क्या क्या बक कर रोज़ाना कितनी ही बार **ग़ीबत** या **बोहतान** वग़ैरा का इरतिकाब करते हुए مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार ठहरते होंगे ! हर क़ौम, हर शो'बे, हर त़ब्क़े की अपनी अपनी ज़बान में फ़ी ज़माना बे शुमार हज़ारों हज़ार ऐसे अल्फ़ाज़ बोले जाते हैं जो **ग़ीबत** या **बोहतान** पर मुश्तमिल होते हैं, इसी त़रह़ अक्सर औ़रतों की बातों में भी गुनाहों भरे कलिमात व मुह़ा-वरात की कसरत व बोहतात होती है। अभी एह़याउल उ़लूम के ह़वाले से आप ने इज्माली त़ौर पर **ग़ीबत** की मिसालें मुला-ह़ज़ा कीं, येह सारे के सारे अल्फ़ाज़ आज भी मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में हमारे यहां बत़ौरे **ग़ीबत** राइज हैं। इस के इलावा भी मैं अपनी नाक़िस मा'लूमात के मुत़ाबिक़ उर्दू ज़बान और

अपने गिर्दो पेश के माह़ोल में बोले जाने वाले ऐसे अल्फ़ाज़ और जुम्लों की तफ़्सीली त़ौर पर निशान देही करने की कोशिश करता हूं जिन में अक्सर का तअ़ल्लुक **ग़ीबत** से है जब कि बुराई बयान करने के लिये पीठ पीछे कहे जाएं। मौक़अ़ मह़ल और निय्यत की ख़राबियों के ए'तिबार से बसा अवक़ात येही अल्फ़ाज़ **ऐ़ब दरी** या **तोहमत** या **बद गुमानी** या **गाली** या **बद अल्क़ाबी** या **दिल आज़ारी** वग़ैरा बल्कि एक ही वक़्त में इन छ[6] समेत मज़ीद कई गुनाहों पर भी मुन्त़बिक़ (या'नी लागू) हो सकते हैं। अगर येह **मिसालें** आप ज़ेह्न नशीन फ़रमा लेंगे और आख़िरत के नुक़्सान से बचने की कुढ़न नसीब हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के ज़रीए़ गुनाहों भरे मज़ीद बे शुमार कलिमात व फ़िक़रात ख़ुद ही समझ में आ जाएंगे और इन गुनाहों से दूर रहने में बहुत ही मदद मिलेगी। पढ़ने वाले की दिल चस्पी और सहूलत के लिये मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात की सुर्ख़ियां लगा कर मिसालों को बयान किया गया है। शैत़ान लाख कोफ़्त दिलाए मगर आप गोश बर आवाज़ रहिये और ख़ूब तवज्जोह से **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों के दलदल में धंसाने वाले अल्फ़ाज़ और जुम्ले समाअ़त फ़रमाते चले जाइये :

## "ग़ीबत ईमान को काट देती है" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से पड़ोसियों के बारे में ग़ीबतों की 20 मिसालें

❁ उस जैसे पड़ोसी से तो **अल्लाह** बचाए ❁ फ़ुलां पड़ोसन चाल चलन की अच्छी नहीं ❁ उस की लड़कियां ख़राब हैं ❁ उस के सारे लड़के नम्बरी हैं ❁ वोह पड़ोसन तो जब देखो कुछ न कुछ मांगने आ जाती है माचिस तक घर में नहीं रखी ❁ उस के घर का माह़ोल बहुत बुरा है ❁ इस को ज़रा मुंह दे दिया तो अब जब देखो ठीक खाने के वक़्त किसी न किसी बहाने से आ जाती है ❁ उस की नाक बहुत तेज़ है हमारे खाने की ख़ुश्बू उसे फ़ौरन पहुंच जाती है ❁ आए दिन उस के हां तो झगड़ा ही रहता है ❁ मियां बीवी की आपस में बनती नहीं ❁ उन की लड़की घर से भाग गई है ❁ कल उस के बड़े बेटे ने उस पर हाथ उठाया था ❁ वोह पड़ोसी तो बिल्कुल पड़ोसियों का कोई ह़क़ ही नहीं जानता ❁ ऊपर की मन्ज़िल वाला बुड्ढा बहुत सताता है ❁ पहली

मन्ज़िल वाले के बच्चे बहुत शरारती हैं ❁ एक तो मेरे बच्चे को उस के बच्चे ने मारा, जब फ़रियाद ले कर गया तो ऊपर से मुझ से झगड़ने लगा ❁ उस के बच्चों की शिकायत करूं तो बिल्कुल नहीं सुनता ❁ बिग़ैर दस्तक दिये हमारे घर के अन्दर घुस जाता है ❁ हमारा मकान मालिक ऊपर की मन्ज़िल पर रहता है ऐसा तंग करता है कि बस क्या कहूं ❁ उस पड़ोसी के बेटे की धूमधाम से शादी हुई मगर हमें झूटे बहाने शादी कार्ड तक नहीं दिया वरना हम कौन सा उन के खाने के लिये बैठे हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम को बहुत दिया है।

## "ग़ीबत की हलाकत ख़ैज़ियां" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से मंगनी/शादी में ग़ीबतों की 17 मिसालें

**जब** रिश्ता तै करना होता है तो फ़रीक़ैन मीठे मीठे बन कर तरकीब बना लेते हैं, मगर इस दौरान भी और बा'द में तो अक्सर **ग़ीबतों** का सिल्सिला रहता है इस की 17 मिसालें मुला-हज़ा हों : ❁ बे मुरव्वत लोग हैं ❁ घर आ कर दा'वत देनी चाहिये थी ❁ सिर्फ़ कहलवा दिया या ❁ फ़ोन से ही गुज़ारा कर लिया ❁ सास ने किसी को बुलाने के लिये भी नहीं भेजा ❁ हम ने उन को अपने यहां के लिये ज़ियादा आदमियों को साथ लाने की दा'वत दी थी मगर उन्हों ने हम को बहुत थोड़े आदमियों की दा'वत दी है ❁ मैं दा'वत में गया तो सुसर ने मुझे ख़ास लिफ़्ट नहीं दी ❁ मुझे येह तक नहीं बोला कि "और खाओ" ❁ लड़की वालों की त़रफ़ से बहुत दिन हुए कोई दा'वत नहीं मिली येह कोई त़रीक़ा है ! ❁ कन्जूस मक्खी चूस हैं ❁ खाने का सिर्फ़ पतीला भिजवा दिया देग आनी चाहिये थी ❁ सास का दिल बहुत छोटा है ❁ आम की सिर्फ़ एक ही पेटी भेजी और ❁ आम भी बस ऐसे ही थे ❁ बड़े भाई के लिये घड़ी ❁ बाजी के लिये सूट और ❁ अम्मी के लिये चादर की तरकीब थी मगर हर चीज़ घटिया पकड़ाई वग़ैरा वग़ैरा। इन में बा'ज़ तो वोह **ग़ीबतें** हैं जिन को शायद "चोरी और सीना ज़ोरी" कहें तब भी ग़लत़ नहीं क्यूं कि अव्वल तो जिन चीज़ों के गिले शिक्वे हो रहे हैं उन के अन्दर अक्सर **रिश्वत** की भयानक आफ़त भी शामिल है। म-सलन येह मुता-लबात करना कि लड़के के भाई और

वालिदैन को लड़की वाले येह येह चीज़ें देंगे तो ही हम रिश्ता करेंगे तो येह "रिश्वत" हुई लड़की वाले अगर तहाइफ़ नहीं देते तो लड़के वाला फ़रीक़ ता'ने महने देता है लिहाज़ा अपनी लड़की को सुसराल वालों के शर से बचाने के लिये आम की पेटियां और खाने के पतीले वग़ैरा पेश किये जाते हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحمٰن फ़रमाते हैं : "**रिश्वत** वोह है जो बा'ज़ क़ौमों में राइज है कि अपनी बेटी या बहन का रिश्ता किसी से उस वक़्त तक नहीं करते जब तक ख़ातिब (या'नी निकाह़ का पैग़ाम देने वाले) से अपने लिये कोई चीज़ ह़ासिल न कर लें, नीज़ **रिश्वत** वोह है कि कोई शख़्स अपने ज़ेरे विलायत (या'नी ज़ेरे सर परस्ती) लड़की का रिश्ता तो कर दे मगर अपने लिये कुछ लिये बिग़ैर वोह लड़की शोहर के ह़वाले न करे।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 12, स. 257) **याद रखिये** ! रिश्वत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : اَلرَّاشِیْ وَالْمُرْتَشِیْ فِی النَّارِ या'नी रिश्वत देने वाला और रिश्वत लेने वाला दोनों जहन्नमी हैं। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرانی ج١ ص٥٥٠ حدیث٢٠٢٦)

**रिश्वत से तौबा का त़रीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जिस ने रिश्वतें ली हों, अब नादिम है तो सिर्फ़ ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं, तौबा के साथ साथ सारी **रिश्वतें** उन को लौटाना होंगी जिन जिन से ली हैं, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को दे, उन का भी पता न लगे तो फ़क़ीर को दे दे। **रिश्वत** की मज़ीद मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 540 ता 554 का मुता-लआ़ फ़रमा लीजिये।

## "मुसल्मान की आबरू रेज़ी ह़राम है" के बाईस ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुसराली रिश्तों की ग़ीबतों की 22 मिसालें

❁ मेरी बहन को उस की सास तंग करती है ❁ बहनोई घर का ख़र्च नहीं देता ❁ कमा कर सब मां को दे देता है ❁ दामाद मेरी बेटी पर ज़ुल्म करता है ❁ अपनी मां की बातों में आ कर बार बार घर से निकाल देने की तड़ियां देता है ❁ मां के चढ़ाने पर बात बात पर मारता है ❁ त़लाक़ की धम्कियां देता है ❁ रात देर तक घर से बाहर रहता है ❁ दिन को देर तक सोता

रहता है ❁ हड ह़राम है ❁ दूसरी औ़रत के चक्कर में है ❁ इस के दोस्त अच्छे नहीं हैं ❁ सुना है नशा वग़ैरा भी करता है ❁ हम को बहुत मन्हूस आदमी से पाला पड़ गया है ❁ एवई (या'नी बस ऐसा ही) है ❁ ज़हरीला सांप है ❁ उस के दिल में दग़ा है ❁ उजड ❁ गंवार ❁ जाहिले मुत्लक़ है ❁ बेटे की सास जादूगरनी है ❁ बहू ने ता'वीज़ गन्डे करवा कर मेरे बेटे को अपनी त़रफ़ कर लिया है इस लिये बेटा मेरी एक नहीं सुनता।

## "ग़ीबत ना जाइज़ व ह़राम है" के सतरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मयके जा कर सुसराल के मु-तअ़ल्लिक़ की जाने वाली ग़ीबतों की 17 मिसालें

❁ सास हर वक़्त मुंह फुलाए रहती है ❁ बात बात में कीड़े निकालती है ❁ मेरा पकाना उसे पसन्द ही नहीं आता ❁ मेरी त़बीअ़त ख़राब हो तो सास कहती है बहाने बनाती है ❁ दूसरी बहू को बड़ा चाहती है मेरे साथ पराया सुलूक क्यूं करती है ❁ बड़ी अख्खड़ और सख़्त मिज़ाज है ❁ मुझ पे हर वक़्त अपना हुक्म चलाती रहती है ❁ शोहर को मेरे ख़िलाफ़ भड़काती है ❁ सास मुझ से काम बहुत करवाती है ख़ुद सारा दिन बिस्तर पर पड़ी रहती है ❁ मां बेटी मिल कर मेरी बुराइयां करती रहती हैं ❁ सास ने शोहर को मेरे ख़िलाफ़ कर दिया है अब ❁ मैं उन्हें सोना बन कर भी दिखाऊं वोह मुझे पाउं की जूती ही समझेंगे ❁ कई कई घन्टे उन का इन्तिज़ार करती हूं आते ही मुंह फुला कर बैठ जाते हैं ❁ उन की कलमुखी त़लाक़न बहन की भी ख़िदमतें करनी पड़ती हैं ❁ मेरी फुलां त़लाक़न नन्द बड़ी मुंहफट है ❁ त़लाक़ ली मगर ज़ोर नहीं गया ❁ सुना है उस ने अपने मियां को एक दिन भी सुख नहीं दिया था आख़िर बेचारा त़लाक़ न देता तो क्या करता।

## "ग़ीबत करने वाला बरोज़े क़ियामत कुत्ते की शक्ल में आएगा" के सेंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मंगनी टूटने या त़लाक़ होने पर की जाने वाली ग़ीबतों की 37 मिसालें

**अगर** मंगनी टूट जाए या त़लाक़ वाक़ेअ़ हो जाए तो अक्सर शैत़ान फ़रीक़ैन को कान पकड़

कर रिंग में लाता और वोह नाच नचाता है कि अल अमान वल ह़फ़ीज़ !!! **ग़ीबतों,** तोहमतों, इल्ज़ाम तराशियों, ऐब दरियों, दिल आज़ारियों, बद गुमानियों और बद कलामियों का एक तूफ़ान खड़ा हो जाता है, हर ख़ूबी भी ''ऐब'' बन कर रह जाती है ! हर फ़रीक़ अपने आप को ''मज़्लूम'' साबित करने के लिये एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर **झूट** बोलता है ह़ालां कि बरसों से घर चल रहा होता है मगर जब दो ख़ानदानों में ''जंग'' छिड़ती है, तो फ़रीक़े मुक़ाबिल को مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ''बद अ़क़ीदा'' तक कह दिया जाता है ! ऐसे मवाक़ेअ़ पर की जाने वाली **ग़ीबतों** की 37 मिसालें मुला-ह़ज़ा हों : **लड़की वालों की त़रफ़ से ग़ीबतें :** ❁ शराबी था ❁ जूआरी ❁ लुच्चा ❁ लफ़ंगा ❁ लोफ़र ❁ आवारा था ❁ 420 था ❁ कमाता नहीं था ❁ घर का ख़र्च नहीं देता था ❁ सब पैसे मां के हाथ में दे देता था ❁ उस ने कभी घर को घर नहीं समझा ❁ सास रोटी नहीं देती थी इस लिये लड़की पल्ले से खाती थी ❁ बहुत ज़ालिम लोगों से पाला पड़ा था ❁ फंस गए थे ❁ बड़ी मुश्किल से जान छूटी है ❁ हमारी लड़की को बे क़ुसूर मारता था ❁ हमारे सामने बहुत अकड़ता था ❁ उस का सारा ख़ानदान नीच है हमारे मे'यार के लोग ही नहीं थे ❁ हमारी लड़की पर सोकन लाना चाहता था ❁ हमें जान से मारने की धम्कियां देने लगा था ❁ हमारी लड़की को बदनाम करना शुरूअ़ कर दिया था ❁ कमीने ने आख़िर अपनी ज़ात दिखाई । **लड़के वालों की त़रफ़ से ग़ीबतें :** ❁ लड़की का चाल चलन सह़ीह़ नहीं था ❁ बहुत सारे आशना बना रखे थे ❁ घर में ज़बान बहुत चलाती थी ❁ इस की मां ने खाना पकाना भी नहीं सिखाया था ❁ बरतन भी मांझने नहीं आते थे ❁ कपड़े भी बराबर नहीं धो सकती थी ❁ बहुत झगड़ालू थी ❁ चोरियां करती थी ❁ ता'वीज़ गन्डे करवाती थी ❁ जादूगरनी थी ❁ चुड़ैल थी ❁ हमारे घर का सुकून बरबाद कर दिया था ❁ इस की मां घर आ कर हम को कोसनें दे गई थी ❁ हम को इस ने बदनाम कर दिया है ❁ हम ने ग़रीब समझ कर तर्स खाया था मगर उस का तो दिमाग़ आस्मान पर पहुंचा हुवा था वग़ैरा वग़ैरा ।

**घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हिदायते ख़ैर की

दुआ है, यक़ीनन जो **ग़ीबतें** वग़ैरा करता है वोह बहुत ही **बुरा बन्दा** है। आइये ! आप को एक अच्छे बन्दे की **ह़िकायत** अ़र्ज़ करूं चुनान्चे एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक साह़िबे राज़ (या'नी पेट के मज़्बूत़ आदमी) का निकाह़ हुवा मगर दोनों के माबैन ज़ेह्नी हम-आहंगी का फ़ुक़्दान था (या'नी कमी थी) किसी त़रह़ उस के दोस्त को इस बात की भनक मिल गई, उस ने पूछा : तुम्हारे घर का क्या मस्अला है ? उस साह़िबे राज़ ने जवाब दिया : मैं इतना कमज़ात नहीं कि घर की बात किसी को बता दूं ! बात आई गई हो गई। बिल आख़िर घर न चल सका और त़लाक़ देनी पड़ गई। जब उस के दोस्त को पता चला तो बोला : वोह तो अब तुम्हारी बीवी नहीं रही, बता दो क्या मुआ़-मला था ? उस समझदार शख़्स ने जवाब दिया : अब तो वोह मेरे लिये गोया ग़ैर औ़रत हो चुकी है और किसी ग़ैर औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ मैं कैसे बात करूं !

*अल्लाह हम को फ़ज़्ल से अ़क़्ले सलीम दे*
*शर्मो ह़या तू बहरे रसूले करीम दे*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**जोड़ों की बीमारी भी गई और बे रोज़गारी भी गई :** **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, **म-दनी क़ाफ़िले** की एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे एक इस्लामी भाई को एक त़रफ़ बे रोज़गारी थी तो दूसरी त़रफ़ **जोड़ों के दर्द** की पुरानी बीमारी थी, तंगदस्ती और शदीद दर्द के बाइ़स सख़्त बेज़ारी थी, बहुत इलाज करवाया मगर कुछ फ़ाएदा न हुवा। किसी इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ ज़ेह्न बना कर दा'वते इस्लामी के **आ़शिक़ाने रसूल** के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब बना दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरे सफ़र और आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़त भरी सोह़बत

की ब-र-कत से **उन की बरसों पुरानी जोड़ों की बीमारी जाती रही।** म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर दूसरे ही दिन एक इस्लामी भाई आए और उन्हों ने उन्हें काम पर लगा कर उन के रोज़गार की तरकीब भी बना दी।

*जोड़ जोड़ आप के, हों अगर दुख रहे　　कर के हिम्मत चलें, क़ाफ़िले में चलो*

*तंगदस्ती मिटे, रिज़्क़ सुथरा मिले　　दर करम के खुलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मुर्दे को अच्छा पड़ोस दो : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से जोड़ों का पुराना दर्द भी टला और रोज़गार भी मिला। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत जहां ज़िन्दगी में रह़मत दिलाती है, वहां मरने के बा'द भी राह़त का सामान फ़राहम करती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िलों के सदक़े हमें मरने के बा'द आ़शिक़ाने रसूल का पड़ोस नसीब फ़रमाए। मरने के बा'द मिलने वाली अच्छी सोह़बत की ब-र-कत की झलक मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** (मुकम्मल) सफ़ह़ा 270 पर है : अपने मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफ़्न करो कि इन की ब-र-कत के सबब उन पर अ़ज़ाब नहीं किया जाता। **هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُم** या'नी येह ऐसी क़ौम है जिस का हम-नशीन भी मह़रूम नहीं रहता। व लिहाज़ा ह़दीस में फ़रमाया : **اِدْفِنُوْا مَوْتَاكُمْ وَسْطَ قَوْمٍ صَالِحِيْنَ** या'नी अपने मुर्दों को नेकों के दरमियान दफ़्न करो। (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج۱ ص۱۰۲ حديث۳۳۷) **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ज़िम्न में एक निहायत ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं :

**गुलाब के फूल या अज़्दहों के मुंह ! : मैं** ने ह़ज़रत मियां साह़िब क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّهٗ को फ़रमाते सुना : एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा। देखा कि **गुलाब** की दो शाख़ें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो फूल उस के नथनों पर रखे हैं। उस के अ़ज़ीज़ों

ने इस ख़याल से कि यहां क़ब्र पानी के सदमे से खुल गई, दूसरी जगह क़ब्र खोद कर उस में रखा, अब जो देखा तो **दो अज़्दहे** (या'नी दो बहुत बड़े सांप) उस के बदन से लिपटे अपने फनों से उस का मुंह भम्भोड़ (या'नी नोच) रहे हैं, हैरान हुए। किसी साहिबे दिल से येह वाक़िआ बयान किया, उन्हों ने फ़रमाया : वहां भी येह अज़्दहे ही थे मगर एक **वलिय्युल्लाह** के मज़ार का क़ुर्ब था, उस की ब-र-कत से वोह अ़ज़ाब रहमत हो गया था, वोह अज़्दहे दरख़्ते गुल की शक्ल हो गए थे और उन के फन **गुलाब के फूल**। इस की (मय्यित की) ख़ैरियत चाहो तो वहीं ले जा कर दफ़्न करो। वहीं ले जा कर रखा फिर वोही दरख़्ते गुल थे और वोही **गुलाब के फूल।**

## "ग़ीबत एक नासूर है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से दा'वतों में की जाने वाली ग़ीबतों की 14 मिसालें

❁ **अल्लाह** ने बहुत कुछ दिया है, पहले बेटे की शादी है मगर ख़र्च करने में हाथ खींच कर रखा है ❁ खाने की डिशें कम की हैं ❁ सजावट पर ख़र्च कम किया है ❁ ख़र्च बचाने के लिये मेहमान कम बुलाए हैं ❁ गोश्त बूढ़े बैल का है जभी तो नहीं गला ❁ बकरे का गोश्त होना चाहिये था येह कहां ग़रीब है ! ❁ पानी में बर्फ़ भी नहीं डलवाया ! ❁ डेकोरेशन का सामान भी बस ऐसा ही मंगवाया है ! ❁ ग़रीब आदमी है क़र्ज़े ले कर दुन्या को दिखाने के लिये इतनी बड़ी दा'वत करने की क्या ज़रूरत थी ! ❁ खाना तो ज़रा अच्छे बावर्ची या "किचन" से बनवाया होता ❁ सस्ते "किचन" से फिर खाना कैसा बनेगा ! ❁ उस ने मीठी डिश में सिर्फ़ फ़िरनी से गुज़ारा कर लिया है ❁ ज़र्दा भी होना चाहिये था ❁ बचा हुवा खाना फेंकने के बजाए मद्रसे भेज कर कौन सी सख़ावत की है !

## "ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से बेटे के बारे में ग़ीबत की 16 मिसालें

**अपनी** समझदार औलाद को सब के सामने बुरा भला कहते रहने से उन का दिल दुखता, इस्लाह के बजाए बिगाड़ बढ़ता है, और बिला मस्लहते शर-ई पीछे से ख़ामियां बयान करने से

**ग़ीबतों** का गुनाह मिलता और औलाद को पता लग जाने की सूरत में उस का बाग़ियाना ज़ेह्न बनता है। और दोनों जहान के नुक़्सान व ख़ुसरान का सामान पैदा होता है। लिहाज़ा औलाद की शफ़्क़त व हिक्मत के साथ तरबियत करनी चाहिये। बा'ज़ मां बाप मुंह भर कर औलाद की **ग़ीबतें** किया करते हैं इस के बे शुमार जुम्लों में से नुमूनतन 16 मिसालें पेश की जाती हैं : ۞ सब से बड़ा बेटा **ना फ़रमान** ۞ ज़िद्दी और ۞ बद तमीज़ है ۞ मेरी इ़ज़्ज़त नहीं करता ۞ कमा कर दोस्तों में उड़ा देता है ۞ घर का एक भी काम नहीं करता ۞ दुकान पर वक़्त नहीं देता ۞ रात बहुत देर से आता है और अपनी मां को रुलाता है ۞ हम को बहुत सताता है ۞ रात देर से सोता और फ़ज्र में नहीं उठता ۞ छोटे बहन भाइयों को मारता है ۞ बीमार बाप की ख़बर नहीं लेता ۞ बाप को सामने जवाब देता है ۞ अपनी मां को झाड़ देता है ۞ घर में सीधे मुंह किसी से बात नहीं करता ۞ बाहर तो सब से "जी जनाब" से बात करता है मगर घर में तू तड़ाक़ से।

## "ग़ीबत मह़ब्बतें मिटाती है" के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से बाप के बारे में ग़ीबत की 17 मिसालें

۞ मेरी मां को मारते हैं ۞ पूरी ख़र्ची नहीं देते ۞ सुना है जूआ की लत पड़ गई है ۞ मां के ज़ेवरात बेच कर खा लिये हैं ۞ बुरी सोह़बत की वज्ह से रात देर से घर में आते हैं और फिर झगड़ते हैं और सब की नींदें ख़राब करते हैं ۞ सारा दिन सिगरेट फूंकते रहते हैं ۞ घर को कभी घर नहीं समझा ۞ घर में गन्दी गन्दी गालियां निकालते हैं जवान बेटी का भी लिह़ाज़ नहीं करते ۞ हम भाई बहन जवान हो गए हैं हमारी शादी की तरकीब क्या करेंगे, इस की तो बात सुनने के लिये भी तय्यार नहीं ۞ ज़बान बहुत चलाते हैं इस लिये ख़ानदान में सब से बिगड़ी हुई है ۞ जुमुआ की भी नमाज़ नहीं पढ़ते ۞ दीन की बिल्कुल समझ नहीं ۞ पक्के दुन्यादार हैं ۞ दा'वते इस्लामी वालों को अच्छा नहीं समझते ۞ मुझे दा'वते इस्लामी से रोकते हैं कहते हैं

मैं तुम को मौलवी नहीं बनने दूंगा ۞ मेरा इमामा छुपा दिया था बड़ी मुश्किल से अम्मी ने ढूंड कर दिया है ۞ मुझे इज्तिमाअ़ से मन्अ़ करते हैं वग़ैरा।

**वस्वसा :** बाप इज्तिमाअ़ से रोके, दाढ़ी और इमामा न बांधने दे वाक़ेई बे नमाज़ी और पक्का दुन्यादार हो फिर भी येह बातें सच सच बयान करना क्यूंकर **ग़ीबत** हो गया ?

**वस्वसे का जवाब :** येह बातें सच हैं जभी बिला मस्लहते शर-ई पीछे से बयान करना **ग़ीबत** हैं, इस त़रह़ की बातों से आप के वालिद साहिब की इ़ज़्ज़त में कमी ही आएगी और वोह लोगों की निगाहों में ज़लील होंगे, जब उन को पता चलेगा कि लोगों को आप येह सारी बातें बता देते हैं तो यक़ीनन वोह आप से ख़ुश नहीं बल्कि नाराज़ ही होंगे कि तुम मुझे बदनाम कर रहे हो, इस त़रह़ और ख़राबियां पैदा होंगी और घर में फ़साद खड़ा होगा। बाप तो फिर बाप है उस के हुक़ूक़ से दुन्या में ओ़हदा बर-आ होना मुम्किन नहीं। किसी और मुसल्मान के बारे में भी अगर आप कहेंगे कि "वोह पक्का दुन्यादार आदमी है" "जुमुआ़ भी नहीं पढ़ता" तो अगर्चे वोह वाक़ेई ऐसा ही हो फिर भी वोह पीठ थपक कर आप को शाबाश नहीं देगा बल्कि यक़ीनन उस का दिल दुखेगा लिहाज़ा बिला इजाज़ते शर-ई किसी भी मुसल्मान के बारे में कोई ऐसा लफ़्ज़ न बोला जाए जो उसे मा'लूम हो तो ना गवार गुज़रे।

## "ग़ीबत की नुहूसतें" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से मां की त़रफ़ से बेटी की ग़ीबत की 13 मिसालें

۞ गुस्से की बहुत तेज़ है ۞ बहुत चिड़चिड़ी और ۞ ज़िद्दी हो गई है ۞ मेरी बिल्कुल नहीं सुनती ۞ घर में झाड़ू पोचे नहीं लगाती ۞ धोने पकाने में मेरा हाथ नहीं बटाती ۞ हर वक़्त कंघी चोटी में लगी रहती है ۞ ज़रा कोई भलाई की बात करूं तो रोने बैठ जाती है ۞ हर बात में अपनी चलाती है ۞ दोनों बहनों की बिल्कुल नहीं बनती ۞ मेरी बिल्कुल इ़ज़्ज़त नहीं करती ۞ बहुत ज़बान दराज़ है ۞ बात बात पर मुझ से झगड़ती है।

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

## "ग़ीबत करने वाले दोज़ख़ के खौलते हुए पानी व आग के दरमियान मौत मांगते दौड़ते फिरते होंगे" के सड़सठ हुरूफ़ की निस्बत से घरों में ड़मूमन बोले जाने वाले ग़ीबतों के अल्फ़ाज़ की 67 मिसालें

❁ **बुध्धू** ❁ लचर ❁ अह़मक़ ❁ **बे वुक़ूफ़** ❁ बचकाना ज़ेह्न है ❁ बात ज़रा देर से समझता है ❁ कोई भाषा नहीं समझता ❁ घर में सब से लड़ता है ❁ मां को सताता है ❁ बाप को तंग कर के रख दिया है ❁ दिन को देर तक सोता रहता है ❁ उस की बीवी बद ज़बान है ❁ वोह अपनी बेगम से डरता है ❁ उस के घर में रोज़ रोज़ लड़ाई झगड़े होते हैं ❁ बड़ा बेटा ख़र्चा नहीं देता ❁ बेटी ❁ या बेटा मेरी इ़ज़्ज़त नहीं करता ❁ मेरा बेटा शादी के बा'द लड़ कर घर से अलग हो गया ❁ मेरा बेटा मेरा ना फ़रमान है ❁ बेटा सारा दिन घर में पड़ा रहता है ❁ निखट्टू ❁ निकम्मा ❁ नाकारा ❁ ढीला ❁ **सुस्त** ❁ कामचोर है ❁ चिड़चिड़ा ❁ ख़र दिमाग़ ❁ ग़ुस्से वाला ❁ दिमाग़ का गर्म ❁ मग़ज़ का तीखा है ❁ अड़ियल ❁ अड़ीबाज़ ❁ हटीला ❁ ज़िद्दी है ❁ शोर मचाता ❁ भौंकता ❁ हाउ हाउ करता है ❁ ना शुक्रा ❁ बे सब्रा ❁ वहमी ❁ ला उबाली ❁ चन्चल ❁ लड़ाकू ❁ घर घुसड़ू ❁ घर घुसना ❁ हर वक़्त खाता रहता है ❁ आवारा ❁ मवाली ❁ ला परवाह है ❁ सफ़ाई नहीं रखता ❁ उस का कोई ढंग धड़ा नहीं ❁ किसी की नहीं सुनता ❁ बस अपनी मन मानी करता है ❁ घर की बात बाहर बोल आता है ❁ चुप चुप ! वोह आ रहा है, सुन लेगा तो बाहर फूंक आएगा ❁ कान का कच्चा ❁ पेट का हलका है ❁ इस के पेट में कोई बात नहीं समाती ❁ ढोल है ❁ ढंडोरा पीट देता है ❁ B.B.C है ❁ फ़ुलां का बेटा किसी लड़की के चक्कर में है ❁ इस के बच्चे बहुत शरारती हो गए हैं ❁ बच्चों को बिगाड़ रखा है ❁ अपने बाल बच्चों का ख़याल नहीं रखता ❁ बाहर भीगी बिल्ली बन कर रहता है मगर घर में शेर है।

## "फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू से बचिये" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से ज़ाती मुआ़-मलात के फ़ुज़ूल सुवालात की 15 मिसालें

**बा'ज़** लोगों की आ़दत होती है कि घरेलू मुआ़-मलात की टोह में लगे रहते और ऐसे ऐसे सुवालात करते हैं कि आदमी शरमा जाता है, शर्म मगर उन को नहीं आती। सारे सुवालात अगर्चे गुनाहों भरे नहीं होते मगर पूछने वाले से सुलझे हुए लोग बदज़न होते और बा'ज़ ग़ैर मोह़तात़ अफ़राद मुरव्वतन झूट या **ग़ीबत** के गुनाह में जा पड़ते हैं। **ऐसे ख़ानगी मुआ़-मलात के फ़ुज़ूल सुवालात की 15 मिसालें मुला-ह़ज़ा हों :** ❁ क्या काम करते हो ?❁ तन-ख़्वाह कितनी है ? ❁ सेठ सह़ीह़ आदमी है या नहीं ? (बिला इजाज़ते शर-ई येह सुवाल गुनाह भरा है और सामने वाले को गुनाह में डाल सकता है) ❁ कितने भाई बहन हो ? ❁ इन में कौन कौन शादी शुदा है ? ❁ आप के बच्चे कितने हैं ? ❁ बड़े बच्चे की कितनी उ़म्र है ? ❁ ओहो ! येह जवान हो गया है ❁ इस की शादी कब करवा रहे हो ? ❁ मकान ज़ाती है या किराए का ? ❁ आप की उ़म्र काफ़ी हो गई है, शादी में क्या रुकावट है ? ❁ बड़ी बहन घर में क्यूं बैठी हुई है ? ❁ आप की बेटी مَاشَاءَاللهُ जवान हो गई है रिश्ता क्यूं नहीं कर रहे ? ❁ बड़ा भाई कहां नोकरी करता है ? ❁ घर में भी पैसे देता है या नहीं ? (येह सुवाल भी बिला मस्लह़ते शर-ई हो तो गुनाह भरा है और सामने वाले को गुनाह में डाल सकता है)

## "ग़ीबत ह़राम व गुनाह है" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से ख़ानदान के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 15 मिसालें

**किसी** मुसल्मान के ह़सब नसब की कमज़ोरी का बिला इजाज़ते शर-ई बत़ौरे ऐ़ब तज़्किरा करना भी **ग़ीबत** है, इस की 15 मिसालें मुला-ह़ज़ा हों **:** ❁ उस का बाप चपरासी (PEON) है ❁ उस का दादा मोची है ❁ वोह ख़ानदानी मीरासी है ❁ उस का दादा पेशावर भिकारी था ❁ येह भले पढ़ा लिखा है मगर येह लोग ख़ानदानी ह़जाम हैं ❁ येह अफ़्सर बन गया है मगर इस

का बाप दफ़्तर में झाड़ पूंछ करता और गन्द कचरा उठाता था ❁ इस की दादी गाय का गोबर उठा कर लाती और उपले थाप कर बेचती थी ❁ येह जो अ़रब साहि़ब हैं, अस्ली अ़-रबी नहीं इन के बाप दादा हिन्दी (सिन्धी या बलूची या पंजाबी) हैं ❁ वोह नौ जवान जो अभी गुज़रा उस की मां त़वाइफ़ थी ❁ उस का वालिद शादियों की तक़रीबों में नाचने का पेशा करता था ❁ फ़ुलां का घटिया ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ है ❁ उस की बिरादरी ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ नहीं मानी जाती ❁ उस का वालिद मालिश्या था (या'नी लोगों की तेल मालिश करने का काम करता था) ❁ वोह चरवाहे का बेटा है ❁ येह जो सय्यिद कहलाता है, इस से इस का नसब नामा पूछ लो, मैं इन लोगों को जानता हूं, ख़ानदानी फ़क़ीर हैं।

## "ग़ीबत में आख़िरत की बरबादी है" के इक्कीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से परेशान ह़ालों के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 21 मिसालें

❁ उस का दीवालिया निकल गया है ❁ बहुत क़र्ज़ा ले लिया था अब फंस गया है और मुंह छुपाता फिरता है ❁ क़र्ज़ ख़्वाहों से पीछा छुड़ाने के लिये घर से भाग गया है ❁ क़र्ज़ा अदा नहीं किया तो उस पर क़र्ज़-ख़्वाह ने केस कर दिया है ❁ फ़ुलां को पोलीस पकड़ कर ले गई है ❁ लॉकअप या जेल में बन्द हो गया है ❁ उस की इम्लाक का नीलाम होने वाला है ❁ उस की इम्लाक ज़ब्त़ हो गई हैं ❁ उस की मंगनी टूट गई है ❁ उस को कोई रिश्ता नहीं दे रहा ❁ वोह त़लाक़न या ❁ त़लाक़ड़ी ❁ या मुत़ल्लक़ ❁ या त़लाक़ शुदा है ❁ वोह बांझ है ❁ उस की लड़की भाग गई है ❁ उस के बेटे ने कोर्ट में जा कर अपनी पसन्द की शादी कर ली है ❁ उस को सुसराल वालों ने धक्के मार कर घर से निकाला ❁ उस बद मआ़श के आगे ज़बान चलाने की क्या ज़रूरत थी, उस ने उठा कर घूंसा दे मारा और इस के दांत तोड़ डाले ❁ कैसा अकड़ी दिखाता था, आख़िर सवा सैर टकरा ही गया और उस ने इस का सर फाड़ डाला ❁ मेरे मन्अ़ करने के बा वुजूद आधी रात को क़ीमती मोबाईल फ़ोन ले कर निकला, डाकू ने छीन लिया, अब नाक कटी तो बैठा।

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

# "ग़ीबत की नुहूसत" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से मरीज़ों की ग़ीबतों की 11 मिसालें

❁ शूगर का मरीज़ है मगर मौसिम में इस को दो आम चाहिएं ❁ ख़ूब आम खाता है फिर फोड़े हो जाते हैं ❁ इस को ठन्डा पानी और खटाई नहीं चलती मगर मानता नहीं है फिर हर वक़्त खांसता रहता है ❁ इस का पेट ख़राब रहता है क्यूं कि वज़्नी गिज़ाओं से बाज़ नहीं आता ❁ ख़ूब पेट निकला हुवा है मगर नाश्ते (या स–ह़री) में पराठे खाता है ❁ वोह मोटापे से अगर्चे बेज़ार है मगर आम, मिठाई, कबाब समोसे और ठन्डी बोतलें छोड़ने के लिये तय्यार नहीं ❁ उस ने वक़्त बे वक़्त खा खा कर मेअ़्दा तबाह कर दिया है मगर अब भी डट कर खाने से बाज़ नहीं आता ❁ एक बार इस को दिल का दौरा पड़ चुका है मगर फिर भी इस को नाश्ते में मस्का बन चाहिये ❁ इस का कोलेस्ट्रोल हाई रहता है मगर पिज़्ज़े पराठे का शैदाई है ❁ इस को दाइमी क़ब्ज़ की शिकायत है मगर मुझ से कह रहा था, परहेज़ी कौन करे ❁ इस को डॉक्टर ने रोज़ाना पैदल चलने की ताकीद की है मगर सुस्ती करता है।

# "ग़ीबत दुआ की क़बूलिय्यत में रुकावट है" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से मरने वाले मुसल्मान की ग़ीबत की 25 मिसालें

❁ आदमी सह़ीह़ नहीं था ❁ मेरी रक़म खा गया था ❁ उस ने ख़ुदकुशी की ❁ फ़ुलां की बद दुआ लग गई और कुत्ते की मौत मरा ❁ गन्दे नाले (या गटर) में डूब मरा येह उस के गुनाहों की सज़ा थी ❁ बैतुल ख़ला में मरा (अगर कोई मुरतद बैतुल ख़ला में मरे तो इब्रत के लिये तज़्किरा करने में ह़रज नहीं अलबत्ता मुसल्मान के साथ इस त़रह़ का ह़ादिसा हो तो उस का पर्दा रखना ज़रूरी है) ❁ फ़ुलां को कफ़न तक नसीब न हुवा कि ज़ालिम जो था ❁ मरने के बा'द भी उस के मुंह पर नुहूसत बरस रही थी ❁ रिश्वत ख़ोर था ❁ सूदख़ोर था ❁ मां बाप का गुस्ताख़ था ❁ पोलीस मुक़ाबले में कुत्ते की मौत मारा गया ❁ दूध में मिलावट किया करता था ❁ हेरोइन्ची

❁ चरसी ❁ शराबी ❁ जूआरी ❁ ज़ानी था ❁ मुनश्शियात फ़रोश था ❁ ह़राम कमाता और खाता था ❁ मुंह काला करने के दौरान ही उसे मौत ने आ लिया ❁ उस का फ़ुलां के साथ चक्कर था ❁ अपने पीछे ह़रामी औलाद छोड़ गया है ❁ मह़ल्ले के लोग उस से इतनी नफ़्रत करते हैं कि उस के जनाज़े में भी शामिल नहीं हुए ❁ अच्छा हुवा मर गया, ज़मीन पर बोझ था।

## "ग़ीबत से नफ़्रत बढ़ती है" के सतरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से डॉक्टर के बारे में ग़ीबत की 17 मिसालें

❁ ना तजरिबा कार है ❁ इस ने बीमारी को समझा ही नहीं ❁ बहुत गर्म दवाएं दे दीं ❁ पैसे बहुत लेता है ❁ ग़लत़ इन्जेक्शन लगा दिया है ❁ इन्जेक्शन लगाने में उस का हाथ भारी है ❁ सेम्पल की दवाएं बेच डालता है ❁ ऑपरेशन ग़लत़ कर दिया है ❁ बे रह़म है ❁ ऐसी दवाएं दे दीं कि मेरा मेअ्दा तबाह हो गया है ❁ बहुत महंगी दवाएं लिख देता है जिस से आ़रिज़ी त़ौर पर मरीज़ खड़ा तो हो जाता है मगर बा'द में तक्लीफ़ मज़ीद बढ़ जाती है ❁ बात बात पर TEST लिख देता है ❁ मरज़ को ख़्वाह म ख़्वाह गम्भीर बता कर ऑपरेशन कर दिया ❁ उस से ऑपरेशन करवाया था, फ़ेल हो गया ❁ फ़ुलां ने ग़लत़ ऑपरेशन कर दिया ❁ जब देखो ऑपरेशन ही की बात करता है मक़्सूद सिर्फ़ पैसे खींचना है और ❁ हम को दो लाख रुपै के ख़र्चे में उतार दिया है ! वग़ैरा वग़ैरा।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बेशक बा'ज़ डॉक्टर बद उ़न्वान भी होते हैं, अगर ऐसे डॉक्टर से किसी मरीज़ को बचाना मक़्सूद हो और इस की वज्ह से किसी मख़्सूस डॉक्टर की कमज़ोरी या ख़ामी सिर्फ़ उस के आगे बयान की जिस को बताना ज़रूरी था तो गुनहगार नहीं मगर अक्सर लोग बिला ह़ाजत **ग़ीबत** करते और गुनहगार होते हैं। येह ज़ेह्न में रहे कि कम्पनी वाले तश्हीर की ग़रज़ से डॉक्टरों को जो दवाएं मरीज़ों को मुफ़्त देने के लिये देते हैं उन पर NOT FOR SALE लिखा होता है, डॉक्टर उन दवाओं का मालिक नहीं सिर्फ़ "वकील" (या'नी नाइब) होता

है। लिहाज़ा ऐसी दवाएं बेचना और मा'लूम होने के बा वुजूद ख़रीदना गुनाह है। नीज़ फ़लाही इदारों या मालदारों की त़रफ़ से बीमारों के लिये अ़त़िय्ये (DONATION) में मिली हुई दवाएं बेच कर खा जाने वाले गुनहगार और अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं।

**डॉक्टरों की रहनुमाई के लिये :** **इस्लाम** से मह़ब्बत रखने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले डॉक्टरों की रहनुमाई के लिये दा'वते इस्लामी के **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** से जारी कर्दा एक इन्तिहाई मा'लूमाती फ़तवा पेशे ख़िदमत है। **अल जवाब :** डॉक्टर्ज़ को दवाओं की कम्पनी की जानिब से तोह़फ़तन जो दवाएं, घड़ी, क़लम और पेड वग़ैरा मिलते हैं वोह उ़मूमन मा'मूली होते हैं और कम्पनी येह अश्या अपनी मश्हूरी के लिये देती है क्यूं कि अक्सर अवक़ात उन पर कम्पनी का नाम भी मौजूद होता है जैसा कि बहुत से इदारे सालाना अपनी डायरी जारी करते हैं और मुख़्तलिफ़ लोगों को मुफ़्त देते हैं। लिहाज़ा इस मुआ़-मले पर उ़र्फ़ जारी होने की वज्ह से इन मा'मूली अश्या का लेना और कम्पनी का उन्हें देना जाइज़ है और येह **रिश्वत** के ज़ुमरे में नहीं।

**दवा की कम्पनियों की त़रफ़ से डॉक्टरों को रिश्वत :** इस के इ़लावा **कार**, A.C. और दीगर ममालिक के सफ़र के लिये टिकट वग़ैरा उ़मूमन कम्पनी की जानिब से तोह़फ़तन नहीं दिया जाता क्यूं कि डॉक्टर जो दवाई लिख कर दे रहा है वोह तो उस का काम है और वोह इ़लाज की रक़म भी वुसूल करता है। कम्पनी के लिये उस ने जुदागाना कोई ऐसा काम नहीं किया जिस की उजरत बनती हो लिहाज़ा शरअ़न येह कमीशन या उजरत नहीं। हां अगर **रिश्वत** ही को कमीशन कहें तो और बात है जैसा कि येह भी हमारे उ़र्फ़ ही में है कि बा'ज़ अवक़ात जब पोलीस किसी का काम करवा देती है तो उस पर **रिश्वत** लेती है मगर उसे रिश्वत कहने के बजाए अपने **ह़क़** या अपने **कमीशन** का नाम देती है तो ऐसा कमीशन भी **रिश्वत** ही है। कम्पनी के मुख़्तलिफ़ चीज़ें देने का मक़्सद सिर्फ़ अपनी मेडीसीन (दवाएं) ज़ियादा से ज़ियादा बिकवाना होता है तो काम निकलवाने के लिये देना **रिश्वत** है लिहाज़ा डॉक्टर कमीशन का मुत़ा-लबा करे तो **रिश्वत** का मुत़ा-लबा है और अगर मुत़ा-लबा न भी करे तब भी सरा-ह़तन या दला-लतन त़ै होने की (या'नी

खुले लफ़्ज़ों में या जो अ़लामत से ज़ाहिर हो, (UNDERSTOOD) हो उस) सूरत में रिश्वत ही है और **रिश्वत** ह़राम है।

**रिश्वत किसे कहते हैं ? :** सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : **रिश्वत** लेना **मुत़्लक़न ह़राम** है किसी ह़ालत में जाइज़ नहीं जो पराया ह़क़ दबाने के लिये दिया जाए **रिश्वत** है यूहीं जो अपना काम बनाने के लिये ह़ाकिम को दिया जाए **रिश्वत** है लेकिन अपने ऊपर से दफ़्ए़ ज़ुल्म के लिये जो कुछ दिया जाए देने वाले के ह़क़ में रिश्वत नहीं, येह दे सकता है (अलबत्ता) लेने वाले के ह़क़ में वोह भी **रिश्वत** है और उसे लेना ह़राम। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 597)

**रिश्वत की एक सूरत :** अपना काम बनाने के लिये जो ह़ाकिम को दिया जाए सिर्फ़ वोही **रिश्वत** नहीं बल्कि ह़ाकिम के इ़लावा को भी अगर अपना काम बनाने के लिये कुछ दिया जाए तो वोह **रिश्वत** ही है। जैसा कि **''जौहरए नय्यरह''** में है : अगर बीवियों में से कोई अपना ह़क़ अपनी सोकन के लिये छोड़ने पर राज़ी हो गई तो जाइज़ है और उसे रुजूअ़ का ह़क़ भी है इस लिये कि उस ने वोह ह़क़ साक़ित़ किया है जो अभी साबित नहीं हुवा था तो गोया येह तबर्रुअ़ हुवा और तबर्रुअ़ (या'नी एह़सान) के मुआ़-मले में इन्सान पर जब्र नहीं। और अगर किसी बीवी ने शोहर को इस लिये माल दिया ताकि वोह उस का ह़िस्सा दूसरी बीवियों की निस्बत ज़ियादा करे या शोहर ने बीवी को माल दिया ताकि वोह अपनी बारी का दिन अपनी सोकन के लिये कर दे तो येह ना जाइज़ है और माल उसी को वापस किया जाएगा जिस ने दिया है इस लिये कि येह **रिश्वत** है और **रिश्वत ह़राम** है। (جوہرہ ج۲ص۳٤)

**रिश्वत लेने देने वाले पर ला'नत : ह़ज़रते** सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **रिश्वत** देने वाले, **रिश्वत** लेने वाले और इन दोनों के दरमियान मुआ़-मला करवाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ ص۳۲۷ حدیث۲۲٤٦۲)

**अगर कम्पनी वाले डॉक्टर को तोह़फ़ा कह कर दें तो ? : अगर** कम्पनी वाले येह कहें कि हम बत़ौरे **तोह़फ़ा** डॉक्टर को येह अश्या देते हैं लिहाज़ा इस में कोई ह़रज नहीं होना चाहिये तो इस का जवाब येह है कि **तोह़फ़ा** और **रिश्वत** में एक बहुत वाज़ेह़ फ़र्क़ है और वोह येह है कि **रिश्वत** इस शर्त़ के साथ दी जाती है कि जिस को दी गई है वोह देने वाले का कोई काम करेगा जब कि **तोह़फ़ा** बिग़ैर किसी शर्त़ के दिया जाता है और सूरते मस्ऊला (या'नी पूछी गई सूरत) में इसी शर्त़ पर दिया जाता है कि डॉक्टर इसी कम्पनी की दवाएं लिखे, जो डॉक्टर इस कम्पनी की दवाएं नहीं लिखता उन्हें ''येह ख़ास तह़ाइफ़'' नहीं दिये जाते । ''**फ़त्हुल क़दीर**'' में है : **اَلْفَرْقُ بَیْنَ الرِّشْوَةِ وَالْهَدِیَّةِ اَنَّ الرِّشْوَةَ یُعْطِیْهِ بِشَرْطِ اَنْ یُّعِیْنَهٗ وَالْهَدِیَّةُ لَا شَرْطَ مَعَهَا** या'नी रिश्वत और तोह़फ़े में फ़र्क़ येह है कि **रिश्वत** इस शर्त़ पर दी जाती है कि जिसे रिश्वत दी गई वोह देने वाले की मदद करेगा जब कि तोह़फ़े के साथ ऐसी कोई शर्त़ नहीं होती । (فَتحُ الْقدیر ج۷ ص۲۰٤)

**बिला ह़ाजत टेस्ट या दवा लिख देना ख़ियानत है : डॉक्टर** के बक़िय्या दीगर मुआ़-मलात कि जिस दवाई या टेस्ट की ह़ाजत नहीं और उसे लिख दिया येह **ख़ियानत** है और बिला वज्ह मरज़ को बढ़ा चढ़ा कर बता कर मरीज़ और उस के घर वालों को तश्वीश में डालना इन्सानी और अख़्लाक़ी और इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ है और **झूट** होने की सूरत में झूट का गुनाह जुदा । दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है और मुसल्मान की परेशानी दूर करने वाले की परेशानियां **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन दूर करेगा । इन उमूर में जो अफ़राद, कम्पनियां, लेबॉरेटरियां शरीक हों वोह अपने तआ़वुन व शिर्कत की ब क़दर जुर्म में शरीक शुमार की जाएंगी । (फ़तवा यहां मुकम्मल हुवा)

**रिश्वत से तौबा का त़रीक़ा : डॉक्टर इस्लामी भाइयो !** ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है, नफ़्स की ह़ीला बाज़ियों में पड़ कर ''रिश्वत'' को हाथ मत लगाइये अगर **रिश्वत** ली है तो तौबा भी कीजिये और जिस से ली है उसी को लौटा दीजिये वोह दुन्या में न रहा हो तो उस के वारिसों को दे दीजिये

वोह भी न रहे हों या याद ही न हो कि किस किस से रिश्वत ली है तो फ़क़ीर को दे दीजिये। याद रखिये ! ख़ाली तौबा काफ़ी नहीं। अगर **तौबा** और उस के तक़ाज़े पूरे किये बिग़ैर मौत आ गई तो क्या बनेगा ! अगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो अ़ज़ाब सहा न जा सकेगा। आप की तख़्वीफ़ (या'नी डराने) के लिये एक **लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत** अ़र्ज़ करता हूं :

**क़ब्र का भयानक सियाह कुत्ता : एक** शख़्स जो कि जज का नुमायन्दा बना और मालदार हो गया मरने के बा'द उस की क़ब्र खुलने का दिल हिला देने वाला वाक़िआ़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ( जिल्द अव्वल )"** सफ़ह़ा 70 में एक शख़्स के ह़वाले से कुछ यूं है कि जब हम ने एक मुर्दे को दफ़्नाने के लिये उस के क़रीब क़ब्र खोदी तो इत्तिफ़ाक़ से उस की क़ब्र खुल गई हम ने उस की क़ब्र में एक बहुत बड़ी ज़न्जीर देखी, **एक बहुत बड़ा सियाह कुत्ता उस ज़न्जीर में उस के साथ बंधा हुवा उस के सर पर खड़ा था और उसे अपने पन्जों और नाख़ुनों से चीरना फाड़ना चाहता था, हम येह ख़त़रनाक मन्ज़र देख कर बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा हुए और जल्दी जल्दी उस की क़ब्र को मिट्टी से ढांप दिया।**

*कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी*

*क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 712)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# ''राहे हलाकत'' के आठ हुरूफ़ की निस्बत से ड्राइवर की ग़ीबत की 8 मिसालें

❁ गाड़ी बहुत रफ़ चलाता है ❁ सिग्नल तोड़ देता है ❁ फ़ुलां बस वाला ओवर टेकिंग बहुत करता है ❁ उस को गाड़ी चलाना कहां आती है ❁ वोह ड्राइवर ट्रक चलाते चलाते सो जाता है ❁ बिग़ैर ड्राइविंग लाइसन्स के स्कूटर चलाता है ❁ बस में भेड़ बकरियों की त़रह़ सुवारियां भरता है ❁ लम्बे रूट पर येह बस वाला फ़ुलां होटल पर बस रोक देता है क्यूं कि यहां इस को होटल से मुफ़्त खाना मिलता है वग़ैरा ।

**लम्बे** रूट की बस वग़ैरा के ड्राइवरों और होटल वालों को गुनाहों से बचाने के जज़्बे के तह़्त दा'वते इस्लामी के **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** का एक मा'लूमाती फ़तवा पेशे ख़िदमत है पढ़िये और फ़िक्रे आख़िरत में कुढ़िये :

## लम्बे रूट की बसें और मख़्सूस होटलें

**सुवाल :** बड़े रूट की जो बसें और वेगनें वग़ैरा मख़्सूस होटलों पर तरकीब के मुताबिक़ रुकें ताकि सुवारियां वहां खाएं पियें और होटल की बिकरी हो और इस के इवज़ ड्राइवर, कन्डेक्टर वग़ैरा को मुफ़्त में खाना या कमीशन मिल जाए येह सूरत कैसी है ? इस त़रह़ खिलाना और खाना या रक़म का लैन दैन ह़लाल या ह़राम ? **بَيِّنُوْا تُوْجَرُوْا** (बयान फ़रमाओ अज्र पाओ)

**जवाब :** सूरते मस्ऊला (या'नी पूछी गई सूरत) में ड्राइवर और कन्डेक्टर को होटल वालों का मुफ़्त खिलाना और इन का मुफ़्त खाना ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है क्यूं कि येह **रिश्वत** है । होटल वाले उन को इस लिये मुफ़्त खाना दे रहे हैं ताकि येह आयिन्दा भी बस इसी होटल पर रोकें । होटल वाले अपना काम निकलवाने के लिये येह खाना वग़ैरा देते हैं और येही **रिश्वत** है । फ़ु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : रिश्वत और तोह़फ़े में फ़र्क़ येह है कि रिश्वत इस शर्त़ पर दी जाती है कि जिसे रिश्वत

दी गई वोह देने वाले की मदद करेगा जब कि तोह़फ़े के साथ ऐसी कोई शर्त़ नहीं होती। (فَتحُ القدیر ج۷ ص۲۵۴) ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **रिश्वत** देने वाले, **रिश्वत** लेने वाले और इन दोनों के दरमियान मुआ़-मला करवाने वाले पर **ला'नत** फ़रमाई है।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ص۳۲۷حدیث۲۲۴۶۲)

**लुक़्मए ह़राम की नुहूसत : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 480 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बयानाते अ़त्त़ारिय्या**" हिस्सए अव्वल के सफ़ह़ा 211 पर है : **मुका-श-फ़तुल क़ुलूब** में है : आदमी के पेट में जब लुक़्मए ह़राम पड़ा तो ज़मीन व आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करेगा जब तक उस के पेट में रहेगा और अगर इसी ह़ालत में (या'नी पेट में ह़राम लुक़्मे की मौजू-दगी में) मौत आ गई तो दाख़िले जहन्नम होगा।

(مکاشَفۃُ القُلوب ص ۱۰)

**लुक़्मए ह़लाल की फ़ज़ीलत : हमें** हमेशा ह़लाल रोज़ी कमाना, खाना और खिलाना चाहिये लुक़्मए ह़लाल की तो क्या ही बात है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 179 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی एह़याउल उ़लूम की दूसरी जिल्द में एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल नक़्ल करते हैं कि मुसल्मान जब ह़लाल खाने का पहला लुक़्मा खाता है, उस के पहले के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं। और जो शख़्स त़-लबे ह़लाल के लिये रुस्वाई के मक़ाम पर जाता है उस के गुनाह दरख़्त के पत्तों की त़रह़ झड़ते हैं। (اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۱۱۶)

## "ग़ीबत कीजिये न सुनिये !" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुवारी और सुवार की ग़ीबत की 15 मिसालें

❁ उस की गाड़ी धक्का स्टार्ट है ❁ उस की कार है या गधागाड़ी ! ❁ उस की गाड़ी

की रफ़्तार बहुत कम है ❁ उस की गाड़ी का मोडल बहुत पुराना है ❁ उस की गाड़ी तो "**खचड़ फचड़**" है ❁ पुरानी गाड़ी रंग करवा रखी है और लोगों से कहता फिरता है कि नई ख़रीदी है ❁ उस की गाड़ी तो निरी सर दर्द है, चलते चलते कहीं भी ख़राब हो जाती है ❁ फटफट करती गाड़ी न जाने कहां से ले आया, लगता है मुफ़्त में मिली है ❁ इस खटारे से तो बेहतर था साइकिल ले लेता ❁ इस की गाड़ी का इन्जन बहुत पुराना हो गया है अब तो येह पेट्रोल "पीती" है ❁ बिग़ैर लाइसन्स के गाड़ी चलाता है ❁ बहुत रफ़ ड्राइविंग करता है ❁ गाड़ी बराबर चलानी कहां आती है ❁ उस की गाड़ी अचानक बीच सड़क में अड़ी कर के रुक गई, ट्राफ़िक जाम हो गया, बड़ी मुश्किल से धक्के लगा कर उस को साइड पर लगाना पड़ा ❁ इतने दिन हो गए मगर उस ने अपनी गाड़ी का "डेन्ट" नहीं बनवाया।

## "आख़िरत बचाइये" के दस हुरूफ़ की निस्बत से रेल्वे का सफ़र और मु-तवक़्क़अ़ 10 ग़ीबतें

❁ रेल्वे का फ़ुलां अफ़्सर घपले बाज़ है ❁ इस ने रेल्वे का निज़ाम तबाह कर के रख दिया है ❁ नए डिब्बे बेच कर खा गया है और ❁ पुराने घिसे पिटे डिब्बे साथ लगवा दिये हैं ❁ फ़ुलां क़ुली पहले से टिकटें ले कर रख लेता और ब्लेक में बेचता है ❁ पैसे निकलवाने के लिये रश का बहाना करता है इस को ❁ ज़ाइद रक़म दो तो सीट भी मिल जाएगी और बर्थ भी ❁ इस अफ़्सर के होते हुए हमारी रेल्वे का ख़ुदा ही ह़ाफ़िज़ है ❁ हमारी रेल्वे का वज़ीर चोर है चोर ❁ टिकट कलेक्टर अपनी जेबें भरता है सरकारी ख़ज़ाने में कहां जम्अ़ करवाता होगा!

**एक हेरोइन्ची की आपबीती : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी के शबो रोज़ बसर कीजिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **बाबुल मदीना** कराची

के अ़लाक़े ''कोरंगी'' के एक इस्लामी भाई तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ''दा'वते इस्लामी'' के कोरंगी में होने वाले **तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में अपने चन्द दोस्तों के साथ शरीक हुए। कोरंगी का आख़िरी इज्तिमाअ़ था उस के बा'द येह इज्तिमाअ़ मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में मुन्तक़िल कर दिया गया। वोह चन्द दोस्तों के साथ रस्मी त़ौर पर इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर तो हो गए मगर बयानात की ब-रकात छोड़ कर रात इज्तिमाअ़ गाह के बाहर एक जगह बैठ कर ख़ूब सिगरेट के कश और गपशप लगाने में मश्ग़ूल हुए इसी में **जिन्नात भूत के सन्सनी खै़ज़ वाक़िआ़त** भी छिड़ गए, जिस की बिना पर कुछ डरावना सा माह़ोल बन गया। इतने में **सब्ज़ इमामे वाले** एक उधेड़ उ़म्र के इस्लामी भाई ने क़रीब आ कर उन्हें सलाम किया और फ़रमाने लगे : अगर इजाज़त हो तो कुछ अ़र्ज़ करूं! इजाज़त मिलने पर उधेड़ उ़म्र इस्लामी भाई ने बड़े हमदर्दाना लहजे में कहा : आप ह़ज़रात के इज्तिमाअ़ में शिर्कत का अन्दाज़ देख कर मुझे अपनी पिछली ज़िन्दगी याद आ गई! मैं ने सोचा कि अपनी **आपबीती** गोश गुज़ार करूं कि शायद आप लोगों को इस में कुछ **इ़ब्रत के म-दनी फूल** मिल जाएं। फिर उन्हों ने अपनी **दास्ताने हिदायत निशान** कुछ इस त़रह़ बयान करनी शुरूअ़ की : पहले पहल मेरी सिगरेट नोशी की आ़दत पड़ी और फिर बुरे दोस्तों की सोह़बत की नुहूसत ने मुझे चरस और हेरोईन जैसे मोहलिक नशे का आ़दी बना दिया, **आह! मैं सोलह साल तक नशे का आ़दी रहा।** येह बताते हुए उन की आवाज़ भर्रा गई, मगर बयान जारी रखते हुए कहा : मेरी बुरी आ़दतों से बेज़ार हो कर मुझे घर से निकाल दिया गया। मैं फुटपाथ पर सोता और कचरे के ढेर से उठा कर या मांग कर खाता। आप को शायद यक़ीन न आए कि **मैं ने एक ही लिबास में सोलह साल गुज़ार दिये!** मेरी कैफ़िय्यत बिल्कुल एक पागल की त़रह़ हो चुकी थी!

**एक** मुक़द्दस रात का क़िस्सा है, ग़ालिबन वोह र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब थी। मैं इसी गन्दी ह़ालत में बद मस्त एक गली के कोने में **कचरा कूंडी** के पास लैटा हुवा था कि सलाम की आवाज़ पर चौंका! जब आंखें मलते हुए देखा तो मेरे सामने **सब्ज़ सब्ज़ इमामा**

**सजाए दो इस्लामी भाई** खड़े मुस्कुरा रहे थे, उन्हों ने बड़ी महब्बत से मेरा नाम पूछा, शायद ज़िन्दगी में पहली बार किसी ने इतनी महब्बत से मुझे मुख़ातब किया था । फिर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हों ने शबे क़द्र की अ़-ज़मत से मु-तअ़ल्लिक़ बड़ी प्यारी प्यारी बातें बताईं । मैं उन के अपनाइयत वाले अन्दाज़ और हुस्ने अख़्लाक़ की बिना पर वैसे ही मु-तअस्सिर हो चुका था, मज़ीद उन की शह्द से भी मीठी मीठी म-दनी गुफ़्त-गू तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई, मैं उन के साथ मस्जिद की त़रफ़ चल पड़ा । मस्जिद के ग़ुस्ल ख़ाने में अपना मैला चिक्कट लिबास उतारा और ग़ुस्ल कर के साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर **16 साल बा'द जब पहली बार मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ के लिये मैं ने निय्यत बांधी तो अपने आंसू न रोक सका, रो रो कर मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया ।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه घर वालों ने मुझे वापस ले लिया । मैं क़ादिरिय्या र-ज़विय्या सिल्सिले में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का मुरीद बन गया । मैं ने येह निय्यत कर ली कि अब हर क़ीमत पर नशे की आदत छुड़ाऊंगा । इस के लिये मुझे बड़ी आज़माइशों से गुज़रना पड़ा, मैं तक्लीफ़ के बाइ़स चीख़ता, बुरी त़रह़ तड़पता, घर वाले मेरी येह ह़ालत देख कर रो पड़ते । बा'ज़ लोग मश्वरा देते कि हेरोईन का एकआध सिगरेट ही पी लो ! मगर मैं ने ऐसा न किया कि इस त़रह़ तो मैं फिर इस नुहू़सत में गिरिफ़्तार हो जाऊंगा बल्कि घर वालों से कहता कि ज़रूरतन मुझे चारपाई से बांध दिया करो । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता बेहतरी आने लगी और मुझे नशे से मुकम्मल त़ौर पर नजात मिल गई और मैं आज **दा'वते इस्लामी** का एक अदना सा मुबल्लिग़ हूं । उन की **दास्ताने इ़ब्रत निशान** सुन कर वोह सब दोस्त अश्कबार हो गए, उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कोरंगी के इस्लामी भाई को बाबुल मदीना कराची के एक डिवीज़न के **म-दनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने की सआ़दत भी मिली ।

*छोड़ें मय नोशियां, मत बकें गालियां आएं तौबा करें, क़ाफ़िले में चलो*

*ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ छूटें बद आदतें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 677)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ''नेकियां बचाइये'' के बारह हुरूफ़ की निस्बत से मि'मार व मज़दूर की मु-तवक़्क़अ़ ग़ीबतों की 12 मिसालें

❁ फ़ुलां ने ह़म्माम में ढलवान (SLOPE) सह़ीह़ नहीं बनाया ❁ वोह मिस्तरी अनाड़ी था ❁ फ़िनिशिंग सह़ीह़ नहीं की ❁ रंग चूना बराबर नहीं किया ❁ सिमेन्ट में बजरी ज़ियादा डाली है ❁ मज़दूरी पूरी ली मगर काम पूरा नहीं किया ❁ ज़िद कर के तै शुदा मज़दूरी से ज़ियादा रक़म ले गया ❁ काम बराबर नहीं जानता ❁ पलस्तर सह़ीह़ नहीं किया ❁ देर से आता और जल्दी भागने की करता है ❁ खाने में वक़्त ज़ियादा लगा देता है ❁ कोई चीज़ लेने भेजो तो काफ़ी वक़्त निकाल कर आता है।

## ''मुर्दों के गोश्त से बचिये'' के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से होटल वाले की मु-तवक़्क़अ़ ग़ीबत की 17 मिसालें

❁ उस का खाना टेस्टी नहीं था ❁ मसाले वग़ैरा घटिया इस्ति'माल करता है ❁ कढ़ी बिल्कुल पानी जैसी थी ❁ आलू गलाए नहीं थे ❁ सब्ज़ी बासी लग रही थी ❁ गोश्त बहुत बूढ़े जानवर का था ❁ कन्जूस है ठन्डा पानी भी नहीं रखता ❁ मैं ने गरेबी मांगी तो झाड़ दिया था ❁ इस को तो दाल भी पकाना नहीं आती ❁ येह क़ोरमा बहुत महंगा देता है ❁ बस लूटमार मचा रखी है ❁ पकाने में इस का हाथ सह़ीह़ नहीं, कभी मिर्च कम तो कभी नमक ज़ियादा ❁ इस के होटल में सफ़ाई नहीं होती ❁ इस की चाय बेकार होती है ❁ बस जी इस के नसीब अच्छे हैं इतना रफ़ खाना होने के बा वुजूद भीड़ लगी रहती है ❁ इस की नहारी में दम नहीं था ❁ इस की नहारी ऊंट के गोश्त की होती है।

## ''ख़बरदार ! ग़ीबत का बाज़ार गर्म न करें'' के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से ताजिरों के मु-तअ़ल्लिक़ 26 ग़ीबतें

❁ येह फ्रोडी आदमी है ❁ गाहक फंसाना तो कोई इस से सीखे ❁ बातों का जादूगर है ❁ धोकेबाज़ है ❁ इसे माल बेचना नहीं आता ❁ माल की पहचान नहीं कर पाता ❁ गाहक तो उसे उल्लू बना जाते हैं ❁ बोतल पिला के उन की खाल उतार लेता है ❁ जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी, मौजूद होने के बा वुजूद मन्अ़ कर देता है ❁ कभी (रक़म का) खुला नहीं देता ❁ झूट बहुत बोलता है ❁ ''टोपियां'' पहनाता है ❁ ह़राम कमाता है ❁ मत़्लबी है ❁ बहुत महंगा बेचता है ❁ दो नम्बर माल रखा हुवा है ❁ नक़्ली को अस्ली बता कर बेचता है ❁ काम की चीज़ तो उस के पास मिलती ही नहीं ❁ अब येह मेरी रोज़ी पर भी लात मारेगा ❁ इस को क्या तक्लीफ़ थी अपनी दुकान पर येह माल रखने की ❁ मेरे गाहकों को मेरे ख़िलाफ़ भड़काता है ❁ मेरे माल की बुराइयां बयान करता है ❁ उस ने जादू करवा कर मेरे गाहक अपनी त़रफ़ कर लिये ❁ टेक्स की चोरी करता है ❁ बिजली चोर है ❁ पोलीस को भत्ता देता है।

## ''ग़ीबत मत कर'' के आठ हुरूफ़ की निस्बत से सेठ और मुलाज़िम की एक दूसरे के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 8 मिसालें

❁ सेठ साहि़ब बड़े सख़्त मिज़ाज हैं ❁ काम लेते वक़्त मिनट मिनट का ह़िसाब रखते हैं पैसे देते वक़्त उन्हें मौत पड़ती है ❁ किसी की मजबूरी का ख़याल नहीं करते ❁ ख़ुद तो A.C में बैठे हैं यहां आ कर देखें तो पता चले ❁ फ़ुलां मुलाज़िम वक़्त पर नहीं आता ❁ काम में बड़ा सुस्त है ❁ दिल लगा कर काम नहीं करता ❁ फ़ुलां पक्का कामचोर है।

## ''अपनी आख़िरत बचाइये'' के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से मुख़्तलिफ़ कारीगरों के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 14 मिसालें

❁ अनाड़ी है ❁ अस्ल पुर्ज़े निकाल कर दो नम्बर के लगा देता है ❁ थोड़े काम को बहुत लम्बा कर देता है ❁ जान बूझ कर ख़राबियां बढ़ाता है ❁ झूटा और ❁ दग़ाबाज़ है ❁

मैं इस के पास बेकार ले आया अब धक्के खाने पड़ रहे हैं ❁ वोह दरज़ी बचा हुवा कपड़ा रख के उस की टोपियां बना के बेचता है ❁ बिल ज़ियादा बना देता है ❁ दो नम्बर बिल दे कर ज़ियादा पैसे ले लिये ❁ उस की कढ़ाई में सफ़ाई नहीं ❁ सिलाई साफ़ नहीं ❁ टाइम ज़ाएअ़ करता है ❁ वा'दे के मुत़ाबिक़ काम कर के नहीं देता।

## "जहन्नम में ले जाने वाला काम" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से दफ़्तर के ख़ादिम के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 20 मिसालें

❁ मेरी जगह की सफ़ाई अच्छी नहीं करता ❁ हाथ मार कर चला जाता है सफ़ाई कहां करता है ❁ पांच मिनट में सफ़ाई मुकम्मल कर ली, सोचो क्या सफ़ाई की होगी! ❁ दीवारों के कोने अक्सर छोड़ देता है ❁ दिल लगा कर सफ़ाई करे तो येह ह़ाल न हो ❁ अगले हि़स्से की सफ़ाई करता है, पिछला हि़स्सा वैसे ही गन्दा रहता है ❁ सफ़ाई करने बहुत देर से आता है ❁ मुझ से चाय और खाने का जान बूझ कर नहीं पूछता ❁ नख़रे बहुत बढ़ गए हैं ❁ चापलूस है ❁ कामचोर है ❁ पैसे खा जाता है ❁ दो की चाय तीन को पिला कर बाक़ी रक़म जेब में ❁ अपने लिये चाय, खाना बचा लेता है ❁ मुझे ख़ुद खाना देने नहीं आता ❁ जो पैसे दे उस की बड़ी इ़ज़्ज़त करता है ❁ देर से आता और जल्दी चला जाता है ❁ चीज़ें चुराता है ❁ इसे मांगने की आ़दत है ❁ ड्यूटी में कोताही कर के ह़राम की रोज़ी खाता है।

## "क़ुफ़्ले मदीना लगा लीजिये" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मकान व साहि़बे मकान की ग़ीबत की 16 मिसालें

❁ उन के मकान (या कारख़ाने या दुकान या होटल) में बदबू फैली हुई थी या सफ़ाई नहीं थी ❁ उन का ह़म्माम (या लेट्रीन) गन्दा था ❁ वोह अपने मकान (या दुकान) पर रंग या ❁ मरम्मत नहीं करवाता ❁ घर है या कबाड़ ख़ाना! ❁ निहायत बे ढंगा मकान बनाया हुवा है ❁ इस का कमरा है या क़ब्र ? ❁ उस का मकान हवादार नहीं है ❁ मिट्टी के गारे से बना लिया सिमेन्ट से चुनाई नहीं कराई ❁ उस के घर का पलस्तर जगह जगह से उखड़ा हुवा था ❁ उस

के घर का पंखा "खड़ खड़" बोल रहा था ❁ उस का A.C. काफ़ी पुराना मा'लूम होता था। ठन्डक (COOLING) बराबर नहीं दे रहा था ❁ इतना मालदार है मगर घर में A.C. नहीं लगवाया ❁ इस कंगले के ठाठ तो देखो घर पर A.C. लगवा लिया है ❁ इस के पास इतनी रक़म कहां ! किसी पार्टी से A.C. की तरकीब बनाई होगी ❁ इस ने इतना बड़ा मकान कैसे बनवा लिया ? पैसे कहां से आए होंगे !

## "दर्दनाक अ़ज़ाब से बचिये" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से किरायादार के बारे में की जाने वाली ग़ीबतों की 16 मिसालें

❁ मेरे घर की दीवारें और फ़र्श ख़राब कर दिया ❁ मेरा किराया खा गया ❁ कई महीनों से किराया नहीं दिया ❁ येह किरायादार सहीह़ आदमी नहीं ❁ मेरे घर पर क़ब्ज़ा करना चाहता है ❁ मालिक बन बैठा है ❁ मुझ से ले कर किसी और को किराए पर बिठा दिया है ❁ मेरे मकान को कबाड़ ख़ाना बना दिया है ❁ मकान की गटर लाइन तबाह कर डाली है ❁ जिधर देखो दीवारों में कीलें ठोंक दी हैं ❁ मेरा घर ख़ाली नहीं करता ❁ धमकी देता है कि तुम से जो हो सके कर लो ❁ मुझे बहुत तक्लीफ़ में डाल दिया है ❁ जब भी घर ख़ाली करने की बात करूं तड़ियां देता है ❁ पड़ोसी मुझ से इस की शिकायत करते हैं मगर मेरी येह सुनता कब है ❁ मेरे किराएदारों को मेरे ख़िलाफ़ भड़काता है।

## "अपनी इस्लाह़ के लिये म-दनी इन्आमात पर अ़मल कीजिये" के पेंतीस हुरूफ़ की निस्बत से सियासी तबसिरों में की जाने वाली ग़ीबत की 35 मिसालें

❁ धांदली कर के इन्तिख़ाब जीता है ❁ इस ने बहुत सारे आदमी मरवाए हैं ❁ लुच्चा ❁ लफ़ंगा ❁ गुन्डा ❁ लोटा ❁ राशी ❁ पैदागीर ❁ दादागीर ❁ टेढ़ा ❁ खोछड़ा ❁ तड़ीबाज ❁ बद मआ़श ❁ दहशत गर्द ❁ ज़ालिम (सरकश) ❁ ज़लील ❁ कमीना ❁ बद ज़ात ❁ पाजी है ❁ चलता पुर्ज़ा ❁ बिकाउ माल (जिधर पैसा देखता है उधर लुढ़क जाता) है ❁

मत्लबी ✿ खु़द ग़रज़ ✿ थाली का बेंगन ✿ मफ़ाद परस्त ✿ पैसों का भूका है ✿ अपनी बद उ़न्वानियां छुपाने के लिये हु़कूमत से जा मिला है ✿ फ़न्ड ग़रीबों को देने के बजाए खु़द खा गया है ✿ वोट लेने के वक़्त पीछे पीछे फिरता है ✿ अब घास नहीं डालता ✿ इस ने अपने मन पसन्द लोगों को ही नोकरियां दिलवाई हैं ✿ सरकारी ख़ज़ाने पर ऐ़श कर रहा है ✿ हम ने इसे वोट दिये मगर उस ने हमारे लिये कुछ नहीं दिया ✿ अन्दर खाते फु़लां पार्टी से मिला हुवा है ✿ वत़न का ग़द्दार है।

## "वक़्त क़ीमती दौलत है" के चौदह हु़रूफ़ की निस्बत से फ़ुज़ूल जुम्लों की 14 मिसालें

**अफ़्सोस** सद अफ़्सोस ! आज कल अच्छी सोह़बतें कम्याब हैं। कई "अच्छे" नज़र आने वाले भी बद क़िस्मती से भलाई की बातें बताने के बजाए फ़ुज़ूल बातें सुनाने में मश्ग़ूल नज़र आ रहे हैं। काश ! हम सिर्फ़ **रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ ही की ख़ात़िर लोगों से मुलाक़ात करें और हमारा मिलना सिर्फ़ ज़रूरत की बात करने की ह़द तक हो। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : "आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से येह है कि ला या'नी चीज़ छोड़ दे।" (مُوطّا امام مالك ج٢ص ٤٠٣ حديث ١٧١٨) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : या'नी जो चीज़ कारआमद न हो उस में न पड़े, ज़बान व दिल व जवारेह़ (या'नी आ'ज़ा) को बेकार बातों की त़रफ़ मु-तवज्जेह न करे। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 163) **याद रहे !** फ़ुज़ूल बातें करना गुनाह नहीं अलबत्ता इन से बचना मुनासिब है चुनान्चे **हु़ज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "बे फ़ाएदा बातों में मसरूफ़ होना या फ़ाएदा मन्द गुफ़्त-गू में ज़रूरत से ज़ियादा अल्फ़ाज़ मिला लेना ह़राम या गुनाह नहीं अलबत्ता इसे छोड़ना बहुत बेहतर है।" (اِحیاءُ العُلوم ج ٣ ص ١٤٣) ग़ैर ज़रूरी बातें करते करते "गुनाहों भरी" बातों

में जा पड़ने का क़वी इम्कान रहता है लिहाज़ा **ख़ामोशी** ही में भलाई है। हमारे मुआ-शरे में आज कल बिला हाजत ऐसे ऐसे सुवालात भी किये जाते हैं कि सामने वाला शरमिन्दा हो जाता है और अगर जवाब में एहतियात से काम न ले तो **झूट** के गुनाह में भी पड़ सकता है। बसा अवक़ात इस तरह के सुवालात ज़रूरतन भी किये जाते हैं अगर ऐसा है तो **फ़ुज़ूल** न हुए। इस तरह के सुवालात की 14 मिसालें पेशे ख़िदमत हैं अगर ज़रूरत है तो ठीक और इस के बिग़ैर काम चल सकता है तो मुसल्मानों को शरमिन्दगी या गुनाहों के ख़दशात से बचाइये। म-सलन ❁ हां भई क्या हो रहा है! ❁ यार! आज कल दुआ वुआ नहीं करते! ❁ अरे भाई! नाराज़ हो क्या? ❁ यार! लगता है आप को मज़ा नहीं आया! ❁ येह गाड़ी कितने में ख़रीदी? ❁ किस साल का मॉडल है? ❁ आप के अ़लाक़े में मकान का क्या भाव चल रहा है? ❁ यार! महंगाई बहुत ज़ियादा है ❁ फ़ुलां जगह पर मौसिम कैसा है? ❁ उफ़! इतनी गरमी! ❁ आज कल तो कड़-कड़ाती सर्दी है ❁ न जाने येह बारिश अब रुकेगी भी या नहीं! ❁ ज़रा बारिश आई कि बिजली गई! ❁ आप के यहां बिजली थी या नहीं वग़ैरा वग़ैरा। उ़मूमन मु-तज़क्करा कलिमात और इस तरह के बे शुमार फ़िक़रात बिला ज़रूरत बोले जाते हैं। ताहम इस तरह के जुम्ले बोलने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ कोई बुरी राय क़ाइम न की जाए, बल्कि हुस्ने ज़न ही से काम लिया जाए कि हो सकता है जो बात फ़ुज़ूल लग रही है इस में क़ाइल की कोई मस्लहत हो जो मैं नहीं समझ सका। बिलफ़र्ज़ वोह सुवाल या जुम्ला फ़ुज़ूल भी हो तब भी क़ाइल गुनहगार नहीं।

## थोक बन्द ग़ीबतों की चार मिसालें

**अगर** किसी ग्रूप, आबादी, या महूकमे की बुराई की और इस से उस क़ौम वग़ैरा के हर हर फ़र्द की बुराई करना मक़्सूद हो तो गोया बुराई करने वाले ने एक ही जुम्ले में उस क़ौम की ता'दाद के बराबर **ग़ीबतें** कर डालीं, अब अगर उस क़ौम में 10 हज़ार अफ़राद हैं तो 10 हज़ार **ग़ीबतों** का गुनाह हुवा। इस की चार मिसालें पेश की जाती हैं : ❁ हमारा सारा ही ख़ानदान (या

सारा गाउं) गुमराह हो गया है एक मैं ही बचा हुवा हूं (उ़मूमन ऐसा नहीं होता, बड़े बूढ़े, ख़्वातीन और बच्चे अक्सर महफ़ूज़ होते हैं) ❁ हमारे सारे ही सरकारी अफ़्सर रिश्वत ख़ोर हैं ❁ इलेक्ट्रिक सप्लाय वाले सब के सब बद मआ़श हैं (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) ❁ हुकूमत में सब के सब चोर भरे हैं वग़ैरा। अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता है कि किसी जुम्ले में "**कुल या इस से मिलता जुलता**" कोई लफ़्ज़ होता है लेकिन वहां उ़र्फ़न तमाम लोग नहीं बल्कि अक्सर अफ़राद मुराद होते हैं तो अगर क़ाइल या'नी कहने वाले ने हर हर फ़र्द मुराद न लिया हो तो ऐसी जगह पर तमाम लोगों की ग़ीबत का हुक्म नहीं होगा लेकिन येह याद रखें कि आ़म लोगों के लिये इस त़रह़ के जुम्लों में फ़र्क़ समझना और क़ाइम रखना मुश्किल होता है लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि ऐसे अल्फ़ाज़ से बिल्कुल गुरेज़ किया जाए जिस में हज़ारों **ग़ीबतों** में पड़ जाने का अन्देशा हो।

## "ऐ काश ! लग जाए कुफ़्ले मदीना" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से बक़र ईद पर किये जाने वाले फ़ुज़ूल सुवालात की 19 मिसालें

**बक़र** ईद के मौक़अ़ पर बिग़ैर लेने देने के किये जाने वाले फ़ुज़ूल सुवालात की 19 मिसालें : ❁ गाय लेने कब जाएंगे ? ❁ आज कल तो मन्डी तेज़ हो गई होगी ! ❁ हां भई ! गाय कितने में लाए ? ❁ यार ! गाय है तो बड़ी जानदार ! ❁ कितने दांत की है ? ❁ टक्कर तो नहीं मारती ? ❁ चला कर लाए या सूज़ूकी में ? ❁ सूज़ूकी वाले ने कितना किराया लिया ? ❁ कब कटेगी ? ❁ क़स्साब वक़्त पर आया या नहीं ? ❁ क़स्साब छुरी फैर कर चला गया फिर बड़ी देर से आया ❁ हां यार ! क़स्साब लोग लटका देते हैं ❁ फुलां की गाय क़स्साब के हाथ से छूट कर भाग खड़ी हुई, बड़ा मज़ा आया ! ❁ हां यार ! क़स्साब अनाड़ी था ! (इस जुम्ले में **ग़ीबत**, तोहमत, दिल आज़ारी, बद गुमानी और बद अल्क़ाबी वग़ैरा गुनाहों की बदबू है अलबत्ता अगर वाक़ेई वोह क़स्साब अनाड़ी हो और जिस को बताया उस को उस से बचाना मक़्सूद हो तो इस जुम्ले में ह़रज नहीं) ❁ आप का बकरा कितने दांत का है ? ❁ कितने में मिला ? ❁ ओहो ! बड़ा महंगा मिला ❁ चलता भी है या नहीं ? ❁ कितनी कटाई लगी ? वग़ैरा वग़ैरा।

# "झूट हलाकत ख़ैज़ है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से झूट पर मजबूर करने वाले सुवालात की 14 मिसालें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बा'ज़ अवक़ात लोग ऐसे सुवालात कर देते हैं कि जवाब देने में बे एह़तियाती और मुरव्वत की वज्ह से आदमी के मुंह से **झूट** निकल सकता है अगर्चे सुवाल करने वाला गुनहगार नहीं ताहम मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने के लिये बिला ज़रूरत इस त़रह़ के सुवालात से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) करना मुनासिब है। सुवालात की 14 मिसालें ह़ाज़िर हैं : ❁ हमारा घर ढूंडने में कोई परेशानी तो नहीं हुई ? ❁ हमारे घर का खाना पसन्द आया ? ❁ मेरे हाथ की चाय कैसी थी ? ❁ हमारा घर आप को अच्छा लगा ? ❁ मेरे लिये दुआ़ करते हैं या नहीं ? ❁ मैं ने अभी जो बयान किया आप को कैसा लगा ? ❁ मैं ने जो ना'त शरीफ़ पढ़ी थी इस में आप को मेरी आवाज़ कैसी लगी ? ❁ मेरी बात आप को बुरी तो नहीं लगी ? ❁ मेरे आने से आप को तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? ❁ मेरी वज्ह से आप को बोरियत तो नहीं हो रही ? ❁ मैं आ कर आप की बातों में कहीं मुख़िल तो नहीं हो गया ? ❁ आप मुझ से नाराज़ तो नहीं ? ❁ आप मुझ से ख़ुश हैं ना ? ❁ मेरे बारे में आप का दिल तो साफ़ है ना ? वग़ैरा।

**सब से ख़त़रनाक अबुल फ़ुज़ूल : बा'ज़** लोग तो बड़े ही अ़जीब होते हैं, बात बात पर ख़्वाह म ख़्वाह इस त़रह़ ताईद त़लब करते हैं : ❁ हां भई क्या समझे ? ❁ मेरी बात का मत़लब समझ गए ना ? अलबत्ता ज़रूरतन शागिर्दों या मा तह़तों से उस्ताज़ या बुज़ुर्गों वग़ैरा का पूछना कभी मुफ़ीद भी होता है ताकि किसी को समझ में न आया हो तो समझाया जा सके। ऐसे मौक़अ़ पर समझ में न आने की सूरत में सामने वाले को चाहिये कि **झूट मूट** हां में हां न मिलाए ❁ क्यूं भई ! ठीक है ना ! ❁ "मैं ग़लत़ तो नहीं कह रहा ?" ❁ "क्या ख़याल है आप का ?" अब बात लाख ना क़ाबिले क़बूल हो या ग़ीबत पर मुश्तमिल हो मगर बसा अवकात मुरव्वत में हां में हां मिला कर बारहा **झूट** और **ग़ीबत** की ताईद के गुनाह करने पड़ते हैं। ऐसे अबुल फ़ुज़ूल और बातूनी लोगों की इस्लाह़ की हिम्मत न पड़ती हो तो फिर इन से कोसों दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत

है कि इन की **ग़ीबतों** और **तोह्मतों** वग़ैरा गुनाहों भरी बातों में भी हां में हां मिलाना कहीं जहन्नम में न पहुंचा दे ! यहां तक कि इस त़रह़ के बक्वासी लोग कभी तो गुमराही की बातें बल्कि مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्रिय्यात बक कर भी ह़स्बे आ़दत ताईद ह़ासिल करने के लिये : ''क्यूं जी ठीक कह रहा हूं ना ?'' कह कर सामने वाले से हां कहलवा कर बा'ज़ अवक़ात उस का भी ईमान बरबाद करवा देते हैं । क्यूं कि होशो ह़वास के साथ कुफ़्र की ताईद भी कुफ़्र है ।** اَلْعِيَاذُ بِاللهِ عَزَّوَجَلَّ

*ऐ काश ! ज़रूरत के सिवा कुछ भी न बोलूं*
*अल्लाह ज़बां का हो अ़त़ा कुफ़्ले मदीना*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 93)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## फ़ोन पर की जाने वाली फ़ुज़ूल बातों की 5 मिसालें

❁ क्या कर रहे हो ? ❁ कहां हो ? ❁ गाड़ी में फ़ोन आया तो सामने से सुवाल होगा इस वक़्त आप के पास कौन कौन है ? ❁ किधर से गुज़र रहे हो ? ❁ कहां तक पहुंचे ? वग़ैरा । हां जो जो सुवाल ज़रूरतन किया जाए वोह फ़ुज़ूल नहीं कहलाएगा मगर बा'ज़ सुवालात आदमी को शरमिन्दा कर के झूट पर मजबूर कर सकते हैं म-सलन हो सकता है कि पहले तीन सुवालात का जवाब वोह दुरुस्त न दे पाए क्यूं कि वोह नहीं चाहता कि किसी को पता चले कि क्या कर रहा है या कहां है या उस के पास कौन कौन है । बस काम की बात वोह भी ह़स्बे ज़रूरत करने ही में दोनों जहानों की आ़फ़िय्यत है ।

## ''ग़ीबत नुक़्सान देह है'' के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से फ़ोन करने के ह़वाले से ग़ीबत की 13 मिसालें

**फ़ोन,** S.M.S., इन्टरनेट पर चेटिंग और बर्क़ी डाक (या'नी E-MAIL) के ज़रीओं से भी

**ग़ीबतों,** बद गुमानियों और तोह्मतों का सिल्सिला हो सकता है। आप ने किसी को चन्द बार बल्कि 100 बार भी फ़ोन या SMS या ई मेइल किया हो और जवाब न मिला हो तब भी अपने मुसल्मान भाई के साथ **हुस्ने ज़न** से काम ले कर उ़म्दा इ़बादत का सवाब कमा लिया करें जैसा कि सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इ़बादत से है। (سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ٣٨٧ حديث ٤٩٩٣) चुनान्चे **हुस्ने ज़न** क़ाइम कीजिये कि जवाब न देने में उस की कोई न कोई मजबूरी होगी नीज़ इस मस्अले पर भी नज़र रखिये कि बिलफ़र्ज़ किसी ने जान बूझ कर भी फ़ोन वुसूल नहीं किया या आप के sms या ई मेइल का जवाब नहीं दिया तो शरअ़न उस का गुनहगार होना ज़रूरी नहीं, वरना तो जिस जिस के पास फ़ोन होगा वोह बार बार गुनहगार होता रहेगा, ख़ुद आप भी तो हर किसी का हर हर फ़ोन वुसूल नहीं फ़रमाते होंगे। मगर अफ़्सोस! फ़ोन का जवाब न मिलने पर शैत़ान बा'ज़ लोगों को बसा अवक़ात सब कुछ भुला कर ग़ुस्से से बावला बना देता है, लिहाज़ा ठन्डे दिमाग़ से काम लीजिये, अगर आप ग़ुस्से में बे सब्रे हो गए तो इस त़रह़ के **ग़ीबतों,** तोह्मतों और बद गुमानियों से भरपूर गुनाहों भरे जुम्ले मुंह से निकल सकते हैं : ❁ वोह बड़ा बे दर्द है ❁ सुस्त आदमी है ❁ पता नहीं मेरा फ़ोन क्यूं नहीं उठाता ❁ मुझ पर ख़ार खाता है ❁ इतनी बार फ़ोन किये मगर जान बूझ कर वुसूल (ATTEND) नहीं किये ❁ अपने आप को कुछ समझता है ❁ मैं ने उस के साथ फ़ुलां फ़ुलां एह़सानात किये हैं मगर येह एह़सान फ़रामोश है ❁ मत़्लबी शख़्स है ❁ बे वफ़ा है ❁ वायड़ा (या'नी टेढ़ा) है ❁ किसी की मजबूरी का उस को एह़सास ही नहीं ❁ मेरा फ़ोन दानिस्ता मसरूफ़ (Busy) कर देता है (ह़ालां कि निज़ाम (System) की मसरूफ़िय्यत या ख़राबी की बिना पर भी ऐसा हो सकता है) ❁ (सुब्ह़ के वक़्त फ़ोन वुसूल न होने पर) अभी तक नहीं उठा, आख़िर कितना सोएगा। वग़ैरा।

**फ़ोन वुसूल कर के सवाब कमाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बेशक हर किसी का फ़ोन वुसूल करना वाजिब न सही, मगर मुसल्मान की दिलजूई और उसे **ग़ीबतों,** तोह्मतों और

बद गुमानियों वग़ैरा गुनाहों से बचाने की अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हाथों हाथ फ़ोन वुसूल कर लीजिये और SMS का जवाब दे दीजिये, येह भी हो सकता है कि फ़ोन करने वाले को कोई इमरजन्सी दरपेश हो, आप अगर सख़्त मजबूरी की वज्ह से उस वक़्त फ़ोन वुसूल न कर सके तो बा'द में ख़ुद उसे फ़ोन कर लीजिये और उस का दिल ख़ुश कर के सवाबे आख़िरत के ह़क़दार बनिये। मुसल्मान का दिल ख़ुश करने के सवाब की भी क्या बात है! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक–त–बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा 534 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطّبَرانی ج ۱۱ ص ۵۹ حدیث ۱۱۰۷۹)

## "ग़ीबत से नफ़रत फैलती है" के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से किसी का फ़ोन आने की सूरत में ग़ीबत की 17 मिसालें

❁ यार इस का फ़ोन कहां आ गया अब ❁ येह लम्बी करेगा ❁ जल्दी जान नहीं छोड़ेगा ❁ बहुत चिकनी करता है ❁ मैं तो इस का फ़ोन वुसूल (ATTEND) नहीं करता क्यूं कि ख़्वाह म ख़्वाह इधर उधर की बातें कर के वक़्त ख़राब करता है ❁ अच्छा उस चिकने घड़े का फ़ोन आया था ❁ यार वोह तो "मिस कॉल" ही देता है ❁ कन्जूस है उस को तो मुझे ही फ़ोन करना पड़ता है ❁ एक तो "मिस कॉल" देता है और जल्दी रिप्लाय न दूं तो ऊपर से मुझ पर बिगड़ता है ❁ जब मैं फ़ोन करूं तो ख़ूब लम्बी करता है अगर ख़ुद ❁ इस ने फ़ोन किया हो तो पैसे बचाने के चक्कर में फ़ौरन बात ख़त्म कर देता है ❁ इस का फ़ोन तो बस काम के दौरान ही आ टपक्ता है ❁ फ़ारिग़ आदमी है ❁ दूसरों की **ग़ीबत** करता है ❁ इसे नम्बर दे कर फंस गया ❁ अब कान खाएगा ❁ सब को अपनी त़रह़ फ़ालतू समझता है।

## ''ग़ीबत आफ़्त है'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से किसी का फ़ोन न आने की सूरत में ग़ीबत की 9 मिसालें

❁ जब अपना मत़लब था तो वक़्त बे वक़्त फ़ोन करता था ❁ मत़लब निकल गया तो पलट कर ह़ाल तक नहीं पूछा ❁ (बेटे के लिये मां कहे) जब बीवी घर में थी तो रोज़ फ़ोन करता था अब हमें घास भी नहीं डालता ❁ इसे इतनी तौफ़ीक़ कहां कि फ़ोन करे, जब भी किया है मैं ने ही किया है ❁ (मां कहे) सुसराल में अगर दो दिन फ़ोन न करे तो बेचैन हो जाता है ❁ और अपने घर महीनों गुज़र जाएं कोई फ़िक्र ही नहीं होती ❁ (मां बाप कहें) दूसरों को फ़ोन करने के लिये उस के पास वक़्त भी है और पैसे भी, हमारे लिये उस के पास टाइम ही नहीं ❁ शादी के बा'द हमें बिल्कुल ही भूल गया है ❁ जान बूझ कर फ़ोन नहीं करता।

## "ज़बान संभालो !'' के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से किसी को फ़ोन करते देख कर की जाने वाली ग़ीबतों की 11 मिसालें

❁ पेकेज करवाया होगा वरना इस कन्जूस मख्खी चूस के पास इतना दिल कहां कि रक़म ख़र्च करे ❁ इस ने फ़ोन पर ज़रूर मेरी चुग़्लियां की होंगी ❁ (सास कहे) अपने मयके वालों से हमारी बुराइयां कर रही होगी ❁ मेरे ख़िलाफ़ मेरे बेटे के कान भर रही होगी ❁ (बहू कहे) अपने बेटे को मेरे ख़िलाफ़ भड़का रही होगी ❁ (मुलाज़िमीन कहें) सेठ साह़िब रिश्वत का रेट फ़ाइनल कर रहे होंगे ❁ (अफ़्सर कहे) ऊपर मेरी शिकायत लगा रहा होगा ❁ मुख़ालिफ़ ग्रूप को हमारे राज़ बता रहा होगा ❁ बड़ा फूल रहा है कि मेरी फ़ुलां अफ़्सर/सेठ/M.N.A/M.P.A/सूबाई वज़ीर/ वफ़ाक़ी वज़ीर से बात हो रही है ❁ ख़्वाह म ख़्वाह हर वक़्त फ़ोन पर लगा रहता है ❁ देख तो कैसे चीख़ चीख़ कर बात कर रहा है।

## ''ग़ीबत से बचिये'' के दस हुरूफ़ की निस्बत से SMS के ह़वाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 10 मिसालें

❁ इस बुध्धू को sms लिखना ही नहीं आता ❁ इस का कोई धन्दा ही नहीं, जब देखो

sms ही लिखता रहता है हत्ता कि चलते चलते भी sms लिखने से नहीं रुकता ❁ बहुत कन्जूस है सिर्फ़ sms से ही काम चलाता है ❁ बोर sms भेजता है ❁ इसे तो रोमन लिखनी ही नहीं आती इस लिये उर्दू में लिखता है ❁ इंग्लिश में sms लिखते वक़्त बहुत ग़-लतियां करता है ❁ किसी का sms चुरा के अपने नाम से भेजता है ❁ फ़ुलां SMS कर कर के मुझे तंग करता रहता है ❁ सलाम तक नहीं लिखता ❁ बेहूदा sms करता है।

## CHATTING के ह़वाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 3 मिसालें

❁ चेटिंग के इलावा इस का कोई काम ही नहीं होता ❁ चेटिंग के दौरान बहुत झूट बोलता है ❁ हमें तो चेटिंग से मन्अ़ करता है और ख़ुद बाज़ नहीं आता।

## INTERNET के ह़वाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 5 मिसालें

❁ येह नेट के ज़रीए़ दूसरों के कम्प्यूटर में घुस कर उन का मवाद चोरी करता है ❁ इस ने अपना कनेक्शन कहां लिया होगा! चोरी का इस्ति'माल कर रहा होगा ❁ न जाने क्या क्या देखता है ❁ भाई येह तो फ़ुरसती है, हर वक़्त नेट पर ही बैठा रहता है ❁ बहुत पैसा ज़ाएअ़ करता है।

**चोक दर्स की बहार आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और ख़ूब ख़ूब दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** दीजिये और सुनिये और इस की ब-र-कतें लूटिये, तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं : बांद्रा (बम्बई, हिन्द) के एक इस्लामी भाई को 2000 सि.ई. में अ़लाक़े के अन्दर होने वाले **चोक दर्स** में एक दिन शिर्कत की सआ़दत मिली, दर्स के बा'द मुलाक़ात करते हुए एक इस्लामी भाई ने उन्हें **दा'वते**

**इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की। वोह इज्तिमाअ़ में हाज़िर हुए, वहां मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी **दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत** बयान फ़रमा रहे थे इस का कुछ ऐसा असर हुवा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने रोज़ाना 313 मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ने का मा'मूल बना लिया। चन्द ही दिनों बा'द एक रात जब सोए तो सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, उन्हों ने ख़्वाब में देखा कि कोई कह रहा है : फ़ुलां जगह पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। येह सुन कर वोह आ़लमे दीवानगी में ज़ियारत की निय्यत से दौड़े तो आगे लोगों का एक हुजूम था, सीधे हाथ की त़रफ़ वाक़ेअ़ एक घर से नूर निकल रहा था, वोह उस में दाख़िल हो गए वहां देखा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم तशरीफ़ फ़रमा हैं, उन्हों ने उन से अ़र्ज़ की : सरकारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ फ़रमा हैं ? आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उन्हें अन्दर जाने का इशारा फ़रमाया, वोह मज़ीद अन्दर की त़रफ़ गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **रसूलों के सरदार, मदीने के ताजदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **एक बुलन्द जगह जल्वा अफ़्रोज़ थे।** उन्हों ने सलाम अ़र्ज़ किया, जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब इर्शाद फ़रमाया और उन से मुसा-फ़ह़ा किया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेह़रए मुबारक **गुलाब के फूल** की त़रह़ खिला हुवा था और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेह़रए अन्वर से जो नूर निकल रहा था वोह पूरे घर को रोशन कर रहा था। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त से वोह दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हैं और इस के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कतें लूट रहे हैं।

*ऐसी क़िस्मत खुले, देखने को मिले — जल्वए मुस्त़फ़ा, क़ाफ़िले में चलो*
*शौक़ ह़ज का है गर, और आक़ा का दर — तुम को है देखना, क़ाफ़िले में चलो*
*सब्ज़ गुम्बद का नूर, देखने का सुरूर — पाओगे आओ ना, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## दा'वते इस्लामी दुरूदो सलाम के जाम पिलाती है

**سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله !** कैसे ख़ुश बख़्त इस्लामी भाई हैं कि आते ही रहमतों से झोली भर गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी तह़रीक है और भर भर कर **दुरूदो सलाम** के जाम पिला रही है और आ आ कर प्यासे सैराब हो रहे हैं और मुक़द्दर वाले **जल्वए मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ैज़याब हो रहे हैं

*कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका*
*मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है*

**नूरे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की जल्वा सामानियां : ख़्वाब** देखने वाले ने चेह़रए अन्वर के नूर से घर रोशन देखा, سُبْحٰنَ الله ! क्यूं न हो कि रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से मेरे हुज़ूर, "सरापा नूर" हैं जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ 48 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, **"सियाह फ़ाम ग़ुलाम"** सफ़ह़ा 8 और 9 पर है **: "शिफ़ा शरीफ़"** में है : जब **रह़मते आ़लम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **मुस्कराते थे तो दरो दीवार रोशन हो जाते।** (اَلشِّفا ص ٦١) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं **:** मैं स-ह़री के वक़्त घर में कपड़े सी रही थी कि अचानक सूई हाथ से गिर गई और साथ ही चराग़ भी बुझ गया, इतने में मदीने के ताजदार, मम्बए अन्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और सारा घर **मदीने के ताजवर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेह़रए अन्वर के नूर से **रोशन** व मुनव्वर हो गया और **गुमशुदा सूई** मिल गई। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٣٠٢) बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो **क़ासिमे नूर** हैं जिसे चाहें **पुरनूर** कर दें चुनान्चे इसी रिसाले **सियाह फ़ाम ग़ुलाम** सफ़ह़ा 6 पर है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना असीद बिन अबी उनास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं **: मदीने के ताजदार**, शहन्शाहे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार मेरे चेहरे और सीने पर अपना दस्ते पुर अन्वार फैर दिया, इस की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि मैं जब भी किसी अंधेरे घर में दाख़िल होता वोह घर **रोशन** हो जाता। (اَلْخَصائِصُ الْكُبْرٰى لِلسُّيُوطِي ج٢ص١٤٢، تاريخ دمشق لابن عساكِر ج٢٠ ص ٢١)

*चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले*

*मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 158)

## "ग़ीबत गुनाहे कबीरा और मुर्दा भाई का गोश्त खाने के बराबर है, ग़ीबत करने वाला तौबा कर ले तब भी सब से आख़िर में जन्नत में जाएगा" के बानवे हुरूफ़ की निस्बत से दोस्तों में की जाने वाली ग़ीबतों की 92 मिसालें

❁ लम्बी करता है ❁ चिकनी करता है ❁ चिकना घड़ा है ❁ लिप-लिपिया है ❁ मुंहफट ❁ बातूनी ❁ बड़ बोला ❁ बड़-बड़िया ❁ बक्वासी ❁ फ़ुज़ूल गो है ❁ येह आता है तो मुझे तो बड़ी कोफ़्त होती है ❁ बोर करता है ❁ आता है तो फिर जान नहीं छोड़ता ❁ दिमाग़ खा जाता है ❁ मग़ज़ की "दही" है ❁ इस का तो कुत्ते, या ❁ लोहे का भेजा है ❁ अपने आप को कुछ समझता है ❁ ख़ुद को बड़ा होशियार समझता है ❁ बहुत सियाना बनता है ❁ शो बाज़ी करता है ❁ डेढ़ होशियार है ❁ मुझे बे वुक़ूफ़, या ❁ उल्लू बना रहा था ❁ ले ! मेरे को बिल्कुल मामा समझ रखा है ! ❁ ख़्वाह म ख़्वाह का रो'ब झाड़ता है ❁ किसी को ख़ातिर में ही नहीं लाता ❁ शो बाज़ ❁ बोल बचनी ❁ चालबाज़ ❁ ढोंगी है ❁ बद अख़्लाक़ ❁ बद तमीज़ ❁ बद ज़बान ❁ तुन्द मिज़ाज ❁ उलटी खोपड़ी का ❁ बे मुरव्वत ❁ बे शर्म ❁ बे ह़या ❁ ढोर है ❁ इस का मुंह हर वक़्त चढ़ा, या ❁ सूजा, या ❁ फूला हुवा रहता है ❁ मरियल टट्टू ❁ मुर्दार ❁ डरपोक ❁ बुज़दिल है ❁ इस में दम कहां है ! ❁ झगड़ालू ❁ लड़ाकू ❁ फ़ितना ❁ फ़ितने की जड़ ❁ फड्डेबाज़ है ❁ "गन्द" करता है ❁ खाऊ ❁ पेटू ❁ खाता बहुत है ❁ माल खाऊ ❁ पेट भरू ❁ मुफ़्त ख़ोरा ❁ नकटा है ❁ बिल्कुल अन्धी चला रखी है ❁ शैख़ी बघारता ❁ ख़ाली बातें बनाता ❁ अफ़्वाहें उड़ाता ❁ बड़ी बड़ी बातें करता ❁ फेंकू ❁ गप्पी ❁ डींगिया है ❁ फेंकता ❁ ठोकता ❁ छोड़ता ❁ हांकता ❁ "हवाई

फ़ायर'' करता है ❁ आंटियां मारता ❁ चक्कर देता ❁ गोल गोल बातें करता है ❁ निय्यत ख़राब है, या ❁ आदमी सह़ीह़ नहीं ❁ बहाने बाज़ ❁ ह़ीले बाज़ ❁ आंटी बाज़[1] ❁ झूटा ❁ 420 ❁ फ़्रॉडी ❁ **नम्बरी** ❁ ठग, या ❁ चीटर है ❁ ख़ारबाज़ ❁ मेरी तरक़्क़ी देख नहीं सकता ❁ मुझ पर ख़ार खाता है ❁ **इस की जब सूई अटक्ती है तो फिर इस को कोई नहीं समझा सकता।**

## ''अपने सर पर वबाल न लीजिये'' के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मुसन्निफ़ के बारे की जाने वाली ग़ीबतों की 19 मिसालें

किताबों के मुसन्निफ़ीन की ख़ामियां और कमज़ोरियां सह़ीह़ मक़्सद के तह़्त बयान करना जाइज़ है, अलबत्ता ख़्वाह म ख़्वाह बुराई करना **ग़ीबत** है यहां मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबतों** और तोह्मतों की 19 मिसालें बयान की जाती हैं : ❁ इन्शा परदाज़ी के फ़न में कोरा है ❁ इस की तह़रीर बोरियत कुन होती है ❁ ज़रा सी ता'रीफ़ होने पर फूल गया है ❁ ख़ुद को तह़रीर के फ़न का इमाम समझता है ❁ उर्दू की चन्द किताबें पढ़ कर मुसन्निफ़ बन बैठा है ❁ किसी का मवाद चोरी कर के अपने नाम से मन्सूब कर लिया है ❁ दूसरों की किताब का चरबा उतार लेता है ❁ इसे किताब पर अपना नाम अल्क़ाबात के साथ लगवाने का बड़ा शौक़ है ❁ इस की तह़रीर जानदार नहीं ❁ इस ने किताब में मौज़ूअ़ से हट कर मवाद बहुत डाल दिया है ❁ उर्दू जुम्ले दुरुस्त नहीं ❁ जुम्लों में रब्त़ नहीं ❁ इसे उर्दू अदब की अलिफ़ बे नहीं आती ❁ इस मौज़ूअ़ पे लिखने की क्या ज़रूरत थी ❁ इस का अपना एक भी जुम्ला नहीं होता ❁ काम किसी से करवा कर अपने नाम से छाप देता है ❁ इतनी रद्दी किताब, इस से अच्छा था कि न ही लिखता ❁ इस से अच्छा तो मैं ख़ुद लिख सकता हूं ❁ आता जाता कुछ है नहीं किताबें लिखने बैठ गया है।

## वेबसाइट्स के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तवक़्क़अ़ 5 ग़ीबतें

उ़मूमन साइट्स इदारों की होती हैं या अफ़्राद की हों तो अक्सरो बेशतर साइट का मालिक मुअ़य्यन व मा'लूम आदमी नहीं होता लिहाज़ा **ग़ीबत** जभी होगी जब कि मुअ़य्यन व मा'लूम फ़र्द

---

1. किसी की टांग में अपनी टांग अड़ा कर गिरा देने को ''आंटी देना'' कहते हैं मगर हमारे यहां येह लफ़्ज़ बत़ौरे मुहा-वरा भी इस्ति'माल होता है, या'नी जो उल्टी सीधी दलीलें दे कर सामने वाले को बेबस कर दे या उल्झन में डाल दे उस को ''आंटी बाज़'' बोलते हैं चूंकि येह लफ़्ज़ शरीफ़ आदमी के लिये नहीं बोला जाता और जिस के लिये बोला जाए मा'ना समझने की सूरत में उस को ना गवार मा'लूम होता है इस लिये इस को **ग़ीबत** की मिसालों में शामिल किया है।

या अफ़राद की की जाए। हां अगर मा'लूम है कि येह वेबसाइट फ़ुलां मुसल्मान की है और बिला इजाज़ते शर-ई बुराई बयान की नीज़ जिस के सामने बुराई बयान की वोह भी समझ रहा है कि फ़ुलां की बुराई हो रही है तो अब गुनाह भरी ग़ीबत है। इस क़ाइदे को पेशे नज़र रखते हुए वेबसाइट्स के मु-तअ़ल्लिक़ **ग़ीबत** की 5 मिसालें मुला-हज़ा फ़रमाइये : ❁ फ़ुलां ने क्या बेकार वेबसाइट बनाई है ❁ बहुत देर से खुलती है ❁ कलर और डीज़ाइनिंग अच्छी नहीं की ❁ लोगो (LOGO) चुरा कर अपना बना लिया है ❁ "फ़्री होस्टिंग" पर बनाता है कन्जूस है, अपने पैसे ख़र्च नहीं करता।

## "ग़ीबत से बच" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से इस्तिन्जा ख़ाने की लाइन में ग़ीबत की 8 मिसालें

सफ़रे मदीना के दौरान ह-रमैने तृय्यिबैन व मिना शरीफ़ वग़ैरा में नीज़ मदारिस व मसाजिद के इस्तिन्जा ख़ानों पर भीड़ के मौक़अ़ पर सब्र कीजिये, आवाज़ें लगाने, बार बार दरवाज़ा बजाने और क़ितार में खड़े हुए लोगों के आगे अन्दर गए हुए शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ ज़बान चलाने की सूरत में दिल आज़ारी और **ग़ीबत** वग़ैरा से बचना मुश्किल हो जाएगा, ऐसे मौक़अ़ पर की जाने वाली **ग़ीबत की 8 मिसालें** मुला-हज़ा हों : ❁ अन्दर जा कर बैठ गया है ❁ पाए चढ़ाए हैं ❁ इस को दूसरों का ख़याल रखना चाहिये ❁ अरे! येह कहां अन्दर चला गया, यार! इस को तो बड़ी देर लगती है ❁ वोह जल्दी नहीं निकलता ❁ पता नहीं अन्दर जा कर क्या करता है! ❁ अन्दर सो तो नहीं गया ❁ गन्द कर के चला जाता है ठीक से पानी भी नहीं बहाता।

## "ग़ीबतें करने वाला तांबे के नाख़ुनों से चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था" के अठ्ठावन हुरूफ़ की निस्बत से जिस्मानिय्यत में ग़ीबत की 58 मिसालें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** बिला मस्लहते शर-ई किसी के जिस्म का ऐब बयान करना

भी **ग़ीबत** है। लिहाज़ा किसी "कमज़ोर" को भी कमज़ोर कहते हुए कहने की मस्लहत पर ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि इस को "कमज़ोर" क्यूं कह रहा है ! अगर बतौरे बुराई कह रहा है तो येह **ग़ीबत** है। जिस्मानिय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ **ग़ीबत** की मज़ीद 58 मिसालें मुला-हज़ा हों : ❁ मरियल घोड़ा है ❁ इतना पतला है कि फूंक मारो तो उड़ जाए ❁ मोटा है ❁ पेट निकला हुवा है ❁ बे डोल जिस्म वाला है ❁ लम्बा ❁ लम्बू ❁ ऊंट ❁ टावर ❁ बांस है ❁ नाटा ❁ ठिंगू ❁ ठिगना है ❁ भेंगा ❁ चुन्धा ❁ काना ❁ अन्धा है ❁ कोढ़ी ❁ चेचक के दाग़ वाला है ❁ लूला ❁ लंगड़ा ❁ कुबड़ा है ❁ औ़रतों जैसी चाल है ❁ मुख़न्नस ❁ हीजड़ा ❁ नामर्द है ❁ भूरा ❁ काला ❁ कल्वा जल्वा है ❁ इस की नाक चपटी है ❁ तोतला ❁ हक्ला ❁ नाक में से बोलता है ❁ बद सूरत है ❁ बूढ़ा खूसट है ❁ क़ब्र में पाउं लटक गए हैं ❁ गन्जा ❁ एयरपोर्ट है ❁ दन्तू ❁ दन्ता ❁ दन्तीला है ❁ इस के मुंह से या बदन से या कपड़ों से पसीने की बदबू आती है ❁ बहरा है ❁ रेल्वे का पुराना इन्जन (या'नी बहुत काला) है ❁ इस में कोई नक़्स है जभी तो अब तक कोई बच्चा पैदा नहीं हुवा ❁ मोटी भेंस है ❁ लम्बी नाक ❁ लम्बे मुंह वाला है ❁ उस के नाख़ुनों में मैल भरी हुई थी ❁ उस के कानों से मैल की बू आ रही थी ❁ वोह कटी नाक वाला ! ❁ उस के दांत ड्रेकूला जैसे हैं ❁ पान गुटका खा खा कर दांत ख़राब कर दिये हैं ❁ इतनी ज़ोर से हंसता है कि डरा देता है ❁ जब देखो उस का मुंह पागलों की त़रह़ खुला ही रहता है ❁ उस के हाथ पाउं पर बहुत मैल जमा हुवा था ❁ खा खा कर मोटा हो गया है ❁ सोते में इतने ज़ोर से ख़र्राटे लेता है कि किसी को सोने नहीं देता।

## "ग़ीबत सूद से भी बड़ा जुर्म है" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से इ़बादात के बारे में ग़ीबत की 20 मिसालें

❁ फ़ज्र में कहां उठता है ! ❁ नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ता है ❁ उस से ह़ुरूफ़ की अस्ल मख़ारिज से अदाएगी नहीं होती ! ❁ बे नमाज़ी है ❁ र-मज़ान के रोज़े नहीं रखता ❁ ज़कात नहीं देता ❁ ज़कात लेने जाओ तो धक्के खिलाता है ❁ चन्दा देने में कन्जूसी करता है ❁ नमाज़

या रोज़े या ज़कात के मसाइल नहीं जानता ❁ ह़ज फ़र्ज़ हो चुका है मगर नहीं जाता क्यूं कि इस को कारोबार से फ़ुरसत नहीं ❁ लोगों पर कस्रते इ़बादत का सिक्का जमाने के लिये तहज्जुद पढ़ता है ❁ दूसरे इस्लामी भाई हों तो ही इशराक़ व चाश्त पढ़ता है अकेले में नहीं पढ़ता ❁ इस को र-मज़ानुल मुबारक में भी तिलावत की तौफ़ीक़ नहीं ❁ अ़स्र व इ़शा की सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा तो कभी पढ़ता ही नहीं ❁ नमाज़ के बा'द जल्दी भागने की करता है, फ़ातिहृए सानी के लिये रुकता ही नहीं ❁ तस्बीह़ हाथ में पकड़ कर ख़ाली होंट हिलाता रहता है पढ़ता वढ़ता कुछ नहीं ❁ लोगों को दिखाने के लिये तस्बीह़ हाथ में रखता है ❁ माथे पर सज्दे का निशान बनाने के लिये ज़मीन पर ख़ूब सर रगड़ता है ❁ रोज़ा रख कर भी फ़िल्में डिरामे देखता है ❁ बड़ा नमाज़ी बनता है तरावीह़ तक तो जमाअ़त से नहीं पढ़ता।

## "ग़ीबत बद बला है" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़ाफ़िज़े क़ुरआन की ग़ीबतों की 11 मिसालें

❁ फ़ुलां ह़ाफ़िज़ पैसों की ख़ातिर तरावीह़ पढ़ाता है ❁ ह़ाफ़िज़ साहिब ने सामेअ़ (या'नी तरावीह़ सुनने वाले ह़ाफ़िज़) से कोई तरकीब बना रखी है इसी लिये तो वोह इन की ग़-लतियां नहीं निकालता ❁ इस की मन्ज़िल कच्ची है (क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर के भुला देना गुनाह है लिहाज़ा जो कोई थोड़ा सा भी भूल जाए वोह बिला इजाज़ते शर-ई किसी और को न बताए क्यूं कि गुनाह का इज़्हार भी गुनाह है) ❁ वोह ह़िफ़्ज़ कर के भूल गया है ❁ तरावीह़ पढ़ाते हुए इस को कुछ ज़ियादा ही मु-तशा-बहात[1] लग जाते हैं ❁ इस ह़ाफ़िज़ को तरावीह़ में "लुक़्मे" बहुत देने पड़ते हैं ❁ वोह तो ख़ाली नाम का ह़ाफ़िज़ है ❁ सारा साल क़ुरआने पाक खोल कर नहीं देखता इस लिये मन्ज़िल कच्ची हो जाती है, बस र-मज़ानुल मुबारक में वोह भी मुसल्ला सुनाने और पैसे कमाने के लिये दौर करता है ❁ अगर कोई ग़रीब क़ुरआन ख़्वानी की दा'वत दे तो हमारे ह़ाफ़िज़ जी

---

1. मु-तशाबह की जम्अ़। मु-तशाबह लगना या'नी मिलती जुलती आयत होने की वज्ह से ह़ाफ़िज़ साहिब का कहीं का कहीं पढ़ जाना।

के पास मसरूफ़िय्यत का उ़ज़्र मौजूद होता है हां कोई मालदार ख़त्म शरीफ़ पर बुलाए तो वहां आगे आगे नज़र आते हैं ✿ वोह ह़ाफ़िज़ जी बहुत शरारती हैं कहीं इस लिये तो नहीं जैसा कि अ़वामी मुह़ावरा है कि ह़ाफ़िज़ की एक रग ज़ियादा होती है (याद रहे ! येह मुह़ावरा बिल्कुल ग़लत़ है) ✿ ह़ाफ़िज़े क़ुरआन हो कर झूट बोलता है।

## "ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती" के चौंतीस हुरूफ़ की निस्बत से सफ़रे ह़ज के बारे में की जाने वाली 34 ग़ीबतें

✿ फ़ुलां ट्रेवल एजन्सी वाले ने मुझे धोका दिया ✿ कारवां वाले ने कहा था कि रिहाइश ह़रम शरीफ़ के क़रीब होगी पर यहां आ कर मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ बहलावा था ✿ इस ने जिन सहूलतों के वा'दे किये थे वोह कहां हैं ? ✿ वत़न में तो "जी जनाब" से बात करता रहा और जब वहां पहुंचे तो कारवां वाले ने पूछा तक नहीं ✿ वोह कारवां वाला तो बस जी **अल्लाह** के मेहमानों को लूटता है ✿ येह मौलवी जो हर साल ह़ज पर जाता है पूछो तो सही इतनी रक़म कहां से लाता है ? ✿ अरे भई, तुम को क्या ख़बर ! इस की पार्टियों से बड़ी तरकीब है उन्हीं से ह़ज के अख़राजात निकलवाता होगा ✿ फ़ुलां जो हर बरस ह़ज करता है ना, वोह दर अस्ल "फैरा" लगाता है, ख़र्च भी निकाल लेता है और बचत भी हो जाती है ✿ वोह ह़ाजी तो ह़ज के मसाइल से बिल्कुल ही कोरा है ✿ अरे उस को देखो ! एह़राम कितना ग़लत़ बांधा है ✿ उस को एह़राम दुरुस्त बांधना नहीं आता ✿ मैं ने मन्अ़ किया फिर भी वोह त़वाफ़ में इधर उधर देखता था ✿ उस ने सअ़्य के सात फैरों का त़रीक़ा ही नहीं समझा 14 फैरे लगा डाले फिर थकन से हांप रहा था ✿ उस ने मक्के शरीफ़ में अपने ह़ज की एक ग़-लत़ी बता कर मुझ से मस्अला पूछा, मैं ने कहा, आप पर दम वाजिब हो गया तो ज़ोर से हंस कर कहने लगा, **अल्लाह** मुआ़फ़ करेगा ✿ वोह यूं तो सिह़ह़त मन्द है मगर भीड़ की वज्ह से डर कर एक दिन भी रमिये ज-मरात (या'नी शैत़ान को कंकरियां मारने) के लिये नहीं गया, किसी और को कंकरियां मारने का वकील कर दिया, मैं ने इस से दम वाजिब होने न होने की सूरतें बयान कीं मगर उस ने सुनी अनसुनी कर दी क्यूं कि उस पर दम

वाजिब हो रहा था ۞ मैं ने आंखों से देखा उस ने ह़ज की क़ुरबानी में दुम्बे का बहुत छोटा बच्चा ज़ब्ह़ किया, मैं ने जब शर–ई मस्अला बता कर कहा कि आप की येह क़ुरबानी दुरुस्त नहीं दूसरी करनी होगी येह सुनते ही वोह आग बगोला हो गया ۞ वोह ह़ाजी साह़िब जो हाथ चुमवा रहे हैं बिल्कुल ही जाहिल हैं, इन को ह़ज का मस्अला एक भी नहीं आता ۞ वोह ह़ाजी साह़िब पक्के रियाकार हैं, देखो घर कैसा सजाया हुवा है और ह़ज मुबारक का बोर्ड भी चढ़ा रखा है (ह़ाजी का आते जाते अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ घर सजाना ह़ज मुबारक का बोर्ड लगाना जाइज़ है) ۞ वोह ह़ाजी बहुत बड़ा रियाकार है एक एक को पकड़ कर कह रहा था कि मेरा येह बारहवां ह़ज है (अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बल्कि वैसे ही कोई अपने ह़ज की ता'दाद बताए उस को हरगिज़ गुनहगार नहीं कहा जा सकता, बिला दलील उस को रियाकार कहने वाला तोहमत के और अगर दलील हो तो **ग़ीबत** के गुनाह में गिरिफ़्तार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है) ۞ वोह मस्जिदैने करीमैन में टिक कर कहां बैठता था ۞ बस बाज़ारों में घूमता रहता था ۞ उस ह़ाजी ने ख़ूब शॉपिंग की है ۞अब जद्दा शरीफ़ के मत़ार पर वज़्न के लिये झगड़े करेगा और ۞ वत़न के कस्टम ऑफ़ीसर को रिश्वत दे कर बाहर निकलेगा ۞ वत़न में ना'तें सुन कर बहुत रोता था मगर अब मदीना शरीफ़ पहुंच कर इस की आंखों के कूंएं ही ख़ुश्क हो गए हैं ۞ हमारे क़ाफ़िले का वोह ह़ाजी जब देखो सोया रहता है ۞ न उ़म्रे करता है ۞ न ही नफ़्ली त़वाफ़ ۞ मैं जब भी चलने को कहता हूं बीमारी का बहाना कर देता है ۞ हां खाने के वक़्त सह़ीह़ हो जाता है और सब से पहले चोकड़ी मार कर दस्तर ख़्वान पर बैठ जाता है ۞ इस मोटे ह़ाजी को देखो रम्ल करते हुए कैसा लग रहा है ۞ वोह शुर्त़ी (या'नी पोलीस वाला) जो सामने खड़ा है उस ने कल मुझे ख़्वाह म ख़्वाह झाड़ दिया था ۞ वोह दोनों ह़ाजी जब देखो ह़रम शरीफ़ के बाहर बैठ कर बातें करते रहते हैं, यहां आ कर इन को ख़ूब इ़बादत करनी चाहिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन को हिदायत दे ۞ मैं ने तो कहा था मगर इस ने ह़ज की किताब नहीं पढ़ी अब सब से मस्अले पूछता फिरता है ۞ फ़ुलां ह़ाजी कैसा बद नसीब है, उस ने सुस्ती की वज्ह से मस्जिदे न–बवी में 40 नमाज़ें अदा नहीं की।

## "सुनो ! एक चुप सौ सुख" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से हज से लौटने वाले से फ़ुज़ूल सुवालात की 13 मिसालें

**येह 13** फ़ुज़ूल सुवालात अगर्चे ना जाइज़ नहीं ताहम पूछने से पहले इन की मस्लहत पर ग़ौर कर लीजिये, अगर ह़ाजत न हो तो न पूछिये क्यूं कि इन में बा'ज़ सुवालात ह़ाजी को शरमिन्दा करने वाले, बा'ज़ तरद्दुद में डालने वाले और बा'ज़ के जवाबात में अगर एह़तियात़ न की गई तो झूट के गुनाह में फंसाने वाले हैं। लिहाज़ा "एक चुप हज़ार सुख" ❁ सफ़र में कोई तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? ❁ भीड़ तो बहुत होगी ! ❁ महंगाई तो नहीं थी ? ❁ मकान सह़ीह़ मिला या नहीं ? ❁ घर ह़रम से दूर था या क़रीब ? ❁ वहां मौसिम कैसा था ? ❁ ज़ियादा गरमी तो नहीं थी ? ❁ रोज़ाना कितने त़वाफ़ करते थे ? ❁ कितने उ़म्रे किये ? ❁ मक्के में मेरे लिये ख़ूब दुआ़एं मांगी या नहीं ? ❁ मिना में आप का ख़ैमा ज-मरात से क़रीब था या दूर ? ❁ मदीने में कितने दिन मिले ? ❁ मदीने में मेरा नाम ले कर सलाम कहा या नहीं ?

## "ग़ीबत कर के नेकियां बरबाद न करें" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वान के बारे में ग़ीबत के अल्फ़ाज़ की 25 मिसालें

❁ मीरासी है ❁ इस को **ना'त** पढ़ने का ढंग नहीं आता ❁ इस की आवाज़ बस ऐसी ही है ❁ इस की आवाज़ बे सुरी है ❁ फटे हुए ढोल जैसी आवाज़ है ❁ दूसरे **ना'त ख़्वानों** की त़र्ज़ें चुराता है ❁ दूसरों के शे'र चुरा कर ख़ुद शाइ़र बन बैठा है ❁ **पैसों के लिये ना'त पढ़ता है** ❁ येह तो **प्रोफ़ेशनल** ना'त ख़्वान है ❁ सिर्फ़ **बड़ी पार्टियों** की मह़फ़िलों में जाता है ❁ इस में इख़्लास नहीं है ❁ ज़ियादा लोग हों या ❁ ईको साउन्ड हो जभी पढ़ता है ❁ जब आता है माईक नहीं छोड़ता ❁ दूसरों की बारी ही नहीं आने देता ❁ जान बूझ कर **रोने** जैसी आवाज़ निकालता है ❁ आहा ! बड़ा महंगा सूट पहन रखा है ज़रूर ना'त ख़्वानी करवाने वालों ने ले कर दिया होगा ❁ इस की अदाएं देखो ! लगता है गाना गा रहा है ❁ इस की आंखें नींद से भरी पड़ी हैं फिर भी पैसों के लालच में ना'त पढ़ने आ गया है ❁ जिस शे'र पर नोटें आना शुरूअ़ हो जाएं

बार बार उसी शे'र को पढ़ता रहता है ❁ बस किसी जगह मह़फ़िल का पता चल जाए, येह वहां पैसों के लालच में बिन बुलाए भी पहुंच जाता है ❁ रात गए तक ना'तें पढ़ता है, फ़ज्र मस्जिद में जमाअ़त से नहीं पढ़ता ❁ अब इस के पास टाइम कहां होगा इस के तो सीज़न के दिन हैं, बड़े नोट दिखाओ तो आएगा ❁ पिछली बार शायद पैसे कम मिले थे तभी इस बार नहीं आया ❁ अपना केसिट निकलवाने के लिये कम्पनी वालों की बड़ी चापलूसी करता है।

## "ग़ीबत से हम को बचा, या इलाही" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानी/जल्से या इज्तिमाअ़ में होने वाली ग़ीबत की 19 मिसालें

❁ येह मुबल्लिग़ (या मौलाना या ना'त ख़्वान) कहां खड़ा हो गया अब तो येह माइक नहीं छोड़ेगा ❁ उस की आवाज़ अच्छी है इस लिये **क़िराअत** सुन कर लोग दाद देते हैं वैसे तज्वीद की काफ़ी ग़-लतियां करता है ❁ इस के तलफ़्फ़ुज़ ग़लत़ होते हैं ❁ इस को तक़रीर करनी ❁ या ना'त पढ़नी ही कहां आती है ❁ चलो ! चलो ! अब येह लम्बी करेगा ❁ नोटें चलती हैं तो इस की आवाज़ खुल जाती है ❁ हमारे शह्‌र में आने के लिये तो इस ने हवाई जहाज़ का रीटर्न टिकट मांगा था ❁ इस ना'त ख़्वान का मिज़ाज तो आस्मान पर रहता है ❁ इस को तो बस एक ही त़र्ज़ आती है ❁ येह तो दूसरे ना'त ख़्वानों की त़र्ज़ें चुराता है ❁ इस ने बयान की तय्यारी नहीं की इधर उधर की बातें कर के वक़्त गुज़ार रहा है ❁ आयतें तो पढ़ता नहीं बस क़िस्से कहानियां सुनाता है ❁ उस मुक़र्रिर की आवाज़ अच्छी है मगर उस की तक़रीर में ख़ास मवाद नहीं होता ❁ ख़ित़ाब बड़ा जोशीला था मगर दलाइल में दम नहीं था ❁ हमारे ख़त़ीब साह़िब अपने बयान में सुन्नत एक नहीं बताते बस लठ ले कर बद मज़्हबों के पीछे पड़े रहते हैं ❁ आज ख़त़ीब साह़िब के बयान में मज़ा नहीं आया ❁ वोह मौलाना साह़िब जल्से में देर से आने के आ़दी हैं ❁ फ़ुलां की तक़रीर में बस जोश ही जोश होता है अपने पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता।

**ला उबाली नौ जवान : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर

अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपनी ज़िन्दगी **''म-दनी इन्आ़मात''** के सांचे में ढालिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये जैसा कि मुलतान रोड (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई ला उबाली और शौख़ तबीअ़त के मालिक थे, अपनी मस्ती में मस्त, दुन्या की महब्बत के नशे में धुत, गुनाहों और ग़फ़्लतों की वादियों में गुम थे। टिफ़न बजा कर बच्चों वाले गीत गाने और क़व्वालों की नक़्लें उतारने के मुआ़-मले में ख़ानदान भर में मशहूर थे। शादी व दीगर तक़रीबात में मुज़ाहिया चुटकुले और फ़िल्मी ग़ज़लें सुनाना, गाने गाना, बे ढंगे अन्दाज़ में नाच दिखाना और तरह तरह के नख़रों से लोगों को हंसाना उन का महबूब मश्ग़ला था, स्कूल का ज़माना था, **एक बा इमामा इस्लामी भाई** अक्सर उन के बड़े भाईजान से मिलने आया करते थे। एक दिन भाईजान ने उन का तआ़रुफ़ करवाया तो उन्हों ने उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की। वोह उन की दा'वत पर जुमा'रात को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में जा पहुंचे, उन्हें बहुत अच्छा लगा। यूं उन्हों ने पाबन्दी से जाना शुरूअ़ कर दिया और दीगर क्लास फ़ेलोज़ को भी दा'वत पेश की जिस पर वोह भी आने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी। आहिस्ता आहिस्ता **इमामा शरीफ़** भी सज गया, जिस पर घर के बा'ज़ अफ़राद ने सख़्ती के साथ मुख़ा-लफ़त की हत्ता कि बसा अवक़ात مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ **इमामा शरीफ़** खींच कर उतार दिया जाता। **दर्स** देने से रोका जाता, **ज़ुल्फ़ें** रखीं तो घर वालों ने ज़बर दस्ती कटवा दीं, **दाढ़ी** अभी निकली नहीं थी मगर सजाने की निय्यत कर ली थी। इन तमाम आज़माइशों के बा वुजूद **म-दनी माहोल** की कशिश और **आ़शिक़ाने रसूल** का हुस्ने सुलूक उन्हें **दा'वते इस्लामी** के क़रीब से क़रीब तर करता चला गया। मक-त-बतुल मदीना से जारी होने वाले **सुन्नतों भरे बयानात** की केसिटें सुनने से ढारस बंधी

और हौसला मिलता चला गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता घर में भी **म-दनी माहोल** बन गया। वोह घर वाले जो **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** और **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की इजाज़त नहीं देते थे उन्हों ने उन्हें **यकमुश्त बारह माह सफ़र** की इजाज़त दे दी। घर में **इस्लामी बहनों का इज्तिमाअ़** शुरूअ़ हो गया। वालिद साहिब ने **दाढ़ी** सजा ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की एक "मजलिस" की उन्हें तन्ज़ीमी त़ौर पर सूबाई सत़ह़ पर ज़िम्मादारी की सआ़दत भी मिली।

*गर्चे फ़नकार हो, क़ाफ़िले में चलो — गो गुलूकार हो, क़ाफ़िले में चलो*
*ख़ुल्द दरकार हो, क़ाफ़िले में चलो — फ़ज़्ले ग़फ़्फ़ार हो, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**गुनाह की दस नुहूसतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माहोल किस क़दर इन्क़िलाबी है, इस के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की सआ़दत और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की ब-र-कत से बसा अवक़ात बड़े से बड़ा बिगड़ा हुवा शख़्स भी राहे रास्त पर आ जाता, गुनाहों से पीछा छुड़ाता, सुन्नतें अपनाता और आ'माल नामे में ख़ूब नेकियां बढ़ाता है। वाक़ेई गुनाह छोड़ ही देने चाहिएं, ख़ुदा की क़सम ! गुनाह व मा'सियत में नुहूसत ही नुहूसत है, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 300 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"आंसूओं का दरिया"** सफ़हा 48 ता 49 पर है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से हरगिज़ धोके में न पड़ना :

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّیِّئَةِ فَلَا یُجْزٰۤی اِلَّا مِثْلَهَا (پ۸الانعام:۱۶۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर।

क्यूं कि गुनाह अगर्चे एक ही हो अपने साथ दस बुरी ख़स्लतें ले कर आता है : ﴾1﴿ बन्दा गुनाह कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़ब दिलाता है और वोह عَزَّوَجَلَّ उसे पूरा करने पर क़ुदरत रखता है ﴾2﴿ वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इब्लीसे मल्ऊ़न को ख़ुश करता है ﴾3﴿ जन्नत से दूर हो जाता है ﴾4﴿ जहन्नम के क़रीब आ जाता है ﴾5﴿ वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है ﴾6﴿ वोह अपने बातिन को नापाक कर बैठता है ह़ालां कि वोह पाक होता है ﴾7﴿ आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों या'नी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है ﴾8﴿ वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रौज़ए मुबा-रका में रन्जीदा कर देता है ﴾9﴿ ज़मीन व आस्मान और तमाम मख़्लूक़ को अपनी ना फ़रमानी पर गवाह बना लेता है ﴾10﴿ वोह तमाम इन्सानों से ख़ियानत और रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है।

## "ग़ीबतें करने वाले क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेंगे" के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानों के माबैन होने वाली ग़ीबतों की 40 मिसालें

"ना'त ख़्वानी" निहायत उ़म्दा इबादत है, सुरीली आवाज़ बेशक रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत है मगर इस में इम्तिह़ान बहुत सख़्त है, जिसे इख़्लास मिल गया वोही काम्याब है। बा'ज़ ना'त ख़्वान مَاشَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल होते हैं जो कि बिग़ैर किसी दुन्यवी लालच के आंखें बन्द किये इ़श्क़े रसूल में डूब कर ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं और सामिईन के दिलों को तड़पा कर रख देते हैं जब कि बा'ज़ ला उबाली चन्चल और इन्तिहाई ग़ैर सन्जीदा होते हैं, इस त़रह़ के ना'त ख़्वानों में जिन बद नसीबों का दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से ख़ाली होता है, वोह पीछे से एक दूसरे पर जी भर कर तन्क़ीदें करते, ख़ूब ख़ूब **ग़ीबतें** करते, आवाज़ों की नक़्लें उतार कर ठीकठाक मज़ाक़ उड़ाते और ऊपर से ज़ोरदार क़ह्क़हे लगाते हैं। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ हक़ीक़ी म-दनी ना'त ख़्वान ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सदक़े उन्हें भी इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में रोने रुलाने वाला मुख़्लिस ना'त ख़्वान बनाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ऐसे ना'त ख़्वानों की इस्लाह़ के जज़्बे के तह़त इन के

दरमियान होने वाली मु–तवक़्क़अ़ **ग़ीबतों** की 40 मिसालें अ़र्ज़ करता हूं : ❁ पता नहीं येह मौलवी **माईक** पर कहां से आ गया कि इतनी लम्बी तक़रीर शुरूअ़ कर दी है ! ❁ लोग उक्ता कर उठ उठ कर जा रहे हैं मगर येह है कि माईक ही नहीं छोड़ता ❁ बानिये मह़फ़िल ने लाइट का इन्तिज़ाम ठीक नहीं करवाया ❁ मन्च (स्टेज) पर डेकोरेशन कम थी ❁ इस ने ना'त ख़्वानों को गरमी में मार दिया एक पेड स्टिल फ़ेन ही रख दिया होता ❁ यार ! येह साउन्ड वाला भी बिल्कुल बेकार साउन्ड लाया है ❁ कोर्डलेस (Cordless) माईक की तरकीब भी ठीक नहीं थी ❁ उस ना'त ख़्वान ने सारा वक़्त ले लिया हमारी बारी ही नहीं आने दी मुझे ताख़ीर से मौक़अ़ दिया ❁ मुझे कम वक़्त दिया ❁ यार ! येह ना'त ख़्वान माईक पर नहीं आना चाहिये था, इस ने रुलाने वाली ना'त पढ़ कर मह़फ़िल का रुख़ ही बदल डाला, लोग तो झुमाने वाली त़र्ज़ पर नोटें लुटाया करते हैं ! ❁ यार ! इस ना'त ख़्वान ने नया कलाम सुना कर बड़ी चालाकी से जेबें ख़ाली करवा ली हैं हमारे लिये कुछ नहीं बचा ! ❁ अरे ! इस को माईक कहां दे दिया ! एक तो आवाज़ बे सुरी है और ऊपर से लम्बी करता है लोग उठ जाते हैं, हम किस के सामने ना'त पढ़ेंगे ? ❁ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कलाम पढ़ना नहीं आता ❁ पुरानी त़र्ज़ में पढ़ता है ❁ पुरसोज़ त़र्ज़ें ठीक से नहीं पढ़ पाता ❁ इस को झुमाने वाले कलाम पढ़ने नहीं आते ❁ अ़–रबी कलाम नहीं पढ़ पाता ❁ येह ना'त ख़्वान त़र्ज़ें बिगाड़ कर पढ़ता है ❁ फ़ुलां ना'त ख़्वान जहां माल ज़ियादा हो वहीं जाता और वहां के ह़िसाब से कलाम पढ़ता है ❁ वोह जब ना'त पढ़ता है तो उस का मुंह कैसा बन जाता है ! ❁ अरे उस के ना'त पढ़ने का अन्दाज़ देखा है ऐसा टेढ़ा मुंह कर के गला फाड़ कर सुर बनाता है कि हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है ❁ बानिये मह़फ़िल बड़ा कन्जूस है, जेब में हाथ ही नहीं डालता था ❁ फ़ुलां की आवाज़ ज़रा अच्छी है तो मग़रूर हो गया है ❁ वोह तो भई बहुत बड़ा ना'त ख़्वान है, हम जैसे छोटे ना'त ख़्वानों को तो लिफ़्ट भी नहीं करवाता ❁ मन्च (स्टेज) पर मालदारों को बिठा रखा था ❁ इस के नख़्रे बहुत हो गए हैं ❁ त़र्ज़ कलाम के मुत़ाबिक़ नहीं थी ❁ ईको साउन्ड पर इस का गला ज़ियादा काम करता है ❁ इस

को नज़राने मिलने पर कैसा जोश चढ़ता है ❁ ज़ियादा लोगों में ज़ियादा खुलता है ❁ फुलां ना'त ख़्वान चूंकि फ़ारिग़ है, इस लिये नई नई तर्ज़ें बनाता रहता है ❁ भई ! वोह तो जैसे बहुत बड़ा ना'त ख़्वान हो महफ़िल में अपनी बारी के वक़्त ही आता और कलाम पढ़ कर चला जाता है ❁ इस और उस ना'त ख़्वान की जोड़ी है येह दोनों किसी को घास नहीं डालते ❁ बार बार एक ही कलाम पढ़ता है ❁ फुलां ना'त ख़्वान की नक़्क़ाली करता है ❁ न जाने किस शाइर का कलाम उठा लाया था ❁ बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों की कोई ख़िदमत ही नहीं की ❁ बानिये महफ़िल ने मुझे टेक्सी का किराया तक नहीं दिया, बहुत कन्जूस निकला ❁ गला फाड़ फाड़ कर खाना सारा हज़्म हो गया, बा'द को मा'लूम हुवा कि बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों के लिये खाने का कोई इन्तिज़ाम ही नहीं किया था ❁ कल जिस के यहां महफ़िल थी वोह बड़ा दिलेर था, कवर खोला तो 1200 रुपै थे ! मगर आज वाला बानिये महफ़िल कन्जूस है 100 रुपल्ली थमा दी !

## "ग़ीबत नुक़्सान देह है" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से ईको साउन्ड वालों और केमेरा मेन के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 13 मिसालें

❁ इस का ईको साउन्ड पुराना है ❁ आवाज़ की मिक्सिंग ठीक त़रह़ नहीं करता ❁ ईको कम खोलता है ❁ ठीक त़रह़ चलाना नहीं आता ❁ आवाज़ के उतार चढ़ाव के साथ साउन्ड की आवाज़ कम या ज़ियादा नहीं करता ❁ बच्चे को भेज दिया और ख़ुद कहीं और चला गया ❁ पेडल पे काम चला दिया मिक्सर जान बूझ कर नहीं लाया ❁ स्पीकर छोटे और पुराने हैं ❁ स्टेन्ड ज़ंग आलूद थे ❁ ना'त ख़्वां को मज़ा नहीं आया ❁ मूवी वाला जान बूझ कर देर से आया था ❁ अच्छा केमेरा नहीं लाया ❁ इसे तो केमेरा पकड़ना ठीक त़रह़ नहीं आता, मूवी ख़ाक बनाएगा !

## "ग़ीबत न करें" के दस हुरूफ़ की निस्बत से मुबल्लिग़ीन व मुक़र्रिरीन के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 10 मिसालें

❁ बयान के लिये वक़्त देते वक़्त नख़रे बहुत करता है ❁ ख़्वाह म ख़्वाह अपनी वेल्यू

बढ़ाता है ❁ फ़ुलां मौलाना बहुत पैसे लेता है इस लिये हमारी पहुंच से बाहर है ❁ बिग़ैर रक़म लिये ख़ित़ाब ही नहीं करता, सुवारी का मुत़ा-लबा अलग करता है ❁ बयान की तय्यारी कर के नहीं आता ❁ रिसाला पढ़ के सुना दिया ❁ बयान में अपने औसाफ़ ज़रूर बताएगा ❁ निगरान की इजाज़त के बिग़ैर बयान करने चला जाता है ❁ निगरान को तो कुछ समझता ही नहीं ❁ बनावटी सोज़ और रिक़्क़त पैदा करता है।

## "सुन लो ! ग़ीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाएगा" के सेंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से इमाम व ख़त़ीब के बारे में की जाने वाली मु-तवक़्क़अ़ ग़ीबतों की 37 मिसालें

❁ इमाम साह़िब की शक्ल अच्छी नहीं है ❁ क्या तुम्हें कोई दूसरा इमाम नहीं मिला था जो इसे उठा लाए ! ❁ इमाम साह़िब मॉडर्न ज़ेहन के हैं सादा लिबास नहीं पहनते ❁ इमाम साह़िब के बाल बड़े अ़जीब लगते हैं ❁ सर के बालों और दाढ़ी में तेल तक नहीं लगाते ❁ इमाम साह़िब को ढंग से इमामा बांधना भी नहीं आता ❁ अक्सर नमाज़ में टाइम पर नहीं पहुंचते ❁ आप टाइम पर आते हैं आप से पहले वाले फ़ुलां इमाम साह़िब शायद ही किसी नमाज़ में टाइम पर पहुंचे हों ❁ तक्बीर कहते वक़्त इमाम साह़िब ठीक त़रह़ से हाथ सीधे नहीं करते ❁ तक्बीर कहने के बा'द हाथ नीचे लटका कर फिर बांधते हैं, सुन्नत के मुत़ाबिक़ हाथ बांधना भी नहीं आता ❁ इमाम साह़िब की क़िराअत मज़ेदार नहीं ❁ फ़ज्र में बहुत लम्बी क़िराअत कर जाते हैं ❁ क़िराअत में अक्सर भूल जाते हैं ❁ उस दिन उलटी तरतीब से सूरतें पढ़ डालीं, इन का ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर है ❁ इन की आवाज़ में गूंज नहीं है ❁ इमाम साह़िब नमाज़ पढ़ाते वक़्त सर ऊंचा रखते हैं ऐसा लगता है जैसे चांद को देख रहे हों ❁ नमाज़ पढ़ते वक़्त आंखें घुमा कर इधर उधर देखते हैं ❁ दौराने क़ियाम नज़र सज्दे की जगह पर नहीं रखते ❁ रुकूअ़ में जाते वक़्त ठीक त़रह़ झुकते नहीं ❁ इमाम साह़िब को पता नहीं क्या जवानी चढ़ी है बहुत जल्द नमाज़ ख़त्म कर देते हैं ❁ इमाम साह़िब नमाज़ पढ़ा कर हुजरे में जा बैठते हैं नमाज़ियों से मिलने के लिये नहीं रुकते ❁ पता है

आज फ़ज्र की नमाज़ मुअज़्ज़िन ने पढ़ाई, नमाज़ के बा'द मैं हुजरे में गया तो इमाम साहिब सोए पड़े थे, मैं ने उठा दिया वरना शायद आज उन की फ़ज्र ही क़ज़ा हो जाती ❁ उन का ज़ेहन म-दनी नहीं ❁ म-दनी कामों में बिल्कुल तआवुन नहीं करते ❁ आज इमाम साहिब बिग़ैर इमामे के घूम रहे थे येह कैसे दा'वते इस्लामी वाले हैं! ❁ इज्तिमाअ़ में ह़ल्क़े में नहीं आते ❁ म-दनी क़ाफ़िले में कभी सफ़र नहीं किया ❁ अन्दाज़े गुफ़्त-गू दा'वते इस्लामी वाला नहीं ❁ नमाज़ियों के नाम तक याद नहीं रखते ❁ इतने दुबले पतले हैं कि मिम्बर पर बैठे हुए बड़े अ़जीब दिखते हैं ❁ बहुत मोटे ताज़े हैं ❁ पेट निकला हुवा है ❁ पर्दे में पर्दा नहीं करते ❁ बहुत देर से बयान शुरूअ़ करते हैं ❁ अन्दाज़े बयान बस ऐसा ही है ❁ जोशीला बयान नहीं करते ❁ बिजली चले जाने की वज्ह से स्पीकर बन्द हो तो इन का गला बैठ जाता है।

## "उफ़ अहले मस्जिद की ग़ीबत !!" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद इन्तिज़ामिया के मु-तअ़ल्लिक़ की जाने वाली ग़ीबतों की 15 मिसालें

❁ येह तो बस नाम का सद्र है अस्ल हुक्म किसी और का चलता है ❁ ऐसा सद्र होगा तो मस्जिद का येही ह़ाल होगा ❁ ख़ुद तो चन्दा करता नहीं मुझे ही कहता रहता है ❁ इमाम को तो तन-ख़्वाह पहले दे देता है मेरे (या'नी मुअज़्ज़िन के) साथ पता नहीं क्या दुश्मनी है ❁ अपनी बात साबित करने के लिये दलाइल देना शुरूअ़ कर देता है किसी और की सुनना तो गवारा ही नहीं करता ❁ इस का दिमाग़ अभी बचकाना है ❁ सोच समझ कर बात नहीं करता बस जो मुंह में आया बोल देता है ❁ किसी की परेशानी का एह़सास ही नहीं करता ❁ हूं! 200 रुपै ख़ैर ख़्वाही के पकड़ा दिये इस से मेरा क्या बनेगा ❁ ख़ादिम उस का दोस्त है ना! इसी लिये उस से काम की पूछगछ नहीं करता मैं (मुअज़्ज़िन) एक बार ग़ैर ह़ाज़िर हो जाऊं तो पकड़ लेता है ❁ ख़ुद अपना घर इतने पैसों में चला के दिखाए देखता हूं अ़क़्ल ठिकाने आती है या नहीं ❁ इतने सालों से यहां हूं एक पल में बोल दिया कि तुम यहां क्यूं पिस रहे हो कोई और काम कर लो ❁ बड़ा

सद्र बना फिरता है फ़ज्र में तो आता नहीं ❁ किसी इमाम या ख़तीब को टिकने नहीं देता ❁ इस मस्जिद का मु–तवल्ली बड़ा अड़ियल आदमी है।

## "ख़बरदार ! ग़ीबत करने वाला अज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार होगा और उस को जहन्नम में मुर्दार भी खाना पड़ेगा" के अड़सठ हुरूफ़ की निस्बत से मज़्हबी त़ब्क़े में की जाने वाली ग़ीबतों की 68 मिसालें

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ाने अय्यार व मक्कार से हर दम पनाह में रखे, येह दीनदार त़ब्क़े को भी ख़ूब ख़ूब **ग़ीबतें** करवाता और गुनाहों के गहरे ग़ार में गिराता है, इस मरदूद ने मज़्हबी लोगों में **ग़ीबत** के ऐसे ऐसे अल्फ़ाज़ राइज कर दिये हैं कि येह अक्सर **ग़ीबत** कर जाते हैं और इन्हें कानों कान इस की ख़बर भी नहीं होती ! इस ज़िम्न में 68 मिसालें अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं जिन का बिला इजाज़ते शर–ई इस्ति'माल या तो **ग़ीबत** है या तोहमत या बद गुमानी या चुग़ली वग़ैरा। ❁ फ़ुलां का ज़ेहन मज़्हबी नहीं है ❁ वोह शर–अ़ शरीअ़त में कहां समझता है ❁ हमारी मस्जिद के इमाम की क्या बात करते हो वोह तो तन–ख़्वाह दार मौलवी है ❁ हमारा मुअज़्ज़िन (या फ़ुलां) पैसे वालों से तरकीबें बनाता रहता है ❁ वोह बे अ़मल है ❁ दीनी मा'लूमात से कोरा है ❁ उस को नमाज़ भी नहीं आती ❁ इस से तो फ़ुलां ज़ियादा बा अ़मल है ❁ दुन्या को नसीह़त करता है और घर वालों को छोड़ रखा है जभी तो उस की बेटी या बहन या बीवी बे पर्दा घूमती है ❁ इस से तो अच्छे अच्छे पड़े हैं ❁ "मैं मैं" करता है ❁ अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनता है ❁ **अपनी ता'रीफ़ सुनने का बड़ा शौक़ है** ❁ अपने नाम की पड़ी है ❁ नाम के लिये करता है ❁ अपनी वाह वाह चाहता है ❁ ख़ुशामद पसन्द है ❁ बहुत फैल गया है ❁ आगे आगे बैठने का बड़ा शौक़ है ❁ **उस को मूवी में आने का बहुत जज़्बा है** ❁ चुग़ल ख़ोर ❁ दो रुख़ा ❁ दोग़ला ❁ धोकेबाज़ ❁ वा'दा ख़िलाफ़ है ❁ उस ने **ग़ीबत** की ❁ तोहमत लगाई ❁ बद गुमानी की ❁ झूट बोला ❁ ग़लत़ काम किया ❁ लोफ़र ❁ जूआरी ❁ शराबी ❁ नशई ❁ चरसी ❁ भंगड़ी ❁ हेरोइन्ची ❁ अफ़्यूनी ❁ बद चलन ❁ बद मस्त सांड ❁ ज़ानी ❁ इग़्लाम बाज़

है ❁ लड़कियों को ताड़ता है ❁ इस की ज़ेहनियत गन्दी है। मेरा बाप ह़लाल ह़राम रोज़ी की परवाह नहीं करता ❁ बड़ा भाई बे नमाज़ी है ❁ बहन बे पर्दा है ❁ मेरे वालिदैन आपस में लड़ते रहते हैं ❁ घर में कोई भी क़ुरआन नहीं पढ़ा हुवा ❁ छोटा भाई फ़िल्में डिरामे देखता है ❁ बातें तो बड़ी सूफ़ियाना करता है ❁ नमाज़ एक नहीं पढ़ता ❁ पार्टियों के आगे पीछे घूमता है ❁ कल तक तो इस के पास चाय पीने के पैसे नहीं होते थे आज इस के पास महंगी गाड़ी न जाने कहां से आ गई ! ❁ ज़रूर मस्जिद (या मद्रसे) के चन्दे पर हाथ मारा होगा ! ❁ मुफ़्त का माल खा खा कर पेट बढ़ा रखा है ❁ तक़रीर में पहले अपने क़सीदे पढ़ेगा फिर मौज़ूअ़ पर आएगा ❁ येह तो दूसरे मुक़र्रिरीन का वक़्त भी खा जाता है ❁ बड़े जल्से (या इज्तिमाअ़) में तो ख़ूब गरजता बरसता है, अपनी मस्जिद में इस की आवाज़ नहीं निकलती ❁ कोई इस के हाथ न चूमे तो नाराज़ हो जाता है ❁ इस को नज़राना न दिया या खाना अच्छा न खिलाया तो अगली मर्तबा नहीं आएगा ❁ येह उन्ही का यार है जो इस की हां में हां मिलाते हैं, जो ज़रा इख़्तिलाफ़ करे उसे जूती की नोक पर रखता है ❁ ख़ुशामद पसन्द है ❁ चार तक़रीरें रट रखी हैं जहां जाता येही बयान करता है ❁ ख़ुद को बड़ा अ़ल्लामा समझता है ❁ फ़ुलां भी कोई आ़लिम है ! ❁ इस के मद्रसे में वोही मुफ़्ती रह सकता है जो इस के मन पसन्द फ़तवे दे ❁ चार किताबें पढ़ ली हैं तो इस का दिमाग़ आस्मान पर चढ़ गया है ❁ जुमुआ़ जुमुआ़ आठ दिन नहीं हुए तन्ज़ीम में शामिल हुए और हमें नसीह़तें करना शुरूअ़ कर दी हैं !

## "ग़ीबत में ऐसी बू होती है कि अगर समुन्दर में डाल दी जाए तो उसे भी बदबूदार कर देगी" के साठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से ग़ीबत की मु-तफ़र्रक़ 60 मिसालें

❁ दुन्यादार ❁ नफ़्स का बन्दा है ❁ बीवी पर ज़ुल्म करता है ❁ क़र्ज़ा दबा लिया है ❁ चोर ❁ ख़ाइन ❁ बद दियानत ❁ घपले बाज़ ❁ ले भागू ❁ पैसे खा गया है ❁ ख़ुश्क मिज़ाज ❁ सख़्त दिल ❁ बे वफ़ा ❁ इस का तो माले मुफ़्त दिले बे रह़्म वाला ह़िसाब है

❁ एह़सान फ़रामोश है ❁ फ़टीचर ❁ भगोड़ा ❁ बावला ❁ पगला ❁ घन चक्कर ❁ अ़क़्ल का अन्धा है ❁ इस की अ़क़्ल घास चरने गई है ❁ इस के दिमाग़ में भूसा भरा हुवा है ❁ शक्की मिज़ाज ❁ वस्वसिया है ❁ ड्यूटी पूरी नहीं देता ❁ ह़राम का माल खाता है ❁ मग़रूर ❁ अकड़ फूं है ❁ इस का दिमाग़ हर वक़्त आस्मान पर रहता है ❁ लालची ❁ ह़रीस ❁ बख़ील ❁ इस की तो भई ! चमड़ी जाए मगर दमड़ी न जाए ❁ कन्जूस मक्खी चूस है ❁ **किसी की चलने नहीं देता** ❁ किसी को आगे नहीं आने देता ❁ अपनी लीडरी चमकाता है ❁ अपने नम्बर बनाता है ❁ चौधराहट जमा रखी है ❁ नख़्रे बाज़ ❁ "गले पड़ू" ❁ **ढीट** ❁ चलता पुर्ज़ा ❁ बिकाउ माल ❁ जिधर पैसा देखता है उधर लुढ़क जाता है ❁ लार्ड साह़िब ❁ या नवाब साह़िब है ❁ माल से मह़ब्बत करता है ❁ ग़रीबों को घास भी नहीं डालता ❁ पेट का बन्दा है ❁ मस्के बाज़ ❁ चापलूस ❁ बटर पॉलिश करने वाला ❁ ख़ुशा-मदी है ❁ हर मुआ़-मले में टांग अड़ाता है ❁ बड़ा बे ह़या है, आज फिर नमाज़ में इस का मोबाईल बज रहा था ❁ ख़ुद को बड़ा अ़क़्ल मन्द समझता है ❁ पक्का मत़्लबी है ❁ मफ़ाद परस्त है।

## "चुप रहो सलामत रहोगे" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से वक़्फ़ के अजीरों के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबतों की 15 मिसालें

❁ लेट आता है मगर पैसे बचाने के लिये ह़ाज़िरी बर वक़्त आने की लगाता है ❁ इजारे के वक़्त इधर उधर की बातों में वक़्त ज़ियादा ज़ाएअ़ करता है ❁ उ़र्फ़ के ख़िलाफ़ ज़ाती काम करने के बा वुजूद भी कटौती नहीं करवाता ❁ शो'बा ज़िम्मेदार का चहीता है तभी वोह इसे कुछ नहीं कहता ❁ मेरी तरक़्क़ी की राह में रुकावट है ❁ मुझे ज़िम्मादारी मिल जानी थी इस ने नहीं मिलने दी ❁ येह क़ाबिलिय्यत में मुझ से बहुत कम है पर तन-ख़्वाह मेरे बराबर की ले रहा है ❁ शो'बा ज़िम्मेदार बस एवईं है इसे क़ाबिलिय्यत और सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ काम लेना नहीं आता ❁ इसे काम न देना, लटका देगा ❁ इसे ठीक से पढ़ाना नहीं आता ❁ काम में ग़-लत़ियां बहुत करता है ❁ ह़वाले निकालने में बहुत देर लगा देता है ❁ रद्दी तरजमा करता है ❁ काम

मुकम्मल करने में बहुत दिन लगा देता है ۞ थोड़ा सा काम था इतने दिन लगा दिये ।

**बग़ल में केन्सर के ग़ुदूद : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार की जाती है, **बाबुल मदीना** कराची के अ़लाक़े नयाआबाद की एक इस्लामी बहन के बग़ल में ग़ुदूद हो गए और डॉक्टरों ने **केन्सर** क़रार दे दिया । येह सुन कर उन के पैरों तले से ज़मीन निकल गई, बे बसी का आ़लम था वोह कर भी क्या सकती थीं, रो धो कर चुप हो रहीं, ह़ालत दिन ब दिन बिगड़ती जा रही थी, यहां तक कि तीन तीन दिन तक उल्टियां करती रहती थीं, एक इस्लामी बहन ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **जूनागढ़ हॉल** (नयाआबाद) में हर बुध को होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा 'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की और दिलासा देते हुए फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से आप की परेशानी दूर हो जाएगी । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **उन्हों ने इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में जब शिर्कत की तो इस की ब-र-कत से ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर न सिर्फ़ बग़ल के ग़ुदूद ग़ाइब हो गए बल्कि केन्सर का मरज़ भी जाता रहा ।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब वोह सिह़ह़त मन्द हैं, और इस पर डॉक्टर्ज़ भी ह़ैरान हैं । वाह ! क्या बात है सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ! कि इस की ब-र-कत से उन की केन्सर जैसी मोहलिक बीमारी जाती रही ।

*पड़े आ के कैसी भी उफ़्ताद [1] तुम पर — न घबराना लेगा बचा म-दनी माह़ोल*
*ऐ बीमारे इस्यां [2] तू आ जा यहां पर — गुनाहों की देगा दवा म-दनी माह़ोल*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**1.** या'नी आफ़त **2.** गुनाहों का मरीज़

## "या रब ! इल्म की ब-र-कतों से मह़रूम न कर" के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से त़-लबा में की जाने वाली ग़ीबतों की 26 मिसालें

❁ फ़ुलां पढ़ाई में कमज़ोर है ❁ इस के तलफ़्फ़ुज़ ग़लत़ होते हैं ❁ इस के मख़ारिज दुरुस्त नहीं ❁ इस का ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर है ❁ ठोट ❁ कुन्द ज़ेह्न ❁ जाहिल ❁ अनपढ़ है ❁ बात ज़रा देर से समझता है ❁ इस की अ़क़्ल मोटी है ❁ ग़ुल्ले मारता है ❁ नक़्लें मार कर ❁ रिश्वत दे कर ❁ सोर्स लगा कर ❁ इम्तिह़ान पास किया है ❁ मैं ने बहुत मेह़नत से तय्यारी की थी, फ़ुलां मुम्तह़िन (या'नी इम्तिह़ान लेने वाले) ने ना इन्साफ़ी की, कि फ़ुलां जो कि पढ़ाई में मुझ से कमज़ोर है उस को ज़ियादा नम्बर दे दिये ! ❁ मद्रसे की इन्तिज़ामिया का सद्र या फ़ुलां रुक्न ख़ुशामद पसन्द (या ना इन्साफ़ या ज़ालिम) है उस लड़के का क़ुसूर ज़ियादा था मगर मेरा नाम ख़ारिज कर दिया ❁ इस बेचारे को बे क़ुसूर निकाल दिया है हमारी इन्तिज़ामिया के फ़ुलां रुक्न ने तो बिल्कुल अन्धी चला रखी है। ❁ नाज़िम बावर्ची को चीज़ें भी बराबर नहीं देता तो खाना कहां से अच्छा बनेगा ❁ नाज़िम साह़िब को जब देखो अपने कमरे में बैठे रहते हैं, कभी हमारे कमरे में आ कर हमारी ख़स्ता ह़ाली तो देखें ❁ इन्तिज़ामिया (या मजलिस) को ख़ाली चन्दा जम्अ़ करने से मत़लब है हम पर ख़र्च करने का कोई ख़याल नहीं ! ❁ इतना बद मज़ा खाना ! हमारा बावर्ची भी चूल्हे पर खाना रख कर सो जाता है ! अफ़्सोस की बात तो येह है कि नाज़िम भी इस को कुछ नहीं कहता ! ❁ सर परस्त साह़िब ने चन्दे के माल से घर बना लिया, गाड़ी ख़रीद ली। मगर हमारे कमरे के पंखे तक ठीक करवा कर नहीं दिये ❁ मद्रसे (या जामिआ़) में आने वाले बकरे इस त़रह़ नाज़िमे आ'ला के घर पहुंचा दिये जाते हैं कि किसी को कानों कान ख़बर नहीं होती ❁ हमारे मुह़ाफ़िज़े कुतुब (या'नी लायब्रेरियन) के दिमाग़ में लगता है भुस भरा हुवा है जिस किताब के बारे में पूछो इन्कार में सर हिला देते हैं ❁ फ़ुलां इतनी लम्बी छुट्टी कर के आया उस को तो द-रजे में बिठा लिया, मैं ने दो दिन छुट्टी की तो मद्रसे से नाम ख़ारिज कर दिया, आख़िर इन्साफ़ भी कोई चीज़ होती है !

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोजे़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

# ‘‘उस्ताज़ तो रूहा़नी बाप होता है’’ के बाईस हु़रूफ़ की निस्बत से असातिज़ा की ग़ीबतों की 22 मिसालें

इ़ल्मे दीन पढ़ाने वाला उस्ताज़ इन्तिहाई क़ाबिले एह़तिराम होता है मगर बा'ज़ नादान त़-लबा अपने असातिज़ा के नाम बिगाड़ते, मज़ाक़ उड़ाते हुए नक़्लें उतारते, तोह्मतें लगाते, बद गुमानियां और **ग़ीबतें** करते हैं, उन की इस्लाह़ की ख़ात़िर असातिज़ा की **ग़ीबतों** की 22 मिसालें ह़ाज़िर की हैं : ❁ आज उस्ताज़ साहि़ब का मूड ऑफ़ है लगता है घर से लड़ कर आए हैं ❁ येह फ़ुलां मद्रसे में पढ़ाते थे ❁ वहां तन-ख़्वाह कम थी, ज़ियादा तन-ख़्वाह के लिये हमारे मद्रसे में तशरीफ़ लाए हैं ❁ तौबा ! तौबा ! हमारे उस्ताज़ (या क़ारी साहि़ब) बालिग़ात को ट्यूशन पढ़ाने उन के घर जाते हैं ❁ उस्ताज़ साहि़ब पढ़ाने में मुझ ग़रीब पर कम मगर फ़ुलां मालदार के लड़के पर ज़ियादा तवज्जोह देते हैं ❁ हमारे उस्ताज़ साहि़ब जब देखो मुझे ज़लील करते रहते हैं ❁ त़-लबा पर बिला वज्ह सख़्ती करते हैं ❁ पढ़ाना आता नहीं, उस्ताज़ बन बैठे हैं ! ❁ देखा ! आज उस्ताज़ साहि़ब मेरे सुवाल पर कैसे फंसे ! ❁ उस्ताज़ साहि़ब को किताब के ह़ाशिये से मु-तअ़ल्लिक़ कोई सुवाल पूछ लो तो आएं बाएं शाएं करने लगते हैं ❁ उस्ताज़ साहि़ब ने इस सुवाल का जवाब ग़लत़ दिया है, आओ मैं तुम्हें किताब दिखाता हूं ❁ उस्ताज़ साहि़ब को ख़ुद इ़बारत पढ़नी नहीं आती इस लिये हम से पढ़वाते हैं ❁ उस्ताज़ साहि़ब को तो ढंग से तरजमा करना भी नहीं आता ❁ उस्ताज़ साहि़ब सबक़ को ख़्वाह म ख़्वाह लम्बा कर देते हैं ❁ फ़ुलां उस्ताज़ से तो मैं मजबूरन पढ़ रहा हूं, मेरा बस चले तो इन से पीरियड (या सबक़) ले कर किसी और को दे दूं या इन्हें मद्रसे ही से निकाल दूं ❁ फ़ुलां उस्ताज़ तो ‘‘बाबाए उर्दू शुरूह़ात’’ हैं, उर्दू शर्ह़ से तय्यारी कर के आते हैं, जब तक उर्दू शर्ह़ न पढ़ लें सबक़ नहीं पढ़ा सकते ❁ आज उस्ताज़ साहि़ब सबक़ तय्यार कर के नहीं आए थे इसी लिये इधर उधर की बातों में वक़्त गुज़ार दिया ❁ जब येह ज़ेरे ता'लीम थे तो पढ़ाई में इतने कमज़ोर थे कि रोज़ाना अपने उस्ताज़ से डांट खाते थे ❁ मैं ह़ैरान हूं कि फ़ुलां त़ालिबे इ़ल्म की पोज़ीशन कैसे आ गई ! ज़रूर उस्ताज़ साहि़ब ने इस को

परचे के सुवालात बताए होंगे ❁ फुलां उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) का ज़ेह्न म-दनी नहीं है उन्हों ने कभी द-रजे में म-दनी कामों के बारे में एक लफ़्ज़ नहीं बोला ❁ फुलां फुलां उस्ताज़ की आपस में बनती नहीं जब देखो एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें करते रहते हैं ❁ हमारे उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) आज कल फुलां अम्रद में बड़ी दिल चस्पी ले रहे हैं।

## ''दा'वते इस्लामी का म-दनी मक़्सद है, ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'' के सड़सठ हुरूफ़ की निस्बत से म-दनी माह़ोल में की जाने वाली ग़ीबत की 67 मिसालें

**मक्कए** मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरह زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا, मस्जिदैने करीमैन, मिना, मुज़्दलिफ़ा और अ़-रफ़ात वग़ैरा वग़ैरा मुक़द्दस मक़ामात पर भी शैत़ान गुनाह करवा देता है, न ह़ज वालों को छोड़ता है न उ़म्रे वालों को, इसी त़रह़ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से मुन्सलिक इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें भी ''गुनाह प्रूफ़'' नहीं, इन को भी इस त़रह़ **ग़ीबतें** करवाता है कि इन्हें कानों कान ख़बर तक नहीं होती लिहाज़ा ख़ास म-दनी माह़ोल में की जाने वाली **ग़ीबतों** की 67 मिसालें पेश की जाती हैं ताकि इन से और इन जैसे दीगर कलिमात व फ़िक़रात से बचने की तरकीब की जा सके ❁ वोह म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त नहीं करता ❁ उस का तन्क़ीदी ज़ेह्न है ❁ उस का अभी तक ज़ेह्न नहीं बना ❁ वोह ज़िम्मादारान से उलझता रहता है ❁ वोह बात बात पर ए'तिराज़ करता है ❁ म-दनी काम बिल्कुल नहीं करता मगर आगे आगे आने का बहुत शौक़ है ❁ कल रुक्ने शूरा के सामने टाइट इमामा बांध कर आ गया था ❁ सारा दिन इमामा नहीं बांधता ❁ बहुत मिन्नतें की मगर वोह उस को तो इमामा बांधना भी नहीं आता फुलां से बंधवाता है ❁ वोह क्या दर्स देगा पहले दर्स सुनने तो बैठे ❁ वोह इज्तिमाअ़ में देर से आने का आ़दी है ❁ उस ने तो आज तक म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र ही नहीं किया ❁ लाख समझाया मगर वोह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ नहीं करवाता ❁ वोह इश्राक़ चाश्त के नवाफ़िल नहीं पढ़ता ❁ اَلْحَمْدُ لِلّٰه हमारे अ़लाक़े की मस्जिद में तहज्जुद बा जमाअ़त होती है मगर हमारा ज़ैली

निगरान तआ़वुन नहीं करता ❁ उस का बयान तन्ज़ीमी नहीं होता ❁ उस का बयान तो मौलवियों वाला होता है, (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) ❁ वोह तो उर्दू नहीं पढ़ा हुवा दर्स कहां से देगा ❁ वोह सदाए मदीना क्या लगाएगा पहले येह तो पूछो कि फ़ज्र में उठता भी है या नहीं ! ❁ हमारे निगरान ने बस एक से जोड़ी बना रखी है और उसी की सुनता है ❁ वोह ज़बान (या आंखों या पेट) का कुफ़्ले मदीना नहीं लगाता ❁ वोह दीवाना नहीं सियाना है ❁ उस का म-दनी ज़ेहन कहां है ❁ मेरा बाप या बड़ा भाई (या फुलां) दुन्यादार है ❁ मुझे इज्तिमाअ़ में नहीं आने देता ❁ सुन्नतों भरे बयान की केसिटें भी नहीं सुनने देता ❁ इस को सुन्नतों का जज़्बा नहीं ❁ इस के बयान में कहां दम है ! ❁ इस से तो फुलां इस्लामी भाई अच्छा मुबल्लिग़ है ❁ इस के बयान में मज़ा नहीं आया ❁ बयान में लम्बी बहुत करता है ❁ अपने बयान पर खुद तो अ़मल करता नहीं है ❁ रियाकार है ❁ सब को दिखाने के लिये रोता है ❁ आंसू निकालने के लिये ज़ोर ज़ोर से आंखें भिचता है ❁ दुआ़ (मुनाजात या ना'त) में जान बूझ कर रोने जैसी आवाज़ निकालता है ❁ ढोंग करता है ❁ डिरामा बाज़ है ❁ एक्टिंग करता है ❁ लोगों के सामने ही इस को "वज्द" आता है ! ❁ छुप छुप कर फ़िल्में डिरामे देखता है ❁ गाने बाजे का शौक़ीन है ❁ **अम्रदों** से दोस्ती करता है ❁ इस को लोगों की लाइन लगवा कर मुलाक़ात करने का बड़ा शौक़ है ❁ हमारा निगरान हर दूसरे इज्तिमाअ़ में खुद बयान करने खड़ा हो जाता है ❁ मुझे बयान नहीं देता कि कहीं आगे न निकल जाऊं ❁ निगरान ने बड़ी रात के "इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त" में बे सुरे ना'त ख़्वानों को बिठा दिया हम जैसे तजरिबा कारों को मन्च पर क़दम तक नहीं रखने दिया ❁ हमारा निगरान अपनी शख़्सिय्यत बनाता है ❁ इस्लामी भाइयों को म-दनी मर्कज़ की महब्बत या इताअ़त का ज़ेह्न नहीं देता ❁ निगरान ने फ्रेन्ड सर्कल बना रखा है, नए इस्लामी भाइयों पर तवज्जोह नहीं देता ❁ किसी को आगे नहीं बढ़ने देता ❁ पुराने इस्लामी भाइयों को साइड पर कर रहा है ❁ फुलां ने निगरान की ग़-लती निकाली तो निगरान ने तो इन्तिक़ामन बेचारे का पत्ता ही काट दिया ❁ आज दुआ़ करवाने वाला मुबल्लिग़ लगता है घड़ी देखना भूल गया था जभी इतनी लम्बी दुआ़

करवाई, हमारे तो हाथ थक गए ❁ आज फिर ए'लानात करने वाले इस्लामी भाई ने जल्दी जान नहीं छोड़ी ❁ भई ! सारे उसूल हमारे लिये हैं येह जो चाहे करे ❁ हमारी शह्र मुशा-वरत का निगरान मेरी सलाहिय्यतों से ख़ौफ़ज़दा है जभी तो मुझे इज्तिमाअ़ में बयान का कभी मौक़अ़ नहीं दिया ❁ इस की निगराने पाक से तरकीब है इस लिये बड़ी रात का बयान इसे मिला, मुझे पूछा तक नहीं ❁ जहां कोई नहीं जाता वहां बयान के लिये मुझे भेज देता है ❁ हमें कहता है कि इज्तिमाअ़ की रात ए'तिकाफ़ किया करो और ख़ुद सलातो सलाम के बा'द घर निकल जाता है ❁ येह ख़ुद पहले दाढ़ी मुन्डा था, मेरी ही इन्फ़िरादी कोशिश से म-दनी माहोल में आया, आज मुझे लिफ़्ट ही नहीं करवाता ❁ फ़ुलां इस्लामी भाई ने कभी अ़लाक़े में म-दनी कामों में कोई तआ़वुन नहीं किया वैसे बड़ा ज़िम्मेदार बनता है ❁ आज तो म-दनी मर्कज़ का बड़ा वफ़ादार बनता है जब लात पड़ेगी फिर देखूंगा ❁ मुर्शिद का गुस्ताख़ है ❁ कल तक म-दनी मर्कज़ पर तन्क़ीद करता था, आज ज़िम्मेदारी मिल गई तो मर्कज़ मर्कज़ की गरदान करता है ❁ सुना है फ़ुलां को ज़िम्मेदारी से हटा दिया गया है उस ने ज़रूर कोई गड़बड़ की होगी ❁ म-दनी अ़तिय्यात में तरकीब "आउट" की होगी।

## "ग़ीबत कर के ब-र-कतों से महरूम न हों" के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से म-दनी क़ाफ़िले के मु-तअ़ल्लिक़ की जाने वाली ग़ीबत की 26 मिसालें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के तहत सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र करने वाले **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में न जाने कितनों की बिगड़ी बन जाती, नमाज़ न पढ़ने वाले नमाज़ी और त़रह त़रह के जराइम पेशा अफ़राद सुन्नतों के आ़दी बन जाते हैं। ताहम शैत़ान जो कि मस्जिद तो मस्जिद ऐन का'बे में भी मुसल्मान का पीछा नहीं छोड़ता ! तो फिर **म-दनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िरों को भला क्यूं छोड़ेगा !! लिहाज़ा बा'ज़ नादान इस्लामी भाई भी शैत़ान के हथ्थे चढ़ ही जाते और **ग़ीबतों** में पड़ ही जाते हैं लिहाज़ा ऐसों को ख़बरदार करने के लिये मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबत** की 26 मिसालें पेश की

जाती हैं : ❁ مَاشَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ❁ येह अमीरे क़ाफ़िला फुलां अमीरे क़ाफ़िला से ज़ियादा मिलनसार है उस के तो अख़्लाक़ ही सहीह़ नहीं थे ❁ उस के साथ जब सफ़र किया था बिल्कुल मज़ा नहीं आया था ❁ वोह इस्लामी भाई **जद्वल** की पाबन्दी नहीं करता ❁ जब देखो सोया रहता है ❁ वोह **नेकी की दा'वत** में ग़ाइब हो गया था मगर ❁ खाने के वक़्त जल्दी जल्दी आ कर चोकड़ी मार कर बैठ गया ❁ अब की बार के क़ाफ़िले में जिस को पकाने की ज़िम्मेदारी मिली है उस को पकाना कहां आता है ! ❁ पिछली बार पकाने वाला इस के मुक़ाबले में ग़नीमत था ❁ **दाई** नेकी की दा'वत में घबराहट की वज्ह से कुछ ग़-लतियां कर गया था ❁ वोह दुकानदार बड़ा सख़्त दिल है ❁ हम **नेकी की दा'वत** देने जाते हैं तो लिफ़्ट ही नहीं करवाता ❁ इस मस्जिद के इमाम का मुंह हम से ''फूला'' रहता है और ❁ ख़ारबाज़ी की वज्ह से दर्सो बयान में भी नहीं बैठता ❁ हां यार ! पिछली बार तुम नहीं थे इस इमाम ने तो मुबल्लिग़ को ख़्वाह म ख़्वाह झाड़ दिया था ❁ इस मस्जिद का मु-तवल्ली भी बस ऐसा ही है ❁ म-दनी क़ाफ़िला आता है तो खुश नहीं होता ❁ बत्तियां पंखे चलाएं तो कुड़ कुड़ करता है ❁ दरियां रखने बिछाने और दीगर मुआ-मलात में टोकता रहता है येह तो फुलां से हमारी तरकीब अच्छी है और मु-तवल्ली उस के रो'ब में है ❁ वरना हमें यहां क़ाफ़िला ठहराने भी न देता ❁ फुलां यूं तो हर तीस दिन में तीन दिन **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करता है मगर बाक़ी दिनों में **दा'वते इस्लामी** का कोई काम नहीं करता बल्कि ❁ नमाज़ के मुआ-मले में भी कमज़ोर है ❁ दर अस्ल इस का सेठ **दा'वते इस्लामी** का चाहने वाला है, वोह इस को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के अख़राजात भी देता है और तन-ख़्वाह भी नहीं काटता तो भाई बस माले मुफ़्त दिले बे रह़म वाला मुआ-मला है ❁ फुलां ने भी **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करना था मगर ऐन वक़्त पर बहाना कर के जान छुड़ा ली ❁ फुलां को मस्जिद में आने की दा'वत दी थी तो कैसे सीने पर हाथ रख कर सर झुका कर वा'दा किया था मगर वा'दा ख़िलाफ़ी कर गया और नहीं आया ❁ आज फुलां मुबल्लिग़ ने बयान बहुत लम्बा कर दिया था ❁ इस अ़लाक़े के फुलां फुलां आदमी बहुत खुश्क हैं कितनी ही दा'वत दो मस्जिद का रुख़ नहीं करते।

## म-दनी माह़ोल से रूठे हुए को मनाने के ग़ीबतों भरे अन्दाज़ का फ़र्ज़ी ख़ाका

**जब** कोई इस्लामी भाई रूठ जाए या किसी वज्ह से **म-दनी माह़ोल** से दूर हो जाए तो इस मुआ-मले में भलाई चाहने वालों को भी शैतान नहीं छोड़ता, वोह हमदर्दी ही हमदर्दी में **ग़ीबतों** के कीचड़ में सर ता पा लतपत हो जाते हैं और उन्हें कानों कान ख़बर तक नहीं होती ! ऐसे मौक़अ़ पर मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबतों** भरी गुफ़्त-गू का **फ़र्ज़ी ख़ाका :** (**ग़ीबतों** को वावैन ("") डाल कर वाज़ेह़ किया है) ज़ैद ने बक्र से पूछा : आज कल वलीद इज्तिमाअ़ में नज़र नहीं आ रहा ख़ैरिय्यत तो है ? बक्र ने जवाब देते हुए कहा : आप को मा'लूम नहीं उस ने हमारे निगराने पाक से ❁ "गुस्ताख़ाना गुफ़्त-गू" की थी और ❁ "गुस्से" में ❁ "चीख़ता" था ! ज़ैद : ❁ अच्छा अच्छा येह बात है जभी मैं ने परसों सलाम किया तो उस ने "जवाब नहीं दिया" ❁ उस का "मुंह फूला हुवा था" ❁ वाक़ेई बन्दा है "बड़ा अड़ियल।" मगर यार उस को ज़ाएअ़ नहीं करना चाहिये। बक्र : ❁ मेरे से तो "सीधे मुंह बात भी नहीं करता" ❁ पता नहीं "अपने आप को क्या समझता है !" ज़ैद : ❁ मैं मानता हूं कि ❁ "बहुत वायड़ा (या'नी टेढ़ा) है" ❁ "बात करने की भी तमीज़ नहीं" ❁ "समझता भी ज़रा देर में है" ❁ इस की एक वज्ह येह भी है कि "अनपढ़" है। कुछ भी है इस को बचा लेना चाहिये वरना ❁ नमाज़ें छोड़ देगा ❁ दाढ़ी मुंडवा देगा और ❁ फ़िल्में डिरामे देखने लगेगा। आओ यार दोनों चलते हैं, इस को समझाते हैं।

**अफ़्सोस ! हमें बात करनी ही नहीं आती : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! शैतान दीन का काम करने वालों से किस त़रह़ खेलता है !!! ज़ैद व बक्र साहिबान हमदर्दी की रौ में बह कर **13** अ़दद **ग़ीबतें** और आख़िर में तीन बद गुमानियां कर के गुनाहों का गठर गरदन पर लाद कर वलीद को "म-दनी माह़ोल" में दोबारा लाने के लिये चले !!!! येह तो हलकी सी झलक पेश करने की सअ़्य की है वरना येह **13 ग़ीबतें और तीन बद गुमानियां** बहुत कम हैं अगर आज कल की जाने वाली सिर्फ़ पांच मिनट की ग़ैर मोह़तात़ गुफ़्त-गू का कोई "म-दनी अल्ट्रा साउन्ड" करने वाला हो तो शायद उस में से कितनी ही मुना-फ़-क़तें, **ग़ीबतें**, तोह्मतें, झूटे मुबा-लग़े, दिल आज़ार फ़िक़्रे, बद गुमानियां, ऐ़ब दरियां, रियाकारियां, और न जाने क्या क्या ज़ाहिर कर के रख

दे ! अफ़्सोस ! हमारी ज़िन्दगी गुज़र गई मगर बात करने का ढंग न आया । काश ! सद करोड़ काश !!! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** नसीब हो जाता आह ! कहीं ऐसा न हो कि हमारी इबादतें और रियाज़तें धरी की धरी रह जाएं और ज़बान की कारस्तानियां जहन्नम में पहुंचा दें । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ से तेरी रह़मत का सुवाल है !

*बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल — नाम ग़फ़्फ़ारहै तेरा या रब !*
*ऐ़ब मेरे न खोल मह़शर में — नाम सत्तार है तेरा या रब !*

(ज़ौक़े ना'त, स. 54)

**ना जाइज़ गुफ़्त-गू जहन्नम में गिराएगी :** ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम लोग ज़बान से जो बातें करते हैं इस पर हमारी गिरिफ़्त होगी ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! तेरी मां तुझ पर रोए, लोगों को उन के मुंह के बल आग में गिराने वाली इसी ज़बान की बातें होंगी ।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ص٢٨٠ حدیث ٢٦٢٥) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ज़बान से कुफ़्र, शिर्क, **ग़ीबत**, चुग़ली, बोहतान सब कुछ होते हैं जो दोज़ख़ में ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ फेंके जाने का ज़रीआ़ हैं । (मिरआत, जि. 1, स. 53)

*मुआ़फ़ फ़ज़्लो करम से हो हर ख़त़ा या रब — हो मग़्फ़िरत पए सुल्त़ाने अम्बिया या रब*
*बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब — पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 82)

## पहले इज्तिमाअ़ में आता था अब नहीं आता उसे समझाने के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तवक़्क़अ़ 14 गुनाहों भरे जुम्ले और ग़ीबतें

**कोई** इस्लामी भाई पहले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आता था मगर अब कम आता है या नहीं आता उस की हमदर्दी करने वालों को भी शैत़ान बसा अवक़ात वोह गुल खिलाता है कि अल

अमान वल ह़फ़ीज़ ! ऐसे मौक़अ़ पर मु-तवक़्क़अ़ गुनाहों भरी गुफ़्त-गू का **फ़र्ज़ी ख़ाका :** (ग़ीबतों वग़ैरा को वावें ("") डाल कर वाज़ेह़ कर दिया है) **ज़ैद व बक्र** बाहम कुछ यूं गुफ़्त-गू करते हैं, ज़ैद पूछता है : आज कल **वलीद** इज्तिमाअ़ वग़ैरा में कम नज़र आता है क्या मस्अला है ? बक्र जवाब देता है : ❁ "ज़रा माल खींचने के चक्कर में पड़ गया है।" मंगनी की भी तरकीब बन रही है मुझ से "डरते डरते" कह रहा था कि ❁ घर वाले दाढ़ी कटवाने का कह रहे हैं "क्यूं कि लड़की वालों का" ❁ "दाढ़ी साफ़ करवाने" और ❁ "म्यूज़ीकल फ़ंक्शन रखवाने का मुत़ा-लबा है," ❁ यार ! "मेरा भी वहीं शादी करने का दिल है हो सकता है उन के मुत़ा-लबे पूरे करने पड़ जाएं !" ज़ैद : हां यार ! ❁ मेरा भी येही ख़याल था कि "वलीद थोड़ा पैसों का लालची हो गया है," येह भी सुनने में आया था कि ❁ "किसी लड़की के चक्कर में पड़ गया है" आप की बातों से भी तस्दीक़ हो रही है। और हां ❁ "येह भी सुना था कि छुप छुप कर घर में T.V.पर फ़िल्में भी देखने लगा है। ज़ैद ने मज़ीद बयान जारी रखते हुए कहा : एक इस्लामी भाई बता रहे थे कि **वलीद** ने उस दिन हेडफ़ोन लगाया हुवा था मैं ने पूछा तो ❁ "झूटमूट कह दिया कि ना'तें सुन रहा हूं" मगर मैं ने तरकीब से ❁ उस का हेडफ़ोन खींच कर अपने कानों पर लगा लिया ! ख़ुदा की पनाह ! तौबा ! तौबा ! "बहुत गन्दा गाना बज रहा था !" वलीद मेरी इस ह़-र-कत पर सख़्त नाराज़ हुवा ❁ और "उस के मुंह से गालियां निकल गईं" ख़ैर मैं ने उस को ठन्डा कर लिया। ज़ैद : यार ! बात तो तश्वीश नाक है। मगर बन्दा काम का है, इस का म-दनी माह़ोल में रहना हमारे लिये मुफ़ीद है, आओ दोनों चल कर उस को समझाते हैं, उस को बोलेंगे, ❁ भाई ! भले दाढ़ी मुंडवा दो, शादी के बा'द रख लेना ❁ शादी में म्यूज़ीकल फ़ंक्शन भी OK कर दो ❁ घर वालों के जाइज़ ना जाइज़ सब मुत़ा-लबे पूरे कर लो मगर **म-दनी माह़ोल** मत छोड़ना क्यूं कि हम को पता है कि म-दनी माह़ोल से जो अलग हो जाता है वोह बहुत गुनाहों में पड़ जाता है ! आओ चलते हैं और समझाते हैं येह कह कर **ग़ीबतों**, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों और ख़ियानतों के **गुनाहों के टोकरे** सर पर रख कर दाढ़ी मुंडवाने, म्यूज़ीकल फ़ंक्शन करने और घर वालों के ना जाइज़ मुत़ा-लबात मान लेने के मश्वरे देने की **बुरी बुरी निय्यतों** के साथ दोनों इस्लामी भाई वलीद को

समझाने की नेकी कमाने के लिये रवाना होते हैं ।

**बात अमानत होने का क़रीना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ''फ़र्ज़ी ख़ाके'' से सिर्फ़ समझाना मक़्सूद है सभी अगर्चे इस त़रह़ के गुनाह नहीं करते मगर बा'ज़ नादान कुछ न कुछ गुनाहों में पड़ ही जाते हैं । **ज़ैद व बक्र** दोनों की बातों में **ग़ीबतों** के इलावा दीगर गुनाह भी शामिल हैं म-सलन **ग़ीबत** सुनना, ड़यूब उछालना, डरते डरते राज़दारी में कही हुई बात का पर्दा फ़ाश करना वग़ैरा । जब ख़ुद तस्लीम किया है कि डरते डरते बात की थी इस से दला-लतन वोह बात अमानत साबित होती है, फिर ऐबों से भी भरपूर थी लिहाज़ा पीछे से बयान कर देने में **ग़ीबत** के साथ साथ **ख़ियानत** का जुर्म भी लागू हुवा, बात के **अमानत** होने के लिये येह शर्त़ नहीं कि कहने वाला सरा-ह़तन (या'नी साफ़ लफ़्ज़ों में) मन्अ़ करे कि किसी को मत बताना, बल्कि अगर वोह बात करते हुए इस त़रह़ इधर उधर देखे कि कोई सुन तो नहीं रहा ! येह भी बिल्कुल वाज़ेह़ क़रीना है कि येह बात **अमानत** है । चुनान्चे सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे अमानत बुन्याद है : اِذَا حَدَّثَ الرَّجُلُ الْحَدِيْثَ ثُمَّ الْتَفَتَ فَهِيَ اَمَانَةٌ ''जब कोई आदमी बात कर के इधर उधर देखे तो वोह बात **अमानत** है ।'' (سُنَنِ ترمذی ج۳ ص۳۸۶ حدیث۱۹۶۶)

**मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी अगर कोई शख़्स तुम से अकेले में कोई बात कहे और बात के दौरान या बात के दरमियान में इधर उधर देखे कि कोई सुन न ले तो वोह अगर्चे मुंह से न कहे कि येह किसी से न कहना मगर उस की येह ह़-र-कत बताती है कि वोह राज़ की बात है लिहाज़ा उसे अमानत समझो, उस का राज़ ज़ाहिर न करो, किसी से येह बात न कहो । سُبْحٰنَ اللهِ (عَزَّوَجَلَّ) कैसी पाकीज़ा ता'लीम है ! (मिरआत मनाजीह़, जि. 6, स. 629)

**सुधरने की जिद्दो जह्द जारी रखिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबतों** और गुनाहों की आ़दतों से तौबा कीजिये और सुधरने के लिये ख़ूब जिद्दो जह्द फ़रमाइये और सुधरने की दुआ़ से भी हरगिज़ न उक्ताइये और यूं भी दिल थोड़ा मत कीजिये कि मैं तो इतना अ़र्सा हुवा **म-दनी**

**माहोल** से वाबस्ता हो चुका हूं, ख़ूब दुआएं भी मांगता हूं मगर मेरी सहीह़ मा'नों में इस्लाह़ नहीं हो पाती। फ़ोरी तौर पर **तौबा** की क़बूलिय्यत के आसार ज़ाहिर हो जाएं येह कोई ज़रूरी नहीं, तौबा करने से हरगिज़ न उक्ताएं हर दम **तौबा** किये जाएं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर ज़रूर करम होगा। नेक बन्दे उ़म्र भर बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में गिड़गिड़ाते रहते थे, कभी भी नहीं उक्ताते थे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़्ह़ात पर मुशतमिल किताब, "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" सफ़्ह़ा 41 ता 43 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इस्ह़ाक़ अस्फ़राइनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने तीस30 बरस **अल्लाह** तआ़ला से तौ-बतुन्नसूह़ नसीब होने की इल्तिजा की, **तीस30 बरस** के बा'द मैं अपने दिल में मु-तअ़ज्जिब हुवा और दरबारे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ परवर्द गार (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे **तीस बरस** हो चुके हैं तुझ से सिर्फ़ एक ह़ाजत के लिये इल्तिजा करते हुए लेकिन तूने अब तक वोह भी पूरी नहीं फ़रमाई।" जब मैं सोया तो ख़्वाब में एक शख़्स देखा जो मुझे कह रहा था : तू अपनी तीस30 सालह दुआ़ पर तअ़ज्जुब करता है ! तुझे येह मा'लूम नहीं कि तू कितनी बड़ी चीज़ का मुत़ा-लबा कर रहा है ? तू उस चीज़ का मुत़ा-लबा कर रहा है कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे अपना दोस्त बना ले, क्या तूने **अल्लाह** तआ़ला का येह इर्शाद नहीं सुना कि :

اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَیُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ﴿۲۲۲﴾ (پ۲البقرۃ۲۲۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

**तो क्या तू तौबा को मा'मूली शै ख़याल करता है ? : हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है कि अ़न्क़रीब गुनाहों पर इसरार करने के मरज़ का तुम्हारे दिल से क़ल्अ़ क़म्अ़ (या'नी ख़ातिमा) हो जाए और गुनाहों की नुहूसत का बोझ तुम्हारी गरदन से उतर जाए। और गुनाहों की वज्ह से जो क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) पैदा होती है इस से हरगिज़ बे ख़ौफ़ न हो।

बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो, क्यूं कि बा'ज़ **सालिह़ीन** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين ने फ़रमाया है : बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है, और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, त़ाअ़त (या'नी इ़बादत) के लिये मौक़अ़ नहीं मिलता, नसीह़त से कोई फ़ाएदा नहीं होता (या'नी नसीह़त व बयान सुन कर दिल पर असर नहीं होता)। ऐ अ़ज़ीज़ ! किसी गुनाह को मा'मूली न ख़याल कर और कबीरा गुनाहों पर इसरार करने के बा वुजूद अपने आप को ताइब (या'नी तौबा करने वाला) गुमान न कर।

*मुह़ीत़ दिल पे हुवा हाए नफ़्से अम्मारा — दिमाग़ पर मेरे इब्लीस छा गया या रब*
*मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं — ह़क़ीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अ़त़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## "ग़ीबत बड़ी तबाहकार है" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से "मजालिस" के बारे में की जाने वाली ग़ीबतों की 16 मिसालें

❁ निगरान ने मजलिस में सिर्फ़ ख़ुशा-मदी इस्लामी भाइयों को लिया है ❁ मजलिस के किसी भी फ़र्द की आपस में नहीं बनती ❁ पता नहीं क्या देख कर इस को येह ज़िम्मेदारी दे दी गई है ❁ मैं इतना पुराना हूं निगरान ने फिर भी मजलिस में नहीं लिया और उसे म-दनी माह़ोल में आए जुमुआ़ जुमुआ़ आठ दिन हुए हैं मजलिस में ले लिया ❁ मजलिस में रहना है तो बस इस की हां में हां मिलाते जाओ ❁ मजलिस के फ़ुलां फ़ुलां रुक्न इज्तिमाअ़ के दौरान मक्तब में बैठे गपें हांक रहे थे ❁ इक़ामत हो गई फिर भी फ़ुलां फ़ुलां अपने मक्तब से निकल कर बा जमाअ़त नमाज़ के लिये अन्दरूने मस्जिद नहीं आए ❁ सूए इत्तिफ़ाक़, कि "मजलिस" के सारे ही अराकीन बड़े रफ़ हैं ❁ फ़ुलां मजलिस का निगरान बिल्कुल एक्टिव (ACTIVE) नहीं बस

❁ शो पीस है ❁ फ़ुलां मजलिस का निगरान अपना मक्तब साफ़ नहीं रखता और ❁ वहां चीज़ें भी इधर उधर बिखरी रहती हैं ❁ हमारी मजलिस के फ़ुलां रुक्न को इन्फ़िरादी कोशिश करना ही नहीं आती ❁ एक नए इस्लामी भाई से उलझ बैठा था वोह तो मैं पहुंच गया और तरकीब बन गई मगर नया इस्लामी भाई सख़्त बद ज़न हो चुका था ❁ फ़ुलां ज़िम्मेदार तो है मगर फ़अ़्आ़ल नहीं दर अस्ल इस को रखना मजबूरी है फ़ारिग़ करेंगे तो ग्रूप बनाएगा और तंग करेगा ❁ फ़ुलां के निगरान का ज़ेह्न हड़ा हूड़ी वाला है।

## "वक़्त की बरबादी" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मजलिस बराए इज्तिमाअ़ और मु-तवक़्क़अ़ 11 ग़ीबतें

**हफ़्तावार** सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये म-सलन किसी ने आप से कहा कि इस बार फ़ुलां मुबल्लिग़ को बयान का मौक़अ़ दे दिया जाए तो आप की त़रफ़ से जवाब मिला : मा'ज़िरत ख़्वाह हूं, उन को बयान नहीं दे सकूंगा। इतना जवाब काफ़ी था मगर अब आगे जो कुछ कहा जाएगा वोह गुनाहों भरा है म-सलन कहा : इस की वज्ह येह है ❁ येह लटका देता है ❁ बहुत लेट आता है ❁ इस के बयान में दम नहीं होता ❁ इस का बयान ठन्डा होता है ❁ लोग इस के बयान में उठ उठ कर चले जाते हैं ❁ बयान की तय्यारी कर के नहीं आता ❁ इस के तलफ़्फ़ुज़ ग़लत़ हैं ❁ बहुत लम्बी करता है ❁ काफ़ी चिक्नी करता है ❁ माईक नहीं छोड़ता ❁ इस को बयान करना कहां आता है ! वग़ैरा वग़ैरा। अगर कोई पूछे कि उस को बयान क्यूं नहीं देते तब भी जवाबन मुबल्लिग़ की पोलें खोलने की ज़रूरत नहीं और येह भी न कहिये कि "कुछ कहूंगा तो **ग़ीबत** हो जाएगी" कि येह भी **ग़ीबत** ही की एक सूरत है अगर्चे आप ने उस का कोई मख़्सूस ऐब ज़ाहिर नहीं किया मगर इस जुम्ले के ज़रीए येह ज़रूर इज़्हार कर दिया कि "उस में कुछ ख़ामियां मौजूद हैं।" सिर्फ़ शुरूअ़ वाला जुम्ला ही जो **ग़ीबत** से पाक था वोह दोहरा दीजिये कि "मा'ज़िरत ख़्वाह हूं, उन को बयान नहीं दे सकूंगा।" मज़ीद कहिये कि अगर वोह मुबल्लिग़ ख़ुद पूछेंगे तो मुम्किना सूरत में उन को वुजूहात अ़र्ज़ कर दूंगा। अब अगर वोह मुबल्लिग़ आ जाएं और उन में वाक़ेई

ख़ामियां हों तो तन्हाई में अहसन त़रीके़ पर समझा दीजिये। इस त़रह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ग़ीबत** वग़ैरा की आफ़त से काफ़ी हिफ़ाज़त रहेगी, म–दनी माह़ोल का तक़द्दुस भी बर क़रार रहेगा और आपस में महब्बतों के रिश्ते उस्तुवार रहेंगे। बस येह जे़हन में बिठा लीजिये **: न ग़ीबत करूंगा न ग़ीबत सुनूंगा।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

*सुनूं न फ़ोह़्श कलामी न ग़ीबतो चुग़ली तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब*
*करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़त़ा या रब*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 78)

**सिनेमा घर के मालिक की तौबा : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपनी ज़िन्दगी **"म–दनी इन्आ़मात"** के सांचे में ढालिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म–दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक म–दनी बहार पेश की जाती है : 1991 ई. के किसी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ वाली रात **बाबुल इस्लाम** सिन्ध के शह्‌र ज़मज़म नगर (हैदरआबाद) के एक इस्लामी भाई की मुलाक़ात एक **सिनेमा घर के मालिक** से हुई जो कि शराबी और गुनाहों का आ़दी था। उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की, कुछ पसो पेश के बा'द वोह उन के हमराह चल पड़े। इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ के दौरान **सिनेमा घर के मालिक** की ह़ालत ग़ैर हो गई। ह़त्ता कि दुआ़ ख़त्म होने के बा'द भी उस का हिचकियों के साथ रोना बन्द न हुवा। बा'द में उस ने बताया कि मैं ने जब दुआ़ के लिये हाथ उठाए और आंखें बन्द कीं तो ऐसा लगा जैसे दुआ़ की ब–र–कत से मेरे दिल की सख़्ती दूर हो रही है, मुझे अपने किये हुए गुनाह याद आने, उन का अन्जाम डराने और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रुलाने लगा। इसी दौरान जिस वक़्त कि मेरी आंखें

बन्द थीं **मैं ने अपने आप को मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के रू बरू पाया,** हर त़रफ़ नूर फैला हुवा था और भीनी भीनी ख़ुश्बू से फ़ज़ा महक रही थी। मैं काफ़ी देर तक सब्ज़ गुम्बद के जल्वों से अपने दिल को मुनव्वर करता और रोता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह इस्लामी भाई के साथ साथ पाबन्दी से इज्तिमाअ़ में आने लगे, पन्ज वक़्ता नमाज़ भी शुरूअ़ कर दी। एक दिन जब वोह इस्लामी भाई मुलाक़ात के लिये पहुंचे तो सिनेमा घर के मालिक ने बताया कि मेरे बा'ज़ वोह दोस्त जिन्हों ने बदकारी के मुआ़-मलात से आज तक मुझे नहीं रोका बल्कि मेरे साथ शराब व रबाब की मह़फ़िलों में हमेशा आगे आगे रहते थे, मेरी इज्तिमाअ़ में शिर्कत और नेकियों की त़रफ़ रग़बत का सुन कर मेरे पास आ पहुंचे। उन में जो अ़क़ाइदे अहले सुन्नत से मुत्तफ़िक़ नहीं था वोह मुझे समझाते हुए कहने लगा : ''तुम जिन के इज्तिमाअ़ में जाते हो येह लोग तो बद अ़क़ीदा हैं कि औलियाए किराम की नियाज़ दिलाते हैं, **या रसूलल्लाह** पुकारते हैं, इन के साथ मत जाया करो।'' मैं ने उस से कहा कि मैं ने **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल सिर्फ़ सुन कर नहीं बल्कि देख कर अपनाया है, मैं ने तो **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और वहां मुझे इस इस त़रह़ मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ज़ियारत हुई, अब तुम बताओ जिन **आ़शिक़ाने रसूल** के इज्तिमाआ़त में गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे नज़र आते हों येह किस त़रह़ ग़लत़ हो सकते हैं ? मेरा तो मश्वरा है कि तुम भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में शामिल हो जाओ। **ख़ुदा की क़सम** ! अब तो कोई मेरे बच्चों के गलों पर छुरी फैर दे तब भी मैं दा'वते इस्लामी का **म-दनी माह़ोल** नहीं छोड़ सकता।

***अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर***
***नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की***

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**इज्तिमाए ज़िक्र में गुनहगार भी बख़्शे जाते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में मुआ़-शरे के एक से एक बिगड़े हुए अफ़राद आते हैं और अपनी बिगड़ी बनाते हैं और बा'ज़ ख़ुश नसीब तो हाथों हाथ रह़मतों की बरसात के जल्वे भी देख लेते हैं, ख़ैर जल्वे नज़र आना न आना अपने अपने मुक़द्दर की बात है। येह ज़ेह्न में रहे कि किसी इज्तिमाअ़ वग़ैरा में सिर्फ़ अच्छा ख़्वाब नज़र आ जाना ही उस के ह़क़ पर होने की यक़ीनी दलील नहीं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी अहले सुन्नत की सुन्नतों भरी तह़रीक है और अहले सुन्नत अहले ह़क़ और सच्चे आ़शिक़ाने रसूल हैं, इन के अ़क़ाइद ऐ़न क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में **ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करने की तो क्या बात है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा 418 ता 419 पर है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते घूम फिर कर ज़िक्र की मजालिस तलाश करते हैं। जब वोह कोई ऐसी मजलिस देखते हैं जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र हो रहा हो तो उन लोगों के साथ जा कर बैठ जाते हैं और एक दूसरे को अपने परों से ढांप लेते हैं, यहां तक कि आस्मान तक का ख़ला पुर हो जाता है। जब वोह मजलिस मु-तफ़र्रिक़ (या'नी मुन्तशिर) होती है तो फ़िरिश्ते आस्मान की त़रफ़ परवाज़ कर जाते हैं। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से पूछता है ह़ालां कि वोह ज़ियादा जानने वाला है, तुम कहां से आए हो ? तो वोह अ़र्ज़ करते हैं : हम ज़मीन से तेरे बन्दों के पास से आ रहे हैं वोह तेरी पाकी और बड़ाई बयान कर रहे थे, तेरा कलिमा पढ़ते और तेरी ता'रीफ़ करते थे और तुझ से सुवाल करते थे। **रब** तआ़ला फ़रमाता है : वोह क्या मांगते थे ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : तुझ से तेरी **जन्नत** मांग रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : क्या उन्हों ने मेरी जन्नत को देखा है ? **फ़िरिश्ते** अ़र्ज़ करते हैं : नहीं। रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ? फिर **फ़िरिश्ते** अ़र्ज़ करते हैं : और वोह तेरी पनाह त़लब कर रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : किस चीज़ से पनाह चाहते थे ? अ़र्ज़ करते हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जहन्नम से। रब तआ़ला फ़रमाता है : क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा

है ? **फ़िरिश्ते** अ़र्ज़ करते हैं : नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ? फिर **फ़िरिश्ते** अ़र्ज़ करते हैं : वोह तुझ से मग़्फ़िरत चाहते थे । रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दी और उन की मुराद उन्हें अ़ता फ़रमा दी और जिस से वोह पनाह चाहते थे उन्हें उस से पनाह अ़ता फ़रमा दी । वोह अ़र्ज़ करते हैं : या रब عَزَّوَجَلَّ ! उन में फ़ुलां शख़्स भी है जो बहुत गुनहगार है वोह वहां से गुज़र रहा था और उन के साथ बैठ गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं ने उस को भी बख़्श दिया क्यूं कि येह ऐसी क़ौम है जिस का हम-नशीन (या'नी हम-सोह़बत) भी मह़रूम नहीं रहता । (صَحیح مُسلِم ص ۱۴۴۴ حدیث ۲۶۸۹)

***बरसता नहीं देख कर अब्रे रह़मत***
***बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले***

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !     صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# “जहन्नम का खौलता हुवा पानी पीने और आग में जलने से बचें” के इक्तालीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़ारिसीन व ख़ादिमीन के बारे में की जाने वाली ग़ीबतों की 41 मिसालें

**दा'वते इस्लामी** के म-दनी मर्कज़ में और बा'ज़ ज़िम्मेदारान के पास ह़ालात की नज़ाकत के पेशे नज़र हि़फ़ाज़ती इन्तिज़ामात रखे गए हैं, मुसल्लह़ गार्ड के लिये “ह़ारिसीन” और ग़ैर मुसल्लह़ के लिये “ख़ादिमीन” की इस्तिलाह़ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में बोली जाती है । मुसल्लह़ ह़ारिसीन की अक्सरिय्यत का तअ़ल्लुक़ ता दमे तह़रीर मह़-क-मए पोलीस से है, इस्लामी भाइयों को इन की **ग़ीबतों** से और खु़द इन ह़ारिसीन व ख़ादिमीन को आपसी **ग़ीबतों** से बचाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबत** की 41 मिसालें पेश की जाती हैं : ❁ ड्यूटी के दौरान ऊंघता है ❁ ड्यूटी अच्छी नहीं करता ❁ ड्यूटी के दौरान बातों में मसरूफ़ रहता है ❁ ड्यूटी पर हमेशा ताख़ीर से आता है ❁ छुट्टियां बहुत करता है ❁ एजन्सी का मुख़्बिर लगता

है ❁ वफ़ादार नहीं लगता ❁ ह़म्ला हुवा तो फ़िरार हो जाएगा ❁ एलर्ट नहीं है ❁ गन बराबर पकड़ना नहीं आती ❁ रस्मी चेकिंग करता है ❁ जान पहचान वाले की चेकिंग नहीं करता ❁ ढीला है ❁ रिश्वत की चाट पड़ गई है ❁ मा'मूली सी चीज़ भी जेब से नहीं ख़रीदता, मांग लेता है ❁ इस को ह़लाल ह़राम की तमीज़ ही कहां है ❁ दूसरे ह़ारिसीन से बना कर नहीं रखता ❁ मुन्शी के साथ तआ़वुन नहीं करता ❁ मुन्शी के ख़िलाफ़ ग़लत़ प्रोपेगन्डा करता है ❁ लगता है इस को मुन्शी बनना है ❁ हि़फ़ाज़ती उमूर की मजलिस की ख़ामियां निकालता रहता है ❁ हि़फ़ाज़ती उमूर वालों के नाक में दम कर दिया है ❁ अपने आप को कुछ समझता है ❁ ह़ारिसीन से लड़ता रहता है ❁ बहुत बे रह़्म शख़्स है ❁ किसी को झाड़ देना ❁ दिल दुखा देना इस के लिये कोई मस्अला ही नहीं ❁ इतना बोलता हूं मगर नमाज़ नहीं पढ़ता ❁ र-मज़ानुल मुबारक में रोज़े नहीं रखता ❁ तरावीह़ नहीं पढ़ता ❁ बहुत जलाली है ❁ ख़र खोपड़ी है ❁ मेरे से तो सीधे मुंह बात भी नहीं करता ❁ अपने आप को पता नहीं क्या समझता है ❁ मजलिस वालों के कान भरता है ❁ अ़लाक़े में दादागीरी करता है ❁ ख़ादिमीन पर ऑर्डर चलाता है ❁ मजलिसे हि़फ़ाज़ती उमूर में एक भी बन्दा सह़ीह़ नहीं ❁ निगराने मजलिस ने उस ह़ारिस की बदली ग़लत़ करवाई है ❁ नया वाला ह़ारिस तो बिल्कुल एवईं है ❁ है जी-दार मगर थोड़ा अड़ियल।

## "चुप रहो सलामत रहोगे" के पन्दरह हु़रूफ़ की निस्बत से म-दनी चेनल के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ीबत की 15 मिसालें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** का हर दिल अ़ज़ीज़ **म-दनी चेनल** सुन्नतों की ख़ूब धूमें मचा रहा है और इसे ऐ़न शरीअ़त के मुत़ाबिक़ चलाया जा रहा है। इस में नमाज़ें, इज्तिमाआ़त, और बा'ज़ दीगर सिल्सिले बराहे रास्त भी दिखाए जाते हैं, म-सलन रोज़ाना बराहे रास्त बा जमाअ़त नमाज़े तहज्जुद फिर रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ व मन्ज़ूम मुनाजात, अज़ान व नमाज़े फ़ज्र, इस के बा'द म-दनी ह़ल्क़ा जिस में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत, तीन आयाते क़ुरआनी की तिलावत मअ़ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, बा'दुहू श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या पढ़ा जाता है इस के बा'द बा जमाअ़त नमाज़े इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल दिखाए जाते हैं। सेंकड़ों

इस्लामी भाई इस में शरीक होते हैं। मरदूद शैत़ान जो कि मुसल्मान को ऐन ह़ालते नमाज़ में भी वस्वसों का शिकार बनाता है वोह भला घर घर जा कर इस्लाम का पैग़ाम आ़म करने वाले इस अछूते म-दनी चेनल पर नज़र आने वालों और नाज़िरीन (या'नी देखने वालों) को क्यूं छोड़ेगा ! लिहाज़ा इन्हें भी ख़ूब ग़ीबतों पर उक्साता है चुनान्चे म-दनी चेनल के ज़िम्न में मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबत** की 15 मिसालें पेश की जाती हैं : ❁ अरे फ़ुलां ! पहले तो आख़िरी सफ़ में होता था और अब **म-दनी चेनल** पर आने के लिये जल्दी जल्दी पहली सफ़ में आ कर बैठ जाता है ❁ फ़ुलां पहले तो समझाने से भी जल्दी नहीं आता था और अब **म-दनी चेनल** की वज्ह से इज्तिमाअ़ में सब से आगे होता है ❁ उस को देखो **म-दनी चेनल** की ख़ातिर कैसा ''टाइट इमामा'' बांध कर बैठा है ❁ वोह यूं तो चादर को हाथ भी नहीं लगाता मगर **म-दनी चेनल** की ख़ातिर कैसा चादर ओढ़ कर बैठा है ❁ उस को देखो **म-दनी चेनल** में नज़र आने के लिये ना'तों में कैसा झूमता है ❁ वोह जो **म-दनी चेनल** में मुनाजात में रोता है ना ! मैं उस को जानता हूं, पक्का ढोंगी है ❁ फ़ुलां को तो इमामा शरीफ़ बांधना भी नहीं आता मगर म-दनी चेनल पर आने के लिये दूसरे से इमामा बंधवा कर ख़ूब सलीक़े से सफ़ेद चादर ओढ़ कर आगे आ कर बैठ जाता है ❁ जब म-दनी चेनल पर बयान करना हो, चादर ओढ़ लेता है, आगे पीछे चादर न जाने कहां होती है ❁ मजलिस के निगरान को फ़ुलां के साथ न जाने क्या ख़ार है उसे मौक़अ़ ही नहीं देता ❁ फ़ुलां फ़ुलां मुबल्लिग़ को आता जाता कुछ नहीं, देख कर बयानात करते हैं ❁ मजलिस के मुबल्लिग़ ने बे सुरे ना'त ख़्वानों को इकठ्ठा कर रखा है ❁ मजलिस के निगरान ने अनाड़ी केमेरा मेन रखे हुए हैं ❁ इस ने फ़ुलां ''सिल्सिला'' तो ख़ाली टाइम पास करने के लिये रखा हुवा है ❁ इस से तो पहले वाला मुबल्लिग़ अच्छे अन्दाज़ में येह ''सिल्सिला'' कर रहा था, इसे तो ठीक से बोलना भी नहीं आता ❁ म-दनी चेनल पर आने वाले फ़ुलां फ़ुलां रियाकार हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# ग़ीबत के बारे में सुवाल जवाब और दीगर अहम मा'लूमात

**दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ है, इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** पैदा हुए, इसी में उन की रूहे़ मुबा-रका क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन हलाकत त़ारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ? इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है ।**

(سُنَنِ ابوداوٗدج۱ص ۳۹۱ حدیث ۱۰۴۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !     صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**सुवाल : ग़ीबत** क्या है ?

**जवाब :** किसी के बारे में उस की ग़ैर मौजू-दगी में ऐसी बात कहना कि अगर वोह सुन ले या उस को पहुंच जाए तो उसे ना गवार मा'लूम हो ।

**सुवाल :** अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो ?

**जवाब :** जभी तो ग़ीबत है अगर मौजूद न हो फिर भी ऐसी बात उस की त़रफ़ मन्सूब कर दी तब तो येह ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह हो गया जिस को **बोहतान** (इल्ज़ाम, तोहमत) कहते हैं ।

**सुवाल :** चुग़ली किसे कहते हैं ?

**जवाब :** लोगों में फ़साद करवाने के लिये उन की बातें एक दूसरे तक पहुंचाना **चुग़ली** है। (شرح مُسلِم لِلنّووی ج۲ ص۱۱۲) शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی लिखते हैं कि जुम्हूर इसी **ता'रीफ़** के क़ाइल हैं। (عُمدۃُ القاری ج۱۵ص۲۰۹)

**सुवाल :** किसी पर ''ऐ़ब खोलना'' कब कहलाएगा ?

**जवाब :** किसी का ऐ़ब ऐसे शख़्स को बताना जिस को पहले से मा'लूम न हो।

**सुवाल :** जो पहले ही से आगाह हो उस के आगे उसी ऐ़ब का तज़्किरा करने में कोई ह़रज तो नहीं ?

**जवाब :** क्यूं ह़रज नहीं ! बिला इजाज़ते शर-ई तज़्किरा किया गया तो येह भी **ग़ीबत** में शुमार होगा ! येह थोड़े ही है कि जिस की एक बार किसी मुआ़-मले में **ग़ीबत** कर ली बस अब ज़िन्दगी भर छुट्टी हो गई और आयिन्दा के लिये उस बात में उस की **ग़ीबत** करना जाइज़ हो गया !

**सुवाल :** दो अफ़राद ने आपस में किसी की ग़ीबत की अब उस ख़ामी का आपस में आयिन्दा दोबारा तज़्किरा करें तो क्या वोह भी **ग़ीबत** है ?

**जवाब :** क्यूं नहीं ! अगर एक ही बुराई का दोनों आपस में हज़ार बार तज़्किरा करेंगे तो येह **एक हज़ार ग़ीबतें** होंगी।

## ग़ीबत के जाइज़ ना जाइज़ होने का कैसे पता चले ?

**सुवाल :** ग़ीबत से बचना सुनने के मुक़ाबले में आसान लगता है। क्यूं कि ग़ीबत की जाइज़ सूरतें भी हैं, पता कैसे चले कि सामने वाला जाइज़ **ग़ीबत** कर रहा है या ना जाइज़ ?

**जवाब :** अक्सरिय्यत का ह़ाल येह है कि सिर्फ़ बोलने की ख़ातिर बोलती है और अग़्लब या'नी ग़ालिब तरीन मुआ़-मलात ऐसे हैं कि जिन में सामने वाला मह़्ज़ बुराई बयान करने के

लिये ही **ग़ीबत** कर रहा होता है । फिर भी जब तक यक़ीनी कैफ़िय्यत न हो उस वक़्त तक फ़ैसला न सुना दिया जाए, अगर कभी दौराने गुफ़्त-गू **ग़ीबत** की इब्तिदा हो और आप की बात सुनी जाती हो तो मु-तकल्लिम (या'नी बोलने वाले) से नरमी के साथ पूछ लीजिये कि मा'ज़िरत के साथ अ़र्ज़ है कि जो बात आप करने लगे हैं वोह **ग़ीबत** की त़रफ़ जा रही है अगर आप के नज़्दीक इस **ग़ीबत** करने का कोई सह़ीह़ मक़्सद है तो बता दीजिये ! इस सुवाल के बा'द اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ बात वाज़ेह़ हो जाएगी ।

## क्या ग़ीबत सुनते ही सामने वाले को गुनहगार समझ लिया जाए

**सुवाल :** क्या किसी को **ग़ीबत** करता देख कर फ़ौरन उस को गुनहगार समझ लिया जाए कि बस अब तो येह फ़ासिक़ हो गया ।

**जवाब :** चूंकि **ग़ीबत** के जवाज़ की भी सूरतें मौजूद हैं लिहाज़ा जब तक **ग़ीबत** की वाज़ेह़ सूरत मु-तअ़य्यन न हो जाए उस वक़्त तक मु-तकल्लिम (या'नी कलाम करने वाले) को गुनहगार नहीं ठहरा सकते । जिस की बात सुनी जाती हो वोह ऐसे मौक़अ़ पर अह़सन अन्दाज़ में उसी से उस की जाने वाली **ग़ीबत** का सबब दरयाफ़्त कर ले, اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ बात वाज़ेह़ हो जाएगी, अगर जाइज़ ना जाइज़ की सूरत त़ै न हो पा रही हो तो यूं कह दिया जाए कि चूंकि आप की बात के अन्दर **गुनाह भरी ग़ीबत** में जा पड़ने का ख़दशा है लिहाज़ा इस से एह़तियात़न तौबा कर लेते हैं और फिर **तौबा** कर लीजिये, बात बदल दीजिये ।

## जाइज़ समझ कर सुन ले फिर पता चले कि येह ना जाइज़ ग़ीबत थी तो.....?

**सुवाल :** किसी ने **ग़ीबत** शुरूअ़ की और सुनने वाला समझा कि येह जाइज़ सूरत है लिहाज़ा वोह तवज्जोह से सुनता रहा मगर बा'द को पता चला कि वोह तो यूं ही "भड़ास" निकाल रहा था, या'नी वोह **गुनाह भरी ग़ीबत** थी क्या सुनने वाला भी गुनहगार हो गया ?

**जवाब :** अगर क़राइन व सियाक़े गुफ़्त-गू या'नी बातचीत के अन्दाज़ वग़ैरा से "**जाइज़ ग़ीबत**" होना समझ में आ रहा था इस लिये सुन ली थी तब तो सुनने वाला गुनहगार नहीं और अगर क़राइन से **गुनाह भरी ग़ीबत** होना ज़ाहिर था मगर सुनता रहा तो गुनहगार है, और अगर जाइज़ ना जाइज़ का फ़ैसला नहीं कर पा रहा था तब भी सुनना मम्नूअ़ कि आज कल बातचीत में की जाने वाली **ग़ीबतों** का राजेह़ या'नी ग़ालिब पहलू गुनाहों भरा ही होता है। तो या तो येह सूरत बनेगी कि कुछ **ग़ीबतें** जाइज़ वाली होंगी और कुछ ना जाइज़ वाली तो नतीजा येही निकलेगा कि गुनहगार बहर ह़ाल हो जाएंगे और या "शक" की सूरत बनेगी या'नी या जाइज़ है या ना जाइज़ है यूं दोनों त़रफ़ बराबर बराबर ज़ेह्न जा रहा होगा, बहर ह़ाल जहां **जाइज़ व ना जाइज़** का फ़ैसला न हो पा रहा हो वहां भी **ग़ीबत** सुनना मम्नूअ़ ही रहेगा कि यहां कम से कम द-र-जए मुश-तबिहात (या'नी मश्कूक चीज़ों) का बनता है और ह़दीसे पाक में इस से भी बचने का हुक्म फ़रमाया गया है कि जिस ने अपने आप को मुश-तबिहात (या'नी शुब्हे वाली चीज़ों) से बचा लिया उस ने अपनी इ़ज़्ज़त और दीन को बचा लिया।

## अ़वाम जाइज़ व ना जाइज़ ग़ीबत में कैसे तमीज़ करें ?

**सुवाल :** अक्सर अ़वाम के पास इतना इ़ल्म ही नहीं होता कि वोह "जाइज़ व ना जाइज़" **ग़ीबत** में तमीज़ कर सकें, ऐसे में क्या किया जाए ?

**जवाब :** आसान और मोह़तात़ त़रीक़ा समझाने की मैं ने कोशिश की है और मैं येही कर सकता हूं, **ग़ीबत** के सारे अह़काम घोल कर पिला नहीं सकता, दुन्या का हर फ़न सीखने से आता है लोग जब कोशिश करते हैं तो मुश्किल से मुश्किल फ़न भी सीख ही लेते हैं और इन को सीखने के लिये मुल्क ब मुल्क का सफ़र भी करना पड़े तो करते हैं तो वोह **ग़ीबत** जिस के ज़रूरी अह़काम सीखना **फ़र्ज़** है उस के लिये भी ख़ूब कोशिश करनी होगी, अगर

**फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 का बाब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** बार बार ग़ौर से पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़ी ह़द तक इस ''फ़र्ज़ इल्म'' को भी ह़ासिल कर लेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो फिर ''जाइज़ व ना जाइज़'' **ग़ीबत** में तमीज़ करना भी आ जाएगा।

## घर में ग़ीबत से किस त़रह़ बचे ?

**सुवाल :** आज कल घरों का माह़ोल कौन नहीं जानता, बहुत कम घर ऐसे होंगे जहां ग़ीबतें न होती हों और हर इस्लामी भाई की बात का अपने घर में इतना वज़्न भी नहीं होता कि वोह घर वालों को **ग़ीबतों** से रोक सके, ऐसी सूरत में क्या किया जाए ?

**जवाब :** वाक़ेई ह़ालात ना गुफ़्तह बिह हैं, बिलफ़र्ज़ दूसरों को बचाना मुम्किन नहीं तब भी ख़ुद को तो बचाने की तरकीब की जा सकती है, घर में **ग़ीबतें** हो रही हैं इस लिये मजबूरी समझ कर दिल चस्पी के साथ ख़ुद भी शरीक हो गया तो गुनहगार होगा। लिहाज़ा जो रोकने पर क़ादिर हो उस के लिये ज़रूरी है कि रोके और जो क़ुदरत नहीं रखता, वोह ऐसे मौक़अ़ पर वहां से हट जाए, अगर कभी ऐसा फंस गया कि हट भी नहीं सकता तो बात बदलने की कोशिश करे, इस की भी तरकीब मुम्किन नहीं और भी कोई सूरत ख़लासी की नज़र नहीं आती तो दिल में बुरा जाने और **ग़ीबतों** की त़रफ़ से तवज्जोह हटाने की भरपूर कोशिश करे। घर में **म-दनी माह़ोल** बनाने के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 के बाब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** के दर्स का सिल्सिला اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेह़द मुफ़ीद रहेगा। जब घर वाले **ग़ीबत** की तबाह कारियों से बा ख़बर होंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बचने का ज़ेह्न बनेगा और इस त़रह़ एक नहीं हज़ार फ़ितनों से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ हो कर घर अम्न का गहवारा बन जाएगा।

## दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहना कैसा ?

**सुवाल :** एक शख़्स ने मुझ से कहा कि दा'वते इस्लामी में मत जाओ येह जाहिलों का टोला है ! उस शख़्स ने येह कह कर **ग़ीबत** की या नहीं ?

**जवाब :** ग़ीबत मु–तअय्यन व मा'लूम शख़्स या अश्ख़ास में मौजूद ऐब या बुराई को पीठ पीछे बयान करने को कहते हैं। लिहाज़ा मज़्कूरा जुम्ला **ग़ीबत** नहीं कहलाएगा क्यूं कि इस में मुअय्यन फ़र्द या अफ़राद का तज़्किरा नहीं है। हां अगर क़ाइल की निय्यत दा'वते इस्लामी के हर फ़र्द को जाहिल कहने की है तो अलबत्ता **ग़ीबत** हुई और एक फ़र्द की नहीं उन तमाम मुसल्मानों की हुई जो जाहिल हैं और इस में शामिल हैं। चूंकि हर हर फ़र्द को जाहिल कहा गया है और फ़िल ह़क़ीक़त दा'वते इस्लामी जाहिलों का टोला नहीं है कि इस में हज़ारों उ़–लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसों की कसरत फ़रमाए। आमीन) भी शामिल हैं तो अगर उस ने येह जानते हुए भी हर हर फ़र्द को जाहिल कहने की निय्यत से दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहा है तो उन उ़–लमाए किराम की तौहीन भी हुई और उन पर जहालत की **तोहमत** भी। शख़्से मज़्कूर का येह कहना कि दा'वते इस्लामी में मत जाओ अगर बिला किसी मस्लह़ते शर–ई है तो येह नेकी से रोकना है और रोकने वाला इस हुक्मे क़ुरआनी : مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿۱۲﴾ (پ ۲۹ القلم: ۱۲) (**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** भलाई से बड़ा रोकने वाला ह़द से बढ़ने वाला गुनहगार) में दाख़िल है।

## बहुत सारे मुसल्मानों की इकट्ठी ईज़ा

**सुवाल :** दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहने वाले की निय्यत अगर मा'लूम न हो कि आया उस ने एक एक फ़र्द को जाहिल कहा है या क्या, और अगर उस पर **ग़ीबत** का हुक्म नहीं लगेगा तो क्या इस त़रह़ का जुम्ला कहना जाइज़ है ?

**जवाब :** ग़ीबत की एक मख़्सूस ता'रीफ़ है लिहाज़ा जो कलिमा या इशारा वग़ैरा उस ता'रीफ़ के तह़्त दाख़िल हो वोही **ग़ीबत** है मगर जो बात **ग़ीबत** नहीं है उस का बे ग़ुबार होना ज़रूरी भी नहीं। मज़्कूरा जुम्ले में ईज़ाए मुस्लिम का पहलू नुमायां है मगर इस की बा'ज़ सूरतें हैं म–सलन (1) अगर दा'वते इस्लामी के दो मुख़ालिफ़ीन या दा'वते इस्लामी से ग़ैर

मु-तअ़ल्लिक़ा दो अफ़राद आपस में बैठे येह जुम्ले कहते हैं तो यहां ईज़ा रसानी का गुनाह नहीं होगा लेकिन इस में बा अ़मल मुसल्मानों के एक बहुत बड़े तब्क़े के बारे में झूट या तोहमत या तह़क़ीर व इस्तिहज़ा (या'नी उन को ह़क़ीर समझने और उन का मज़ाक़ उड़ाने) का पहलू भी मौजूद है और येह सब उमूर ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं लिहाज़ा येह जुम्ला या इस से मिलते जुलते जुम्ले कहने वाले और सुन कर ताईद करने वाले अपनी आख़िरत की ज़रूर ज़रूर ज़रूर फ़िक्र करें (2) कोई दा'वते इस्लामी वाला या दा'वते इस्लामी का मुह़िब (या'नी अहले मह़ब्बत) मौजूद है और उस के सामने कहा कि दा'वते इस्लामी जाहिलों का टोला है तो येह उस दा'वते इस्लामी वाले या अहले मह़ब्बत की दिल आज़ारी है और (3) अगर दस इस्लामी भाई या सो इस्लामी भाई बैठे हुए थे और उन से येह जुम्ला कहा और सब को इत्तिलाअ़ हुई तो सब की ईज़ा रसानी और दिल आज़ारी का गुनाह हुवा और बेशक मुसल्मान की तह़क़ीर (या'नी उस को ह़क़ीर जानना) या उस का मज़ाक़ उड़ाना और दिल दुखाना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। बह़रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहन्शाह, साह़िबे मज्दो जाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, आमिना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के महरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی الله** या'नी जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرانی ج ٢ص ٣٨٦ حدیث ٣٦٠٧)

**इज्तिमाई दिल आज़ारियों के 12 जुम्लों की मिसालें : बयान** कर्दा सूरतों की रोशनी में एक या बहुत सारे मुसल्मानों के लिये **ईज़ा** का बाइस बन सकने वाले जुम्लों की 12 मिसालें मुला-ह़ज़ा हों : ❁ पोलीस वाले रिश्वत ख़ोर होते हैं ❁ पोलीस वाले अपने बाप को भी नहीं बख़्शते ❁ फ़ुलां क़बीले वालों का पेशा ही चोरियां करना है ❁ फ़ुलां ज़ात के लोग सूदख़ोर होते हैं ❁ फ़ुलां ख़ानदान के अफ़राद नीच (या'नी कमीने) होते हैं ❁ फ़ुलां बिरादरी

वाले बुज़दिल होते हैं ❁ म-दनी चेनल बस ऐसा ही है ❁ फ़ुलां मद्रसे या फ़ुलां इदारे के मदारिस का मे'यारे ता'लीम सह़ीह़ नहीं ❁ फ़ुलां क़बीले के लोग झगड़ालू होते हैं ❁ इन्कम टेक्स ऑफ़ीसर्ज़ रिश्वत के बिग़ैर क़ाबू नहीं आते ❁ फ़ुलां क़ौम वालों से तअ़ल्लुक़ात मत बढ़ाना येह फ़्रॉडी होते हैं ❁ मारवाड़ (हिन्द) के बाशिन्दे कन्जूस होते हैं जभी तो येह मुह़ावरा बना : ''फ़ुलां कन्जूस मारवाड़ी है।''

## सुवाल करने वाले के भूलने पर हंसना

**सुवाल :** म-दनी मुज़ा-करे या मद्रसे के द-रजे में एक इस्लामी भाई सुवाल पूछने के लिये खड़े हुए मगर घबरा गए और सुवाल का कुछ ह़िस्सा भूल गए इस पर बा'ज़ों को हंसी आने लगी मगर उन्हों ने एक दम ख़ुद पर क़ाबू पा लिया, बा'ज़ बे इख़्तियार हंस पड़े, बा'ज़ हंस हंस कर लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे थे, और साइल के पीछे बैठने वालों में से एक ने मुस्कुरा कर दूसरे की त़रफ़ देखा और साइल की त़रफ़ कुछ इस त़रह़ आंखों से इशारा किया कि देखो तो कैसा परेशान हो रहा है ! इस पर दूसरे ने भी मुस्कुरा कर इसी त़रह़ का इशारा किया। इन सब के बारे में क्या हुक्म है ?

**जवाब :** जिन्हों ने हंसी रोकी वोह बहुत अच्छे रहे, जो बे इख़्तियार हंस पड़े वोह भी बे क़ुसूर हैं, क़स्दन हंसने और लुत़्फ़ अन्दोज़ होने वाले जान बूझ कर साइल की दिल आज़ारी का बाइ़स बने और पीछे से आंखों ही आंखों में त़न्ज़िया इशारे करने वालों ने **ग़ीबत** का इरतिकाब किया। जान बूझ कर दिल आज़ारी का बाइ़स बनने वाले तौबा के साथ साथ साइल से मुआ़फ़ भी करवाएं, **ग़ीबत** करने वाले तौबा करें और अगर तौबा से पहले ही साइल को पता चल गया हो तो उस से मुआ़फ़ भी करवाएं।

## इस किताब के बारे में वस्वसा

**सुवाल :** ब कसरत लोग गुनाहों और बुराइयों से इस ख़ौफ़ की वज्ह से बच जाते हैं कि देखने वाला क्या कहेगा या येह किसी और को जा कर बता देगा, या लोगों में येह बात फैल जाएगी

तो मेरी बे इ़ज़्ज़ती होगी। **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 का बाब **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** आ़म हो जाने में कहीं ऐसा न हो कि छुप कर गुनाह करने वालों का दिल खुल जाए कि मेरे गुनाह पर मुत्त़लअ़ होने वाला अब तो किसी से जा कर मेरी **ग़ीबत** करेगा ही नहीं और यूं वोह उस गुनाह को मुस्तक़िलन इख़्तियार न कर लें या अपनी इस्लाह़ की कोशिश में सुस्ती न करें या सिरे से कोशिश ही तर्क न कर दें, क्या इस त़रह़ गुनाहों में दिलेरी बढ़ नहीं जाएगी ? म–सलन अगर कोई अपनी ज़ौजा को बिग़ैर इजाज़ते शर–ई मारने पीटने का आ़दी हो और वोह इस्लामी बहन **ग़ीबत** के डर से किसी से तज़्किरा न करे तो क्या येह शोहर "ज़ालिम" से "अज़्लम" (या'नी बहुत ज़ियादा ज़ुल्म करने वाला) नहीं बन जाएगा ? या कोई इस्लामी भाई जमाअ़त वाजिब होने के बा वुजूद घर में नमाज़ पढ़ लेता हो और उसे येह पता हो कि मेरा भाई किसी और के सामने मेरा ऐ़ब नहीं खोलेगा तो क्या वोह घर पर नमाज़ पढ़ने ही को अपनी आ़दते सानिया नहीं बना लेगा ?

**जवाब :** अव्वल तो येह बात ज़ेह्न में रखिये कि **"ग़ीबत की मज़म्मत"** दा'वते इस्लामी वालों की ईजाद नहीं, इस की तो पिछली शरीअ़तों में भी मुमा–न–अ़त थी नीज़ क़ुरआने करीम व अह़ादीसे मुबा–रका में भी इस की मुख़ा–लफ़त ब शिद्दत मौजूद है, **ग़ीबत** के ज़रूरी अह़काम जानना हर आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान पर **फ़र्ज़े ऐ़न** है, जो नहीं जानता वोह गुनहगार और नारे दोज़ख़ का ह़क़दार है। **ग़ीबत** के मसाइल में काफ़ी तफ़्सील है। मुत्लक़न या'नी किसी भी सूरत में किसी का **ऐ़ब** खोल ही नहीं सकते ऐसा नहीं, **ग़ीबत** की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं जिन का पीछे बयान गुज़र चुका। कहीं **ऐ़ब** और **ऐ़बी** की नौइय्यत का ए'तिबार है तो कहीं **ऐ़ब** खोलने वाले की निय्यत पर हुक्मे शर–ई का इन्ह़िसार है। अब म–सलन शोहर वाक़ेई ज़ुल्म करता है और बीवी इस से नजात पाने की निय्यत से सिर्फ़ ऐसे फ़र्द से उस ज़ुल्म का तज़्किरा करती है जो उसे ज़ुल्म से छुड़ा

सकता है तो येह **''जाइज़ ग़ीबत''** है। इसी त़रह़ बिला उ़ज़्र बिग़ैर जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वाले का भाई अगर उसे समझाने पर क़ादिर नहीं और किसी क़ुदरत रखने वाले से इस निय्यत से ज़िक्र करता है कि वोह इस को समझाए या इस निय्यत से किसी पर इज़्हार करता है ताकि भाई शरमिन्दा हो कर तर्के जमाअ़त के गुनाह से बाज़ आ जाए तो येह भी **''जाइज़ ग़ीबत''** बल्कि सवाब का ह़क़दार बनाने वाली ग़ीबत है।

**बद गुमानी मत कीजिये :** बाक़ी रही येह बात कि **ग़ीबत** न करने वाले की वज्ह से बा'ज़ लोग गुनाहों पर दिलेर हो जाएंगे तो येह **शैत़ानी वस्वसा** ही है और इस की वज्ह से शर-ई अह़काम से मुसल्मानों को जाहिल नहीं रखा जा सकता बल्कि मुअ़य्यन मुसल्मानों के बारे में क़राइने वाज़ेह़ा (या'नी साफ़ साफ़ अ़लामात) न होने के बा वुजूद अगर येह ज़ेह्न बना लिया कि फ़ुलां फ़ुलां अब गुनाहों पर दिलेर हो जाएगा तो येह **बद गुमानी** है जो कि **ह़राम** है।

**फ़तावा र-ज़विय्या में एक वस्वासी की गोश-माली : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की बारगाहे आ़लीशान में एक ऐसे शख़्स के बारे में **सुवाल** हुवा जो कि कहता था कि मैं तो आज कल की दा'वतों में नहीं जाता क्यूं कि अक्सर दा'वतें दिखावे और रियाकारी की होती हैं और लोग रिज़्क़ या'नी खाने की भी काफ़ी बे ह़ुरमती करते हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस सुवाल का जो कुछ **जवाब** इर्शाद फ़रमाया उस का लुब्बे लुबाब है **:** क़बूले दा'वत **सुन्नत** है। किसी मुअ़य्यन या'नी मख़्सूस मुसल्मान के लिये बिग़ैर क़राइने वाज़ेह़ा के (या'नी साफ़ साफ़ अ़लामतों के बिग़ैर) येह समझ लेना कि इस ने **नाम-वरी** और रिया के लिये येह दा'वत की है ऐसी **बद गुमानी ह़रामे क़त़ई** है। अगर कहीं ह़ुबूबे त़आ़म (या'नी खाने के दानों और ग़िज़ा के अज्ज़ा) की बे अ-दबी होती भी है तो इस शख़्स को चाहिये कि बे

अ-दबी करने वालों को समझाए अगर वोह लोग न मानें तो वबाल उन्हीं लोगों पर है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम सफ़्फ़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ''मैं आज कल दा'वत में जाने की कोई निय्यत नहीं कर पाता सिवाए इस के कि **नमक दानी** रोटी पर से उठाऊंगा।'' आ'ला ह़ज़रत ''फ़तावा हिन्दिय्या'' के ह़वाले से मज़ीद फ़रमाते हैं : रोटी और चपाती पर पियालों का रखना दुरुस्त (या'नी मुनासिब) नहीं اِلٰخ। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर येह शख़्स نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر या'नी बुराई से मन्अ़ करने की निय्यत से जाएगा तो सवाब पाएगा।

(तफ़्सील के लिये देखिये फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 672 ता 674)

**दा'वत में जाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं : रोटी** पर से नमक दानी उठाने की निय्यत से जाने वाले बुज़ुर्ग के अ़मल से येह सीखने को मिला कि दा'वत में जाने के लिये इस त़रह़ की अच्छी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं कि वहां अगर किसी को खाना ज़ाएअ़ करता या कोई काम ख़िलाफ़े सुन्नत करता पाऊंगा तो नेकी की दा'वत देने का सवाब कमाऊंगा और येह भी मा'लूम हुवा कि रोटी पर **नमक दानी,** चाट मसा-लह़े की शीशी, सालन या रायते का पियाला या अचार चटनी की पियाली रखनी मुनासिब नहीं। दा'वत में जाने न जाने की बा'ज़ सूरतें भी हैं म-सलन मा'लूम है कि वहां गाने बाजे होंगे और इस के जाने से न येह बन्द होंगे न ही येह उन को रोक सकता है तो अब दा'वत में जाने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। (तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 31 ता 38 पर ''वलीमा और ज़ियाफ़त का बयान'' पढ़ लीजिये या कम अज़ कम सफ़ह़ा 35 से मस्अला नम्बर 1,2,3 मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये)

**सिर्फ़ लोगों के डर से गुनाह छोड़ने का नुक़्सान : लोगों** से डर कर गुनाह छोड़ना भी अगर्चे मुफ़ीद है कि गुनाह के इरतिकाब से बच जाएगा ताहम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर कर गुनाह से कनारा कशी का ज़ेह्न बनाना चाहिये। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**मुका-श-फ़तुल क़ुलूब**'' के सफ़ह़ा 258 पर

है एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इन्सान जितना तंगदस्ती से डरता है अगर उतना जहन्नम से डरता तो दोनों से नजात पा लेता, और जितनी इसे दौलत से **महब्बत** है अगर जन्नत से उतनी महब्बत होती तो दोनों को पा लेता, और जितना ज़ाहिर में लोगों से डरता है अगर उतना बातिन में **अल्लाह** तआला से डरता तो दोनों जहानों की सआदतें पा लेता। (مُکاشَفَةُ الْقُلوب ص١٢٩) अगर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बजाए सिर्फ़ लोगों के डर से ही गुनाह छोड़ने का जज़्बा रहा तो जो जो गुनाह लोगों में बाइसे शर्म नहीं होंगे उन पर बेबाकी और जुरअत बढ़ती चली जाएगी और आज कल इस के नज़्ज़ारे आम हैं म-सलन बे नमाज़ी होना अब मुसल्मानों में مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाइसे शर्म व आर नहीं रहा तो हालत येह हो चुकी है कि ग़ालिबन दुन्या के 95 फ़ीसद मुसल्मान नमाज़ नहीं पढ़ते और जो पढ़ते है उन में शायद 99 फ़ीसद को दुरुस्त नमाज़ पढ़नी नहीं आती और सीखने की ज़हमत भी कम ही करते हैं !! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! कि नमाज़ों के अवक़ात में मुसल्मानों के दुन्यवी कारोबार धूम धड़क्के से जारी रहते हैं। नमाज़ के मुक़ाबले में **र-मज़ानुल मुबारक** में "रोज़ा" न रखना मुसल्मानों में ब ज़ाहिर अब भी क़दरे मा'यूब समझा जाता है लिहाज़ा जो रोज़ा नहीं रखते उन में के अक्सर लोग इस का इज़्हार नहीं होने देते और दिन के वक़्त छुप कर खाना खाते हैं। काश ! हर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये करने का म-दनी ज़ेहन बन जाए। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **ह़दाइक़े बख़्शिश** शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

*छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह* — *वोह ख़बरदार है क्या होना है*
*अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख* — *सर पे तलवार है क्या होना है*
*काम ज़िन्दां[1] के किये और हमें* — *शौक़े गुलज़ार है क्या होना है*
*इस कड़ी धूप को क्यूंकर झेलें* — *शो'लाज़न नार है क्या होना है*
*उन को रह़्म आए तो आए वरना* — *वोह कड़ी मार है क्या होना है*
*मुंह दिखाने का नहीं और सह़र[2]* — *आ़म दरबार है क्या होना है*

1. क़ैद खाना 2. सुब्ह़

*ले वोह ह़ाकिम के सिपाही आए*

*सुब्ह़ इज़्हार है क्या होना है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 167, 169)

## ग़ीबत से बचने की तरबियत किस त़रह़ ह़ासिल हो ?

**सुवाल :** "ग़ीबत की तबाह कारियां" पढ़ कर येह एह़सास हुवा कि वाक़ेई मुआ़-शरे की अक्सरिय्यत **ग़ीबत** की लपेट में है, तक़्रीबन आवे का आवा ही बिगड़ा हुवा है, उ़मूमन तवज्जोह भी नहीं होती और कई **ग़ीबतें** अपनी नुहूसतें लुटा चुकी होती हैं। ऐसे होशरुबा ह़ालात में मुआ़-शरे के अन्दर इन्सान कैसे गुज़ारा करे ? घर, दुकान, बाज़ार, मह़ल्ला, दोस्त अह़बाब की बैठकें जिधर जाएं अक्सर **ग़ीबतें** ही **ग़ीबतें** ! ग़ीबत से बचने की तरबियत कैसे ह़ासिल हो ? मुआ़-मला बहुत ही मुश्किल मा'लूम हो रहा है !

**जवाब :** देखिये ! दस्तूर येही है कि हर काम सीखने से आता है अगर किसी काम के बारे में पहले ही से ज़ेह्न बना लिया जाए कि येह बहुत मुश्किल है ! तो फिर नफ़्सियाती त़ौर पर इस का असर येह होता है कि वोह वाक़ेई मुश्किल बन जाता है। अगर ज़बान पर **क़ुफ़्ले मदीना** लगा रहे, अच्छी बुरी सोह़बत की तमीज़ आ जाए, तन्हाई में दिल लगाने की मश्क़ कर ली जाए तो एक **ग़ीबत** ही क्या मज़ीद बे शुमार गुनाहों से भी जान छूट सकती है। किसी चीज़ को सीखने के लिये उस की धुन होनी ज़रूरी है, म-सलन ड्राइविंग ही को ले लीजिये, वाक़ेई इस का सीखना इन्तिहाई दुश्वार अम्र है येह तसव्वुर ही कितना ख़ौफ़नाक है कि जान हथेली पर ले कर गाड़ी चलानी होगी ज़रा भी चूकेंगे तो हाथ पैर तुड़वा बैठेंगे या जान ही चली जाएगी ! ड्राइविंग की तरबियत लेने वाला पहले पहल तो स्टेरिंग पर हाथ रखते ही कांप जाता होगा। क्यूं कि उसे येह बताया जाता है कि दो पाउं से एक साथ क्लच, ब्रेक और एक्सीलेटर (clutch, break, Accelerator) को संभालना है, फिर दो हाथों से स्टेरिंग के साथ साथ गीअर (gear) को भी ह़स्बे ज़रूरत बदलते रहना है, साथ ही गाड़ी चलाते हुए इन दो आंखों से आगे, पीछे, दाएं और

बाएं भी देखना है, तरबियत लेने वाले को इस बात का भी ख़याल रखना है कि न मुझ से किसी को नुक़्सान पहुंचे और न ही मुझे कोई नुक़्सान हो। आख़िरे कार तरबियत लेते लेते वोह गाड़ी चलाना सीख ही जाता है। सारी गाड़ियों में **रेलगाड़ी** चलाना शायद सब से मुश्किल काम है, येही वज्ह है कि त़य्यारा उड़ाने वाला (PILOT) आप को नौ जवान मिल जाएगा मगर रेलगाड़ी का ड्राइवर सिर्फ़ उधेड़ उ़म्र ही का मिलेगा क्यूं कि इस के लिये इतनी त़वील मुद्दत तक मश्क़ करनी पड़ती है कि जवानी ही रुख़्सत हो जाती है! इस के बा वुजूद रेलगाड़ी के ड्राइवरों की भी एक ता'दाद दुन्या में मौजूद है।

**हमारी अक्सरिय्यत को बात करना ही नहीं आती : बहर ह़ाल** हमें बात करने की भी तरबियत लेनी होगी और इस की एह़तियातें भी सीखनी होंगी, जी हां अन्दाज़े गुफ़्त-गू को यक्सर बदल कर इस पर आ़जिज़ी व नरमी का पानी चढ़ाना और हुस्ने अख़्लाक़ की मुलम्मअ़ कारी और ख़ूब पॉलिश करनी होगी। यक़ीन मानिये आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत को शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ बातचीत करना ही नहीं आती, मा'मूली सा ख़िलाफ़े मिज़ाज मुआ़-मला होते ही अच्छा ख़ासा मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ का आदमी भी एक दम जारिह़ाना अन्दाज़ पर उतर आता है! एक **ग़ीबत** ही नहीं, तोहमत, चुग़ली, बद गुमानी, झूटा मुबा-लग़ा, दिल आज़ारी और ईज़ाए मुस्लिम के तअ़ल्लुक़ से बहुत सारी चीज़ें आज कल की जाने वाली अक्सर गुफ़्त-गू का ह़िस्सा होती हैं। लिहाज़ा दिल बरदाश्ता हुए बिग़ैर अव्वलन इस बात को तस्लीम कर लीजिये कि हमें दुरुस्त बोलना ही नहीं आता मगर जिस त़रह़ पैहम कोशिश के बा'द इन्सान एक अच्छा ड्राइवर बन जाता है, हम भी मुसल्सल जिद्दो जह्द करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ बात करना सीख ही जाएंगे।

**ग़ीबत के ज़रूरी अह़काम सीखना फ़र्ज़ है : गाड़ी** चलाने के लिये बदन के अक्सर आ'ज़ा म-सलन दिमाग़, आंखें, कान, हाथ, पाउं वग़ैरा एक ही वक़्त में सरगर्मे अ़मल (ACTIVE) रखे जा सकते हैं तो आख़िर **ग़ीबत** से बचने के लिये हम चोकन्ने क्यूं नहीं रह सकते! गाड़ी चलाने

में ख़ता की सूरत में माली व जानी नुक़्सानात का अन्देशा है लेकिन **ग़ीबत का इलाज** वग़ैरा न सीखने में जहन्नम में जा पड़ने का ख़दशा है। याद रखिये ! जो ड्राइविंग नहीं जानता वोह मा'मूली सा भी गुनहगार नहीं जब कि **ग़ीबत** जो कि मोहलिकात (या'नी हलाक करने वाली चीज़ों) में से है, उस के ज़रूरी अह़काम जानना हर मुसल्मान आ़क़िल बालिग़ पर फ़र्ज़े ऐन है और **ग़ीबत** के बारे में ज़रूरी मसाइल न जानने वाला गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार है।

**ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** "ग़ीबत" से बचने की तदबीर करते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर करम होगा और इस से बचना भी आसान हो जाएगा। किसी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई का बयान है कि एक दिन मेरे पास जुदा जुदा वक़्त में दो इस्लामी भाई कुछ इस अन्दाज़ से आए कि मैं समझ गया कि अब **ग़ीबत** की नुहूसत में फंसे ही फंसे, मैं ने अपने सीने पर सजा हुवा वोह कार्ड दोनों को पढ़ा दिया जिस पर जली हुरूफ़ में लिखा था : "**ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा** (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)" इस की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि एक तो चुप साध गया जब कि दूसरे ने ख़ूब संभल कर गुफ़्त-गू की और वोह भी फ़क़त़ दो मिनट। (कार्ड **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब किया जा सकता है)

**क्या शिकायत सुन ही नहीं सकते ? :** देखिये ! बिल्कुल ऐसा भी नहीं है कि हर हर बात गुनाहों भरी **ग़ीबत** ही हो, तन्ज़ीमी मसाइल के ह़ल के लिये शिकायात भी सुनी जा सकती हैं और इस का ह़ल भी पेश किया जा सकता है मगर कुछ एह़तियाती़ तदाबीर इख़्तियार की जाएं म-सलन जो **ग़ीबत** के इब्तिला का ख़ौफ़ मह़सूस करे वोह आने वाले को इब्तिदाअन मु-तज़क्करा ज़िम्मेदार की त़रह़ कार्ड पढ़ा दे या ज़बानी ही कह दे : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा। "**ग़ीबत** की ता'रीफ़" बता दे, **ग़ीबत** पर अ़ज़ाब की एकआध वईद सुना दे और दर-ख़्वास्त करे कि सिर्फ़ ह़स्बे ज़रूरत ही शिकायत कीजिये नीज़ ऐसे मौक़अ़ पर इस बात का ख़ास ख़याल रखा जाए कि एक भी ग़ैर ज़रूरी फ़र्द गुफ़्त-गू में शरीक न होने पाए। दा'वते इस्लामी की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** की त़रफ़ से इनायत कर्दा म-दनी मश्वरों में पढ़ कर सुनाने वाले **19 म-दनी फूलों** में की येह

तह़रीर हो सके तो हि़फ़्ज़ कर लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों से बचने में बहुत मदद मिलेगी। वोह तह़रीर येह है **:** आइये हाथों हाथ कुछ अच्छी अच्छी निय्यतें भी किये लेते हैं **:** ۞ **ग़ीबत** करूंगा न सुनूंगा ۞ चुग़ली नहीं खाऊंगा ۞ किसी ज़िन्दा या (मुर्दा) मुसल्मान के अन्दर मौजूद ख़ामी या बुराई को बिला इजाज़ते शर-ई पीठ पीछे बयान कर के **ग़ीबत,** मुंह पर बयान कर के **दिल आज़ारी** और जिस ने बुराई न की हो इस के बा वुजूद उस की त़रफ़ बुराई मन्सूब कर के **तोहमत** का गुनाह नहीं करूंगा। **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है **:** "**ग़ीबत** करने वालों, **चुग़ुल** ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों के ऐ़ब तलाश करने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक्ल में उठाएगा"। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ص٣٢٥ حديث ١٠)

**चुग़ली की ता'रीफ़ :** किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना **चुग़ली** है। (عُمدةُ القاری ج٢ ص٥٩٤ تحتَ الحديث ٢١٦) ۞ किसी के बारे में दिल में बुरा यक़ीन कर लेने से बचूंगा कि येह **बद गुमानी** है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं **:** ख़बीस गुमान (या'नी बद गुमानी) ख़बीस दिल से निकलता है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 231) ۞ **झूटी मुबा-लग़ा आराई, ख़ुशामद, ख़ुद पसन्दी** (या'नी अपनी राय को ही दुरुस्त समझने) से बचूंगा।

**काश ! हमारा येह ज़ेहन बन जाए कि जूं ही किसी मुसल्मान का "मन्फ़ी तज़्किरा" निकले फ़ौरन ख़बरदार हो जाएं और ग़ौर करें, अगर वोह ग़ीबत हो तो फ़ौरन इस से बाज़ आ जाएं कोई और येह गुफ़्त-गू करने लगा हो तो उस को मुनासिब त़रीक़े पर रोक दें, अगर वोह बाज़ न आए तो वहां से उठ जाएं, या बात बदल दें। अगर उसे रोकना या अपना वहां से हटना मुम्किन न हो तो उस गुफ़्त-गू में दिल चस्पी न लें बल्कि दिल में बुरा जानें।**

*अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा*

*मह़बूब के सदक़े में मुझे नेक बना दे*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 115)

**तन्ज़ीमी मसाइल का ह़ल और ग़ीबत : शैत़ान** ग़ीबतें करवा कर दीन के **म-दनी काम** का भी बहुत नुक़्सान करवाता है। लिहाज़ा अगर आप किसी इस्लामी भाई में बुराई पाएं तो बिला इजाज़ते शर-ई दूसरों पर इज़्हार कर के **ग़ीबत** का कबीरा गुनाह करने के बजाए बराहे रास्त उसी को अकेले में नरमी के साथ समझाइये अगर नाकामी हो तो ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाइये और उस के लिये दुआ़ कीजिये। अगर दीनी नुक़्सान का अन्देशा हो तो अपने ज़ैली मुशा-वरत के निगरान को तन्हाई में बता कर या लिख कर उस का तआ़वुन ह़ासिल कीजिये जब कि वोह मस्अला ह़ल कर सकता हो। वरना शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए मज़ीद आगे म-सलन ह़ल्क़ा मुशा-वरत के निगरान से रुजूअ़ कीजिये, यहां भी बात न बने तो ब तदरीज (या'नी तरतीब वार) ऊपर वाले ज़िम्मेदार से तरकीब बनाइये। याद रखिये ! अगर शर-ई मस्लह़त के बिग़ैर किसी एक से भी ख़्वाह वोह कितना ही बड़ा तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार हो उस इस्लामी भाई की बुराई बयान की तो आप गुनहगार व अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हो जाएंगे। अगर आप ने बात आ़म कर दी और ग़ीबतों, तोह्मतों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों और दिल आज़ारियों के गुनाहों का दरवाज़ा खुल गया, अ़लाक़े में तन्ज़ीमी मसाइल खड़े हो गए और सुन्नतों भरे **म-दनी कामों** को भी नुक़्सान पहुंचा तो येह सब मुआ़-मलात आप की आख़िरत के लिये सख़्त नुक़्सान देह साबित हो सकते हैं।

**फ़ितने फैलाने की वईदें : जो** बद नसीब लोग मुसल्मानों में बुरे चरचे जगाते और फ़ितने उठाते हैं उन को डर जाना चाहिये कि पारह 18 **सू-रतुन्नूर** आयत नम्बर 19 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

**बा'ज़** लोग बहुत ही झगड़ालू त़बीअ़त के मालिक होते हैं, ख़्वाह म ख़्वाह **ग़ीबतें** करते, चुग़लियां खाते, तन्क़ीदें करते, बाल की खाल उतारते, बात बात पर फ़सादात बरपा करते और

मुसल्मानों के लिये ईज़ा का बाइस बनते रहते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि पारह 30 **सू-रतुल बुरूज** की दसवीं[10] आयते मुबा-रका में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे इब्रत बुन्याद है :

اِنَّ الَّذِیْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِیْقِ ﴿۱۰﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जिन्हों ने ईज़ा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिये आग का अ़ज़ाब।

**फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत : हृदीसे** पाक में है : "फ़ितना सोया हुवा होता है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत जो इस को बेदार करे।" (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص ۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵)

*गुनाहों के सिवा क्या मेरे नामे में भला निकले !*
*अगर मीज़ां पे पेशी हो गई तो हाए ! बरबादी !!*
*सरे महशर मेरे ऐ़बों का जिस दम तज़्किरा निकले*
*करम से उस घड़ी सरकार पर्दा आप रख लेना*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 115)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**इन्फ़िरादी कोशिश के ग़लत़ अन्दाज़ का फ़र्ज़ी मुका-लमा : इन्फ़िरादी कोशिश** करने में सुवालात से परहेज़ करना बहुत मुनासिब है क्यूं कि बा'ज़ सुवालात सामने वाले को मुरव्वत में **झूट** बुलवा सकते हैं, "इन्फ़िरादी कोशिश" के ग़लत़ अन्दाज़ को **फ़र्ज़ी मुका-लमे** की सूरत में पेश करने की सअ़्य करता हूं : बाबुल मदीना के किसी **मुबल्लिग़** और **ज़ैद** की मुलाक़ात हुई, सलाम दुआ़ के बा'द **मुबल्लिग़** ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **सुवाल** किया : हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में आते हैं या नहीं ?

**ज़ैद** ने शिर्कत से महरूमी के बा वुजूद येह सोचते हुए कि बाबुल मदीना में होने वाले हज़ारों के

इज्तिमाअ़ में मेरे आने न आने का इस "मुबल्लिग़" को पता चलने से रहा लिहाज़ा मुरव्वत में कह दिया : जी हां।

**मुबल्लिग़** ने अपने ज़ो'म (या'नी ख़याल) में काम पक्का करने के लिये पूछा : क्या पाबन्दी से आते हैं ?

**ज़ैद** जो कि एक बार **झूट** बोल चुका था उस से इन्कार न बन पड़ा इस लिये कह दिया : क्यूं नहीं।

**मुबल्लिग़ :** अच्छा जल्दी आ जाते हैं या देर से ?

**ज़ैद** जो कि पहली बार झूट बोल कर फंस चुका था और दूसरी बार भी **झूट** बोल दिया था यूं दिल भी **झूट** के ह़वाले से खुलने लगा था लिहाज़ा बोल उठा : मैं तो जल्दी जल्दी आ कर बैठ जाता हूं।

**मुबल्लिग़ :** مَاشَآءَاللہ ! अच्छा येह तो बताइये सारी रात रुकते हैं या नहीं ? तहज्जुद के लिये उठते हैं या नहीं ? वहीं बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा करते हैं या नहीं ? फिर म-दनी ह़ल्के़ में शिर्कत करते हैं या नहीं ? इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल और इख़्तितामी सलातो सलाम पढ़ कर ही घर जाते हैं ना ?

**ज़ैद** ने मुरव्वत में : हां हां, क्यूं नहीं, जी, बेशक कहते हुए हर सुवाल की तौसीक़ कर दी और जान छुड़ाने कि लिये जूं ही पल्टा कि **मुबल्लिग़** ने कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा : अच्छा येह तो बताते जाइये ! इस साल तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ में मुलतान शरीफ़ भी आए थे ना ?

**ज़ैद** जो कि बिल्कुल नया इस्लामी भाई था इस ने सोचा कि अगर "ना" कहूंगा तो येह **मुबल्लिग़** नाराज़ हो जाएगा और लेक्चर सुनाएगा, लाखों के इज्तिमाअ़ में किस को पता कि कौन आया था और कौन नहीं लिहाज़ा यहां भी **झूट** का सहारा लेते हुए उस ने कह दिया : आया था।

**मुबल्लिग़ :** पहले दिन आए थे या आख़िरी दिन ?

**ज़ैद :** पहले ही दिन से आ गया था।

**मुबल्लिग़ :** अच्छा येह तो बताइये कि अकेले आए थे या दोस्तों को भी साथ लाए थे ?

**ज़ैद :** हम चार दोस्त मिल कर आए थे।

**मुबल्लिग़ :** भाई ! वहां से आप चारों ने हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र भी किया या नहीं ?

**ज़ैद :** जी हां, क्यूं नहीं। अच्छा मैं चलता हूं......

**मुबल्लिग़ :** अरे भाई ज़रा ठहरिये ! येह तो बताइये कि **म-दनी चेनल** देखते हैं या नहीं ?

**ज़ैद** ने मुरव्वत में यहां भी **झूटमूट** "हां" कह कर जान छुड़ाई। (मगर अभी जान कहां छूटी थी मुबल्लिग़ नें मज़ीद एक और सुवाल जड़ दिया)

**मुबल्लिग़ :** अच्छा येह तो बताइये दूसरों को म-दनी चेनल देखने की दा'वत भी देते हैं या नहीं ?

**ज़ैद :** (जो कि 13 अ़दद झूट बोल चुका था,यहां भी उस ने झूट बोल दिया) क्यूं नहीं मैं ने तो सारे ख़ानदान वालों में **म-दनी चेनल** की तश्हीर कर दी है। अच्छा मुझे इजाज़त दीजिये।

देखा आप ने ! **मुबल्लिग़** अगर्चे मज़्कूरा सुवालात कर के गुनहगार न हुवा ताहम इस के इन्फ़िरादी कोशिश के ग़लत़ अन्दाज़ के सबब **ज़ैद झूट के 15 अ़दद गुनाहों में फंसा।** बेशक **ज़ैद** ही गुनहगार हुवा कि यहां कोई **इक्राह** की सूरत न थी या'नी सच बोलने में जान चली जाने या शदीद पिटाई होने या किसी उ़ज़्व के बेकार कर दिये जाने वग़ैरा का अन्देशा नहीं था और न ही झूट की इजाज़त का कोई दूसरा सबब पाया जा रहा था, मुरव्वत में **झूट** बोले थे जिन की शरीअ़त में इजाज़त न थी।

**इन्फ़िरादी कोशिश म-दनी कामों की जान है : इन्फ़िरादी कोशिश** म-दनी कामों की जान है, **दा'वते इस्लामी** का तक़रीबन 99 % म-दनी काम **इन्फ़िरादी कोशिश** से ही हो रहा है। इन्फ़िरादी कोशिश की रूह़ **मिलन-सारी** है, इन्फ़िरादी कोशिश वाले कि लिये मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहा है उस) की नफ़्सियात परखना बेह़द ज़रूरी है। ग़फ़्लत व बे एह़तियात़ी का दौर है आज कल अक्सर बिला तकल्लुफ़ **झूट** बोला जाने लगा है इस लिये सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है, हम जब कि मुसल्मानों को नेक बनाने के मुस्तह़ब काम की कोशिश में लगे हैं तो आख़िर येह कहां की समझदारी है कि किसी को नेक बनाने कि लिये उस को गुनाहों में धकेलने वाले अन्दाज़

इख़्तियार किये जाएं हमारी तो येह कुढ़न हो कि हर मुसल्मान को गुनाहों से बचाया जाए लिहाज़ा इन्फ़िरादी कोशिश हो या **म-दनी क़ाफ़िला** या इज्तिमाअ़ के सुन्नतों भरे ह़ल्के़ हों या दीन दुन्या कोई सा मुआ़-मला कहीं भी किसी एक फ़र्द से बराहे रास्त इसी त़रह़ के सुवालात न किये जाएं, जिस की वज्ह से उस के झूट में मुब्तला होने का ख़त़रा पैदा हो अलबत्ता **म-दनी मश्वरे** जिन में ज़िम्मेदारान से कारकर्दगी ली जाती है उन में ज़रूरतन सुवालात करने में ह़रज नहीं। इसी त़रह़ मदारिस में तरबियत के लिये असातिज़ा त़-लबा से सुवालात करते हैं इस में भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

**आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? :** बा'ज़ नादान इस्लामी भाई **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए येह तक सुवाल कर देते हैं **:** भाई **नमाज़** पढ़ते हैं या नहीं ? नमाज़ी होने की सूरत में बा'ज़ अवक़ात येह सुवाल उस को ना गवार गुज़रता है कि क्या सिर्फ़ येह "मौलाना साहि़ब" ही नमाज़ पढ़ते हैं ! और अगर बे नमाज़ी हुवा तो इन्कार कर देता है और इस त़रह़ वोह तर्के नमाज़ के गुनाह के साथ साथ गुनाह के इज़्हार के गुनाह में भी फंस जाता है, जी हां बिला मस्ल-ह़ते शर-ई गुनाह का इज़्हार भी गुनाह है। म-सलन बिला इजाज़ते शर-ई येह कहना गुनाह है कि मैं नमाज़ नहीं पढ़ता, मैं तो बे नमाज़ी हूं या था, मैं र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े नहीं रखता इतने रोज़े नहीं रखे। मैं फ़ज्र की नमाज़ नहीं पढ़ता, मैं फ़िल्में डिरामे देखता हूं, गाने बाजे सुनता हूं, बद निगाही से नहीं बचता, मैं **ग़ीबतों,** चुग़्लियों वग़ैरा गुनाहों में मुब्तला हूं या था या कहा मैं चोर, डाकू, शराबी, जूआरी हूं या था वग़ैरा वग़ैरा। अगर कोई दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में आ कर इस्लाह़ पज़ीर हुवा और उस ने इस निय्यत से अपने साबिक़ा गुनाहों का इज़्हार किया ताकि लोग गुनाहों से ताइब हों और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की त़रफ़ माइल हों इस में ह़रज नहीं। वोह लोग यक़ीनन गुनहगार होते हैं जो कि बिला इस्लाहे़ निय्यत ख़्वाह म ख़्वाह अपना रो'ब डालने या लोगों को ह़ैरत में डालने या उन की तवज्जोह और हमदर्दी ह़ासिल करने के लिये जराइम का इज़्हार करते रहते हैं कि मैं तो पहले डान्सर था, दहशत गर्दी करता था, मैं ने लोगों पर छुरियां चलाई हैं, लोगों को

ख़ौफ़ज़दा करने के लिये ख़ूब फ़ायरिंग करता था, इतने इतने क़त्ल किये हैं, क़ातिल हूं, डकैतियों में माहिर था, जूआ का अड्डा चलाता था वग़ैरा । नीज़ बिला इजाज़ते शर-ई किसी आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान से येह सुवाल करना ही ग़लत़ है कि आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? आप फ़ज्र के लिये उठते हैं या नहीं ? वग़ैरा । क्यूं कि अगर इस सुवाल से सामने वाले के तर्के नमाज़ की मा'लूमात ह़ासिल करना मक़्सूद है तो येह गुनाह की टोह (या'नी तलाश) में लगना है और क़ुरआने पाक में इस से साफ़ साफ़ मन्अ़ किया गया है चुनान्चे पारह 26 **सू-रतुल ह़ुजुरात** आयत नम्बर 12 में इर्शाद होता है : **وَلَا تَجَسَّسُوْا :** (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंढो) और अगर गुनाह की मा'लूमात का तजस्सुस मक़्सूद नहीं है तब भी येह सुवाल सामने वाले के लिये इज़्हारे गुनाह का सबब हो सकता है । बहर ह़ाल ''इन्फ़िरादी कोशिश'' में सुवालात के बजाए कोई **फ़ज़ीलत** सुना दीजिये और नमाज़ की तरग़ीब इस अन्दाज़ में दिलाइये कि वोह नमाज़ी हो तब भी उस को बुरा न लगे और बे नमाज़ी हो तब भी बोल न पड़े कि मैं बे नमाज़ी हूं, नीज़ उस के अ़लाक़े की उस मस्जिद में नमाज़ की दर-ख़्वास्त कीजिये जहां **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम हो रहा हो ।

**सुवालात के बजाए तरग़ीबात से काम लीजिये : इज्तिमाअ़** और **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र वग़ैरा के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** में सख़्त ज़रूरत के बिग़ैर सुवालात कर के किसी को शरमिन्दा करने, मुरव्वतन **झूट** बोल देने या गुनाह का इज़्हार कर बैठने के ख़त़रात में डालने के बजाए तरग़ीबी अन्दाज़ इख़्तियार कीजिये और **इज्तिमाअ़ व म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कतें और फ़ज़ीलतें बयान कीजिये । अगर सामने वाला ''सिर्फ़ हां'' कहे तो उस से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ भी कहलवा लीजिये । और मुम्किना सूरत में येह भी कह दीजिये कि हमें मा'ना पर नज़र रखते हुए اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहने की आ़दत डालनी चाहिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ के मा'ना हैं ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो'' और वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के चाहे बिग़ैर हम कुछ भी नहीं कर सकते । **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की तारीख़ ले लीजिये, नाम व पता, फ़ोन नम्बर वग़ैरा अपने पास मह़फ़ूज़ कर लीजिये । और उस वक़्त तक राबित़ा करते रहिये, जब तक सफ़र मुकम्मल कर लेने की सआ़दत ह़ासिल

न कर ले। और बा'द में भी उस से मरबूत़ (या'नी राबित़े में) रहिये यहां तक कि वोह **म-दनी माह़ोल** में रच बस कर दूसरों को **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बनाने वाला न बन जाए।

**वा'दा करने के अल्फ़ाज़ : जब** भी किसी से इज्तिमाअ़ में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र वग़ैरा का वा'दा लें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ (और जो मा'ना न जानता हो उस से "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो") ज़रूर कहलवा लिया करें, कि इस त़रह़ **वा'दा ख़िलाफ़ी** के गुनाह से बचत रहेगी। क्यूं कि अगर दिल में वा'दा पूरा करने की निय्यत न होने के बा वुजूद अगर उस ने जान छुड़ाने के लिये म-सलन कह दिया : मैं वा'दा करता हूं फ़ुलां दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा" तो वोह **वा'दा ख़िलाफ़ी** के गुनाह में पड़ जाएगा। हां अगर उस ने लफ़्ज़ "वा'दा" नहीं बोला बल्कि म-सलन इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ कहे : "मैं फ़ुलां दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा" तो ज़रूरी नहीं कि येह वा'दा ही हो मह़ज़ इत्तिलाअ़ भी हो सकती है। **इत्तिलाअ़** का मत़लब होता है "किसी को किसी काम के करने या न करने की ख़बर देना।" इत्तिलाअ़ देते वक़्त निय्यत का बहर ह़ाल ए'तिबार है, म-सलन ख़बर देने की निय्यत से नहीं सिर्फ़ जान छुड़ाने कि लिये कह दिया कि इस जुमा'रात को इज्तिमाअ़ में आऊंगा या फ़ुलां दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा मगर दिल में निय्यत येही हो कि इज्तिमाअ़ में नहीं जाऊंगा, उस दिन सफ़र नहीं करूंगा तो येह अगर्चे वा'दा ख़िलाफ़ी न हुई मगर **झूट** हुवा। **वा'दा** येह है कि किसी से बा क़ाइदा वा'दे के त़ौर पर त़ै किया कि "फ़ुलां काम करूंगा या फ़ुलां काम नहीं करूंगा" अगर लफ़्ज़ "वा'दा" न कहा मगर अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ के ज़रीए़ अपनी बात को मुअक्कद किया या'नी उस बात की ताकीद ज़ाहिर की तब भी "**वा'दा**" है म-सलन "म-दनी क़ाफ़िले" में सफ़र करूंगा के साथ "वा'दा करता हूं" कहा, या येह कहने के बजाए कहा : बिल्कुल पक्की बात कह रहा हूं या कहा : यक़ीन मानिये, या कहा : बिल्कुल त़ै है कि, या कहा : नहीं नहीं आप मुत़्मइन रहिये कि, या कहा : बस अब त़ै हो गया कि...वग़ैरा। इस की मिसाल यूं दूं जैसा कि "मंगनी" कि येह **वा'दा** है अगर्चे इस में "वा'दे" का लफ़्ज़ नहीं बोला जाता मगर बा क़ाइदा लड़की वालों से त़ै किया जाता है और यहां "त़ै करना" ही **वा'दा** है।

**''वा'दा नहीं इरादा कर लीजिये'' कहलवाना कैसा ? :** बा'ज़ लोग येह जुम्ला बोलते हैं : ''चलिये वा'दा नहीं करते तो **इरादा** ही कर लीजिये'' हो सकता है कि इस त़रह़ **इरादा** या निय्यत करवाना भी बहुत सों को गुनाहों में मुब्तला कर देता हो। जी हां, दिल में इरादा (या'नी निय्यत) न होने के बा वुजूद म-सलन किसी ने कह दिया कि ''मैं इरादा (या निय्यत) करता हूं 12 माह (या एक माह या तीन दिन) के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा।'' तो येह **सरीह़** (या'नी खुला) **झूट** है। लिहाज़ा जब भी किसी से इरादा करवाएं साथ में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ भी कहलवा लिया करें तो अगर दिल में इरादा न भी हुवा अगला गुनाह से बच जाएगा।

**''कोशिश करूंगा'' कहलवाना : ''कोशिश करूंगा''** कहने में भी गुनाह में पड़ने का ख़त़रा मौजूद है या'नी दिल में निय्यत न होने के बा वुजूद जान छुड़ाने के लिये कह दिया ''**कोशिश** करूंगा'', तो येह भी **झूट** है लिहाज़ा यूं कहलवाइये : ''मैं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कोशिश करूंगा या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो कोशिश करूंगा।'' येह जुम्ला, ''कोशिश करूंगा'' हमारे यहां बहुत ही आ़म है कहने वाले को पहले अपनी निय्यत पर ग़ौर कर लेना चाहिये। अगर ''कोशिश करूंगा'' कहने के साथ में ''اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ'' कहने की आ़दत पड़ गई तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आ़फ़िय्यत ही आ़फ़िय्यत है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहते वक़्त इस के मा'ना पर भी नज़र रखी जाए, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ के मा'ना हैं : ''**अल्लाह** ने चाहा तो'' अक्सर लोग इस का तलफ़्फ़ुज़ ग़लत़ अदा करते हैं, सह़ीह़ अदाएगी की ख़ूब मश्क़ कीजिये : اِنْ-شَآءَاللہ

**اِنْ شَآءَاللہ कह कर भी बात को निभाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मिन कुल्लि वुजूह (या'नी हर ह़ाल में) ख़ुद भी मोह़तात़ जुम्ले बोलने की कोशिश फ़रमाइये और दूसरों से भी मोह़तात़ जुम्ले कहलवाइये। **इन्फ़िरादी कोशिश** के दौरान ख़्वाह किसी से **वा'दा** लें, इरादा करवाएं या **कोशिश करूंगा** कहलवाएं साथ में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहलवाना न भूलें, इसी त़रह़ आप भी अपने लिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहने की आ़दत बनाइये। मगर इस त़रह़ के जुम्लों को भी निभाना ही मुनासिब होता है वरना अ़वाम बद ज़न होते और बसा अवक़ात **ग़ीबतों** वग़ैरा पर उतर आते हैं कि फ़ुलां

ने हमारे साथ **वा'दा ख़िलाफ़ी** की वग़ैरा।

**बद गुमानी मत कीजिये :** देखिये ! यहां आप ने ख़ुद को **बद गुमानियों** से बचाना और हुस्ने ज़न निभाना है या'नी क़राइने वाज़ेहा के बिग़ैर किसी के बारे में येह ज़ेहन नहीं बनाना कि फ़ुलां ने **ग़लत़ वा'दा** कर के या **कोशिश करूंगा** या **इरादा करता हूं** कह कर जान छुड़ा ली, आप उस को **सच्चा** ही तसव्वुर कीजिये।

**हां में सर हिला देना : किसी** को आयिन्दा के लिये कुछ करने या इज्तिमाअ़ वग़ैरा में आने का कहा जाए तो उ़मूमन जान छुड़ाने के लिये इस्बात (या'नी हां) में सर हिला देते हैं मगर दिल में तै़ होता है कि येह जो कुछ कह रहा है मैं इस के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करूंगा। **येह भी बा'ज़ सूरतों में झूट और बा'ज़ सूरतों में वा'दा ख़िलाफ़ी है।** ऐसों की रहनुमाई और उम्मत की भलाई की अच्छी अच्छी निय्यतों से चन्द रिवायात व म-दनी हिदायात मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बे इन्तिहा फ़ाएदा होगा।

पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** आयत नम्बर 34 में इर्शादे रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ है :

اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है।

**वा'दा ख़िलाफ़ी मुनाफ़िक़ की निशानियों में से है : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है **:** मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं **:** जब बात करे **झूट** कहे, जब **वा'दा** करे **ख़िलाफ़** करे और जब उस के पास अमानत रखी जाए **ख़ियानत** करे। (صَحیح بُخاری ج۱ ص۲۴ حدیث۳۳)

**वा'दा ख़िलाफ़ी की वई़दात पर मब्नी चार रिवायात : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 207 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''जहन्नम के ख़त़रात''** सफ़ह़ा 113 ता 114 से तीन रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये **:** **﴾1﴿** जो मुसल्मान अ़ह्द शिकनी और वा'दा खिलाफ़ी करे उस पर **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत

है और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल (بُخاری ج ٢ ص ٣٧٠ حديث ٣١٧٩) ﴾2﴿ हर अ़ह्द शिकनी करने वाले की सुरीन (या'नी बदन का वोह ह़िस्सा जिस के बल इन्सान बैठता है उस) के पास क़ियामत में उस की अ़ह्द शिकनी का एक झन्डा होगा। (صَحيح مُسلِم ص ٩٥٦ حديث ١٧٣٨) ﴾3﴿ लोग उस वक़्त तक हलाक न होंगे जब तक कि वोह अपने लोगों से अ़ह्द शिकनी न करेंगे। (سُنَنِ ابوداوٗدج ٤ ص١٦٦ حديث٤٣٤٧)

**झूटा वा'दा करना ह़राम है : मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 25 सफ़ह़ा 69 पर लिखते हैं "अश्बाह वन्नज़ाइर" में है : **خُلْفُ الْوَعْدِ حَرَامٌ** या'नी वा'दा झूटा करना ह़राम है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, الاشباه والنظائر ص٢٨٨)

**वा'दा ख़िलाफ़ी किसे कहते हैं ? :** हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "वा'दा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की भी हो बल्कि **वा'दा ख़िलाफ़ी** येह है कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की न हो।" (الجامع لاخلاق الراوى للخطيب البغدادى ج٢ص٦٠رقم١١٧٩) एक और ह़दीसे पाक में है कि जब कोई शख़्स अपने भाई से **वा'दा** करे और उस की निय्यत पूरा करने की हो फिर पूरा न कर सके, वा'दे पर न आ सके तो उस पर गुनाह नहीं। (سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ٣٨٨ حديث ٤٩٩٥ )

**वा'दा पूरा करने की निय्यत न हो मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा हो जाए तो.......:** **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़दीस का मत़लब येह है कि अगर **वा'दा** करने वाला पूरा करने का इरादा रखता हो मगर किसी उ़ज़्र या मजबूरी की वज्ह से पूरा न कर सके तो वोह गुनाहगार नहीं, यूं ही अगर किसी की निय्यत **वा'दा ख़िलाफ़ी की हो** मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा कर दे तो गुनहगार है उस बद निय्यती की वज्ह से। हर वा'दे में **निय्यत** का बड़ा दख़्ल है। (मिरआत, जि. 6, स. 492)

**शर-ई क़बाह़त हो तो वा'दा पूरा न करे : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल

मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** हि़स्सा 16 सफ़ह़ा 295 पर सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی लिखते हैं **: वा'दा** किया मगर उस को पूरा करने में कोई शर-ई क़बाह़त (या'नी शर-ई बुराई) थी इस वज्ह से पूरा नहीं किया तो उस को **वा'दा ख़िलाफ़ी** नहीं कहा जाएगा और वा'दा ख़िलाफ़ी का जो गुनाह है इस सूरत में नहीं होगा अगर्चे **वा'दा** करते वक़्त उस ने इस्तिस्ना न किया हो कि यहां शरीअ़त की त़रफ़ से इस्तिस्ना मौजूद है, इस को ज़बान से कहने की ज़रूरत नहीं म-सलन **वा'दा** किया था कि ''मैं फ़ुलां जगह पर आऊंगा और वहां बैठ कर तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा।'' मगर जब वहां गया तो देखता है कि नाचरंग और शराब नोशी वग़ैरा में लोग मसरूफ़ हैं, (लिहाज़ा) वहां से चला आया तो येह **वा'दा ख़िलाफ़ी** नहीं है, या उस का इन्तिज़ार करने का वा'दा किया और इन्तिज़ार कर रहा था कि नमाज़ का वक़्त आ गया येह चला आया (तो येह) **वा'दे के ख़िलाफ़** नहीं हुवा। (बहारे शरीअ़त)

**मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हुए रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक अ़ज़ीमुश्शान **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की ''मर्कज़ी मजलिसे शूरा'' के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्त़ारी अल म-दनी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के बारे में मेरा हुस्ने ज़न है कि वोह दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बुज़ुर्ग थे और गोया इस ह़दीसे पाक के मिस्दाक़ थे : **كُنْ فِی الدُّنْیَا كَاَنَّكَ غَرِیْبٌ** या'नी "दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो।" (صحیح بُخاری ج ٤ ص ٢٢٣ حدیث ٦٤١٦) **18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427** हि. ब मुत़ाबिक़ 17-2-2006 बरोज़ जुमुआ़ नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के बा'द अपनी क़ियाम गाह वाक़ेअ़ (गुलशने इक़्बाल, बाबुल मदीना कराची) में अचानक ह़-र-कते क़ल्ब बन्द होने के सबब ब उ़म्र तक़रीबन 30 बरस जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को **सह़राए मदीना,** बाबुल मदीना कराची में दफ़्न किया गया । विसाल शरीफ़ के तक़रीबन 3 साल 7 महीने 10 दिन बा'द या'नी 25 र-जबुल मुरज्जब 1430 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 18-7-2009 हफ़्ता और इतवार की दरमियानी रात बाबुल मदीना कराची में कई घन्टे तक मूसलाधार बरसात हुई जिस की वज्ह से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی की क़ब्र दरमियान से खुल गई । जो इस्लामी भाई **सह़राए मदीना** में हिफ़ाज़ती उमूर पर मु-तअ़य्यन हैं उन्हों ने सुब्ह़ के वक़्त देखा कि **क़ब्र से सब्ज़ रंग की रोशनी निकल रही है ।** आ़रिज़ी त़ौर पर क़ब्र दुरुस्त करने वाले इस्लामी भाइयों का ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर) कुछ यूं बयान है कि हम ने देखा कि तदफ़ीन के तक़रीबन **साढ़े तीन साल बा'द भी मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی **की मुबारक लाश और कफ़न इस त़रह़ सलामत थे कि गोया अभी अभी इन्तिक़ाल हुवा हो,** तक्फ़ीन के वक़्त सर पर रखा जाने वाला सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ आप के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लुटा रहा था, इमामे शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़्दीक आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ुल्फ़ों का कुछ हिस्सा अपनी बहारें दिखा रहा था, पेशानी नूरानी थी और चेहरा मुबारक भी क़िब्ला रुख़ था । **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** की क़ब्र मुबारक से ख़ुश्बू की ऐसी लपटें आ रही थीं कि हमारे मशामे जां मुअ़त्तर हो गए । क़ब्र में बारिश का पानी उतर जाने की वज्ह से येह इम्कान था कि क़ब्र मज़ीद धंस जाए और सिलें मर्ह़ूम के वुजूदे मस्ऊ़द को सदमा पहुंचाएं लिहाज़ा इस वाक़िए के तक़रीबन दस रोज़ बा'द या'नी शबे बुध **6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हि.** (28-7-2009) ब

शुमूल मुफ़्तियाने किराम व उ़-लमाए इ़ज़ाम हज़ारहा इस्लामी भाइयों का कसीर मज्मअ़ हुवा, **ग़ुलाम ज़ादा** अबू उसैद ह़ाजी उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्तार म-दनी سَلَّمَهُ اللّٰهُ الْغَنِی पहले से मौजूद शिगाफ़ के ज़रीए क़ब्र के अन्दर उतरे ताकि येह अन्दाज़ा लगाएं कि आया मुन्तक़िली के लिये जिस्मे मुबारक बाहर निकालने की ह़ाजत है या अन्दर रहते हुए भी क़ब्र शरीफ़ की ता'मीरे नौ मुम्किन है। उन्हों ने अन्दर का जाएज़ा लिया और अन्दर ही से **दा'वते इस्लामी** के "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" के मुफ़्ती साहिब को सूरते ह़ाल बयान की, उन्हों ने बदन मुबारक बाहर न निकालने का हुक्म फ़रमाया, **ग़ुलाम ज़ादा** ह़ाजी उ़बैद रज़ा को मूवी केमेरा दिया गया चुनान्चे पुरानी क़ब्र के अन्दरूनी माह़ोल और ऊपर से मिट्टी वग़ैरा गिरने के बा वुजूद اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने **इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और ज़ुल्फ़ों के बा'ज़ ह़िस्से की काम्याब मूवी बना ली,** जो कि कुछ ही देर के बा'द "सह़राए मदीना" में लगाए गए मुख़्तलिफ़ स्क्रीनों पर हज़ारों इस्लामी भाइयों को दिखा दी गई, उस वक़्त लोगों के जज़्बात दीदनी थे, येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर बे शुमार इस्लामी भाई अश्कबार हो गए। उस के बा'द आने वाली रात या'नी बुध और जुमा'रात की दरमियानी शब 7 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हि. (29-7-2009) को दा'वते इस्लामी के **म-दनी चेनल** पर बराहे रास्त "ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमा" नश्र किया गया जिस में दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक के लाखों नाज़िरीन को केमरे के अन्दर मह़फ़ूज़ कर्दा क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी सह़ीह़ सलामत लाश मुबारक के इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और गेसू मुबारक के कुछ बालों की ज़ियारत करवाई गई। चूंकि येह ख़बर हर त़रफ़ जंगल की आग की त़रह़ फैल चुकी थी लिहाज़ा मुख़्तलिफ़ शहरों के जुदा जुदा अ़लाक़ों के इस्लामी भाइयों के बयानात का लुब्बे लुबाब है कि **ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमे** के दौरान कई गलियां और बाज़ार इस त़रह़ सूने हो गए थे जिस त़रह़ मुसल्मानों के अ़लाक़ों में र-मज़ानुल मुबारक में इफ़्त़ार के वक़्त होते हैं और T.V. पर घर घर से "ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमे" की आवाज़ सुनाई दे रही थी। होटलों, नाई की दुकानों वग़ैरा में जहां जहां T.V. सेट मौजूद थे वहां

अ़वाम हुजूम दर हुजूम जम्अ़ हो कर **म-दनी चेनल** पर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی की म-दनी बहारों के नज़्ज़ारे कर रहे थे। एक इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ म-दनी चेनल पर ''ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमा'' सुन कर और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی की तक़्रीबन साढ़े तीन साल पुरानी मुबारक लाश की रूह़ परवर झल्कियां देख कर एक ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना ने इस सिल्सिले में शबे बराअत 1430 सि.हि. के मुबारक मौक़अ़ पर एक तारीख़ी (V.C.D) बनाम ''मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली'' जारी कर दी। ता दमे तारीख़ हज़ारों (V.C.Ds) फ़रोख़्त हो चुकी हैं।

*जबीं मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता*

*ग़ुलामाने मुह़म्मद का कफ़न मैला नहीं होता*

**अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## निगरान की तब्दीली पर तश्वीश न किया करें

**सुवाल :** हमारे अ़लाक़ाई मुशा-वरत के निगरान को फ़ारिग़ कर दिया गया इस से बा'ज़ इस्लामी भाइयों को तश्वीश है। अब हमारे अ़लाक़े का म-दनी काम कैसे होगा ?

**जवाब : दा'वते इस्लामी** में म-दनी कामों की **ज़िम्मेदारी** किसी को भी उ़म्र भर के लिये नहीं दी जाती, हर ज़िम्मेदार की मुद्दत 12 माह मुक़र्रर है, इस के बा'द या तो तज्दीद कर के उसे बर क़रार रखा जाता है या तब्दील कर दिया जाता है, नीज़ **दा'वते इस्लामी** के अ़ज़ीम तर मफ़ाद के पेशे नज़र अह़कामे शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए किसी भी वक़्त किसी भी ज़िम्मेदार को फ़ारिग़ किया जा सकता है। मीआ़द के मुत़ाबिक़ होने वाले

तबा–दले या तन्ज़ीमी मसालेह़ की बिना पर किसी की फ़रागत़ पर तश्वीश हो तो इस को दबा देना आप के और दा'वते इस्लामी के ह़क़ में बेहतर है, सभी को अपने ज़िम्मेदारान के मु–तअ़ल्लिक़ येह ह़ुस्ने ज़न रखना चाहिये कि येह तन्ज़ीमी मफ़ादात को हम से ज़ियादा बेहतर समझते हैं, उन्हों ने जो भी फ़ैसला किया होगा सोच मसझ कर ही किया होगा। येह ज़ेह्न रखना हरगिज़ मुनासिब नहीं कि फ़ुलां चला गया तो अब म–दनी काम नहीं होगा ! बराए करम ! नज़र "सबब" पर नहीं "मुसब्बिब" या'नी सबब बनाने वाले रब عَزَّوَجَلَّ पर रखिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसब्बिबुल अस्बाब है, वोह जिस से चाहेगा काम ले लेगा। अगर वोह किसी से मज़ीद काम लेना न चाहेगा तो जिस ने म–दनी कामों की धूमें मचा रखी हैं वोही सुस्त पड़ जाएगा या कोई भी सबब हो जाएगा जिस से काम टूट जाएगा। बे शुमार उ़–लमाए रब्बानिय्यीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن दुन्या में तशरीफ़ लाए दीने इस्लाम का ख़ूब काम किया और पर्दा फ़रमा गए लेकिन चमने इस्लाम अभी तक हरा भरा लहलहा रहा है। अगर निगरान की मौक़ूफ़ी बह़ाली पर बह़सें करते रहेंगे तो जो थोड़ा बहुत काम रहा होगा वोह भी ख़त्म हो सकता है। लिहाज़ा आप सब म–दनी काम करते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ख़ूब म–दनी बहारें आएंगी। दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान मर्ह़ूम ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाया करते थे : हमें दा'वते इस्लामी में शख़्सिय्यत को नहीं "सिस्टम" (या'नी निज़ाम) को मज़बूत़ करना है।

## हमें निगरान का क़ुसूर बताया जाए

**सुवाल :** जो इतने अ़र्से से म–दनी काम कर रहा था उस को जब मा'ज़ूल किया है तो चलिये उस का कोई क़ुसूर होगा, वोह क़ुसूर ही बता दिया जाए ताकि अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों की बेचैनी दूर हो।

**जवाब :** देखिये मा'ज़ूली और है और तब्दीली और, 12 माह की मुद्दत पूरी हो जाने के बा'द जिस

की तब्दीली अ़मल में आई उस का क़ुसूर वार होना हरगिज़ ज़रूरी नहीं, इस बात को इस मिसाल से समझिये जैसे आप ने 12 माह में ख़ाली कर देने के मुआ़-हदे पर दुकान किराए पर ली, मुद्दत पूरी हो जाने के बा'द मालिक ने दुकान वापस ले ली इस पर उस से इस का सबब पूछने का येह मह़ल (या'नी मौक़अ़) ही नहीं क्यूं कि येह तो पहले ही से तै़ था, इसी पर दोबारा ज़िम्मेदारी न मिलने को क़ियास कर लीजिये। हां मुद्दत पूरी होने से क़ब्ल अ़मल में आने वाली मा'ज़ूली के अस्बाब हो सकते हैं म-सलन ख़ुद अपनी मजबूरी के बाइ़स मुस्ता'फ़ी हो जाना, निजी मस्रूफ़ियात के बाइ़स वक़्त न दे पाना, तन्ज़ीमी त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ म-दनी काम न करना, म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त न करना वग़ैरा, नीज़ बा'ज़ अस्बाब येह भी हैं म-सलन किसी ज़िम्मेदार का मुख़र्रिबे अख़्लाक़ सरगर्मियों में मुलव्वस होना, म-दनी अ़तिय्यात में ख़ुर्द बुर्द करना, फ़ोह़्श ह़-र-कत में मुब्तला हो जाना वग़ैरा। सबबे मा'ज़ूली की टोह में पड़ना और "क़ुसूर" तलाशना गुनाहों में डाल सकता है लिहाज़ा मा'ज़ूली की मा'लूमात न की जाए वरना क़वी इम्कान है कि जिस निगरान को मा'ज़ूल किया गया उस के ऐ़बों पर से पर्दे उठें, उस की सुस्तियों, कोताहियों वग़ैरा के तज़्किरे निकलें और यूं **ग़ीबतों** के दरवाज़े खुलें फिर जवाबन भी किज़्ब बयानियों, **ग़ीबतों**, बद गुमानियों, तोह्मतों, बद अल्क़ाबियों और दिल आज़ारियों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों का तूफ़ान खड़ा हो, दीन के म-दनी कामों का नुक़्सान हो और बरबादिये आख़िरत का सामान हो। लिहाज़ा **म-दनी इल्तिजा** है कि ख़्वाह किसी को भी उस की ज़िम्मेदारी से हटाया जाए या ख़ुद आप की ज़िम्मेदारी को तब्दील किया जाए, अपनी मजलिस के मु-तअ़ल्लिक़ हुस्ने ज़न रखते हुए ख़ामोशी से सरे तस्लीम ख़म कर के मह़ज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये सुन्नतों की ख़िदमत जारी रखिये, रूठ कर घर बैठ जाने में आप की अपनी मह़रूमी है। याद रखिये ! **वफ़ा का इम्तिह़ान ओ़हदा दे कर नहीं ओ़हदा ले कर लिया जाता है।** वोह शख़्स किस क़दर

नादान है कि जब तक उस के पास **ओ़हदा** हो, उस वक़्त तो ''म-दनी मर्कज़ के फ़रमान पर जान भी क़ुरबान है'' के ना'रे लगाता हो और जूं ही ओ़हदा वापस ले लिया जाए एक दम मुख़ा-लफ़त पर उतर आए, अब तक दा'वते इस्लामी की जिन ''ख़ूबियों'' को बयान किया करता था वोह उस की नज़र में यक्सर ''ख़ामियों'' में तब्दील हो जाएं और अपना जुदागाना ''ग्रूप'' बना ले। कहीं इस का मत़लब येह तो नहीं कि येह आज तक दीन का काम मह़ज़ ओ़हदे की वज्ह से कर रहा था, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पेशे नज़र न थी।

*अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात*

*जिस दिल अन्दर इश्क़ न रचिया कुत्ते ओस तों चंगे*
*मालिक दे घर राखी देंदे साबिर पखखे नंगे*
*मालिक दा दर नईं छड दे पावें मारो सो सो जुत्ते*
*उठ बुल्हिया चल यार मना ले नईं ते बाज़ी ले गए कुत्ते*

**तमाम ओ़हदे दारान के लिये लाइक़े तक़्लीद मिसाल :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन का लक़ब سَيْفٌ مِّنْ سُيُوْفِ اللّٰه (या'नी **अल्लाह** की तलवारों में से तलवार) था लश्करे इस्लाम के **सिपह सालार** (या'नी कमान्डर इन्चीफ़) थे, इमामुल आ़दिलीन, मुतम्मिमुल अर-बईन ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सिपह सालारी का **ओ़हदा** वापस ले लिया मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस फ़ैसले को क़बूल करने से इन्कार किया न कोई मुख़ा-लफ़त और न ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जज़्बए ख़िदमते इस्लाम में किसी क़िस्म की कोई कमी आई। मन्सब चले जाने के बा'द भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक आ़म सिपाही की त़रह़ **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में जिहाद फ़रमाते रहे और बहुत सी फ़ुतूह़ाते इस्लामिय्या म-सलन दिमश्क़, ह़म्स, मरअ़श, क़िन्नसरीन वग़ैरा में शरीक

रहे । ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में क़ुरबानियों के जज़्बे का आ़लम ही निराला था ख़ुद ही फ़रमाते हैं **:** बिलफ़र्ज़ हर रात मुझे मेरी पसन्द की नई नवेली ख़ूब सूरत दुल्हन पेश की जाए तब भी मेरे नज़दीक इस से ज़ियादा प्यारी वोह रात है जो सख़्त ठन्डी हो, बर्फ़बारी भी हो रही हो और मैं किसी सरिय्या (या'नी फ़ौजी दस्ते) में हूं और दुश्मन पर **शबख़ून** मारूं या'नी रातों रात ह़म्ला कर दूं । **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## ज़िम्मेदारी सोंपने के लिये मा'लूमात

**सुवाल :** दा'वते इस्लामी की तह़सील मुशा-वरत का निगरान किसी को तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी देना चाहता है अगर बिग़ैर मा'लूमात किये ज़िम्मेदार बना देता है तो तन्ज़ीमी नुक़्सान का इम्कान है और अगर मा'लूमात के लिये किसी को पूछता है तो **ग़ीबतें** सुनने का अन्देशा है क्या करे ?

**जवाब :** किसी को तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी सोंपनी हो, मुलाज़िम रखना हो, किसी के यहां मुला-ज़मत करनी हो, तिजारत वग़ैरा में शिराकत दार (PARTNER) बनना हो, माल उधार देना हो, किसी से किराए पर मकान लेना हो, शादी करनी हो, किसी के साथ सफ़र करना हो वग़ैरा वग़ैरा ज़रूरिय्यात के मवाक़ेअ़ पर मा'लूमात ह़ासिल करने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं बल्कि तह़क़ीक़ कर लेनी चाहिये ताकि धोका न खाना पड़े । नीज़ जिस से मश्वरा लिया गया वोह "अमीन" है उस के लिये वाजिब है कि सह़ीह़ मश्वरा दे या'नी अगर वोह उस की ऐसी बुराई जानता है जिस से मश्वरा त़लब करने वाले को नुक़्सान हो सकता है तो बताना ज़रूरी है हां ऐसी बुराइयां ज़ाहिर न करे जिस की ह़ाजत नहीं । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 177 पर है **:** जिस से किसी बात का मश्वरा लिया गया वोह अगर उस शख़्स का ऐब व बुराई ज़ाहिर करे जिस के

मु-तअ़ल्लिक़ मश्वरा (लिया गया) है, येह **ग़ीबत** नहीं। ह़दीस में है : "जिस से मश्वरा लिया जाए वोह **अमीन** है।" लिहाज़ा उस की बुराई ज़ाहिर न करना **ख़ियानत** है, म-सलन किसी के यहां अपना या अपनी औलाद वग़ैरा का **निकाह़** करना चाहता है, दूसरे से इस के मु-तअ़ल्लिक़ तज़्किरा किया कि मेरा इरादा ऐसा है तुम्हारी क्या राय है ? उस शख़्स को जो कुछ मा'लूमात हैं बयान कर देना **ग़ीबत** नहीं। इसी त़रह़ किसी के साथ **तिजारत** वग़ैरा में शिर्कत करना चाहता है या उस के पास कोई चीज़ **अमानत** रखना चाहता है या किसी के पड़ोस में सुकूनत (या'नी रिहाइश इख़्तियार) करना चाहता है और उस के मु-तअ़ल्लिक़ दूसरे से मश्वरा लेता है येह शख़्स (या'नी जिस से मश्वरा लिया गया वोह) उस की बुराई बयान करे (येह) **ग़ीबत** नहीं। (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٦٧٥)

## नेक कामों में ग़ैर ह़ाज़िर रहने वालों का पूछना

**सुवाल :** जो पहले इज्तिमाअ़ वग़ैरा में आता था और अब नहीं आता उस के बारे में किसी से येह पूछना कैसा कि फ़ुलां आज कल नज़र नहीं आता ? ऐसे में **ग़ीबत** सुनने से बचना बहुत मुश्किल लगता है कि जवाब में अक्सर **ग़ीबतें** सुनने को मिलती हैं।

**जवाब :** पूछने में कोई ह़रज नहीं, हां जिस को पूछा वोह अगर ख़्वाह म ख़्वाह **ग़ीबतों** पर उतर आए तो उस को फ़ौरन रोक दिया जाए। आ़फ़िय्यत इसी में है कि मुम्किना सूरत में बराहे रास्त उसी से मिल लिया जाए। जो ग़ैर ह़ाज़िर रहने लगा है उस पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करने में भी येह अन्देशा मौजूद है कि वोह किसी ज़िम्मेदार के बारे में **ग़ीबतें** और गिले शिक्वे शुरूअ़ कर दे। अब अगर सुल्ह़ करवाना आप के बस में नहीं है तो उस को **ग़ीबत** से बाज़ रखते हुए कोशिश कर के मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार से मिलवा कर ख़ुद हट जाइये। बहर ह़ाल तब्लीग़ व इस्लाह़ की निय्यत से मा'लूमात करने में कोई ह़रज नहीं बल्कि जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा।

इस्लाह़ के ह़वाले से मा'लूमात करना हमारे बुज़ुर्गों का त़रीक़ा रहा है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 578 पर है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुब्ह़ की नमाज़ में सुलैमान बिन अबी ह़समा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नहीं देखा, बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में सुलैमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का घर था, उन की मां (सय्यि-दतुना) शिफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया, उन्हों ने कहा : रात में नमाज़ पढ़ते रहे फिर नींद आ गई, फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं, येह मेरे नज़दीक इस से बेहतर है कि रात में क़ियाम (या'नी नफ़्ली इबादत) करूं । (موطا امام مالک ج ۱ ص ۱۳۴ حدیث ۳۰۰) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग : आह !** "ग़ीबत" ने उम्मत की अक्सरिय्यत को निहायत ही शिद्दत के साथ अपनी ह़िरासत में लिया हुवा है, शैत़ान **ग़ीबत** के ज़रीए़ भरपूर त़रीक़े पर लोगों को जहन्नम की त़रफ़ धकेलता चला जा रहा है। होश में आइये ! **ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग** कर के एक दम मोरचे पर डट जाइये ! जिस जिस ने अब तक जिस क़दर **ग़ीबतें** की हों उन की तौबा और मुआ़फ़ी तलाफ़ी में लग जाए, **अ़ज़्मे मुसम्मम** कीजिये कि "**न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे**" अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! **ग़ीबत** हमारे म-दनी माह़ोल को दीमक की त़रह़ चाट रही है लिहाज़ा **दा'वते इस्लामी** के तमाम ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मेरी हाथ जोड़ कर "म-दनी इल्तिजा" है कि **ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग** के ज़िम्न में **ग़ीबतों** के दरवाज़ों पर ताले लगाते चले जाइये, अब तक जो भी आप की ज़िम्मेदारी के दौरान **म-दनी माह़ोल** से दूर हुए, उन के मुआ़-मले में 112 बार ग़ौर कर लीजिये कि कहीं ऐसा तो नहीं

कि उन्हों ने आप की **ग़ीबतें** की हों और आप को ग़ुस्सा आ जाने की वज्ह से या ख़ुद आप ने उन की **ग़ीबतें** की हों इस सबब से वोह दिल बर्दाश्ता हो कर घर जा बैठे हों। अगर ऐसा है तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के बराए रिज़ाए रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन से पेश्तर मगर बुला कर नहीं, उन के पास ख़ुद जा कर हाथ जोड़ कर पाउं पकड़ कर ऐ काश ! रो रो कर मुआफ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राज़ी कर के गले लगा लीजिये। बल्कि हर बिछड़े हुए को तलाश कर के उन के पास भी ख़ुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नतो समाजत कर के उन्हें दोबारा **म-दनी माहोल** में ले आइये और **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए उन सभों को फिर से सुन्नतों की ख़िदमतों में मसरूफ़ कर दीजिये।" (जिन पर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी नहीं वोह भी इसी त़रह़ करें, हां जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी लगी हो उन को न छेड़ें, उन के बारे में बड़े ज़िम्मेदारान जो तन्ज़ीमी फ़ैसला करें उन पर अ़मल करें)

*ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है — उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है*
*छोटों में इत़ाअ़त है न शफ़्क़त है बड़ों में — प्यारों में मह़ब्बत है न यारों में वफ़ा है*
*जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत — शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है*
*देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत — सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है*
*हम नेक हैं या बद फिर आख़िर हैं तुम्हारे — निस्बत बहुत अच्छी है अगर ह़ाल बुरा है*
*तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई*
*हां एक दुआ़ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا إِلَى الله! أَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# इस्लामी बहनों के म-दनी चेनल देखने का शर-ई मस्अला

**म-दनी चेनल** की बहारों के क्या कहने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** देख कर बा'ज़ कुफ़्फ़ार को तो ईमान की दौलत ही नसीब हो गई ! नीज़ न जाने कितने ही बे नमाज़ी नमाज़ी बन गए, मु-तअ़द्दिद अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** सो फ़ी सदी इस्लामी चेनल है, न इस में मूसीक़ी है न ही औ़रत की नुमाइश। **म-दनी चेनल** में क्या है ? इस में फ़ैज़ाने कुरआन, फ़ैज़ाने ह़दीस, फ़ैज़ाने अम्बिया, फ़ैज़ाने सह़ाबा और फ़ैज़ाने औलिया है। इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें हैं, दुआ़ व मुनाजात में इल्हाह़ व ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इश्क़े रसूल में रोने, रुलाने और तड़पाने वाले रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, रूह़ानी त़िब्बी इलाज, सुन्नतों भरे म-दनी फूल, आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब म-दनी बहारें हैं। अल ग़रज़ **म-दनी चेनल** एक ऐसा चेनल है कि इस के ज़रीए़ इन्सान घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीख सकता है ! हां इस्लामी बहनों को **म-दनी चेनल** देखने से पहले 112 बार ग़ौर कर लेना चाहिये क्यूं कि म-दनी चेनल में अक्सर नौ जवानों ही के मनाज़िर होते हैं और औ़रत नाज़ुक शीशी है और इसे मा'मूली सी ठेस ही काफ़ी। कहीं مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह बद निगाही के गुनाह में न जा पड़े। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 86 पर फ़रमाते हैं : औ़रत का मर्दे अजनबी की त़रफ़ नज़र करने का वोही हुक्म है जो मर्द का मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है और येह उस वक़्त है कि औ़रत को यक़ीन के साथ मा'लूम हो कि उस की त़रफ़ नज़र करने से शह्वत नहीं पैदा होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे। (عالمگیری ج۵ص۳۲۷)

*आक़ा की ह़या से झुकी रहती नज़र अक्सर*
*आंखों पे मेरी बहन लगा कुफ़्ले मदीना*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा'ज़ मज़ामीन की "ग़ीबत की तबाह कारियां" से मुना-सबत के सबब तरमीम व इज़ाफ़े के साथ येह रिसाला यहां शामिल किया गया है

वरक़ उलटिये...

# अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत
# मअ़
# एक अहम म-दनी वसिय्यत

- फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ से अहम इक़्तिबासात
- दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इत्मामे हुज्जत

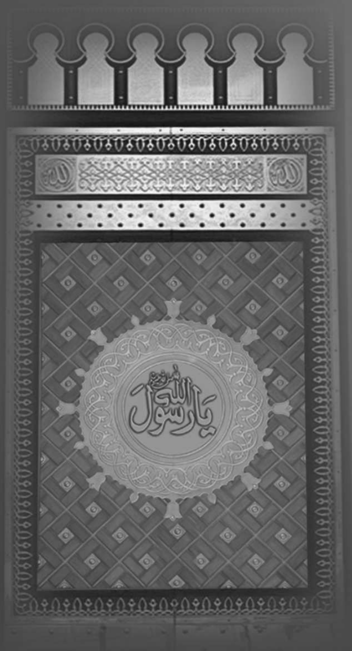


- या अल्लाह तू गवाह रहना
- ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग
- मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये
- म-दनी इल्तिजा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

# अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत

**मअ़**

# एक अहम म-दनी वसिय्यत

**दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۵ص۳۷۵ حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़फ़्वो दर गुज़र : ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के हमराह चल रहा था और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक नजरानी चादर ओढ़े हुए थे जिस के कनारे मोटे और खुर्दरे थे। एक दम एक बदवी (या'नी अ़रब शरीफ़ के दीहाती) ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चादर मुबारक को पकड़ कर इतने ज़बर दस्त झटके से खींचा कि सुल्त़ाने ज़मन, मह़बूबे रब्बे ज़ुल मिनन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक गरदन पर चादर के कनार से ख़राश आ गई, वोह कहने लगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जो माल आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुक्म दीजिये कि उस में से मुझे कुछ मिल जाए। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और मुस्कुरा दिये फिर उसे कुछ माल अ़त़ा फ़रमाने का हुक्म दिया।

(صَحیح بُخاری ج۲ص ۳۵۹ حدیث۳۱۴۹)

*हर ख़त़ा पर मेरी चश्म पोशी, हर त़लब पर अ़त़ाओं की बारिश*

*मुझ गुनहगार पर किस क़दर हैं, मेहरबां ताजदारे मदीना*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बदवी से कैसा हुस्ने सुलूक फ़रमाया, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवानो ! ख़्वाह कोई आप को कितना ही सताए, दिल दुखाए ! अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लीजिये और उस के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये।

**ह़िसाब में आसानी के तीन अस्बाब : ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** तआ़ला (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को अपनी रह़मत से **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : ﴾1﴿ जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और ﴾2﴿ जो तुम से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ करे (या'नी तअ़ल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप करो और ﴾3﴿ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطّبَرانی ج٤ ص١٨ حدیث ٥٠٦٤)

**जन्नत का मह़ल : ह़ज़रते** सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो उसे महरूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो उस से **क़त़्ए तअ़ल्लुक़** करे येह उस से नात़ा जोड़े। (اَلْمُستدرَك لِلحاكِم ج٣ ص١٢ حديث ٣٢١٥)

**मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है : ख़ा-तमुल** मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''स-दक़ा देने से माल कम नहीं होता और बन्दा किसी का क़ुसूर मुआ़फ़ करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (मुआ़फ़ करने वाले) की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाएगा और जो

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्द फ़रमाएगा।"

(صَحيح مُسلِم ص١٣٩٧ حديث ٢٥٨٨)

**मुअ़ज़्ज़ज़ कौन ? :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे नज़्दीक कौन सा बन्दा ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ?" फ़रमाया : "वोह जो बदला लेने की क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٦ ص٣١٩ حديث ٨٣٢٧)

**जो मुआ़फ़ नहीं करता उसे मुआ़फ़ नहीं किया जाएगा : ह़ज़रते** सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **सरकारे** दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो रह़म नहीं करता उस पर रह़म नहीं किया जाता और जो मुआ़फ़ नहीं करता उस को मुआ़फ़ नहीं किया जाएगा। (مُسندِ اِمام احمد ج٧ص٧١ حديث ١٩٢٦٤)

**दुन्या व आख़िरत के अफ़्ज़ल अख़्लाक़ : ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं ने सुल्त़ाने दो जहान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात का शरफ़ पाया तो फ़ौरन ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते मुनव्वर थाम लिया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे हाथ को जल्दी से पकड़ लिया। फिर फ़रमाया : "ऐ उ़क़्बा ! दुन्या व आख़िरत के **अफ़्ज़ल अख़्लाक़** येह हैं कि तुम उस को मिलाओ जो तुम्हें जुदा करे और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो और जो येह चाहे कि उ़म्र में दराज़ी और रिज़्क़ में कुशा-दगी हो, वोह अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी (या'नी अच्छा सुलूक) करे।" (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٥ ص٢٢٤ حديث ٧٣٦٧)

**मुआ़फ़ करो मुआ़फ़ी पाओ : सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रह़म किया करो तुम पर रह़म किया जाएगा और मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा देगा।"

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٢ ص٦٨٢ حديث ٧٠٦٢)

*हम ने ख़ता में न की तुम ने अ़ता में न की*

*कोई कमी सरवरा तुम पे करोड़ों दुरूद*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 271)

**मुआ़फ़ करने वालों की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत : ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और **जन्नत** में दाखि़ल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : **"उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं।"** तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और **बिला ह़िसाब जन्नत** में दाखि़ल हो जाएंगे। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطّبرانی ج۱ ص۵۴۲ حدیث ۱۹۹۸)

**क़ातिलाना ह़म्ले की कोशिश करने वाले को मुआ़फ़ फ़रमा दिया : दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 862 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"सीरते मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" सफ़ह़ा 604 ता 605 पर है : एक सफ़र में नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि ग़ौरस बिन ह़ारिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने के इरादे से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तलवार ले कर नियाम से खींच ली, जब सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हुए तो ग़ौरस कहने लगा : "ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुझ से कौन बचा सकता है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह**"। नुबुव्वत की हैबत से तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तलवार हाथ मुबारक में ले कर फ़रमाया : अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है ?" ग़ौरस गिड़गिड़ा कर कहने लगा : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही मेरी जान बचाइये। रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को छोड़ दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे ग़ौरस अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं जो दुन्या के तमाम इन्सानों में सब से बेहतर है। (الشّفا ج۱ ص۱۰۶)

*सलाम उस पर कि जिस ने ख़ूं के प्यासों को क़बाएं दीं*

*सलाम उस पर कि जिस ने गालियां सुन कर दुआएं दीं*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ज़ुल्म करने वाले के लिये दुआए हिदायत : ग़ज़्वए** उहुद में जब मदीने के सुल्तान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दन्दान को शहीद और चेहरए अन्वर को ज़ख़्मी कर दिया गया मगर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन लोगों के लिये इस के सिवा कुछ भी न फ़रमाया कि **اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी क़ौम को हिदायत दे क्यूं कि येह लोग मुझे जानते नहीं। (الشّفا ج۱ ص ۱۰۵)

*सोया किये ना-बकार बन्दे*

*रोया किये ज़ार ज़ार आक़ा*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 35)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**जादू करने वाले से दर गुज़र :** रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर लबीद बिन आ'सम ने **जादू** किया तो रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का बदला नहीं लिया। नीज़ उस यहूदिय्या को भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया जिस ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़हर दिया था। (اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة لِلْقَسْطَلّانى ج۲ ص ۹۱)

*क्यूं मेरी ख़ताओं की त़रफ़ देख रहे हो*

*जिस को है मेरी लाज वोह लजपाल बड़ा है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**शाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न तो आदतन बुरी बातें करते थे और न तकल्लुफ़न और न बाज़ारों में शोर करने वाले थे और न ही बुराई का बदला बुराई से देते थे बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुआफ़ करते और दर गुज़र फ़रमाया करते थे। (سُنَنِ تِرمِذی ج ۳ ص ۴۰۹ حدیث ۲۰۲۳)

**रोज़ाना 70 बार मुआफ़ करो : एक** शख़्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ख़ादिम को कितनी बार मुआफ़ करें ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे। उस ने फिर वोह सुवाल दोहराया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फिर ख़ामोश रहे, जब तीसरी बार सुवाल किया तो इर्शाद फ़रमाया : "रोज़ाना सत्तर70 बार।" (سُنَنِ تِرمِذی ج۳ص ۳۸۱ حدیث ۱۹۵۶)

**मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : अ-रबी में सत्तर का लफ़्ज़ बयाने ज़ियादती के लिये होता है या'नी हर दिन उसे बहुत दफ़्अ़ मुआफ़ी दो, येह इस सूरत में हो कि गुलाम से ख़ताअन ग़-लती हो जाती है ख़बासते नफ़्स से न हो और कुसूर भी मालिक का ज़ाती हो शरीअत का या क़ौमी व मुल्की कुसूर न हो कि येह कुसूर मुआफ़ नहीं किये जाते। (मिरआत, जि. 5, स. 170)

**गालियों भरे ख़ुतूत पर आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **का अफ़्वो दर गुज़र : काश !** हमारे अन्दर येह जज़्बा पैदा हो जाए कि हम अपनी ज़ात और अपने नफ़्स की ख़ातिर **गुस्सा** करना ही छोड़ दें। जैसा कि हमारे बुज़ुर्गों का जज़्बा होता था कि उन पर कोई कितना ही ज़ुल्म करे येह हज़रात उस ज़ालिम पर भी शफ़्क़त ही फ़रमाते थे। चुनान्चे "**हयाते आ'ला हज़रत**" में है, मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में एक बार जब डाक पेश की गई तो बा'ज़ ख़ुतूत मुग़ल्लज़ात (या'नी गन्दी गालियों) से भरपूर थे। मो'तक़िदीन बरहम (गुस्से) हुए कि हम इन लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर करेंगे। इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इर्शाद फ़रमाया : "जो लोग ता'रीफ़ी ख़ुतूत लिखते हैं पहले उन को जागीरें तक़्सीम कर दो, फिर गालियां लिखने वालों पर

मुक़द्दमा दाइर कर दो।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 143 मुलख़्ख़सन) मत़लब येह कि जब ता'रीफ़ करने वालों को तो इन्आ़म देते नहीं फिर बुराई करने वालों से बदला क्यूं लें!

*अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी*

*ख़ुरशीदे इल्म उन का दरख़्शां है आज भी*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**एक अहम म-दनी वसिय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मेरी उ़म्र ता दमे तह़रीर तक़रीबन 60 बरस हो चुकी है, मौत लम्ह़ा ब लम्ह़ा क़रीब आ रही है, न जाने कब आंख बन्द हो जाए। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के दरबारे वाला शान में सला-मतिये ईमान और नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र में अम्नो अमान, बे ह़िसाब बख़्शिश और जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जवार का त़लब गार हूं। मैं ने अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में दुन्या के बहुत नशेबो फ़राज़ देखे हैं, इख़्लास कम और दिखावा कसीर, वफ़ा कम और ख़ुशामद ख़त़ीर (या'नी ज़ियादा) है, इस से बढ़ कर भी क्या बे वफ़ाई होगी कि वोह मां बाप जिन्हों ने हज़ार एह़सानात किये होते हैं मगर उन की कोई एक मा'मूली सी बात भी ना गवार गुज़र जाती है तो सारे एह़सानात भुला कर, ना ख़लफ़ औलाद उन को लात मार देती है! आह! मक्कार व अ़य्यार शैत़ान ने क़ुलूब व अज़्हान में बहुत ज़ियादा ख़राबियां डाल दी हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में लाखों लाख मुसल्मान शामिल हैं जैसा कि उ़मूमन तन्ज़ीमों में लोगों का आना जाना रहता है इसी त़रह़ दा'वते इस्लामी से भी रूठ टूट कर कुछ अफ़राद को अलग होते पाया है, म-दनी माह़ोल से दूरी के बा'द बा'ज़ों की बे अ़-मलियों का सिल्सिला भी सामने आया है, बा'ज़ नाराज़ इस्लामी भाइयों ने अपना अपना जुदागाना "ग्रूप" भी बनाया है, बा'ज़ों ने मेरे ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहा, लिखा और दा'वते इस्लामी

की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की भी जी भर कर मुख़ा-ल-फ़तें की हैं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह अल्फ़ाज़ लिखने तक **दा 'वते इस्लामी बराबर तरक़्क़ी की मनाज़िल तै़ कर रही है** और कोई भी ग्रूप ब ज़ाहिर अब तक **दा 'वते इस्लामी** से आगे बढ़ना कुजा बराबरी भी नहीं करने पाया। मैं ने तन्ज़ीमी कामों में ज़िन्दगी का काफ़ी ह़िस्सा गुज़ारा है, लिहाज़ा अपने तजरिबात की रोशनी में तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मह़्ज़ आख़िरत की भलाई के पेशे नज़र हाथ जोड़ कर **म-दनी वसिय्यत** करता हूं **:** मेरी येह बात हमेशा के लिये गिरह में बांध लीजिये कि मेरे जीते जी भी और मेरे मरने के बा'द भी **दा 'वते इस्लामी** में एक बार शुमूलिय्यत कर लेने के बा'द दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस (म-सलन सब्ज़ इमामा शरीफ़ वग़ैरा) रखते हुए त़रीक़ए कार से हट कर हरगिज़ किसी क़िस्म का "मु-तवाज़ी ग्रूप" मत बनाइयेगा, दीन के काम के ह़वाले से भी अगर आप ने अपना कोई अलग सिल्सिला शुरूअ़ किया तो **ग़ीबतों,** तोह्मतों, बद गुमानियों, दिल आज़ारियों, आपस की दुश्मनियों, बाहमी नफ़्रतों वग़ैरा वग़ैरा से ख़ुद को बचाना क़रीब क़रीब ना मुम्किन हो जाएगा बल्कि हो सकता है कि बे शुमार मुसल्मान इस त़रह़ की आफ़तों की लपेट में आ जाएं। अगर कोई येह समझे कि दा'वते इस्लामी से जुदा होने के बा'द अलग ग्रूप बना कर मैं ने तो फ़ुलां फ़ुलां दीन का बहुत भारी काम सर अन्जाम दिया है, तो मैं उस की तवज्जोह इस त़रफ़ दिलाना चाहूंगा कि वोह येह भी ग़ौर कर ले कि जुदा होने के बाइस कहीं **ग़ीबतों** वग़ैरा गुनाहों की नुहूसतों में तो नहीं फंसा था ? अगर नहीं फंसा था तो सद करोड़ मुबारक ! और अगर फंसा था तो फिर ज़मीर ही से पूछ ले कि मेरे फ़ुलां फ़ुलां **मुस्तह़ब** दीनी कामों का वज़्न ज़ियादा या इन दीनी कामों के ज़िम्न में जिन **ग़ीबतों** वग़ैरा ह़राम चीज़ों का सुदूर हुवा उन का वज़्न ज़ाइद ? अगर दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ह़ामिल हुवा, इल्मे दीन का फ़ैज़ान रहा और ज़मीर ज़िन्दा पाया तो येही जवाब मिलेगा कि यक़ीनन ज़िन्दगी भर के **मुस्तह़ब** कामों के मुक़ाबले में सिर्फ़ एक बार की हुई गुनाह भरी **ग़ीबत** ही ज़ियादा वज़्नी है कि **मुस्तह़ब** काम न करने पर अ़ज़ाब की कोई वईद नहीं जब कि **ग़ीबत** पर अ़ज़ाब का इस्तिह़्क़ाक़ है। मा'लूम हुवा एक बार **दा 'वते इस्लामी** में

शामिल हो जाने के बा'द निकलने या निकाले जाने पर जुदागाना ग्रूप बनाने में مِنْ حَيْثُ الْمَجْمُوْع (या'नी मज्मूई हैसिय्यत से) नुक़्सान ही का पहलू ग़ालिब है।

**फ़तावा र-ज़विय्या के अहम इक़्तिबासात : अगर** सच पूछिये तो ऐसा दीनी काम जिस से मुसल्मानों में नफ़रत की कैफ़िय्यत जनम लेने लगे और उस का करना फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नते मुअक्कदा न हो तो उस काम को तर्क करना ही मुनासिब है अगर्चे अफ़्ज़ल व मुस्तह़ब हो। चुनान्चे एक मक़ाम पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुसल्मानों के इत्तिह़ाद की अहम्मिय्यत को उजागर करने के लिये नक़्ल फ़रमाते हैं : "लोगों की तालीफ़े क़ल्बी (या'नी दिलजूई) और उन को मुज्तमअ़ (मुत्तह़िद) रखने के लिये **अफ़्ज़ल को तर्क करना** इन्सान के लिये जाइज़ है ताकि लोगों को नफ़रत न हो जाए जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने **बैतुल्लाह** शरीफ़ की इमारत को इस लिये अहले क़ुरैश की बुन्यादों पर क़ाइम रखा ताकि जो लोग नए नए इस्लाम लाए वोह किसी ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला न हो जाएं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 680 मुलख़्ख़सन) ❁ तन्फ़ीरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों को नफ़रत में मुब्तला करने) से बचने के लिये ज़रूरतन मुस्तह़ब को तर्क कर देने का ह़ुक्म है। जैसा कि मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुसल्मानों के दरमियान प्यार व मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम रखने का एक **म-दनी उसूल** बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "इतयाने मुस्तह़ब व तर्के ग़ैरे औला पर मुदाराते ख़ल्क़ व मुराआ़ते क़ुलूब को अहम जाने और फ़ितना व नफ़रत व ईज़ा व वह़्शत का बाइ़स होने से बहुत बचे।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 528) ❁ मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه शरीअ़ते मुत़ह्हरा का क़ाइदा बयान करते हुए फ़रमाते हैं : **دَرْءُ الْمَفَاسِدِ اَهَمُّ مِنْ جَلْبِ الْمَصَالِحِ** या'नी ख़राबियों के अस्बाब दूर करना ख़ूबियों के अस्बाब ह़ासिल करने से अहम है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 551)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**जिस ने तशख़्ख़ुस तब्दील कर लिया ! : रहे** वोह ह़ज़रात जो दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस तर्क कर चुके और बिला इजाज़ते शर-ई **दा'वते इस्लामी** की किसी क़िस्म की मुख़ा-लफ़त भी नहीं करते और **ग़ीबतों,** तोह्मतों और बद गुमानियों वग़ैरा में पड़े बिग़ैर अपनी तरकीब से दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं, **अल्लाह** तआ़ला उन की काविशों को क़बूल फ़रमाए। मगर वोह जो तशख़्ख़ुस तब्दील कर के अलग ग्रूप बनाने के बा'द बिला इजाज़ते शर-ई दा'वते इस्लामी की **मुख़ा-लफ़त** कर के नेकी की दा'वत आ़म करने वाली इस म-दनी तह़रीक को कमज़ोर करने की मज़्मूम कोशिशों में मसरूफ़ हों, इस मक़्सद के लिये **ग़ीबतों,** तोह्मतों, बोहतान तराशियों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों, बुरे चरचों, इल्ज़ाम तराशियों और चुग़लियों को अपना हथियार बना लें और इसे अपने ज़ो'मे फ़ासिद में दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत तसव्वुर करें, ऐसों को संभल जाना चाहिये कि येह दीन की ख़िदमत नहीं, इन्तिहाई द-रजे की मज़्मूम ह़-र-कत है बल्कि शरअ़न इन ना जाइज़ कामों का इरतिकाब कर के अपने नामए आ'माल को गुनाहों से पुर करना है। यूंही जो तशख़्ख़ुस बर क़रार रखते हुए भी बिला इजाज़ते शर-ई **दा'वते इस्लामी** की मुख़ा-लफ़त करेगा और लोगों को मु-तनफ़्फ़िर कर के (या'नी नफ़रत दिला कर) दा'वते इस्लामी और इस के त़रीक़ए कार को नुक़्सान पहुंचाना उस का मक़्सद होगा वोह भी फ़े'ले **ना जाइज़** का मुर-तकिब ठहरेगा।

**बुरा चरचा करना ह़राम है : देखा** येह गया है कि जब कोई शख़्स किसी की मुख़ा-लफ़त पर उतर आता है तो ख़्वाह म ख़्वाह उस पर तन्क़ीदें करता, बाल की खाल उतारता और उस की ख़ामियों या ख़त़ाओं का बुरा चरचा करता फिरता है (मगर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बचाए)। जब उन की आपस में बनती थी तो इसे गोया उस के पसीने में से भी ख़ुश्बू आती थी अब नाराज़ी के बा'द उस का इत्र भी बदबूदार लगता है। याद रखिये ! किसी मुबल्लिग़ बिल ख़ुसूस सुन्नी आ़लिम की किसी ख़ामी या ख़त़ा को बिला मस्लह़ते शर-ई किसी पर ज़ाहिर करना या लोगों में उस का बुरा चरचा करना नेकी की दा'वत और इस्लाम की तब्लीग़ के काम के मुआ़-मले में बहुत, बहुत और

बहुत नुक़्सान देह और आख़िरत में बाइसे अ़ज़ाब है, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 29 **सफ़ह़ा** 594 पर फ़रमाते हैं : "और अहले सुन्नत से ब तक़्दीरे इलाही जो ऐसी लग़्ज़िशे फ़ाह़िश वाक़ेअ़ हो उस का इख़्फ़ा (या'नी छुपाना) वाजिब है कि مَعَاذَ اللّٰه लोग उन से बद ए'तिक़ाद होंगे तो जो नफ़्अ़ उन की तक़रीर और तह़रीर से इस्लाम व सुन्नत को पहुंचता था उस में ख़लल वाक़ेअ़ होगा। इस की इशाअ़त, इशाअ़ते फ़ाह़िशा (या'नी बुरा चरचा करना) है। और इशाअ़ते फ़ाह़िशा ब नस्से कुरआने अ़ज़ीम **ह़राम,** قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی : (या'नी **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है)

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ (پ ۱۸ النور ۱۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

(फ़तावा र-ज़विय्या , जि. 29, स. 594)

**दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इत्मामे हु़ज्जत : जो** आज तक मुझ से नाराज़ हो कर या **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** से रूठ कर जुदा हो गए, उन में से जिन जिन की मेरी वज्ह से दिल आज़ारी या किसी क़िस्म की ह़क़ त-लफ़ी हुई हो उन से हाथ जोड़ कर **मुआ़फ़ी** का त़लब गार हूं, दोनों ग़ुलाम ज़ादे और निगरान व अराकीने शूरा भी मुआ़फ़ी मांग रहे हैं, मुझे और इन्हें **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दें। हम सब ने भी रिज़ाए **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये उन सब को जिन्हों ने ह़क़ त-लफ़ियां की हों उन को मुआ़फ़ किया। नाराज़ हो कर या इख़्तिलाफ़ कर के जिन्हों ने अपनी अपनी तन्ज़ीमें क़ाइम कीं, जुदागाना ग्रूप बनाए उन सभी को खुले दिल से दा'वत देता हूं कि **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा **सुल्ह़** फ़रमा लें, मह़ज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर, मैं हर नाराज़ मुसल्मान से ग़ैर मशरूत़ त़ौर पर भी **सुल्ह़** के लिये तय्यार

हूं। हां जो तन्ज़ीमी इख़्तिलाफ़ात को मुज़ा–करात के ज़रीए हल कर के **सुल्ह** करना चाहते हैं उन के लिये भी दरवाज़े खुले हैं, जल्दी राबिता कीजिये और **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** के साथ बैठ जाइये। अगर आप हुक्म फ़रमाएंगे तो मुम्किना सूरत में اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ शूरा के साथ साथ मैं भी बैठ जाऊंगा। आइये, आ जाइये, **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रहमत और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे इनायत से मुत्तहिद हो कर शैतान के हथकन्डों को नाकाम बनाते हैं, اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ मिलजुल कर दीन का ख़ूब म–दनी काम करेंगे।

**अगर आप दा'वते इस्लामी के साथ काम करना नहीं चाहते तो.......:** अगर कोई नाराज़ इस्लामी भाई **दा'वते इस्लामी** के साथ मिल कर म–दनी काम नहीं करना चाहता तो कम अज़ कम नाराज़ियां ही दूर कर के हमें मुआफ़ी से नवाज़ दे और इस पर हमें मुत्तलअ़ कर के मुसल्मान का दिल ख़ुश करने के सवाब का हक़दार बने कि इस तरह اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ नफ़रतें मिटेंगी, फ़ासिले सिमटेंगे और शैतान मरदूद का मुंह काला और मुआफ़ करने वाले का मुंह उज्याला होगा। एक बार फिर इस हदीसे पाक का वासिता दे कर हम मुआफ़ी मांगते हैं जिस में हमारे मक्की म–दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया है : ''जो कोई अपने मुसल्मान भाई से मा'ज़िरत करे और वोह (बिला इजाज़ते शर–ई) उस का उ़ज़्र क़बूल न करे **तो उसे हौज़े कौसर पर हाज़िर होना नसीब न होगा।''** (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ٤ ص٣٧٦ حديث ٦٢٩٥) याद रखिये ! इस तरह की बात करना हरगिज़ मुनासिब नहीं कि इल्यास को हमारे पास ख़ुद आना चाहिये अगर ख़ुद नहीं आ सकता तो निगराने शूरा या किसी रुक्ने शूरा ही को हमारे पास या हमारे फ़ुलां ''बड़े'' के पास भेज दे। इस तरह की बातें करने वाले के बारे में येह वस्वसे आ सकते हैं कि येह सुल्ह करना नहीं चाहते इस लिये टालम टोल से काम ले रहे हैं, जब हम ने तहरीर की सूरत में पहल कर ही दी है तो मुख़्लिसीन के लिये रुकावट किस चीज़ की है! हर नाराज़ इस्लामी भाई को चाहिये कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आगे बढ़े और गले लग जाए। अगर आ कर मिलना नहीं

चाहता तो किसी भी रुक्ने शूरा से कम अज़ कम फ़ोन ही पर राबित़ा कर ले।

*अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तू गवाह रहना : या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! तू गवाह रहना मैं ने अपने बिछड़े हुए इस्लामी भाइयों के लिये **सुल्ह़** का पैग़ाम मुश्तहर कर दिया है। ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे नाराज़ इस्लामी भाइयों के दिलों में मुझ मिस्कीन के लिये रह़्म डाल दे कि वोह मुझे मुआ़फ़ी की भीक दे कर मुझ से सुल्ह़ कर लें, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे दिल के ह़ाल से बा ख़बर है कि इस सुल्ह़ की दर-ख़्वास्त में मेरा अस्ल मक़्सद सिर्फ़ सिर्फ़ और सिर्फ़ उख़्रवी मफ़ाद है, मैं मरने से पहले पहले फ़क़त़ तेरी रिज़ा के लिये हर नाराज़ मुसल्मान से सुल्ह़ करना और अपने रूठे हुए इस्लामी भाइयों को मना लेना चाहता हूं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी **ख़ुफ़्या तदबीर** से बहुत डरता हूं, ऐ मेरे प्यारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू कभी भी मुझ से नाराज़ न होना, मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरा ईमान एक लम्ह़े के करोड़वें ह़िस्से के लिये भी कभी मुझ से जुदा न हो, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी और मेरे रूठे हुए तमाम इस्लामी भाइयों समेत हर **दा'वते इस्लामी** वाले और वाली की बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी सफ़ों में इत्तिह़ाद पैदा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़ेह्नी हम-आहंगी नसीब फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बिला त़-लबे मन्सब एक साथ मिल कर इख़्लास के साथ तेरे दीन की ख़िदमत की सआ़दत इनायत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें*

*नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग :** **आह !** ''ग़ीबत'' ने उम्मत की अक्सरिय्यत को निहायत शिद्दत के साथ अपनी हिरासत में लिया हुवा है, शैतान **ग़ीबत** के ज़रीए भरपूर तरीक़े पर लोगों को जहन्नम की तरफ़ धकेलता चला जा रहा है। होश में आइये ! **ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग** कर के एक दम मोरचे पर डट जाइये ! जिस जिस ने अब तक जिस क़दर **ग़ीबतें** की हों उन की तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी में लग जाए, **अज़्मे मुसम्मम** कीजिये कि **''न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे''** (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! **ग़ीबत** हमारे म-दनी माहोल को दीमक की तरह चाट रही है लिहाज़ा **दा'वते इस्लामी** के तमाम ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मेरी हाथ जोड़ कर ''म-दनी इल्तिजा'' है कि **ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग** के ज़िम्न में **ग़ीबतों** के दरवाज़ों पर ताले लगाते चले जाइये, अब तक जो भी आप की ज़िम्मेदारी के दौरान **म-दनी माहोल** से दूर हुए, उन के मुआ-मले में 112 बार ग़ौर कर लीजिये कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हों ने आप की **ग़ीबतें** की हों और आप को गुस्सा आ जाने की वजह से या ख़ुद आप ने उन की **ग़ीबतें** की हों इस सबब से वोह दिल बरदाश्ता हो कर घर जा बैठे हों। अगर ऐसा है तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के बराए रिज़ाए रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन से पेशतर मगर बुला कर नहीं, ख़ुद उन के पास जा कर हाथ जोड़ कर पाउं पकड़ कर ऐ काश ! रो रो कर मुआफ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राज़ी कर के गले लगा लीजिये। बल्कि हर बिछड़े हुए को तलाश कर के उन के पास भी ख़ुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नतो समाजत कर के उन्हें दोबारा **म-दनी माहोल** में ले आइये और **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए उन सभों को फिर से सुन्नतों की ख़िदमतों में मसरूफ़ कर दीजिये। (जिन पर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी नहीं वोह भी इसी तरह

करें, हां जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी लगी हो उन को मत छेड़िये, उन के बारे में बड़े ज़िम्मेदारान जो तन्ज़ीमी फ़ैसला करें उन पर अ़मल कीजिये)

*ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है  उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है*
*छोटों में इताअ़त है न शफ़्क़त है बड़ों में  प्यारों में महब्बत है न यारों में वफ़ा है*
*जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत  शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है*
*देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत  सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है*
*हम नेक हैं या बद हैं फिर आख़िर हैं तुम्हारे निस्बत  बहुत अच्छी है अगर ह़ाल बुरा है*
*तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई*
*हां एक दुआ़ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है*

**मैं ने इल्यास क़ादिरी को मुआ़फ़ किया :** तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आ़जिज़ाना अ़र्ज़ करता हूं कि अगर मैं ने नीज़ ग़ुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने मर्कज़ी मजलिसे शूरा में से जिस जिस ने आप में से किसी की **ग़ीबत** की हो, **तोहमत** धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी त़रह़ से **दिल आज़ारी** की हो मुझे और उन्हें मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये । जान व माल, अहलो इ़याल और इ़ज़्ज़त आबरू में दुन्या के अन्दर जो छोटे से छोटे और बड़े से बड़े हुक़ूक़ुल इ़बाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) तसव्वुर किये जा सकते हैं, फ़र्ज़ कीजिये कि वोह हुक़ूक़ मैं ने, ग़ुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने शूरा ने आप के तलफ़ (या'नी ज़ाएअ़) कर दिये हैं, उन तमाम हुक़ूक़ को ज़ेह्न में रखते हुए हमारे सबब से तलफ़ शुदा हुक़ूक़ मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा कर सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये । हाथ बांध कर **म-दनी इल्तिजा** है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : ''मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी, ग़ुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने शूरा को मुआ़फ़ किया ।'' हम सब ने भी हमारी तमाम छोटी बड़ी ह़क़ त-लफ़ियां करने वालों को **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर मुआ़फ़ किया ।

**क़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा : जिस** का मुझ पर क़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आ़रिय्यतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या ग़ुलाम ज़ादों से रुजूअ़ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का ह़क़दार बने। जो लोग मेरे मक़रूज़ हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती क़र्ज़े मुआ़फ़ किये। या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

*तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे ह़िसाब जुर्म*

*देता हूं वासिता तुझे शाहे ह़िजाज़ का*

(ज़ौक़े ना'त, स. 11)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## गूंगी बोल उठी !

**ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत फ़रमाइये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है। चुनान्चे ज़िलअ़ ख़ुशाब (पाकिस्तान) के किसी गाउं में एक इस्लामी बहन की यकायक **ज़बान बन्द हो गई,** किसी इलाज से फ़ाएदा न हुवा, ब ग़-रज़े इलाज उन्हें बाबुल

मदीना (कराची) लाया गया, यहां भी डॉक्टरी इलाज कारगर न हुवा, उन की **ज़बान बन्द** हुए तक़रीबन 6 माह गुज़र चुके थे, उन को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** के तहख़ाने में हर इतवार को दो पहर तक़रीबन ढाई बजे होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां एक इस्लामी बहन ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुसल्सल 12 इज्तिमाअ़ के अन्दर ह़ाज़िरी देने के लिये उन को राज़ी किया, तरतीब वार शिर्कत करते हुए 8 र-मज़ानुल मुबारक 1430 सि.हि. को उन का छटा इज्तिमाअ़ था, **इस इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर पढ़े जाने वाले सलातो सलाम के दौरान اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अचानक वोह गूंगी इस्लामी बहन बोल उठी !**

*ह़ज़रते शब्बीरो शब्बर के तुफ़ैल*

*टाल दो आफ़त ऐ नानाए हुसैन*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 257)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# "मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाइस हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल

1 **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह **जन्नती** है।" (حِلْيَةُ الْاَولياء ج١٠ ص٤٥ رقم ١٤٤٦٦)

2 **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٩٨ حديث ٢٦٦٥)

3 **ह़ज़रते** सय्यिदुना इदरीस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है के कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्सो तदरीस के बाइस आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम **इदरीस** हुवा। (تفسیرکبیر ج٧ ص٥٥٠، تفسير الحسنات ج٤ ص٤٨)

4 **हुज़ूरे ग़ौसे** पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इल्म का **दर्स** लिया यहां तक के मक़ामे क़ुत्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (क़सीदए ग़ौसिय्या)

5 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कॉलेज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **म-दनी फूल** लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

6 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने या सुनने की सआदत ह़ासिल कीजिये। (इन दो में एक "घर दर्स" ज़रूर हो)

7 पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयत में इर्शाद होता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ

**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं ।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स भी है । (दर्स के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या म–दनी मुज़ा–करे की एक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाइये)

8 **ज़िम्मेदार** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौकदर्स का एहतिमाम करें म–सलन : रात 9 बजे मदीना चौक (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा । छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये । (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों म–सलन आप की वज्ह से मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

9 **दर्स** के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें ।

10 **दर्स** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाइये ।

11 **मेह़राब** से हट कर (सेह़न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो ।

12 ज़ैली मुशा–वरत के निगरान को चाहिये के अपनी मस्जिद में दो **ख़ैर ख़्वाह** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं ।

13 **पर्दे में पर्दा** किये दो ज़ानू बैठ कर **दर्स** दीजिये । अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े

हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वग़ैरा को तश्वीश न हो।

14 आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये के सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़तियात़ फ़रमाइये के दर्सो बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मश्ग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

15 **दर्स** हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

16 जो कुछ **दर्स** देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ा-लआ़ कर लीजिये ताकि ग़-लत़ियां न हों।

17 **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

18 **ह़म्दो सलात,** दुरूदो सलाम के दोनों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़-रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

19 **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ होने वाले म-दनी रसाइल से भी दर्स दे सकते हैं।[1]

20 **दर्स** मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

21 हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का त़रीक़ा,** बा'द की तरग़ीब और **इख़्तितामी दुआ़** ज़बानी याद कर ले।

22 **दर्स** के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं।

**मर्कज़ी मजलिसे शूरा**

# फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये : "क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।" पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه    وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه    وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ **ए'तिकाफ़** की निय्यत करवाइये :

**نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف** (तरजमा : मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस त़रह़ कहिये, **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए सुनने से इस की ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। (बयान के आग़ाज़ में भी इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर एक दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !    صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**जो** कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़-रबी इ़बारात का सिर्फ़ तरजमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राय से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये।

# दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शह्‌र में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्‌न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्‌न बनाए के ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ''मुझे अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये[1] म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

***अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में***

***ऐ दा'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो***

1. यहां इस्लामी बहन कहे : घर के मर्दों को म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाना है।

आखि़र में खुशूओ खुज़ूअ़ (या'नी जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** दर्स की ग़-लति़यां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, नेक अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें अपना और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुख़्लिस आ़शिक़ बना। हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी म-दनी कामों की तरग़ीब दिलवाने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मुसल्मानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, बे जा मुक़द्दमा बाज़ियों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** इस्लाम का बोलबाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मदीने की खुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा ह़मारी जाइज़ दुआ़एं क़बूल फ़रमा।

*कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे*

*कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबा-रका पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳ الصّٰفّٰت)

दर्स की कमाई पाने के लिये सवाब की निय्यत के साथ (खड़े खड़े नहीं बल्कि) **बैठ** कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये और **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब मुस्कुराते हुए उन्हें **म-दनी इन्आ़मात** और **म-दनी क़ाफ़िलों** की ब-र-कतें समझाइये। (बैठ कर मिलने में ह़िक्मत येह है कि कुछ न कुछ इस्लामी भाई हो सकता है आप के साथ बैठे रहें वरना खड़े खड़े मिलने वाले उ़मूमन चल पड़ते हैं यूं इन्फ़िरादी कोशिश की सआ़दत से मह़रूमी हो सकती है)

*तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ़ है*
*किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना*

**दुआ़ए अत्तार : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और पाबन्दी के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो दर्स** एक घर में और दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़*
*मिले दिन में दो मरतबा या इलाही*

## ماخذ ومراجع


| نمبر شمار | کتاب | مصنف/مؤلف | مطبوعہ/سال اشاعت |
|---|---|---|---|
| 1 | قرآن پاک | کلام الٰہی عزوجل | ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور |
| 2 | ترجمۂ کنزالایمان | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن | رضا اکیڈمی بمبئی ہند |
| 3 | تفسیر بغوی | امام ابو محمد حسین بن مسعود رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۴ھ |
| 4 | تفسیر قرطبی | امام ابو عبداللہ محمد بن احمد انصاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 5 | تفسیر در منثور | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ |
| 6 | تفسیرات احمدیہ | علّامہ احمد بن ابوسعید جونپوری المعروف ملّا جیون رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | پشاور |
| 7 | تفسیر روح البیان | شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | کوئٹہ |
| 8 | تفسیر خزائن العرفان | سید نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | رضا اکیڈمی بمبئی ہند |
| 9 | تفسیر نعیمی | مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور |
| 10 | صحیح بخاری | امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 11 | صحیح مسلم | امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 12 | سنن ترمذی | امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ |
| 13 | سنن نسائی | امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ |
| 14 | سنن ابوداود | امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ |
| 15 | سنن ابن ماجہ | امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 16 | سنن کبریٰ | امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ |
| 17 | سنن دارمی | امام عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | باب المدینہ کراچی ۱۴۰۷ھ |
| 18 | سنن دارقطنی | امام حافظ علی بن عمر دارقطنی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۲۰ھ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 19 | تاریخ بغداد | امام ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ |
| 20 | الجامع لاخلاق الراوی | امام ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبۃ المعارف ۱۴۰۳ھ |
| 21 | شعب الایمان | امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ |
| 22 | مستدرک | امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 23 | المسند | امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴ ۱۴۱۱ھ |
| 24 | مسند ابی یعلی | امام احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 25 | الفردوس بماثور الخطاب | امام شیرویہ بن شہردار دیلمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴۰۶ھ |
| 26 | معجم کبیر | امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ |
| 27 | معجم الاوسط | امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 28 | شرح السنۃ | امام ابو محمد الحسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ |
| 29 | الدعوات الکبیر | امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | کویت ۱۴۱۴ھ |
| 30 | مصنف عبد الرزاق | امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ |
| 31 | صریح السنۃ | امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | |
| 32 | الاخوان | امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد المعروف ابن ابی الدنیا | المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۶ھ |
| 33 | ذم الغیبۃ | امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد المعروف ابن ابی الدنیا | المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۶ھ |
| 34 | الزہد | امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالغد الجدید مصر ۱۴۲۶ھ |
| 35 | الزہد | امام عبد اللہ بن مبارک مروزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت |
| 36 | الاحادیث المختارۃ | امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد الواحد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارخضر بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 37 | الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان | حافظ محمد بن حبان بن احمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ |
| 38 | جمع الجوامع | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 39 | جامع صغیر | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ |
| 40 | ریاض الصالحین | علّامہ ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار السلام ۱۴۲۰ھ |
| 41 | کنز العمال | علامہ علاؤ الدین علی متقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 42 | الترغیب والترہیب | علامہ عبد العظیم بن عبد القوی منذری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 43 | حلیۃ الاولیاء | علامہ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 44 | صفۃ الصفوۃ | علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ |
| 45 | شرح صحیح مسلم | علامہ ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت |
| 46 | مرقاۃ المفاتیح | علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ |
| 47 | فیض القدیر | علامہ محمد عبد الرءوف مناوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ |
| 48 | اشعۃ اللمعات | شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | کوئٹہ |
| 49 | مراۃ المناجیح | مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | ضیاء القران پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور |
| 50 | نزہۃ القاری | مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۱ھ |
| 51 | منح الروض | علامہ ملّا علی قاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار البشائر الاسلامیہ بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 52 | ھدایہ | علامہ علی بن ابی بکر مَرغینانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار احیاء التراث العربی بیروت |
| 53 | خلاصۃ الفتاوی | علامہ طاہر بن عبد الرشید بخاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | کوئٹہ |
| 54 | مجمع الانہر | علامہ عبد الرحمٰن بن محمد بن سلیمان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 55 | فتاوی عالمگیری | شیخ نظام وجماعۃ من علماء الہند رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہم | دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ |
| 56 | درمختار | علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 57 | ردالمحتار | علامہ ابن عابدین محمد امین شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 58 | فتاوی رضویہ | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن | رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 59 | الملفوظ | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ |
| 60 | فتاوی امجدیہ | مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبہ رضویہ باب المدینہ ۱۴۱۹ھ |
| 61 | بہارِ شریعت | مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ |
| 62 | تاریخ بغداد | علامہ احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ |
| 63 | تاریخ دمشق | علامہ ابو القاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ |
| 64 | تاریخ الخلفاء | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | ضیاء القرآن پبلی کیشنز |
| 65 | دلائل النبوۃ | امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ |
| 66 | الخیرات الحسان | علامہ شہاب الدین احمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۳ھ |
| 67 | المناقب | علامہ موفق بن احمد مکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | کوئٹہ ۱۴۰۷ھ |
| 68 | تبییض الصحیفۃ | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | پشاور |
| 69 | القول البدیع | امام حافظ محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مؤسسۃ الریان ۱۴۲۲ھ |
| 70 | رسالہ قشیریہ | امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن قشیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 71 | قوت القلوب | شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مرکز اہلسنّت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ |
| 72 | تنبیہ المغترین | علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ |
| 73 | احیاء العلوم | امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء |
| 74 | منہاج العابدین | امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت |
| 75 | اتحاف السادۃ | علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دار الکتب العلمیۃ بیروت |
| 76 | حدیقہ ندیہ | علامہ عبد الغنی نابلسی حنفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | پشاور |
| 77 | سبع سنابل | علامہ میر عبد الواحد بلگرامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۰۲ھ |
| 78 | تذکرۃ الاولیاء | شیخ فرید الدین محمد عطار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | انتشارات گنجینہ تہران |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 79 | روض الریاحین | عبداللہ بن اسعد بن علی یافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ |
| 80 | الروض الفائق | علامہ شعیب بن سعد عبدالکافی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ |
| 81 | بحرالدموع | علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبۃ دارالفجر دمشق ۱۴۲۴ھ |
| 82 | عیون الحکایات | علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت |
| 83 | الزواجرعن اقتراف الکبائر | علامہ ابوالعباس احمد بن محمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 84 | المختصرالمحتاج الیہ | محمد بن احمد بن عثمان ذہبی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۵ھ |
| 85 | مصباح الظلام | امام ابوعبداللہ محمد بن موسی بن نعمان مزالی | دارالمدینۃ المنورۃ |
| 86 | شرح الصدور | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ |
| 87 | تنبیہ الغافلین | فقیہ ابواللیث محمد بن احمد سمرقندی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | پشاور ۱۴۲۰ھ |
| 88 | التوبیخ والتنبیہ | امام عبداللہ بن محمد بن جعفر بن حیان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبۃ الفرقان قاہرہ مصر |
| 89 | مکاشفۃ القلوب | امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت |
| 90 | نزہۃ المجالس | علامہ عبدالرحمٰن بن عبدالسلام صفوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 91 | مستطرف | علامہ شہاب الدین محمد بن ابواحمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 92 | حیاۃ الحیوان الکبری | علامہ کمال الدین محمد بن موسی دمیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ |
| 93 | بوستان سعدی | شیخ سعدی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | کتاب خانہ ملی ایران |
| 94 | جاءالحق | مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | نعیمی کتب خانہ گجرات 2007ء |
| 95 | سوانح کربلا | علامہ سید نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ |
| 96 | کتاب التعریفات | علامہ سید شریف علی بن محمد جرجانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | دارالمنار |
| 97 | تہذیب الاسماء واللغات | ابوزکریا یحیٰی بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | |
| 98 | غیبت کیا ہے | علامہ محمد عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | مکتبۂ عارفین باب المدینہ کراچی 1978ء |

## म-दनी चेनल ने म-दनी बुर्क़अ़ पहना दिया !

**दा'वते इस्लामी** के म-दनी चेनल की भी क्या बात है ! इस के ज़रीए भी मुसल्मानों की इस्लाह़ का सामान हो रहा है, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन पहले पहल **पर्दा** नहीं करती थीं । फिर दा'वते इस्लामी ने **"म-दनी चेनल"** का अ़ज़ीम तोह़फ़ा अ़ता किया जिसे देखने की ब-र-कत से वोह और उन के बच्चों के अब्बू **नमाज़** के पाबन्द हो गए । एक दिन म-दनी चेनल पर **"पर्दे की अहम्मिय्यत"** के मौज़ूअ़ पर सुन्नतों भरा बयान जारी था । उन के बच्चों के अब्बू ने जब वोह बयान सुना तो इतने मु-तअस्सिर हुए कि उन्हें **म-दनी बुर्क़अ़** पहनने की तरग़ीब दिलाई और बिला ज़रूरत बाज़ार वग़ैरा जाने से भी मन्अ़ कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी चेनल** की ब-र-कत से उन्हें बे पर्दगी से **तौबा** नसीब हुई और अब वोह कोई दीदाज़ेब, ग़ैर मर्दों को मु-तवज्जेह करने वाला या مَعَاذَ اللّٰہ नंगा सर रखने वाला रस्मी बुर्क़अ़ नहीं बल्कि के शर-ई पर्दे के मुताबिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ **म-दनी बुर्क़अ़** पहनती हैं ।

***म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार***

***म-दनी चेनल देखने वाले बनें परहेज़गार***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

### हर बात पर एक साल की इबादत का सवाब

बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

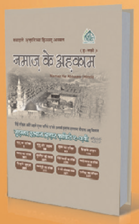

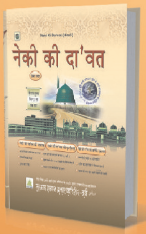

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

ग़ीबत की तबाहकारियां
शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी